

श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री

वैजयन्तीकोषः

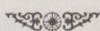
सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री



जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक  
**चौखम्भा भारती अकादमी**

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक  
'गोकुल भवन', के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन  
वाराणसी-२२१००१ (भारत)  
फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)  
+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी  
पुनर्मुद्रित : सन् २००८  
मूल्य : रु. ४००.००

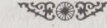
शाखा  
**चौखम्भा बुक्स**  
५ यू. ए. जवाहर नगर  
(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)  
मलकागंज, दिल्ली-११०००७  
फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान  
**चौखम्भा विश्वभारती**  
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक  
के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन  
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachya Vidya Granthamala

2



# VAIJAYANTĪKOṢA

OF  
ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by

**Śrī Pt. Haragovind Śāstri**  
*Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna*

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

VARANASI

Publisher

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

*Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East*

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi  
Reprint Year : 2008

*Also can be had from*

**CHAUKHAMBHA BOOKS**

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

*Branch*

**CHAUKHAMBHA VISVABHARATI**

*Oriental Publishers & Distributors*

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

**प्रस्तावना**

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्राकांगिनविलोचन ।

चन्द्रास्योमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है। देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्माजन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं। कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है। इसी कारण इस मनुष्य-योनि को सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है। इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सौभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मा में लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ।

**मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—**

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन। इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशयकष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है। अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए। शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है। यथा—

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरत्तये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥'

तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षणं कलासु च ।  
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

( अग्निपुराण २३७।३-४ )

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुष्ठा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

( महाभाष्य पस्पशाह्निक )

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत ॥’

उपर्युक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अर्धमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

### कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-सञ्चय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

### वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन-वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर ( श्रवण ) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों ( ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि ) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क ( ई० पू० ७०० वर्ष ) ने निघण्टुके भाष्यरूप ‘निरुक्त’ ग्रन्थकी रचना की। वेदों-में आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्यनाभ, ८ तैटिकी, ९ गालव, १० स्थीलाष्ठीवी, ११ क्रौष्टु और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। ५० श्रीभगवद्भक्तजीने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कादिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। ( श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९ )

### लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

( क ) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध ( पृ० ४ ) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनोषधि-सिंहादि-नृ ( मनुष्य )-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने '.....'ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गर्दसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज ( राजनिघण्टु )
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मानाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. ,,	: द्विरूपकोष
१५. ,,	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मयुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. की. संक्षिप्तसारकार:	: उणादिवृत्ति
२७. ,, ,,	: ,,
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त ( १ ) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. बोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा ( २ ) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारवर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रन्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है।

( ख ) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'सारार्थचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'द्वैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है। उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है। उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

## प्राप्तकोष :

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: "
७. एकाक्षरकोष	: "
८. द्विरूपकोष	: "
९. "	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: "
१५. नानार्थमञ्जरी	: मेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीयनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: "
२६. अभिधानचिन्तामणि— नाममालापरिशिष्ट	: "
२७. लिङ्गानुशासन	: "

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	: जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	: मदनपाल
३०. मुक्तावली	: श्रीधर
३१. रत्नमाला	: दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	: अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	: अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	: अप्पथदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	: अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	: कालिदास
३७. शब्दार्णव	: काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	: केशव
३९. लोकप्रकाश	: क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: गर्दसिंह
४१. शब्दमाला	: गोपीनाथ
४२. नामावली	: गोवर्धन
४३. शब्दसागर	: गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	: चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	: जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	: जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	: तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	: त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	: दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	: दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	: देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	: धरणीश
५३. कविजीवन	: धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	: नत्किरकवि
५५. वर्णाभिधान	: नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	: नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	: नारायणदास
५८. रत्नकोष	: नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	: पद्मनाभ

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला	: पुण्डरीकविट्टल
६१. वर्णदेशन	: पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष	: पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका	: बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय	: बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष	: विह्वण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु	: भार्गवाचार्य
६७. नाममाला	: भोजराज
६८. मङ्गलकोष	: मङ्गल
६९. शब्दरत्नावली	: मधुरेश
७०. पदचन्द्रिका	: मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक	: प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर	: "
७३. एकाक्षरनिघण्टु	: माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी	: मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला	: रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय	: राक्षस
७७. कविदपणनिघण्टु	: राम
७८. उणादिकोष	: रामशर्मा
७९. शब्दमाला	: रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला	: रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु	: वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु	: वरहचि
८३. कविमञ्जरी	: वल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर	: वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु	: विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि	: विट्टलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु	: विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु	: वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक	: "
९०. दशदीपनिघण्टु	: वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला	: शङ्कर
९२. शिवकोष	: शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष	: श्रीहर्ष
९४. इलेषार्थपदसंग्रह	: "
९५. एकाक्षरनिघण्टु	: सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश	: सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका	: सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर	: सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक	: सोमभव
१००. एकार्थनाममाला	: सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला	: "

#### अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि <sup>१</sup>	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल <sup>२</sup>	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन <sup>३</sup>
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। ( द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२० )

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।



१३२. सोमनन्दी	१३५. हट्टचन्द्र
१३३. सज्जन	१३६. हर
१३४. साहसाङ्क	१३७. कात्यायन

### अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला <sup>१</sup>	१६२. बृहदमरकोष <sup>३</sup>
१३९. असालतिप्रकाश	१६३. महाखण्डनकोष
१४०. आनन्दकोष	१६४. पदरत्नावली
१४१. एकवर्णसंग्रह	१६५. राजकोषनिघण्टु
१४२. एकाक्षरकोष	१६६. पुद्गलकोष
१४३. उत्पलिनी	१६७. लिङ्गप्रकाश
१४४. ऊष्मविवेक	१६८. मुनिकोष
१४५. अजय	१६९. वर्णप्रकाशकोष
१४६. अरुण	१७०. पालकोष
१४७. इन्दुकोष	१७१. वात्स्यायनकोष
१४८. कल्पतरुकोष	१७२. कोषसार
१४९. ग्रहाभिधान ( देवज्ञमुखमण्डन )	१७३. शब्दतरङ्गिणी
१५०. जकारभेद <sup>१</sup>	१७४. गङ्गाधर
१५१. दण्डिकोष	१७५. शब्ददीपिका
१५२. सुभृतिकोष	१७६. गोवर्द्धनकोष
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु	१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१५४. नक्षत्राभिधान	१७८. शब्दसारनिघण्टु
१५५. देशीकोष	१७९. चन्द्रकोष
१५६. नानार्थमञ्जरी	१८०. संसारावर्त
१५७. नामनिधान	१८१. चरककोष
१५८. पद्यकोष	१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१५९. भुम्रकोष	१८३. सकारभेद <sup>२</sup>
१६०. चकारभेद	१८४. सञ्जीवनी
१६१. बीजकोष	१८५. सन्मुखविवृतनिघण्टु
	१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं ।  
२. , ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं ।  
३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं ।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु	१९०. सारस्वताभिधान
१८८. साध्यकोष	१९१. हनुमन्निघण्टु
१८९. रत्नकोष	१९२. सिद्धौषधिनिघण्टु

( ग ) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है ( पृ० ६३४ ) । इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें ( पृ० ६३३ ) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ताकाल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है । इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है । उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष ( उक्त इति० पृ० ६२० ) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था ।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी ( वही इतिहास पृ० ७७७-७७९ ) ।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है । इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है । इनका समय शक ८५३ ( ई० ९६९ ) है । इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है । ( गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१ ) ।

### आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की । आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे । ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्जीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे । पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे । इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शाङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे । कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है । एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये ।

इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्'में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय'नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीपुरम्'में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष	:	कर्नल जी० ए० जाकोव
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष	:	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पाटिका	:	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु	:	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी	:	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह	:	
७. कोषावतंस	:	राघवकवि
८. तिङन्तार्णवतरणि	:	
९. धर्मकोष	:	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान	:	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष	:	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष	:	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष	:	
१४. बाङ्गमयार्णव	:	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम्	:	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम	:	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष	:	
१८. देशीनाममाला	:	हेमचन्द्राचार्य

### वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड। उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं। द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं। ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं। इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निवैश्वानरः.....' ( १।२।१४ ) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धाग्नि, काष्ठाग्नि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा( चिता )ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' ( ३।५।२ ) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है। तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....' ( ३।४।६४ ) से 'गरानलप्रयोगाच्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' ( ३।५।१०८ ) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नौस, पुष्पाढ्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अश्राव-काशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिब्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं। ( ३।६।१२५—१४९ )

(घ) 'शुकले शुभ्रशुचिश्येताः.....' क्रिमिरः सितलोहितः' ( ५।३।१०—५।३।२५ ) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों ( रङ्गों ) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ

वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो.....'( ५।३।२५ )से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक ( दो, तीन, चार और पांच ) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों ( स्वादों ) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' ( ५।३।४५ ) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है ।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्घाकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है ।

### आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले ( लगभग २२५ से भी अधिक ) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है । कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका । संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा । मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है ।

### आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया । फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया । उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया । इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया । ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे ।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्द्वगंकी सद्भावना एवं सहानु-भूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी । उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है ।

### प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धारण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी । इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका । किन्तु सुलतानगंज ( भागलपुर )में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० ( संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी ), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की । जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी । अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है । लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है । पाठकोंको इससे अधिक सौविध्य प्राप्त होगा । सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सीमाग्य प्राप्त होने जा रहा है।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका। अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास कहेगा।

### आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशानन्तक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही। 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है। चौखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झाजीको भूरिः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल ( चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विट्ठलदास गुप्त )को भी साशीर्वाद भूरिः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजोंके समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्नियन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतोभावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

'नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

'गच्छतः स्वल्पं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥'

इति शम् ॥

'गोविन्द-कुटीर'  
केसठ ( शाहाबाद )  
हरिप्रबोधिनी ११  
सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—

मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
( पर्याय-भाग : काण्ड १-५ )	२-१५८
( १ ) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
( २ ) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
( ३ ) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
( ४ ) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७

( ५ ) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्माध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१४९
( नानार्थभाग : काण्ड ६-८ )	...	१५९-२२४
( ६ ) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७९
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
( ७ ) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवल्लिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
( ८ ) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवस्त्रिङ्गाध्याय	...	
( अर्थवल्लिङ्गाध्याय )	...	२०८
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१०
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१३
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१५
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२१८
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२०
ग्रन्थोपसंहार	...	२२५
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमणिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

## वैजयन्तीकोषः

### अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।  
 ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥  
 प्रकार्याष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।  
 वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥  
 स्त्रीपुत्रपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।  
 नृस्त्री नृषण्डष्ण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥  
 समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।  
 लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥  
 यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।  
 विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥  
 स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुलिङ्गे ना पुमानिति ।  
 षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥  
 त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।  
 अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥  
 ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् क्वचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।  
 एकत्र सव पुलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥  
 इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।  
 प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥  
 सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।  
 समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥  
 न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।

## १. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।  
 सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥  
 अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।  
 देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥  
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।  
 आदिदेवा दिविषदो लेखा अदिति नन्दनाः ॥ ३ ॥  
 सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।  
 बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥  
 अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।  
 त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥  
 आजानजाः स्वतो देवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।  
 ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥  
 हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।  
 पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥  
 शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।  
 परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥  
 पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।  
 वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाही सरस्वती ॥ ९ ॥  
 विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।  
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिकुट्टिष्ठरश्वाः ॥ १० ॥  
 पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।  
 श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गी श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥  
 वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।  
 अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥  
 मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिरधोऽक्षजः ।  
 अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥  
 शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।  
 कालकुन्थो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥  
 पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।  
 कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥  
 आचारा वैष्णवी सूदमा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

आदिदेवाध्यायः १ ]

स्वर्गकाण्डः १.

३

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥  
 कौस्तुभोऽस्य मणिलक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।  
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं मुदर्शनम् ॥ १७ ॥  
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।  
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥  
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।  
 आदित्यो द्विपदस्तार्क्ष्यस्त्रिविक्रम उरुकमः ॥ १९ ॥  
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।  
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥  
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।  
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥  
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।  
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥  
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।  
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥  
 भद्राङ्को भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।  
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥  
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिघृत् ।  
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाग्रजः ॥ २५ ॥  
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।  
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥  
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।  
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥  
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।  
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेषुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥  
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।  
 ब्रह्मसुरनिरुद्धः स्याद्दृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥  
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।  
 अश्वो ह्यशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥  
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।  
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥  
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।  
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिल्लोकजिज्जिनः ।  
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥  
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।  
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥  
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वर्हस्त्रिकालदृक् ।  
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥  
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदमुतेन्दिरा ।  
 रमाब्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाञ्जुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥  
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।  
 सुपर्णातनयस्ताचर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥  
 पन्नगारिर्विष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।  
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥  
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।  
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥  
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।  
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥  
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।  
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥  
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलश्रीवस्त्रिलोचनः ।  
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥  
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।  
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्हंगायुधः ॥ ४३ ॥  
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।  
 भिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥  
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।  
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥  
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।  
 उमः कटप्रदिग्वासा भाण्डः षण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥  
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।  
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥  
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।  
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।  
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घुणः ।  
 पिनाकोऽजगवं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥  
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।  
 अथ क्रूरमाण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥  
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मा भृङ्गिरिटिः शला ।  
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥  
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।  
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥  
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।  
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥  
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।  
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिवाहनः ॥ ५५ ॥  
 स्वामो गाङ्गेयगौरैयब्रह्मचारिमहौजसः ।  
 षाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥  
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।  
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥  
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।  
 आर्योऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥  
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।  
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥  
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेश्विनी ।  
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥  
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।  
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥  
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।  
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥  
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।  
 चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥  
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।  
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहघपि ॥ ६४ ॥  
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः । ६४३  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचित्तायां वैजयन्तां  
 स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥



## लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्श्रवनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।  
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥  
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।  
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाट् सुराधिपः ॥ २ ॥  
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।  
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥  
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।  
 स्वाराड्भुक्षाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥  
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।  
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥  
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।  
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥  
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।  
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥  
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।  
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदन्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥  
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।  
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥  
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।  
 अश्वोऽस्य वृषणश्चः स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥  
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।  
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥  
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।  
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥  
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।  
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥  
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्मा समन्तभुक् ।  
 जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥  
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।  
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽभिरुदर्विः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥  
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।  
 कृपीटयोनिर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः स्रुग्जिह्वो हव्यवाहनः ।  
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥  
 वभिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वञ्चतिरञ्चतिः ।  
 जागृभिः सहुरिः सद्विर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥  
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराण्येषिराशिराः ।  
 तेजोऽपिस्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥  
 स्कन्धाभिः स्थूलकाष्ठाभिर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।  
 द्वागणस्तु करीषाभिर्मैघवह्निरिर्मदः ॥ २० ॥  
 कुदयभिर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।  
 सहरक्षा दवो दुध्रस्ताणैश्च क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥  
 क्रव्यात्तु प्रेतदाहाभिर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।  
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥  
 अपोनपात्तु यज्ञाभिः क्रत्वभिः स्यादपान्नपात् ।  
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥  
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।  
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽभिर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥  
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।  
 पृथिकृद्वर्त्महोमेषु पदहोमेष्वनीकवान् ॥ २५ ॥  
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।  
 ब्रह्मौदनाभिर्भरतो यविष्ठः सवनाहुतौ ॥ २६ ॥  
 महिमास्तु विवाहप्रिवैश्वदेवाभिरद्भुतः ।  
 व्रतान्ते बहुरभ्रादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥  
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।  
 धूमस्तरिर्मैघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥  
 शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृस्त्रियोः ।  
 भलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥  
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।  
 धूमवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥  
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुष्पो ना खट्वाङ्गश्चाथ संवरः ।  
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥  
 दीप्ताप्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।  
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाभिविद् ॥ ३२ ॥  
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥  
 यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।  
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥  
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।  
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥  
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।  
 पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥  
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।  
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥  
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।  
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥  
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।  
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥  
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।  
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः ऋत्यात्कठ्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥  
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।  
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्ख आशाराः ॥ ४१ ॥  
 अलक्ष्मीनिर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरान्तः ।  
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥  
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।  
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥  
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।  
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् प्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥  
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।  
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥  
 प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।  
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥  
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।  
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥  
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।  
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥  
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।  
 मरुद्गुह्यध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।  
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥  
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।  
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।  
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोभृङ्गानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥  
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।  
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥  
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।  
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥  
 रंहस्तरः क्ली प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।  
 कुबेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥  
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।  
 कैलासनाथश्चिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥  
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।  
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥  
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।  
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥  
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।  
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥  
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।  
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥  
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।  
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥  
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।  
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥  
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।  
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥  
 विद्याधरास्तु युचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।  
 पिशाचः स्यात्कापिशेयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥  
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।  
 नासत्यदस्रौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥  
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।  
 नासिक्यावाश्विनौ दस्रौ विश्वकर्मा युवर्धकिः ॥ ६ ॥  
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।  
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥  
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।  
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥  
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।  
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥  
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।  
 ईदृक्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥  
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।  
 सुधर्मा स्याद्देवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा ह्यः ॥ ११ ॥  
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।  
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्रयः ॥ १२ ॥  
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।  
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥  
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।  
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

२. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।  
 वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥  
 तारावर्त्माम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।  
 दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णा हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥  
 अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।  
 क्रमात् पूर्वादिदिङ्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥  
 लोकपालास्ततो प्राह्या दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।  
 आनेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥  
 मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षायपराजिता ।  
 कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥  
 ब्राह्मी तूर्ध्वोऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।  
 दिङ्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥  
 दिङ्मध्ये करिणीचारं दिग्गुग्मे मण्डपीठिका ।  
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥  
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।  
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥  
 करिण्योऽभ्रमुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।  
 ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥  
 अर्कः सूर्योऽर्थमा सूरौ द्वादशात्मा दिवाकरः ।  
 मार्तण्डः सविता भानुर्भानुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥  
 सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।  
 शुमणिर्हरिदश्वोऽद्रिरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥  
 युमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्पतिः ।  
 भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥  
 रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीतनुः ।  
 तर्षुर्मातृण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥  
 पासिर्दशानो रात्रिद्विट् प्रभाकरविभाकरौ ।  
 खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥  
 चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।  
 आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषडम्बरः ॥ १५ ॥

घृष्टिपादमयूखांशुस्तान्ध्योद्योगंगमस्तयः ।  
 किरणोस्रौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥  
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।  
 शतत्रयं हिमोत्सर्गं तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥  
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।  
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।  
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥  
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।  
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥  
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।  
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माध्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥  
 आलोकस्तु प्रभा भा रुद्रुचिदीधितिदीपयः ।  
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥  
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।  
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥  
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विद्युः ।  
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥  
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।  
 ओषधीशो निशाकेतुर्मुगलत्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥  
 हृद्यांशुरंशुरञ्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।  
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथासुखः ॥ २६ ॥  
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याप्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।  
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥  
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।  
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥  
 अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।  
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥  
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।  
 उपप्लवोपरागौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥  
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।  
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥  
 कर्षको रुधिरौ भौमः प्रव्याप्तोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥  
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।  
 गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥  
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।  
 तिर्यग्मान्यसुराचार्य उशाना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥  
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।  
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥  
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।  
 स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥  
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कृशाः ।  
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥  
 तारा भं रात्रिजं विष्ण्यं सन्नक्षत्रमुडुर्न ना ।  
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥  
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इत्वला मताः ।  
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥  
 निष्ठया स्वाती विशाखेतु राधे आर्द्रा तु कालिनी ।  
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥  
 मन्दागाश्च धनिष्ठाश्च भरण्याऽपभरणीषु योग्याश्च ।  
 ज्येष्ठा ज्येष्ठप्री स्यात्प्रोष्ठपदाः पुंस्त्रियोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥  
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्चयुजावाश्वक्रिन्यौ च ।  
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्व्यवस्थितम् ॥ ४२ ॥  
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिनि स्त्रियश्च ताः ।  
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूम्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥  
 अनूराधास्तु पुंभूमिनि शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।  
 वीध्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥  
 त्रिवीथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।  
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥  
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।  
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्तत्तस्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥  
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।  
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥  
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।  
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।  
 ऐरावतं जारद्वं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥  
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।  
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ५० ॥  
 पूर्वपश्चिमराशयधौ सन्दालवल्लयौ क्रमात् ।  
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ५१ ॥  
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्तुटिः ।  
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ५२ ॥  
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।  
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५३ ॥  
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।  
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५४ ॥  
 त्रिंशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।  
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५५ ॥  
 पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।  
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५६ ॥  
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।  
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५७ ॥  
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्योत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।  
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५८ ॥  
 बह्वथस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।  
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५९ ॥  
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।  
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्यृतुषु क्रमात् ॥ ६० ॥  
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।  
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैमरथी हि सा ॥ ६१ ॥  
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।  
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ६२ ॥  
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।  
 छदो व्यवधिरन्तर्धिवरणं चापवारणम् ॥ ६३ ॥  
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छ्रादनानि च ।  
 दिनादौ प्राहपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६४ ॥  
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रूस्तु विकालकः ।

सायाह्नोऽप्यपराह्नोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६५ ॥  
 साम्बाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्वर्धरात्रकः ।  
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६६ ॥  
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।  
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६७ ॥  
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषानुषः ।  
 व्युष्टं विभातं प्रत्युषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६८ ॥  
 काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।  
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६९ ॥  
 पक्षतिश्चाथ पाटूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।  
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शाऽमावास्यमावसी ॥ ७० ॥  
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।  
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ७१ ॥  
 पित्र्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।  
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ७२ ॥  
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।  
 पर्वणी पञ्चदशयौ द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७३ ॥  
 आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।  
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७४ ॥  
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।  
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७५ ॥  
 आपाढी कृत्त्रिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।  
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७६ ॥  
 वत्सरान्ता त्वरिभ्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।  
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७७ ॥  
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।  
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७८ ॥  
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।  
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७९ ॥  
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।  
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ८० ॥  
 ज्यौतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।  
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ८१ ॥

सहस्ये स्यु स्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।  
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फाल्गुनिकफाल्गुनौ ॥ ८२ ॥  
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।  
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राघ उच्छुनः ॥ ८३ ॥  
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।  
 ते शुक्रे स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥  
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।  
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥  
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।  
 क्लीबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥  
 हेमन्तः प्रसवो लोध्रः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।  
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥  
 पुष्पकालोऽपीधमस्त्री श्रीधमस्त्वाखोर ऊष्मकः ।  
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥  
 प्रावृड् वार्षी भूमिन् वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।  
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥  
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।  
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥  
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।  
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेताग्नेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥  
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयी पुण्यो भर्भरकः कलिः ।  
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥  
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।  
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥  
 तद्रात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।  
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥  
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः । ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-  
 मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

## मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।  
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥  
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुमुदिरोऽम्बुभृत् ।  
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥  
 इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।  
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥  
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।  
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीना शतहृदा ॥ ४ ॥  
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।  
 गर्जितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्लादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥  
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशक्तिर्न षण् ।  
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशक्तिर्न षण् ॥ ६ ॥  
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्र्यम्भस्तः कणः ।  
 घनोपलस्तु करकः पुञ्जिका मचटीति च ॥ ७ ॥  
 विप्रुट् स्त्री पृषतो विन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।  
 अनावृष्टिरवप्रादो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥  
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।  
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥  
 कुहिदोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

## खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।  
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥  
 विहङ्गमो विविहगो विहङ्गो नभसङ्गमः ।  
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥  
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।  
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥  
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।  
 पक्षिपोतस्तु चिल्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥  
 गृह्याश्लेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।  
 हंसो मरालो नीलाक्षश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥  
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।  
 सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥  
 क्षीराशाश्राप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।  
 मलिनैर्मल्लिकाक्षस्तैर्धातृराष्ट्रैः सितैतरैः ॥ ७ ॥  
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।  
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥  
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।  
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राहयाह्वयः ॥ ९ ॥  
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।  
 बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥  
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्वाटिः शराटिका ।  
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥  
 दात्यूहश्चाथ शकटात्रिले प्लवपरिप्लवौ ।  
 अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥  
 कुक्कुटो दीर्घवाग्दक्षः शिखी चूलिक आरणी ।  
 कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥  
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।  
 पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।  
 आत्मघोषो महानेभिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥  
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नाडिजङ्गोऽप्रहृष्टकः ।  
 धूलिजङ्गोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥  
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्गः करट इत्यपि ।  
 कृष्णकाको वृद्धकाक पेन्द्रः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥  
 धूङ्गणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।  
 बलिभुक् कलविङ्गश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥  
 कलविङ्गस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।  
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥  
 श्येनायां प्राचिका चित्रपत्ते शरुकपिञ्जलौ ।  
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥  
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।  
 उल्लकेटी हिका स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥  
 उल्लकः पेचकः कोण्टः काकारिर्हरिलोचनः ।  
 नक्तञ्जरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥  
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।  
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥  
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुमोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।  
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥  
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।  
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥  
 पात्रं तु कुण्डूणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।  
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥  
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।  
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥  
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुत्यः स तु मान्धीलवो महान् ।  
 आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥  
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चापो राजविहङ्गमः ।  
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥  
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।  
 दाक्षायश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥  
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥  
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।  
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥  
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।  
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥  
 क्रौञ्चस्तु क्रुड्ङ्थोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।  
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥  
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।  
 चकोरस्तु चलच्चञ्चुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥  
 कृकरो त्वथ्यकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।  
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावलः ॥ ३६ ॥  
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।  
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥  
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्करो वर्तनप्रियः ।  
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥  
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।  
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥  
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णायकवर्तकाः ।  
 लावकुक्कुटहारीतजीघञ्जीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥  
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।  
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥  
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिणमधुपालिनः ।  
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥  
 इन्दिन्द्रो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।  
 शित्पुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥  
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।  
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥  
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।  
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥  
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।  
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥  
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।  
 निशामणिर्भान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी म्नीरिका चीरी भिङ्गिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।  
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥  
 छदः पत्रो गरुड्राजश्छदनं च तनूरुहम् ।  
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥  
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः स्तुपाटिका ।  
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्याऽमन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥



शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।  
निर्हादो रवणो नादो द्वेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥  
कणिर्हादो रसो ध्रुणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।  
गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥  
कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।  
क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥  
रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।  
वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्घ्री स्त्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥  
घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।  
तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥  
बुक्कनं श्वृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।  
वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥  
बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।  
काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥  
डक्कनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।  
पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥  
विष्फारो धनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।  
प्रणादस्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥  
स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।  
माजना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥  
वाणं हुडुक्कहिक्कायां भेरीनादे तु टट्टरः ।  
क्वणनं क्वणितं क्वाणो निक्वाणो निक्वणः क्वणः ॥ ११ ॥  
वीणायाः क्वणतेः प्रादेः प्रक्वाणप्रक्वणादयः ।  
स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥  
गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।  
समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥  
अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।  
एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥  
कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥  
शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।  
सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥  
अनिर्बद्धं तूच्चावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।  
अनृते वितथालंकावाहतं तु मृषार्थके ॥ १७ ॥  
अम्बूकृतं सनिष्टीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।  
कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥  
छलवाक्तु निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।  
क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥  
निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।  
विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥  
निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।  
अस्त्रियौ वर्णमर्षं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥  
आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।  
अराणर्णा मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥  
सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्जिका ।  
उपसम्भाषणं साम्नि तत्तूपच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥  
धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।  
विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥  
आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।  
संवादनं वाचिकं च बलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥  
लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।  
भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूक्तं वचः ॥ २६ ॥  
कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।  
चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥  
उद्धूमस्तु कौरक्या विगर्वा गर्वहारिका ।  
लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥  
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।  
काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥  
प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपहवः ।  
अपठ्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥  
हकारामन्त्रणाह्वानं संहृतिर्बहुभिः कृता ।  
अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशपोऽभिशंसनम् ।  
 शापोऽधिज्ञेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥  
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरुक्षणम् ।  
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥  
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।  
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुलं प्रति ॥ ३४ ॥  
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।  
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥  
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।  
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥  
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।  
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥  
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।  
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥  
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।  
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहूदितम् ॥ ३९ ॥  
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहृतिः ।  
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥  
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।  
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥  
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।  
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ६ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

### ३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरुर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।  
 क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः द्वा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥  
 धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।  
 वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥  
 रमा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।  
 अब्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥  
 अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।  
 रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यवनिर्बरा ॥ ४ ॥  
 द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।  
 नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥  
 तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।  
 हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥  
 इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।  
 भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥  
 वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकारगन्धिकौ ।  
 उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥  
 ततो हिरण्मयं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।  
 कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥  
 जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।  
 लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना ॥ १० ॥  
 प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।  
 मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥  
 अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।  
 एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥  
 मालं मैतं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।  
 अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥  
 अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥  
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधि ।  
 पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥  
 मलयद्वीपमब्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।  
 मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥  
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।  
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥  
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।  
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥  
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।  
 पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥  
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।  
 इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥  
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।  
 स्त्रियो वरेन्द्री स्यावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥  
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।  
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥  
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।  
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥  
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हरुष्कराः ।  
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥  
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।  
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥  
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।  
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥  
 टर्कवादीककाश्मीरतुरुष्केषु ससिन्धुषु ।  
 बाह्लीका बाह्लिकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥  
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।  
 अप्यन्ये पारदाः किञ्जाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥  
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।  
 प्राग्योतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥  
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्यावस्ती तु परञ्जका ।  
 राढा तु सुद्धाः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।  
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥  
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः सारवा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।  
 विन्ध्यान्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥  
 तत्र पाण्ड्याः पाण्डियाः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।  
 चोलाः स्युरूपलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥  
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।  
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥  
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।  
 अथेमे मलदाद्याख्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥  
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।  
 त्रैपुरास्तु हहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥  
 दाशाणीः स्युर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।  
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥  
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।  
 सात्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषां त्ववयवाः परे ॥ ३८ ॥  
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।  
 हुलिङ्गाः शारदण्डाश्च षट् सात्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥  
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।  
 मेकलाः कुसटाः सैरा जाङ्गलाः पृथ्वो वृकाः ॥ ४० ॥  
 पटञ्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।  
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥  
 मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।  
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नाजाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥  
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।  
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥  
 सनलो नडवलो नडवाब्ध्यार्करः शर्कराधिकः ।  
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥  
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृतः ।  
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥  
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वांस्तु सुराजनि ।  
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥  
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।  
 पद्यः पदाङ्कयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।  
 शतमूर्धा वामद्वारो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी स्तुतिः ।  
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥  
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनि ।  
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनि ॥ ५० ॥  
 वृतिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।  
 संक्रमस्तिरिस्तुत्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥  
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।  
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥  
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।  
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥  
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।  
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्विर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥  
 अरन्निर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।  
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥  
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।  
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥  
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीकम् ।  
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥  
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।  
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥  
 दशहस्तः पितृनत्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।  
 स प्राणेशनिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥  
 निवर्तनं तु तिसृभौ रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।  
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ट्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥  
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।  
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥  
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।  
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥  
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।  
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

### शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः द्दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।  
 अहार्यगोत्रकुट्टीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥  
 बन्धाकिः फलिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।  
 सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिककुच्च सः ॥ २ ॥  
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।  
 मलये त्रिकलापाटो विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥  
 हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।  
 मायवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥  
 रजताद्रिस्तु कैलासो दराद्रिर्ग्रहितश्च सः ।  
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥  
 उदयस्तूद्याद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।  
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥  
 उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।  
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥  
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृपत् ॥ ८ ॥  
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।  
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरूर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥  
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।  
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥  
 गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।  
 रोचनी रञ्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥  
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिक ।  
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥  
 शुक्लधातौ पाक्शुक्ला कठिनी कक्खटी खटी ।  
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥  
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमद्वयम् ।  
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥  
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥  
 शिलाजतु तु गौरैयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।  
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥  
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।  
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥  
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।  
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥  
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।  
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥  
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्बुरम् ।  
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रिगौ ॥ २० ॥  
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।  
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥  
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।  
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥  
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।  
 रजतं त्रापुपं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयसम् ॥ २३ ॥  
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।  
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥  
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।  
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पीतलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥  
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।  
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥  
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।  
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥  
 गुरुज्येष्ठं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।  
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥  
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।  
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥  
 यवनेष्टं समोल्बकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।  
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥  
 रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।  
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।  
 गुरुपत्रं तमरकं घनं मलवणं रजः ॥ ३२ ॥  
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।  
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालद्वानि च ॥ ३३ ॥  
 स्त्री कुटिर्ना पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।  
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रूक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥  
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।  
 रसकम्त्वयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥  
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।  
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं पण् ॥ ३६ ॥  
 स्फटिकाऽर्को रविप्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।  
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुसामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥  
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चम्बकभ्रामकादयः ।  
 गारुत्मतं मरकतमश्मगभं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥  
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।  
 विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥  
 इन्द्रनीलं महानीलं वैदूर्यं बालवायजम् ।  
 कुरुविन्दास्तु कुल्माषा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥  
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।  
 रसाञ्जनं तार्दयशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥  
 स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।  
 तुष्याञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥  
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।  
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्पूरीति च ॥ ४३ ॥  
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।  
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥  
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

## वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।  
 कन्दकं कुन्दिलं वाक्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥  
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।  
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने अपि ॥ २ ॥  
 तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।  
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य लिङ्कुटः ॥ ३ ॥  
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेह्ययी वाटी फलाय चेत ।  
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्रुर्विटपी विष्ट्रोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥  
 अलोकहो लभो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।  
 वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥  
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।  
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥  
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।  
 गुमिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥  
 बन्धयो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।  
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥  
 फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।  
 उःकुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥  
 फलमामं शलाटुः स्याद् वानं शुष्करं फलम् ।  
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कुरमस्त्रियौ ॥ १० ॥  
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।  
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥  
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिषु ।  
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥  
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।  
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्यी वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥  
 चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।  
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पाटितम् ॥ १४ ॥  
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।  
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।  
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥  
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।  
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥  
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।  
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।  
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥  
 गुच्छो गुलुच्छः स्तम्बको मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।  
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥  
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।  
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥  
 आश्वत्थमैजुदं प्लाक्षं नैयप्रोधं च बार्हतम् ।  
 वैणवं शैप्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥  
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।  
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥  
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।  
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥  
 आम्रे कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।  
 करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥  
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।  
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥  
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यप्रोधो बहुपाट्टः ।  
 श्रीवृत्ते पिप्पलोऽश्वत्थः प्लक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥  
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।  
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥  
 पलाशे किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।  
 आस्फोतो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥  
 बिल्वे मालूरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।  
 परिव्याधे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥  
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वञ्जुलो वेतसो रथः ।  
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिफलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।  
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥  
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।  
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥  
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुङ्कटी ।  
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥  
 छागे तु करुणो लक्षो मल्लिकाकुसुमप्रियः ।  
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥  
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।  
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्बकः ॥ ३६ ॥  
 न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।  
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥  
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्दद्याप्रपाच्च मधुच्छदः ।  
 सर्जेश्वकर्णः साले तु कार्प्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥  
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।  
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्जे बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥  
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।  
 स्त्रीप्रिये वञ्जुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥  
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।  
 रसाले वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥  
 दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्रवणः सरः ।  
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥  
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।  
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥  
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।  
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥  
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मिचर्मिकौ ।  
 पीलौ गुडफलः स्रंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥  
 अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।  
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वञ्जुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥  
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।  
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥  
 काञ्चनारोऽप्यार्ग्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।  
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽर्ग्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।  
 पिण्डीतके मरुवक इत्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४९ ॥  
 विचुलः पिचुलो राद्धः कैडर्यो विषपुष्पकः ।  
 काकर्दश्रद्धदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ५० ॥  
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।  
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ५१ ॥  
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।  
 तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ५२ ॥  
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।  
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५३ ॥  
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोद्धखलकं वरम् ।  
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छुदारो गृहद्रुमः ॥ ५४ ॥  
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।  
 उद्दालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५५ ॥  
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिश्रुः काक्षीवमोचकौ ।  
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिश्रुः सुभञ्जनः ॥ ५६ ॥  
 गुञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।  
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५७ ॥  
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।  
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५८ ॥  
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।  
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५९ ॥  
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।  
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ६० ॥  
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।  
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ६१ ॥  
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।  
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ६२ ॥  
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।  
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६३ ॥  
 मरुद्भवे विट्खदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।  
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६४ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चञ्चुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।  
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातप्रो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥  
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।  
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥  
 भावज्ञा सर्षपी स्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।  
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥  
 स्योनाके शोणकटवाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।  
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो भल्लुकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥  
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।  
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥  
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।  
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥  
 पारिभद्रे द्रुकिलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।  
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥  
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।  
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥  
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।  
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥  
 पनसे कण्टकफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।  
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥  
 निम्बे पार्वतकैडर्यद्वेषिच्छर्दनमाधिकाः ।  
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिक्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥  
 पिचुले भातुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।  
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥  
 धूर्द्धूरः काञ्चनाहोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।  
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥  
 कूसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।  
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥  
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।  
 एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥  
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।  
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥  
 तिन्तुडीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।  
 तिन्त्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।  
 हीने त्वञ्जिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥  
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।  
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥  
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।  
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्यपदरोहिणी ॥ ८४ ॥  
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।  
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको हुमः ॥ ८५ ॥  
 अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।  
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥  
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।  
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥  
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।  
 हस्तिकोलौ महाघोण्टा गोपघोण्टा महाफला ॥ ८८ ॥  
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।  
 सृगालकोलौ हिंस्राऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥  
 काकस्थाल्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।  
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शाल्मलिर्न षण् ॥ ९० ॥  
 काष्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।  
 रोचनः शिशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥  
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।  
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥  
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।  
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥  
 जम्बूतनीलजम्बूतौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।  
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥  
 भङ्गातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुष्करः ।  
 कम्पिल्ले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥  
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।  
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥  
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातुपुष्पिका ।  
 स्नुषां समन्तदुग्धा स्नुग्वा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥



सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।  
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥  
 तुण्डिकेया रवा शीरा केसरा बदराफला ।  
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥  
 विषण्ण्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्टा ब्राह्मणयष्टिका ।  
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपर्ण्या स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥  
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेशुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ।  
 वासके त्वाटरूपः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥  
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रघर्षिणी ।  
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥  
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।  
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला दद्रुनाशिनी ॥ १०३ ॥  
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।  
 लतावृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥  
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।  
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥  
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।  
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥  
 ह्यपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।  
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥  
 कालमेष्ट्यां कृष्णफला वागूची वसुवञ्जिका ।  
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥  
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।  
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥  
 श्रीफल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।  
 प्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥  
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।  
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गिष्ठा काकजङ्गा विलोमिका ॥ १११ ॥  
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।  
 तृङ्घ्न्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥  
 प्रत्यक्छेप्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।  
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥  
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।  
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्र्वा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।  
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥  
 अजशृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाविके समे ।  
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥  
 वर्षा लङ्कायिका स्पृक्का मरुन्माला लता मरुत् ।  
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥  
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।  
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकटिञ्जरौ ॥ ११८ ॥  
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।  
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥  
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।  
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥  
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतञ्जी देवदुन्दुभिः ।  
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥  
 कालपर्ण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।  
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥  
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।  
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥  
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।  
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥  
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।  
 रोदन्त्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥  
 यासो यवासो दुस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।  
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥  
 सर्पदंष्ट्रयमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।  
 वाटपुष्प्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥  
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।  
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥  
 ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।  
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥  
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसङ्घह्नोऽपि च ।  
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बुषा विद्धकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।  
 गुड्ढ्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥  
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।  
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लिका ॥ १३२ ॥  
 दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः ।  
 गवाद्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥  
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु ।  
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥  
 नीलायां तु महाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।  
 जिङ्ग्यां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लिका ॥ १३५ ॥  
 पृथिनपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गली पदपर्णिका ।  
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥  
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।  
 नागर्यां केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥  
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।  
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥  
 गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।  
 ज्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥  
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लिकी ।  
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लिका ॥ १४० ॥  
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।  
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥  
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।  
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥  
 सुदर्शनायां चक्राङ्गा दध्याली वृषपर्ण्यपि ।  
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीश्रा मधुश्च सा ॥ १४३ ॥  
 चर्मपर्ण्या तु शाङ्गीष्ठा सुताहायामुपोदिका ।  
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्लरी ॥ १४४ ॥  
 मण्डूकपर्ण्या भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।  
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥  
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लिका ।  
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥  
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।  
 तुण्डिकेयां रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्कारी बदर्यञ्जलिकारिका ।  
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥  
 कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।  
 पटुञ्चिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्कुटौ ॥ १४९ ॥  
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।  
 मारिषे जीवशाकः स्यादत्राल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥  
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।  
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥  
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।  
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।  
 छत्राकश्च सिलिन्धश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥  
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।  
 प्रवालो वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥  
 हरिपर्णे मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।  
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥  
 मत्स्याद्यां शालशालीनौ पत्तरो लोहमारकः ।  
 अगस्त्ये मुनिमार्जारवगस्तिर्वङ्गसेनकः ॥ १५६ ॥  
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।  
 कपित्थपत्रयधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥  
 प्रपुष्पाडे त्वेडगजो दद्रुश्चक्रमर्दनः ।  
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥  
 जाली पटोली भण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।  
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥  
 ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।  
 अथ जिङ्गी दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥  
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।  
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥  
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।  
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥  
 चाङ्गेर्यां चुक्रिका दन्तशाठाम्बष्ठांमललोप्यपि ।  
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कटिल्लकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युखल्लयम्बुवल्ली रञ्जनवल्लयपि ।  
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥  
 बृहत्कर्कोटके त्वैहो हस्तिकर्कोटको बली ।  
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥  
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।  
 तिक्ते राजपटोलश्च भीरुस्त्वर्वारुकर्कोटः ॥ १६६ ॥  
 चोदन्युर्वारुवालकयोऽप्यल्पसा राजकर्कोटिः ।  
 तुम्ब्यां पिण्डफलालाबूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥  
 इक्ष्वाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।  
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कालिचित्रलौ ॥ १६८ ॥  
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेल्लाणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।  
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कारुर्धनवासकः ॥ १६९ ॥  
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।  
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥  
 मुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।  
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥  
 चिद्रिते पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्रिता ।  
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥  
 अथो गवाद्यां गोजुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।  
 वृषा वारवुषा रम्भा काष्ठीलानंशुमत्फला ॥ १७३ ॥  
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।  
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥  
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साष्ठी काष्ठी कदल्यसौ ।  
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥  
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।  
 वैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥  
 संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।  
 धात्री कर्षफला तिष्या सेठ्याध्यण्डा भटा दृढा ॥ १७७ ॥  
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।  
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥  
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गिष्ठा रक्तिका वरा ।  
 षूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥  
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्त्यदनी नखी ।  
 जङ्गा तिक्ता च दक्षा च सा शुक्रा चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।  
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥  
 मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।  
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥  
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।  
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥  
 देवमाल्यां धरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।  
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोद्भवा ॥ १८४ ॥  
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।  
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥  
 सुगन्धा प्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।  
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥  
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।  
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥  
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।  
 महासहायामम्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥  
 शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।  
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥  
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।  
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥  
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।  
 कुन्दे माष्यः शुक्रपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥  
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।  
 चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥  
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।  
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥  
 वसुभट्टः पाशुपत एकाग्रिलोऽम्बुको वसुः ।  
 नन्द्यावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥  
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्ममादयोऽपि च ।  
 विदार्या भूमिकुम्भाण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥  
 कोष्टिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिकेक्षुविदारिका ।  
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारद्यां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।  
 गोलोभ्यां जटिलोभ्रोमगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥  
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षडग्रन्था जललम्बिका ।  
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा काशमीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥  
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।  
 महोदरी वरारोहा नादेयी वलयो वरम् ॥ १६९ ॥  
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।  
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥  
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिप्लवम् ।  
 कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥  
 बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।  
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥  
 शैलमूलं तु कञ्चोरं पलाशो हिमजा जटी ।  
 अशोभ्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥  
 खञ्जेऽरिष्टो गुहोच्छिष्टो रसोनो गुञ्जनः कटुः ।  
 कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥  
 जीर्णकञ्जं पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।  
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फरुण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥  
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गुञ्जनो गर्जनो गुजः ।  
 लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥  
 फरुण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।  
 गुञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥  
 कन्दं त्वस्त्री चित्रदण्ड उत्ल्लः कण्डूरसूरणौ ।  
 अशोभ्रो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥  
 शकटश्चाथ कालार्चं नूतनं वेष्टितं दलम् ।  
 शोधशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥  
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ठ्यां मालुवा स्त्रियाम् ।  
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥  
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।  
 रोचनी रञ्जनी पीता पिञ्जा पिण्डा मनशिशला ॥ २११ ॥  
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।  
 दाव्यां दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥  
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।  
 कटक्कटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटूकटम् ॥ २१३ ॥

कटुभृङ्गं शृङ्गिवेरमार्द्रमार्द्रकमस्त्रियौ ।  
 वेणौ तु वंशकर्मरौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥  
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।  
 चपश्च तेषु पवनोद्घृतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥  
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।  
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥  
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।  
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥  
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।  
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगो तु योजनः ॥ २१८ ॥  
 भूपूगो लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।  
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥  
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।  
 दाक्षिणात्योऽपफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥  
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।  
 रक्ते स्वर्णोऽग्निक्श्चाथ परिक्रोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥  
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।  
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥  
 हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।  
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥  
 ताल्यां वृढदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।  
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥  
 सवेणवस्ते त्वक्सारास्तृणानीक्षुयवाद्यः ।  
 इक्षुर्वृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥  
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।  
 इक्षुभेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥  
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।  
 कुशे मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥  
 लताकुशे तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।  
 शरो मुखो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥  
 मुञ्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्रहमेखलः ।  
 उत्ल्लकस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

वालकेश्यां वृद्धदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।  
 पुंमूत्रि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥  
 स्याद्वीरणं वीरवृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।  
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥  
 नियुतस्तम्बजट्टदैत्यगौरकुदानवम् ।  
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥  
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।  
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका वृणम् ॥ २३३ ॥  
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तुणं पुरम् ।  
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालावृणकभूस्तृणे ॥ २३४ ॥  
 पुञ्जिलस्तु वृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।  
 शष्पं बालवृणं शादः सर्वं तु वृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या  
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥

### पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।  
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः ॥ १ ॥  
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिर्हरितो हरिः ।  
 हलीचणस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुमृगर्हिसकः ॥ २ ॥  
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारश्चन्द्रकी मृगात् ।  
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥  
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्ति लित्सकमृगादनौ ।  
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥  
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।  
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥  
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।  
 पङ्कक्रीडनकः पोथी किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥  
 भङ्गूको दीर्घरोमर्धो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।  
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥  
 वार्ध्राणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।  
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥  
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।  
 जरन्तः कलुषः पोथी वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥  
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशालालिकः ।  
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥  
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।  
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥  
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।  
 यज्ञाङ्ग एणस्तात्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥  
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।  
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥  
 रुरुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।  
 रोहिट्टश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥

न्यङ्कुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोन्नतः ।  
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥  
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।  
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥  
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूश्चमसृणैर्घनैः ।  
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥  
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोश्चकर्षुरैः ।  
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥  
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।  
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥  
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।  
 सामूना तु समूर्नुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥  
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोश्चमृदुरोमिका ।  
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥  
 मरुजा तूच्चमसृणमृदुपाण्डुरोमिका ।  
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसंमिता ॥ २२ ॥  
 चनका तु चमूर्नुर्ना सिताभा यदि वासिता ।  
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥  
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोश्चघनरोमकः ।  
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥  
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।  
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥  
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।  
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥  
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।  
 कृतारुस्तु त निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥  
 रुचुस्तु शुक्लो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।  
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥  
 सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्ना चमरी न षण् ।  
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥  
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूच्चजानुकः ।  
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥  
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च प्राम्यैश्चैव गवादिभिः ।  
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।  
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥  
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाह्वारणः ।  
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥  
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।  
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥  
 शालिजादस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।  
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥  
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।  
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥  
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्यना शलली शलम् ।  
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥  
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।  
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥  
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगृण्डवौ ।  
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥  
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।  
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गूलोऽसिताननः ॥ ४० ॥  
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विवङ्को वानरो रोहिताननः ।  
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्घ्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥  
 अनड्वाह्यनड्हुस्रा तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।  
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥  
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।  
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥  
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छ्रीतला वायुसम्भवा ।  
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥  
 वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।  
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वञ्जुला ॥ ४५ ॥  
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।  
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥  
 पशौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।  
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वष्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।  
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥  
 पीनस्तनी तु पीनोद्धनी सुखदोद्या तु सुव्रता ।  
 दुःखदोद्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥  
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।  
 घेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥  
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्धुषाकान्ता तु सन्धिनी ।  
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥  
 विषाणी वृषभः शृङ्गी वाहो गौरक्षधूर्तिलः ।  
 उक्षा गौर्धुषलोऽनड्वान् वाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥  
 सौरभेयो बलीवर्दो बाडवेयश्च शाकरः ।  
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥  
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्धान् मदकोहलः ।  
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥  
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्रवः ।  
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥  
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपाशर्वगः ।  
 स्थूरी पृष्टयः पृष्टवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥  
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।  
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोदृषु ॥ ५७ ॥  
 प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकादयः ।  
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥  
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।  
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥  
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।  
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥  
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।  
 गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥  
 छगस्तु छगलशृङ्गागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।  
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥  
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।  
 इलिकस्तु वनच्छागो वालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेधे शृङ्गिणसम्फालवृष्टिणपेत्वहुलुहदाः ।  
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥  
 मेषी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।  
 खररासभचक्रीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥  
 रूक्षस्वरो धूक्षकर्णो नेमिर्भारसहः शलः ।  
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥  
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाप्रीवः क्रमेलकः ।  
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥  
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।  
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥  
 दीर्घनादी गृहमृगः कुकुरः क्रोधनः शुनिः ।  
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डरः शुनः ॥ ६९ ॥  
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।  
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥  
 शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।  
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥  
 जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।  
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥  
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।  
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥  
 पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।  
 खुरः शफः शको विष्ठा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥  
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

## मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।  
द्विपादो नहुषा गोधा त्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥  
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।  
उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्त्यजातयः ॥ २ ॥  
एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।  
सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥  
वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।  
एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥  
अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।  
विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥  
अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।  
आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥  
भृज्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गारम् ।  
वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥  
चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।  
कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥  
नटी भटं खषी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।  
पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥  
रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।  
सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥  
पुल्कसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।  
एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥  
सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।  
अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥  
उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।  
तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुलकसी बकम् ॥ १३ ॥  
चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री भूषा परम् ।  
श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥  
सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।  
कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।  
वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥  
शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकं ततः ।  
कटकमा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥  
अम्बष्ठी कोहलं रन्धी घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।  
कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी सटम् ॥ १८ ॥  
कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।  
चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥  
रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।  
श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुकं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥  
मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी किटम् ।  
घर्घरी घर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूनवः ॥ २१ ॥  
चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।  
वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥  
चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।  
निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥  
पुल्कसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।  
वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥  
भृज्जकण्ठी कुवाटुकं करणी कालशीनकम् ।  
सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्धी रथवारकम् ॥ २५ ॥  
नटी भ्राणञ्जकं वाटी विभण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।  
कैवर्ती धीवरं रन्धी कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥  
कारावती सुललिकं कुवाटुकी वशामखम् ।  
चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥  
वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।  
एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥  
निषादाद्ब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।  
वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः क्वचित् ॥ २९ ॥  
कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।  
श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥  
वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।  
रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥



आयोगवी तु कैवर्त निषादान्मार्गरश्च सः ।  
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥  
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।  
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गौरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥  
 अम्बष्ठी बेनमुष्ठी तु गर्गरं शनकी हनुम् ।  
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥  
 निषादी मेदमन्त्रं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।  
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥  
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।  
 वैश्या ह्यण्डभटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥  
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।  
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥  
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।  
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥  
 श्वपचं सैव चण्डालाश्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।  
 मागधात्ताम्रजीवं सा तक्षार्णं करणादसौ ॥ ३९ ॥  
 आयोगवाश्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।  
 माहिष्याश्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥  
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।  
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥  
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।  
 निषादी धिग्वनाश्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥  
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।  
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुङ्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥  
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिञ्जकम् ।  
 निष्ट्याच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥  
 उष्ठी क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।  
 सोपाकं पुलकसी निष्ट्याश्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥  
 अन्धी तु शबरान्निष्ट्यं भिन्नं सा निष्ट्यपूर्विका ।  
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ट्यपूर्विका ॥ ४६ ॥  
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ट्यपूर्विका ।  
 पुलिन्दश्वचौ निष्ट्यात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥  
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाडुकम् ।  
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।  
 डोम्बी खषं सैव निष्ट्याद् विभेणं हड्डिकं खषी ॥ ४९ ॥  
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।  
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वाराणकम् ॥ ५० ॥  
 श्वपाकं क्षत्रुरुष्ठी केचिदाहुविपययम् ।  
 चूचुं किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ५१ ॥  
 निष्ट्यात् वरुटी मद्गुं बल्लारं तु किरातिका ।  
 निषादपुलकसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥  
 विप्रा व्रात्याद् भृञ्जकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।  
 अध्यूटा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥  
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूटा द्विजन्मना ।  
 लिच्छिविं क्षत्रिया व्रात्याज्जल्लं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥  
 व्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।  
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥  
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।  
 वैश्या व्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥  
 सुधन्वाचार्यं एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।  
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥  
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।  
 व्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा व्रात्याच्छूकण्टकम् ॥ ५८ ॥  
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।  
 व्रात्या व्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥  
 अवरेटः सवर्णायां जाराजातः सवर्णकात् ।  
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तृर्यसति गोलकः ॥ ६० ॥  
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।  
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥  
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।  
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो प्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥  
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्करस्तु गोलकः ।  
 शूद्रकुण्डो मालवको घासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥  
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।  
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नाम्ना केषाञ्चिद्दूयते ॥ ६४ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।  
 मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥  
 चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।  
 अम्बष्ठो भृज्जकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥  
 कट्याजीवात्स दौष्णन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।  
 कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥  
 नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।  
 चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कार्त्वीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥  
 शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।  
 निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥  
 स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।  
 जीवन् सवर्णां नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥  
 महानर्मा च मद्गुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।  
 अश्वपण्यस्त्वाश्विकारुयः सोऽश्वन्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥  
 उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्णन्तो मत्स्यघातनात् ।  
 निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुञ्जरग्रहात् ॥ ७२ ॥  
 पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।  
 धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥  
 करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।  
 चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥  
 रथकारो निधिप्रश्नचूतापणनिरूपणात् ।  
 रथकारो व्यालमृगहिंसावृत्तिरिति क्वचित् ॥ ७५ ॥  
 उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।  
 अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥  
 इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।  
 सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्कारादिकृत् ॥ ७७ ॥  
 सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।  
 वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥  
 मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।  
 मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकारिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥  
 वाप्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।  
 वणिकपथे मागधस्य वाग्भी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चुचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।  
 वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥  
 धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।  
 आयोगवः पुलकसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥  
 चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसस्त्वकान् ।  
 चण्डालो भल्लरीकक्षो वद्भीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥  
 स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।  
 स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥  
 क्षन्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुलकसो मद्यविक्रयात् ।  
 पैलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥  
 आयोगवस्तैजसकृद्भ्रमकृन्मणिवेधकृत् ।  
 स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥  
 अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा ।  
 स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥  
 पुलकसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।  
 लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥  
 एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।  
 गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुलकसाश्च ते ॥ ८९ ॥  
 रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।  
 आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥  
 शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुलकसाः ।  
 कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥  
 आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।  
 मेदानां चक्रवृत्तित्वं विण्मूत्रग्रहणोऽभ्रनम् ॥ ९२ ॥  
 आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।  
 मेदान्ध्रचूचुमद्गूनामारण्यपशुहिंसनम् ॥ ९३ ॥  
 मैत्रेयकः प्रशंसैन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।  
 पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥  
 कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।  
 कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥  
 मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।  
 योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।  
धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥  
वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।  
वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥  
वैदेह्यम्बष्ठजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।  
आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ १९ ॥  
नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वन्दिनौगमः ।  
शौखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृज्जकण्ठकः ॥ २० ॥  
मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।  
आवन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ २१ ॥  
ब्रात्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।  
खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ २२ ॥  
नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।  
भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ २३ ॥  
सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।  
भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ २४ ॥  
सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्ते भागवतश्च सः ।  
सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ २५ ॥  
श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।  
वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ २६ ॥  
श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।  
वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ २७ ॥  
गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।  
ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ २८ ॥  
शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।  
त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ २९ ॥  
पते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।  
चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ३० ॥  
ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।  
ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पष्टिर्हि जातयः ॥ ३१ ॥  
ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।  
आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ३२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।  
प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ३३ ॥  
शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।  
राजस्त्रीणां सूतिकानां द्वास्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ३४ ॥  
विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।  
दस्युम्लेक्षणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ३५ ॥  
म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।  
कार्या क्षत्रुप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ३६ ॥  
मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।  
तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ३७ ॥  
भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।  
अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ३८ ॥  
प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्रात्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।  
आनुलोमप्रतिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ३९ ॥  
वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।  
षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ ४० ॥  
रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।  
कैवर्तमेदभिज्ञाश्च सप्तैता अन्यजातयः ॥ ४१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।  
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडबश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥  
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।  
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥  
 आधानिकं पुंसवनं पौंसनमप्यथ गार्भिणम् ।  
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्मा मन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥  
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।  
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥  
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।  
 ओट्टितं त्वतिघृष्टं स्यात् पञ्चचीरोट्टितं पुनः ॥ ५ ॥  
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।  
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥  
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वट्टकृतिः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥  
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।  
 प्राजापरयः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥  
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।  
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥  
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।  
 जात्रिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणब्रुवः ॥ १० ॥  
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।  
 अधायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥  
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।  
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥  
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णा क्षतव्रतः ।  
 शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥  
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रयमौ व्रते ।  
 अग्नीन्धनं त्वग्निकार्यमाग्नीध्री चाग्निकारिका ॥ १४ ॥  
 प्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तश्चतुष्टयम् ।  
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽव्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।  
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥  
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।  
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥  
 सौत्री तु घटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।  
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥  
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।  
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उद्धखलः ॥ १९ ॥  
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।  
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्घृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥  
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।  
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥  
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।  
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)  
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठानात् ॥ २२ ॥  
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।  
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥  
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु स ब्रह्मचार्यपि ।  
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥  
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।  
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥  
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिरिहाञ्जलिः ।  
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥  
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।  
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥  
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।  
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥  
 सीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।  
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥  
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।  
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥  
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदभञ्जना ।  
 नामशास्त्रे निघण्टुर्नो सर्वविद्या कदन्निका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।  
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥  
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।  
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥  
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।  
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥  
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।  
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥  
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावस्तानकाः ।  
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शषसाः सहाः ॥ ३६ ॥  
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिध्वनुनासिकः ।  
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥  
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।  
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रवादनम् ॥ ३८ ॥  
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।  
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥  
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।  
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥  
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत् ।  
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नक्षारी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥  
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालितान्नकः ।  
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूढे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥  
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।  
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥  
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।  
 स्यादग्रदिधिषुश्चासौ स्यादग्रदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥  
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रदिधिषूरसौ ।  
 पुनरूढा पुनर्भूः स्याद्दूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥  
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।  
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥  
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।  
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।  
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥  
 हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।  
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥  
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।  
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरुक् ॥ ५० ॥  
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मद्दूषिका ।  
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥  
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।  
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥  
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।  
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥  
 विकटाद्यास्तु नोद्वाहाः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।  
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥  
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।  
 कन्यादाने तु यदत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥  
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।  
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुत्तु लुर्मङ्गलध्वनिः ।  
 धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥  
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशो मङ्गलाह्निकम् ।  
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुककूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥  
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।  
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥  
 तद्ग्रन्थिस्त्ववका धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।  
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्हृद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥  
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।  
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥  
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।  
 मधुपर्कस्तु निष्टङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥  
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।  
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।  
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥  
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।  
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽहि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥  
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।  
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥  
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।  
 त्रिष्वतिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥  
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।  
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥  
 अथान्याधानमाघेयमाधानं चाग्निस्ङ्ग्रहः ।  
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥  
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।  
 वीरोऽभ्रप्रमुखास्तत्र वीरोऽभ्रो न जुहोति यः ॥ ७० ॥  
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।  
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्च्वापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥  
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।  
 जातमात्रगृहीताग्निः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥  
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।  
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नमः पुनरनमिकः ॥ ७३ ॥  
 पर्याधाताऽग्रजेऽनमौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।  
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥  
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।  
 सुत्वा त्वभिषवादूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥  
 यष्टा तु यजुरादिष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।  
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥  
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।  
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥  
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।  
 यतस्त्रुचो देवयवो वाघतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥  
 अश्वर्युद्धानृतृतारो ब्रह्मा चेति महत्विजः ।  
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तद्धितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।  
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥  
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।  
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥  
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।  
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥  
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्षकः ।  
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥  
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।  
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरर्गणाः ॥ ८४ ॥  
 ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।  
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥  
 सर्वेऽमी यज्ञकृतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।  
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥  
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।  
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥  
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वान्येऽन्त्ये च कर्मणि ।  
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥  
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।  
 स्त्रुचां सम्मार्जनं शुद्धिः स्तुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥  
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।  
 स्यादिधमप्रोक्षणं कार्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥  
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।  
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥  
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।  
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥  
 श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।  
 व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥  
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।  
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥  
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।  
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।  
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥  
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।  
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥  
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्नोष्णं संयुतं पयः ।  
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥  
 सान्नाद्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।  
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥  
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुहूरुपभृद्भुवा ।  
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याघारणः सुवः ॥ १०० ॥  
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।  
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥  
 चर्मः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वभ्रयोऽश्मसु ।  
 विघनो घनो मुद्रे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥  
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।  
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थायुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥  
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।  
 यूपमध्यं समादानं यूपान्नं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥  
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।  
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १०५ ॥  
 यूपे सप्तदशारत्नान्ननिर्मेथिकोऽधरः ।  
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥  
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।  
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीककरञ्जकौ ॥ १०७ ॥  
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।  
 संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥  
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।  
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥  
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।  
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥  
 चात्वालोऽस्त्री मृत्खनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।  
 शस्त्राण्युक्थानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।  
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥  
 स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।  
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥  
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपात्र्यानुपूर्व्यपि ।  
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥  
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।  
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥  
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।  
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥  
 हिंसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कार्मणम् ।  
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥  
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जनं ।  
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥  
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।  
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥  
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।  
 आशासनेऽर्थना याच्ना याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥  
 भिक्षा च सनिरङ्गी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।  
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥  
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।  
 उद्वन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥  
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।  
 यष्टिर्न ह्नी स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥  
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।  
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥  
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।  
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालभुक् ॥ १२५ ॥  
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।  
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालभुक् ॥ १२६ ॥  
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।  
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।  
 भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥  
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।  
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥  
 वर्षवातातपानङ्गे विभ्रदभ्रावकाशिकः ।  
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥  
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।  
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥  
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औल्लकोऽङ्गारशाकटे ।  
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्खलको व्युपः ॥ १३२ ॥  
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकर्तिकः ।  
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥  
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।  
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥  
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।  
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥  
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।  
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥  
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।  
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥  
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।  
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥  
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।  
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥  
 एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।  
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशानात् ॥ १४० ॥  
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।  
 त्रिसप्तमाहं पयःपानं क्वचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥  
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।  
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥  
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।  
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।  
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥  
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।  
 पारायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥  
 एकान्तरितमर्धाशं षष्ठकालेषु पाष्टिकम् ।  
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥  
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।  
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥  
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।  
 पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलामुष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥  
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।  
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं ब्रसी ॥ १४९ ॥  
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।  
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥  
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।  
 और्वशेयः कुम्भयोनिर्गस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥  
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।  
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥  
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।  
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥  
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।  
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥  
 याज्ञवल्क्यस्तु योगाञ्जिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।  
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥  
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।  
 यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुंशारणिः ॥ १५६ ॥  
 अष्टावक्रस्तु गर्भोजिह्वदच्युत्स्विधमवाहकः ।  
 मत्स्यगुश्चयवनोऽथ स्याद् गोन्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥  
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।  
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिष्णु पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥  
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।  
 द्राविलः पक्षिलः स्वामी मङ्गनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥



यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।  
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥  
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।  
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥  
 असदक्षरमठ्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।  
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥  
 महास्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।  
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥  
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तरनुभूश्चितिः ।  
 अवगत्यनुभूती चिञ्जलिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥  
 षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।  
 ऊहापोहक्षमा चार्वी गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥  
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वंरी ।  
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥  
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।  
 बैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥  
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।  
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥  
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।  
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घञ्जोरवेङ्गरो ॥ १६९ ॥  
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।  
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥  
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।  
 अत्याकारः परिववस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥  
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूर्क्षणम् ।  
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥  
 स्वान्तं गूढपदं हृच्च सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।  
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥  
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।  
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥  
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।  
 तर्कमूलिकसम्मर्श ऊहो न क्ल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भाषना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।  
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥  
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।  
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥  
 तन्द्रा कौसीद्यमालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।  
 स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥  
 हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।  
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥  
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।  
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥  
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।  
 शोषुर्ना शुषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥  
 क्षुभुचेच्छाऽशानाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।  
 राव्यलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥  
 शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।  
 क्रोधः क्रोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुतक्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥  
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषहम्गुणे ।  
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥  
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।  
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥  
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।  
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥  
 सख्यं सात्प्रपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।  
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥  
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।  
 आनन्दो नन्दथुह्नादस्त्वितिमुन्नन्दिदृष्टयः ॥ १८८ ॥  
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।  
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥  
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।  
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥  
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्म्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।  
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिक्कुर्न ना ॥ १९१ ॥

उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।  
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकृते ॥ १६२ ॥  
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।  
 ऋतिः कुत्साऽध्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥  
 मन्दाक्षं ह्रीक्षपा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।  
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥  
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।  
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥  
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।  
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥  
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।  
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥  
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।  
 अदृष्टजस्त्वत्र चाप्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥  
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।  
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥  
 नन्दीमुखी श्वासहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।  
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैषित्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥  
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।  
 कटमोषो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥  
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।  
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः स्त्री मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥  
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूमिनि चासवः ।  
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥  
 श्वासस्तु श्वसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।  
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥  
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धथं गुदानिले ।  
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥  
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।  
 मर्त्यलोको जीवलोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥  
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।  
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।  
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥  
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्ग्रहः ।  
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥  
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।  
 उत्तानौ चरणावूर्वोर्न्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥  
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्मकासनी ।  
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥  
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चैश्चरणवुभौ ।  
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥  
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।  
 नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥  
 नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।  
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥  
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।  
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥  
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।  
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्घायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥  
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।  
 वस्तिशुण्डकमण्यस्य जङ्घैका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥  
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।  
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोर्भ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥  
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।  
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥  
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।  
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥  
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।  
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठप्रहात् किणः ॥ २२१ ॥  
 कर्णयोर्जानुपार्श्वभ्यां स्पर्शं जानुनिकुञ्चनम् ।  
 भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥  
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।  
 बिन्दुभेदोऽप्यधो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥  
 स्वास्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।  
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्वीनिषदनादिकम् ।  
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥  
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।  
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥  
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।  
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥  
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।  
 त्रिविक्रमासनं तार्क्ष्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥  
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।  
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥  
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।  
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥  
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।  
 धारणा तु कचिद्धये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥  
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।  
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥  
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।  
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥  
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।  
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥  
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।  
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥  
 सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।  
 सान्द्रष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥  
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।  
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥  
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।  
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥  
 ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः क्वचित् ।  
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥  
 शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।  
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

## क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।  
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥  
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।  
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥  
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।  
 राश्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥  
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।  
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥  
 तत्र याः शक्तयस्त्रिः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।  
 षाड्गुण्यमन्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥  
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।  
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥  
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।  
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥  
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।  
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥  
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।  
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥  
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।  
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥  
 मृगयाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।  
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥  
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।  
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥  
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।  
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।  
 अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।  
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्तृपासनम् ॥ १५ ॥  
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।  
 अभिसारस्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥  
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु केलिसहायकः ।  
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥  
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षणः ।  
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥  
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।  
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥  
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।  
 हृष्टे धीकर्मिकः पुर्यां चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥  
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।  
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥  
 अन्तःपुरेऽन्तर्वाशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।  
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदस्तु सौविदः ॥ २२ ॥  
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।  
 प्रदेशा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥  
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।  
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥  
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।  
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥  
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।  
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥  
 इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।  
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥  
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।  
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥  
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।  
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥  
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।  
 मागधो मधुको घण्टाताडे घण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।  
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥  
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।  
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥  
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।  
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपरिचरिका ॥ ३३ ॥  
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।  
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥  
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।  
 बन्धकी तु गता वेशमर्थीयानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥  
 शय्यास्रग्भूषणादौ तु निधुक्ता परिचरिका ।  
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥  
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।  
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥  
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।  
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥  
 असिकन्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।  
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥  
 उदासीनः परस्तस्मात् पाणिग्राहस्तु पृष्ठतः ।  
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥  
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विड् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।  
 सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥  
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।  
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥  
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।  
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्गुचिः सखा ॥ ४३ ॥  
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।  
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिव्ययः ॥ ४४ ॥  
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।  
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥  
 प्रदेशनं प्राश्रुतं च लम्बा तृकोच आमिषः ।  
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।  
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥  
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।  
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥  
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।  
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥  
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।  
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥  
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।  
 श्वदंष्ट्रगर्गलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥  
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।  
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥  
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।  
 अहिप्रष्टं तु निर्मासप्रष्टास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥  
 उपस्करप्रस्त्रलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।  
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥  
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।  
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥  
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।  
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शाल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥  
 त्रिहयं पञ्चपादात् यदेकरथकुञ्जरम् ।  
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैगुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥  
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।  
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥  
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।  
 हस्त्यश्वरथपादात् बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥  
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।  
 सन्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥  
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।  
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥  
 मदबृन्दः कुपी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।  
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।  
 पृथुत्वं ऋथता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥  
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।  
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥  
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।  
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥  
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।  
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्रो विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥  
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मकणः ।  
 आज्ञाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥  
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।  
 उद्वान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥  
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।  
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥  
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।  
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥  
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।  
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥  
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।  
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥  
 मध्येमुखं तु वाहित्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।  
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥  
 तस्यास्तु पर उद्धात आरक्षः कुम्भयोरधः ।  
 उरःपार्श्वौ तु विश्वोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥  
 करटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।  
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥  
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।  
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥  
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।  
 पुच्छवंशोऽपवंशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥  
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोः स्थिताः क्रमात् ।  
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डिका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पाणिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।  
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७६ ॥  
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।  
 अथ पुच्छे स्थिता किष्ठी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥  
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।  
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥  
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।  
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥  
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्गला त्रयी ।  
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥  
 चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।  
 अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥  
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हरुदृकः ।  
 कीलस्तु पुष्यलः शङ्कुर्हिस्त्रीरो लोहशृङ्गलः ॥ ८५ ॥  
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पड्बीशो घुटिकोऽपि च ।  
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥  
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।  
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥  
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।  
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥  
 पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।  
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥  
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।  
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥  
 कुदरो घोटकस्तार्दर्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।  
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥  
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।  
 मल्लिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥  
 पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।  
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥  
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।  
 पारसीकादिंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।  
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ९५ ॥  
 निहीनास्त्वञ्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।  
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ९६ ॥  
 मुसल्यन्यप्रभैर्कार्हाघ्नः कराली तु जरुद्वदः ।  
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ९७ ॥  
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।  
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृषत्पुञ्जपिञ्जरः ॥ ९८ ॥  
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।  
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोज्जाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ९९ ॥  
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।  
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥  
 क्रियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।  
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्गाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥  
 पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरुहकः ।  
 हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥  
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।  
 खेलाहः कर्पिलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥  
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।  
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥  
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।  
 कोकुराहः खुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥  
 कर्काद्याः खुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।  
 सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥  
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्दाम्यश्वा वडबाऽवती ।  
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥  
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्रीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।  
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥  
 अश्व स्यूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिदृकः ।  
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥  
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।  
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्याद्वन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्याद्वन्तच्छिद्रमुल्लखली ।  
कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥  
लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्याद्वन्ताल्यवरक्षणी ।  
दामाञ्जनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥  
कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।  
प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विप्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥  
पर्याणं स्यात् पल्ययनं वल्गावक्षेपणी कुशा ।  
कशा काम्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥  
पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।  
युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बाङ्काणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥  
आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।  
लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायिका ॥ ११६ ॥  
तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।  
केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु चासिकः ॥ ११७ ॥  
अश्वानां तु गतिर्धारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।  
आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥  
इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।  
गत्यर्थास्तद्वदार्थाश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥  
तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।  
उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥  
अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।  
तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥  
रेचितं स्याद्धारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता ।  
वल्गितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥  
प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते ।  
यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं वाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥  
योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।  
वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥  
दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।  
प्रवाहिनी वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥  
देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।  
क्रीडार्थः स्यात् पुष्यरथः कृतः कर्णीरथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णीरथं प्रवहणं हयनं रथगर्भके ।  
गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाहयके ॥ १२७ ॥  
रथस्तु जयकृञ्जैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।  
रथेऽत्र द्वैपवैयात्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥  
वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।  
एवं काम्बलवाह्याद्याः कम्बलादभिरावृते ॥ १२९ ॥  
योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।  
धूः स्त्री धूर्वी यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥  
कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।  
अक्षकीले त्वर्णिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न षण् ॥ १३१ ॥  
रथनीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।  
रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥  
अनुकर्षो रथस्याधोधरणन्दार्थान्तः सः ।  
युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥  
अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।  
अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥  
स्त्री नेमिनी प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।  
अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥  
शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलाथरूपणम् ।  
प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥  
आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।  
परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥  
नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।  
सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपाणिंसारथिने ॥ १३८ ॥  
सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।  
पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥  
पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।  
सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥  
पार्ष्णिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।  
परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥  
दंशिते स्युः कवचित्तसज्जसन्नद्धवमिताः ।  
आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥

काण्डपृष्ठस्वायुधिक आयुर्धयोऽस्त्रजीवनः ।  
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गचस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥  
 चर्मि शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।  
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥  
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।  
 पुरस्सरः पुरोगोऽप्रेसरः प्रष्टोऽप्रतस्सरः ॥ १४५ ॥  
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।  
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥  
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।  
 अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥  
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।  
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥  
 लघुदस्तः सुदस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।  
 सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥  
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।  
 जङ्गालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥  
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्व्यूर्जस्वलोर्जितौ ।  
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥  
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।  
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।  
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥  
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्गात्राणं तु मत्कुणम् ।  
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥  
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।  
 गोधा तला च न नरौ हस्तघ्नो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥  
 अङ्गलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।  
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्यं सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥  
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।  
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुप्रमायुधम् ॥ १५७ ॥  
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।  
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।  
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५९ ॥  
 स्नुहीदलाभो निस्त्रिशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।  
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालि ॥ १६० ॥  
 जम्बूगतस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।  
 वराभोऽनिल एरण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥  
 हुण्टुतः पुत्रकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।  
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥  
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वणुराजयः ।  
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥  
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।  
 पटुसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥  
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।  
 प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥  
 भिण्डपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।  
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥  
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।  
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥  
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्रयस्य शेखरम् ।  
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥  
 शतघ्नी तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।  
 अयःकण्टकसंछन्ना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥  
 भुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।  
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥  
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घो मुसलयष्टिकः ।  
 दुघणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥  
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्दुणम् ।  
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्रथं शरासनम् ॥ १७२ ॥  
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।  
 कार्मुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्वायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥  
 गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।  
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥



उच्चलं ब्रह्मदण्डञ्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।  
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्ट्रोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥  
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वै द्विगुणे परे ।  
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥  
 पलानां पञ्चभिस्त्वेषां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।  
 लस्तुको धनुषो मध्यमग्रं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥  
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।  
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥  
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।  
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥  
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इपुर्न षण् ।  
 प्रद्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥  
 अर्धशलयोऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।  
 त्रिभागशलयनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥  
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णः कर्णिकारलः ।  
 स्नुहीदलफलो भङ्गश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥  
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।  
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥  
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।  
 द्विर्वाविंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥  
 स्युश्चोटलिङ्गकस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।  
 कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं वाजशङ्खदावलिः ॥ १८५ ॥  
 पत्रणा पक्षरचना धारा शखमुखं फलम् ।  
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥  
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।  
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽप्रतः ॥ १८७ ॥  
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।  
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥  
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।  
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥  
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।  
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृग्दिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं ' पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।  
 ततोऽप्यर्धोङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १९१ ॥  
 मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।  
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १९२ ॥  
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।  
 मुचुटी सिःकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १९३ ॥  
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।  
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खलुरिका ॥ १९४ ॥  
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।  
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १९५ ॥  
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।  
 अमुक्तं ह्युरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १९६ ॥  
 धौते निशातं निशितं दणुतं तेजितमर्थवत् ।  
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १९७ ॥  
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।  
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १९८ ॥  
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।  
 कटिका सूत्रसंयूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १९९ ॥  
 अङ्गुलं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।  
 लोहाभिसार उद्योगे राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥  
 यत्सेनयाऽभिनिर्याणं पत्युस्तदभिषेणनम् ।  
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥  
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।  
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥  
 नासीरोऽस्यग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।  
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥  
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।  
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥  
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।  
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥  
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुश्च युत् समित् ।  
 वीराशंसनमाजेर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।  
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥  
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्टवम् ।  
 वीराणां यद्रणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥  
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।  
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥  
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुभं तरः सहः ।  
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥  
 सन्द्रवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।  
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥  
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदने ।  
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भने ॥ २१२ ॥  
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हिसने ।  
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥  
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।  
 उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥  
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।  
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥  
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।  
 शवयानं कटः खाटिश्चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥  
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्त्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।  
 किणो रूढं त्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥  
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।  
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्चयुतः शरः ॥ २१८ ॥  
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।  
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्च्छालमूर्च्छितौ ॥ २१९ ॥  
 परासुरूपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।  
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥  
 आयुर्जीवितकाले स्त्री जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

## वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्या भूमिस्पृशो वैश्या ऊरुव्या ऊरुजा विशाः ।  
 आजीवो जीविका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥  
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।  
 उद्धो धान्यश आदानं कणिशाद्यर्जनं सिलम् ॥ २ ॥  
 ऋतं तद्भुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।  
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥  
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।  
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥  
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्बृद्धिः पुनः कला ।  
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥  
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।  
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥  
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।  
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥  
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।  
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥  
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।  
 मध्यस्थः प्राशिनकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥  
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूलग्नकोऽन्तरः ।  
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥  
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।  
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥  
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।  
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥  
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।  
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥  
 समज्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।  
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्वपकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥  
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।  
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।  
कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥  
अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।  
केदारः केदरः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥  
भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।  
खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूपरेरिणौ ॥ १८ ॥  
मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्गादिसम्भवे ।  
यन्वयत्रैहेयशालेयषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥  
यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।  
माप्राचचैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥  
एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।  
द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥  
खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।  
तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥  
त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।  
बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥  
लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।  
पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्स्ना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥  
ऋरुका त्विष्टकाया विड्मस्तु क्षारमृत्तिका ।  
धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥  
दारिपत्परिपत्पङ्कचिकित्ताश्च निषद्वरः ।  
शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥  
क्षेत्रमध्ये कृता साल्पा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।  
हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥  
निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।  
योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥  
गोदारणं तु कुन्दालमग्निः स्त्री द्यूस्तु तन्मुखे ।  
प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टभस्त्रनः ॥ २९ ॥  
दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।  
स्यात्समीकरणं मत्स्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥  
न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।  
व्रीहिर्वरेणुको बीव्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

व्रीहयः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।  
सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥  
सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।  
श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥  
षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।  
कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥  
माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।  
वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥  
मुद्गस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।  
पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेतजयशारदाः ॥ ३६ ॥  
सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।  
कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥  
वनमुद्गे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।  
खण्डी च राजमुद्गे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥  
जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।  
कृष्णेऽस्मिस्तिलके ( षण्डे ) पिञ्जपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥  
तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।  
मङ्गल्यं पृथुसूप्यश्च व्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥  
कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।  
त्रिष्टुभ्र्रातरक्षोष्नाः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥  
पक्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरैऽथो राजसर्षपे ।  
क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥  
वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।  
कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥  
पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।  
खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥  
स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।  
सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥  
खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।  
अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥  
काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।  
कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।  
 आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥  
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।  
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥  
 कुमारी मुसली वंश्या गुड्डीची कटुकैषणा ।  
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥  
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।  
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥  
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।  
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥  
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।  
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥  
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।  
 बालनाटकवात्र्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥  
 विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे ।  
 चिककाणकङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥  
 शीतकङ्गुस्तु मुसुटी पीतकङ्गुस्तु मागवी ।  
 श्यामकङ्गुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥  
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।  
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसोवतः ॥ ५७ ॥  
 अठ्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।  
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥  
 स्त्री काककङ्गुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।  
 गर्मुत् पुनर्गमुटिका धुलुञ्जस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥  
 ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।  
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा चेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥  
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेथुश्च गवेथुका ।  
 गाङ्गेरुकी नागबला भ्रूषा हस्त्रगवेथुका ॥ ६१ ॥  
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।  
 मापादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥  
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि व्रीहयः शालिकादयः ।  
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।  
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कर्णिका धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥  
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।  
 धान्यराशिस्तु बलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥  
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।  
 समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥  
 ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ।  
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥  
 क्रायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।  
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥  
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः ।  
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥  
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।  
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥  
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।  
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥  
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।  
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥  
 विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्तं पृक्तं धनं वसु ।  
 वित्तं च द्रविणं दृष्टं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥  
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्रूप्यं तद्द्वयमाहृतम् ।  
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥  
 ओषधयो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।  
 स्त्री शुण्ठिरूपणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥  
 शृङ्गिबेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।  
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥  
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।  
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥  
 कपिवल्त्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।  
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥  
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।  
 ( मरिचं ) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नवं कटु ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च श्यूपणं (तूषणादिकम्) ।  
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥  
 ग्रन्थिकान्तलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वषणम् ।  
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विष्टिका ॥ ८१ ॥  
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।  
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥  
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।  
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥  
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।  
 अग्निमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥  
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्जका ।  
 सुषवी कारवी फारी पृथिवका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥  
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।  
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥  
 निष्कृत्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।  
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्त्रुटिस्तुत्थोपकुञ्जिका ॥ ८७ ॥  
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।  
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥  
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।  
 जन्या जतूका रजनी जतुकृष्णवर्तिनी ॥ ८९ ॥  
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।  
 शिशुञ्जं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥  
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।  
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥  
 वर्हिपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।  
 शतपर्वं च मित्रञ्च कमलञ्च शिलञ्च तत् ॥ ९२ ॥  
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।  
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥  
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योष्या युगाह्वया ।  
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥  
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।  
 प्लावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।  
 कालानुसार्यं पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ९६ ॥  
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।  
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ९७ ॥  
 नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।  
 गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ९८ ॥  
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाष्यं रोगाख्यं पाकलोत्पले ।  
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ९९ ॥  
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।  
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥  
 धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।  
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥  
 अजमोदा तूष्पगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।  
 कारवी च खराश्वोष्ठा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥  
 मधुं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।  
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च वरालकम् ॥ १०३ ॥  
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं वराङ्गं भृङ्गमुत्कटम् ।  
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥  
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।  
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥  
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।  
 जातीकोशं कोशफलमथागरु नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥  
 लोहाख्यं कृमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।  
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥  
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनहुमः ।  
 कालागरु तु मङ्गल्या मङ्गिकासमगन्धि चेत ॥ १०८ ॥  
 श्रीवेष्टः पायसं श्रयाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।  
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥  
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।  
 कप्याख्यः कपिलः सिंहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥  
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।  
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृकधूपोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।  
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥  
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।  
 पीतचन्दनमर्केष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥  
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।  
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥  
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।  
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥  
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।  
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥  
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।  
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥  
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।  
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशोर्णं शशलोमनि ॥ ११८ ॥  
 अब्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।  
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥  
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।  
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥  
 विशुन्थलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।  
 सम्भरी पुनरेतद्द्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥  
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।  
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥  
 ऊषमूषरजं च्चेव्यं पांशुजं यवनं पटु ।  
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥  
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।  
 घटिकालवणं तृणं विडवद्भनकालकम् ॥ १२४ ॥  
 सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।  
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥  
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम् ।  
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥  
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्वरः ।  
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाप्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।  
 रसाह्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥  
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।  
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥  
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।  
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥  
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।  
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥  
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथ्विका कारवी पृथुः ।  
 तिनृणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥  
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।  
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥  
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्रयथो शर्करा सिता ।  
 मधूलं तु मधुने स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥  
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।  
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥  
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।  
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥  
 मदनस्तु मधुच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।  
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥  
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्दिकम् ।  
 हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥  
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।  
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥  
 सञ्जावने तूपमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।  
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥  
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम् ।  
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥  
 छिन्नं दधि बुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निश्शरे ।  
 बहुसूदनमप्यस्मिन् द्रव्यं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥  
 पत्रलं चाथ पकं स्यात् सञ्जातं पयसः श्रुतात् ।  
 धुक्षिमं तूद्घृतस्नेहान्मथितात् प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राहं दधिमण्डके ।  
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापञ्च मूतकम् ॥ १४४ ॥  
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।  
 गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥  
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।  
 आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥  
 अविसोढाविमरीसे अविदूसमवेः पयः ।  
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोम्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥  
 तिलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।  
 घोलं तूभ्रं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥  
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।  
 तक्रं कट्वरमशोष्णं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥  
 निरम्बु घोलं मथितमुदश्चित्तु जलार्धकम् ॥ १४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

## शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।  
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥  
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।  
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥  
 लाडीककिङ्करप्रेङ्गपाल्कपरिकर्मिणः ।  
 सञ्चारिते धीकरश्च गोप्याः स्युर्दाससूतवः ॥ ३ ॥  
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।  
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥  
 भृतके भृतिभुक्तर्मकरो वैतनिकस्त्रिषु ।  
 भरण्यं भरणं भर्म वेतनं निष्कृत्यो भृतिः ॥ ५ ॥  
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।  
 वार्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥  
 शिक्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।  
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥  
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।  
 वाणिव्यूतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥  
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।  
 धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमस्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥  
 पिञ्जनं स्याद्विहननं धराणां प्रविसारणम् ।  
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥  
 आवर्तनं तु वलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।  
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥  
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।  
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥  
 लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।  
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥  
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।  
 पलगण्डो लेपकारः कल्पणिः समलेपनी ॥ १४ ॥  
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।  
 मणिकारो वैघटिकः शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।  
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥  
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।  
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका लुषा स्मृता ॥ १७ ॥  
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।  
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥  
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।  
 रोषाणस्तु घृषिघृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥  
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।  
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥  
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।  
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥  
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।  
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृङ्कः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥  
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।  
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥  
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।  
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥  
 मेला मन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।  
 मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्वृता ॥ २५ ॥  
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसायपि ।  
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥  
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।  
 धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
 आभीरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्घयगोदुहौ ।  
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥  
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽकली लगुडो नरि ।  
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥  
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।  
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी त्रयी ॥ ३० ॥  
 ग्रन्थिबन्धो ब्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा ब्रजः ।  
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।  
 घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्कणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥  
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।  
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥  
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।  
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥  
 स उद्हनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तद्व्यते ।  
 ब्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥  
 स्वधितिर्ना कुठारोऽकली वासी स्याहारुतक्षणी ।  
 ऋकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्तनः समौ ॥ ३६ ॥  
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।  
 सूनातटिवर्धस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥  
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।  
 आच्छोटनं खेटनञ्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥  
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धिनी ।  
 श्वा विश्वकद्रुर्मृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥  
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।  
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥  
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् बितंसः पक्षिबन्धनम् ।  
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥  
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ ।  
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥  
 जालमानाय उद्दालस्तूत्रतो मुकुलाकृतिः ।  
 पादकृष्णमकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥  
 वद्धी नद्धी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।  
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥  
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्नुता ।  
 परिस्नुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥  
 मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका ।  
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥  
 पकैस्त्विक्षुरसैरस्त्रा शीघ्रुः पङ्करसः शिवः ।  
 शीतपङ्को रूक्षणीयोऽप्यपक्कै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥



मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।  
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोद्भयः ॥ ४८ ॥  
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।  
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥  
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।  
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥  
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।  
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।  
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥  
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।  
 सरकं चषकं चास्त्री गल्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥  
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।  
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥  
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।  
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिस्तुचः ॥ ५५ ॥  
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।  
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥  
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।  
 पटञ्चरः पटञ्चोरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥  
 लोप्यं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तेन्यं च चौरिका ।  
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥  
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।  
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चकादयः ॥ ५९ ॥  
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।  
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥  
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।  
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥  
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।  
 जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥  
 रङ्गाजीवो नृतुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।  
 सर्वकेशी कृशाग्धी च नर्तकस्त्वभ्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।  
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥  
 नर्तको भूमिकां प्राप्नो देवानामर्धमानुषः ।  
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥  
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।  
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥  
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।  
 स भ्रुकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥  
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।  
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥  
 नान्दी तु पाठको नान्याः पार्श्वस्थाः पारिपाथिकाः ।  
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥  
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः शिद्रो वातसुतो विटः ।  
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥  
 वेणुधमाः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।  
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥  
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।  
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥  
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।  
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥  
 रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।  
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥  
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।  
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च क्वचित् ॥ ७५ ॥  
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।  
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥  
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्द्यद्भुतो रसः ।  
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥  
 बीभत्सो विकृतिश्चित्रं त्वाश्रयं फुल्लमद्भुतम् ।  
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥  
 भैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।  
 करुणः सकृपो रौद्रस्तमोऽमी विंशतिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।  
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्यतः ॥ ८० ॥  
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।  
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥  
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्टकोऽपि च ।  
 रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥  
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।  
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥  
 सोत्प्रासे त्वाच्छुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।  
 निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥  
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।  
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥  
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।  
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥  
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।  
 अक्षु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥  
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।  
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥  
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।  
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥  
 असौम्येऽक्षण्यदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।  
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥  
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।  
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥  
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।  
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥  
 वल्लभानुकृतिर्लीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।  
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥  
 सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।  
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥  
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।  
 मोट्टायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।  
 विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ९६ ॥  
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।  
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ९७ ॥  
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।  
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ९८ ॥  
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।  
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ९९ ॥  
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।  
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥  
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।  
 भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥  
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।  
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥  
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।  
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥  
 देवो स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।  
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥  
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।  
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥  
 पतिस्त्वार्थ आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।  
 आबुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता व्येष्टा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥  
 बला बुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्ते भगिनीपतिः ।  
 बाला वासुर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥  
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्थपुत्रकः ।  
 हण्डे हञ्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥  
 अब्रह्मण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।  
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥  
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।  
 सप्त स्वरास्त्रयो प्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥  
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।  
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।  
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥  
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।  
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥  
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।  
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥  
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।  
 वंशादिकं तु सुधिरमानद्वं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥  
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।  
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥  
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।  
 तन्म्यश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥  
 एकादशेकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।  
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥  
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।  
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥  
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।  
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥  
 परिवादो वादनार्थं उपनाहस्तु बन्धनम् ।  
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥  
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।  
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥  
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।  
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥  
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।  
 भिङ्गिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥  
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।  
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥  
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।  
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥  
 नालिका सुधिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।  
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढकारी किन्नरीति च ।  
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥  
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्किरो जर्जरश्च सः ।  
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्क्यालिङ्गयोर्ध्वकाद्यः ॥ १२९ ॥  
 पूर्वः पूर्वं महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।  
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥  
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।  
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥  
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।  
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥  
 ते केकिचातकाजक्रुड्पिकभेकगजस्वराः ।  
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूत्र नान्यपि ॥ १३३ ॥  
 स्याद् यशःपटहो ढका पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।  
 हुडुकस्तु हडकोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥  
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमभर्भराः ।  
 तिमिलाट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥  
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।  
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥  
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।  
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥  
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिका ।  
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥  
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।  
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥  
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।  
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥  
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।  
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥  
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शुद्धाभ्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

## ४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।  
 रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥  
 अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।  
 कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्त्रयक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥  
 गर्तः पतेरो भूश्वभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।  
 शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥  
 नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।  
 सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥  
 उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।  
 फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥  
 दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो वृकश्रवा हरिः ।  
 बिलौका गूढपाञ्चकी नाकुसद्धानिलाशनः ॥ ६ ॥  
 दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।  
 रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥  
 फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।  
 दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥  
 राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।  
 वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥  
 षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।  
 त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥  
 निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।  
 दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥  
 कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।  
 शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥  
 आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।  
 अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥  
 किशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।  
 गोनसस्तु तिलित्सः स्याद् गोनसो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।  
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥  
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।  
 वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥  
 दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।  
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥  
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।  
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥  
 अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।  
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥  
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।  
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥  
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको निल्वयन्यपि ।  
 अहिनिल्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥  
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।  
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥  
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौरार्द्रो ब्रह्मवालुकम् ।  
 ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु वालुकम् ॥ २३ ॥  
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।  
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥  
 मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।  
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालम्राह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥  
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।  
 अथ गौधेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥  
 गौधेशश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।  
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥  
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।  
 कृकलासः प्रतिरिबिः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥  
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।  
 हालाहलस्त्वञ्जनिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥  
 सृजया चाथ दैवज्ञा व्येष्टा स्याद् गृहगौलिका ।  
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुडचमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।  
 उन्दुरुर्मूषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥  
 चुचुन्दरी तु गन्ध्राखुर्गिरिका बालमूषिका ।  
 वृश्चिके त्वालयलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥  
 खर्जूरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।  
 आढा शतपदी कर्णजलका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥  
 मूषिका लृतिका लृता तन्तुवायश्च जालिकः ।  
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिमर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।  
 लृतापट्टस्तु तत्कोश उदंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥  
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लृतातः स्यात् पिपीलिका ।  
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥  
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।  
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूत्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥  
 वम्बो वम्बुचुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।  
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥  
 नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।  
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥  
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।  
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥  
 पृथुरोमा ऋषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।  
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥  
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।  
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेवालौऽपदालकः ॥ ४२ ॥  
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।  
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥  
 एत्थालः स्याच्चीननको महाशल्कः सितायुधः ।  
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥  
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।  
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥  
 उदण्डपालनदलद्वेकराजीवकोत्पलाः ।  
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।  
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशाखुराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥  
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणोपिशाचकः ।  
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥  
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।  
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥  
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।  
 गुहाशयस्तूपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥  
 दुलो द्रुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् ऋषः ।  
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥  
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।  
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥  
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।  
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥  
 उदस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।  
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुष्णवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥  
 असिप्लवोऽम्बुलुकी' स्त्री वीरलस्तु महाभ्रुवः ।  
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥  
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।  
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्युक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।  
 शम्बूकः क्षुब्धकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥  
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।  
 जलका तु जलालोका सृक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥  
 या जलौका वृणचरी सा स्यात् वृणजलायुका ।  
 गण्डपदः किञ्चुलुको भूलता तत्प्रिया शिली ॥ ५९ ॥  
 स्थले करिनराश्याद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।  
 ते जलेऽपि जलारूयाः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुलं मेघजं कतम् ।  
नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥  
पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।  
विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥  
वार्नं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।  
वल्खरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥  
काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।  
शीतलं स्वादुर्नि जले द्राग्भृतं तत्क्षणोद्घृतम् ॥ ४ ॥  
जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला हृदाः ।  
अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥  
आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।  
आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥  
अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।  
अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥  
विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।  
पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥  
आहावश्च निपानञ्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।  
प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥  
आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरौ ।  
उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥  
रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।  
उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरप्पतिः ॥ ११ ॥  
सरित्पतिरकूपारः पारावारोऽब्धिरर्णवः ।  
मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिमर्महोदधिः ॥ १२ ॥  
कूजेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।  
डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥  
भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।  
ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।  
नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥  
उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।  
केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥  
कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।  
नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥  
आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।  
सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥  
कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।  
अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥  
गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यात्ते नव त्रिषु ।  
घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यस्त्री पयोवहा ॥ २० ॥  
सरणी हरणिर्भ्रूणिर्निर्गमद्धारि तु भ्रमः ।  
उद्घाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥  
नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।  
हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥  
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्यादिनी धुनी ।  
अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥  
त्रिस्रोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गागा ।  
भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥  
धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।  
यमस्वसा तु यमुना कालिन्धर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥  
नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।  
बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥  
टापी तु तापिनी शैब्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।  
शतद्रुस्तु शतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्जजाह्नवी ।  
शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥  
ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।  
नदः सरस्वान् भिद्योद्धयौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।  
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥  
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।  
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥  
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।  
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥  
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं ह्री पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।  
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिन् बालुकाः ॥ ३३ ॥  
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।  
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥  
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।  
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥  
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।  
 पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥  
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।  
 सरोजमब्जमपुष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥  
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।  
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥  
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।  
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥  
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।  
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥  
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाह्वयम् ।  
 गन्धसोमं कुमुच्चन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥  
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।  
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥  
 मृणाली शतपर्वं ह्री बिसश्च नलिनी पुनः ।  
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥  
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।  
 कुमुद्वती कुमुदिनी शाखकं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म ह्री कुसुमच्छदः ।  
 किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥  
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।  
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥  
 शुक्कारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।  
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥  
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्लस्तर्पणो जलकण्टकः ।  
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥  
 शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनीलयपि ।  
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥

पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यना नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।  
पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥  
ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।  
स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥  
स्युः कर्वेटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।  
कर्बटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥  
पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।  
कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥  
शिविरं मार्गनिवेशो गामार्थं वाटकोऽस्त्री स्यात् ।  
साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥  
द्वारका तु द्वारवती मथुरा तु मधूषिका ।  
मथुरा च मधूपद्मा कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥  
वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।  
मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥  
हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।  
अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥  
अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।  
देवीकोट्टः कोटिवर्ष माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥  
ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।  
ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥  
प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।  
सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥  
प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपन्नं त्वन्तिकाश्रयः ।  
पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥  
ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।  
खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥  
प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।  
आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।  
गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥  
रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।  
राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥  
स एव पुरि दिड्भागो वाहनी चोपविष्करम् ।  
अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥  
शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।  
निकार्यवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥  
न नोदवसितं न स्त्री गेहं पुम्भूमि वा गृहम् ।  
महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥  
आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।  
वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥  
कुण्डशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।  
चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥  
सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।  
आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥  
कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।  
संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥  
वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।  
तैलशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥  
इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।  
वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥  
क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।  
चतुश्शालं सञ्जवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥  
मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेण्टं विटाश्रये ।  
कुटीरस्तु कुटी पल्ली चेत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥  
सन्यासपल्ली निर्वीरा मण्टपोऽस्त्री जनाश्रयः ।  
देवतायतनं चैत्यं विहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥  
सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।  
तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥  
राजवेश्मोपकार्या स्यादुपकार्योपकारिका ।  
स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्धावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥



पिच्छन्दिका राजधान्यां सन्निवेशो निकर्षणम् ।  
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥  
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।  
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥  
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।  
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥  
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिगृहम् ।  
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥  
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।  
 आवालिहट्टवेश्माली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥  
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।  
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥  
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्धाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।  
 नीत्रं वलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥  
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।  
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥  
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।  
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥  
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।  
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥  
 कोणप्रतिप्राधि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।  
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिक्राष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥  
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खडक्किका ।  
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥  
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।  
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥  
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।  
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥  
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।  
 प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥  
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।  
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यररं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।  
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥  
 सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वे तूर्ध्वसूचिका ।  
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कटः ॥ ४८ ॥  
 साधारणी कुञ्जिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।  
 एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥  
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।  
 अस्त्री तु चर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥  
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।  
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ५१ ॥  
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली स्त्रियोऽश्रिसृक्तिकोटयः ।  
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥  
 दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्गनी वस्त्रधारणी ।  
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥  
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।  
 उद्धानमश्रमन्तमधिश्रयणी चुञ्जिरन्तिका ॥ ५४ ॥  
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।  
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥  
 कंटाहः कर्परो लट्वा मणिकः स्यादलिङ्गरम् ।  
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥  
 ऋचीषं पिष्टपचनं मञ्जो मञ्जी च कोशिका ।  
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥  
 भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।  
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥  
 घटी पारी कपाली तु त्रयी घोलश्च कर्परः ।  
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥  
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।  
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥  
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्जिकादिभृत् ।  
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥  
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।  
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।  
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥  
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्गः सम्पुटः पुटः ।  
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥  
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।  
 अयोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुल्लखलम् ॥ ६५ ॥  
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।  
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥  
 शम्बूकास्तु कणाः सूदमास्तण्डुलस्य च यो मलः ।  
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥  
 गोधूमचूर्णे शमिता चिक्कसो यवचूर्णके ।  
 पृथुकाश्चिपिटो लाजाः पुंभून्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥  
 खदिका तु गुडाद्याह्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।  
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥  
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु ममरा ।  
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥  
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।  
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥  
 पूषस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।  
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुल्माषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥  
 शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्वा खण्डे घृतोत्तरे ।  
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥  
 क्षीराह्यः शमितापिण्डो घृतपुरो घृते शृतः ।  
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥  
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।  
 जीवनान्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥  
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।  
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥  
 दग्धान्नं भिस्सिटा भिङ्गी परमान्नं तु पायसम् ।  
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाम्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥  
 व्यागुल्या स्याद्धान्याम्लतायां व्यागुली मण्डिका समे ।  
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।  
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरान् त्रयी ॥ ७९ ॥  
 यवागुरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।  
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥  
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्वा घनद्रवा ।  
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥  
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिपुतकुञ्जलम् ।  
 गोलकुल्माषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥  
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।  
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥  
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।  
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥  
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।  
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥  
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।  
 स्त्री पक्वभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥  
 वेशवारः पिष्टमांसे पक्वे भूतिस्ततोऽन्यथा ।  
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥  
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।  
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥  
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्करा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।  
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥  
 शाकोऽस्त्री हरितं शिशुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।  
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥  
 लेहं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।  
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥  
 त्रिष्वाद्रुताद्भक्ष्यकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।  
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्गवाः ॥ ९२ ॥  
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।  
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥  
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।  
 शूलाकृतं भट्टिन्नं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्द्ध्यादिसंस्कृते ।  
 शीनं स्त्यानं शृतं पकं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ६५ ॥  
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।  
 यत्पकं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ६६ ॥  
 दध्यम्बलो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।  
 अपकतर्कं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ६७ ॥  
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।  
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ६८ ॥  
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।  
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्नेहं वसान्वितम् ॥ ६९ ॥  
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।  
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १०० ॥  
 कबलः कबतो प्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।  
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १०१ ॥  
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।  
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १०२ ॥  
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।  
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १०३ ॥  
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।  
 कामं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १०४ ॥  
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।  
 तृप्तिः सुधा च सौहित्यं तृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १०५ ॥  
 करम्बः सेकमिश्रान्ने फेला पिण्डेऽधिकोऽस्मिन्ने ।  
 खण्डपर्कटमुद्गं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १०६ ॥  
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।  
 करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १०७ ॥  
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्गैर्कर्त्तरी ।  
 भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वाकर्णकरन्धके ॥ १०८ ॥  
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।  
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १०९ ॥  
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।  
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णघृतम् ॥ ११० ॥

वीरस्नाका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।  
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥  
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।  
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥  
 उद्वर्तनं तूसादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लवः ।  
 उपस्पृशोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥  
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।  
 यत्तु सर्वौषधिस्नानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥  
 यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।  
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥  
 सिक् स्त्री पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।  
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥  
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलक्रिमिरोमजम् ।  
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥  
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्गवं मृगरोमजे ।  
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥  
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।  
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥  
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।  
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥  
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि वालकादयस्त्रिषु ।  
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥  
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादधोरुकमम्बरम् ।  
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूक्ष्मं दुकूलं स्यात् ॥ १२२ ॥  
 बैकृत्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।  
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥  
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि सिग्ण्णीषमस्त्री स्यात् ।  
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥  
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।  
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥  
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनामसी ।  
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।  
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटम्बरम् ॥ १२७ ॥  
 निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।  
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥  
 कद्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।  
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥  
 शाणी गोपी छिद्रवस्त्रैश्चौरं खण्डलमस्त्रियाम् ।  
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रप्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्यते ॥ १३० ॥  
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कद्या पृष्ठे कृतोऽञ्जलः ।  
 वस्त्रान्तस्त्वञ्जलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥  
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।  
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥  
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।  
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥  
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।  
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥  
 वालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।  
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥  
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।  
 बालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥  
 प्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।  
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्त्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥  
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्घयया ।  
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥  
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।  
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥  
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।  
 अर्धहारश्चतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥  
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।  
 एकावलयनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥  
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।  
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।  
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥  
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १४४ ॥  
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।  
 शिञ्जिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥  
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।  
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥  
 स्त्री चर्क्तिर्वर्णकालेपावनबोधः प्रबोधनम् ।  
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥  
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।  
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥  
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।  
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥  
 राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।  
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥  
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।  
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतक्कोलागरुसिलहकम् ॥ १५१ ॥  
 लवङ्गपूगतक्कोलजातीफलहिमांशवः ।  
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तक्कोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥  
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकर्दमः ।  
 यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥  
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।  
 मालाङ्कितिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥  
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।  
 प्रञ्चष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥  
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुष्मिते ।  
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥  
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।  
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥  
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।  
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।  
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५६ ॥  
 पन्तद्रहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।  
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥  
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।  
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥  
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।  
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥  
 उपला तु दृषत्पुत्रः शिला माता दृषत्समाः ।  
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्द्धः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥  
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।  
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥  
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।  
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥  
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।  
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥  
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।  
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥  
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।  
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥  
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।  
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥  
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्कपाल्यपि ।  
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥  
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 षातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

### भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।  
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥  
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या ऋरायुजाः ।  
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥  
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।  
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥  
 स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।  
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥  
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।  
 अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥  
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।  
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥  
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।  
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥  
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।  
 प्रातर्तुर्दिक्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥  
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।  
 स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्रत्यसती कुलदेत्वरी ॥ ९ ॥  
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नगना तु कोट्टवी ।  
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥  
 विप्रशिका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।  
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥  
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्मन्मत्तक्राशिनी ।  
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥  
 अध्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्याः सपत्निका ।  
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥  
 पतिवली जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।  
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।  
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥  
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।  
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्त्र्यन्तर्वन्त्री च गर्भिणी ॥ १६ ॥  
 अद्यश्चोना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।  
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥  
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।  
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥  
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।  
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥  
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिश्वी शिशुवर्जिता ।  
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥  
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।  
 वृद्धा पलिक्नी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥  
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रचर्या क्षत्रियीति च ।  
 आचार्यानी च पुंयोगादर्योर्याण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥  
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।  
 स्यादुपाध्यायुपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥  
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।  
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥  
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।  
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥  
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।  
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥  
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।  
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥  
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च ।  
 कनिष्ठा स्थालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका ॥ २८ ॥  
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।  
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥  
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।  
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृज्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥  
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।  
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥  
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।  
 दम्पत्योरार्जिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥  
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।  
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ३४ ॥  
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।  
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूमिन् दारवत् ॥ ३५ ॥  
 जाया प्रजावती भातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया वधूः ।  
 स्नुषा वधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥  
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।  
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः ॥ ३७ ॥  
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।  
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥  
 वेश्यापतौ षिद्गकुम्भभुजङ्गविटपल्लवाः ।  
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥  
 सुतः पोतश्च पुङ्गर्भे नरो दुहितरि स्त्रियः ।  
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥  
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।  
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥  
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।  
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥  
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।  
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥  
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलटेयश्च कौलटेरश्च ।  
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलटेयश्च ॥ ४४ ॥  
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः ।  
 नप्तारौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।  
 अयं पत्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥  
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।  
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥  
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।  
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥  
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।  
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥  
 राजबीजी राजवंशयो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।  
 स्युर्जातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥  
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।  
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥  
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।  
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥  
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।  
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥  
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्त्रंसजा जरा ।  
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥  
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।  
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥  
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।  
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥  
 तद्ग्रन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।  
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठकान्तरम् ॥ ५७ ॥  
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेत्रमस्त्रियाम् ।  
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥  
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।  
 सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुरुरुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥  
 अङ्गस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।  
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मदः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।  
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥  
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।  
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥  
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।  
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥  
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुद्गती ।  
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥  
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।  
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥  
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि ( मूलभागोऽस्य तु त्रिकम् ) ।  
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥  
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।  
 अवलप्रवलप्रौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥  
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।  
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥  
 न स्त्री कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।  
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जत्रुणी ॥ ६९ ॥  
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।  
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥  
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।  
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥  
 प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।  
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥  
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।  
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥  
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।  
 ज्येष्ठा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥  
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।  
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।  
 खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥  
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।  
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युब्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥  
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।  
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलकश्चुलः ॥ ७८ ॥  
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।  
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥  
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।  
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥  
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।  
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥  
 दन्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।  
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥  
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्गाहुपुम्माने ।  
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥  
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिव्यापलण्डिका ।  
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥  
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।  
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्धा च मस्तिकः ॥ ८५ ॥  
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।  
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥  
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।  
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥  
 दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सृक्कणी दशनाः पुनः ।  
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥  
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।  
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम् ॥ ८९ ॥  
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।  
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।  
 शिङ्गाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ ॥ ९१ ॥  
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।  
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ९२ ॥  
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।  
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ९३ ॥  
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।  
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्षणः कनीनिका ॥ ९४ ॥  
 वल्गु पद्म च दृग्लोमिन् दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।  
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ९५ ॥  
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खकौ ।  
 भ्रूमिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ९६ ॥  
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।  
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ९७ ॥  
 वालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।  
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ९८ ॥  
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।  
 पर्पर्या स्याद्वल्लरीका मल्लर्या म्पटिः क्षुवः ॥ ९९ ॥  
 केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।  
 चोचुस्तु वालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥  
 तद्गन्धिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।  
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥  
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।  
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥  
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।  
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥  
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्सासवः ।  
 मूलधातुर्वहिसुतो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥  
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्रं क्षतजमासुरम् ।  
 राक्यं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥



आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।  
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥  
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।  
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥  
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।  
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं कूरमादिकम् ॥ १०८ ॥  
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।  
 भारद्वाजं श्वदयितं सारमङ्गातकर्कराः ॥ १०९ ॥  
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।  
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥  
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।  
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥  
 तिलकं ह्योम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।  
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥  
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।  
 गुल्मः प्रीहा च डिम्बः स्यादष्टीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥  
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।  
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥  
 पार्श्वस्य वङ्किः पश्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेर्बना ।  
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्यनि ॥ ११५ ॥  
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।  
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥  
 श्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।  
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥  
 लसीका लसिका रक्तरसमांसविपाकजाः ।  
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥  
 उच्चारो विणन ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।  
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥  
 प्रस्रावो देहवारि स्यान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।  
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।  
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥  
 दध्नुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवधुः पुमान् ।  
 शोफोऽस्त्री श्वयधुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥  
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।  
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचचिकाः ॥ १२३ ॥  
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जूः कण्डूयने स्त्रियः ।  
 यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥  
 श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु ददुः स्त्री मुखजः पुनः ।  
 पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृष्णमुखे ॥ १२५ ॥  
 मङ्कुस्तु सिद्धम सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।  
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥  
 भ्रिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किका ।  
 चच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ क्रथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥  
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्वतिमूत्रतः ।  
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥  
 नातिभिन्नस्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।  
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥  
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।  
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥  
 स्यादुष्ट्रग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।  
 अशौं दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने ॥ १३१ ॥  
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।  
 नेत्ररुक् कामला ह्रीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥  
 श्लेष्मपदः पदवल्मीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान् ।  
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः ॥ १३३ ॥  
 सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।  
 गजे व्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥  
 उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।  
 बिडाले कणकः पोत्रण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥

क्रमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।  
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥  
 धरण्यां करकोत्पाटवुद्धिजे पाण्डुवर्णकः ।  
 मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥  
 व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।  
 सन्तापोऽपाटवं मान्द्यमाकुल्यं रुद्रुजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥  
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।  
 कुशी भग्नास्थिवन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥  
 पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।  
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णाद्यैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥  
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।  
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽत्तिकाथजो रसः ॥ १४१ ॥  
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।  
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गद्यं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥  
 त्रिष्वतः पट्टरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।  
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥  
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।  
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपट्टः ॥ १४४ ॥  
 आमयावी समौ ग्लास्नुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।  
 वाताशोदद्गुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्गुणाः ॥ १४५ ॥  
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।  
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥  
 खल्व्वाटः खलतिर्बभ्रुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

## ५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरत्रातसञ्चयाः ।  
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥  
 सन्दोहनवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।  
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥  
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।  
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥  
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।  
 सङ्घसार्थौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥  
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।  
 उद्भिज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।  
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥  
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।  
 माणवानां तु माणव्यं बाडव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥  
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।  
 गार्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥  
 जनबन्धुगजप्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।  
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाडवं बडवागणे ॥ ९ ॥  
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरश्चक्रमाजकं गजादीनाम् ।  
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥  
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।  
 आपूपिकं शाष्कुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥  
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षेत्रं कैदारकं समम् ।  
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥  
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।  
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।  
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥  
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।  
 यमलं युगलं युगमं युतकं च द्वयोरगणे ॥ १५ ॥  
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वति त्रिषु ।  
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥  
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।  
 ग्रामः परोऽन्नाद्विषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥  
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।  
 पशूनां गोयुगं युगमे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥  
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्घतिथम् ।  
 बहुतिथसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥  
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।  
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥  
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।  
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥  
 विंशं विंशतितममेकविंशतित्वत्परं द्विधा सर्वम् ।  
 षष्टितममितिवदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥  
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।  
 ओजमयुगमं युगमं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥  
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।  
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥  
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विंशतेस्त्रिषु ।  
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्थुरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥  
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।  
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशात् ॥ २६ ॥  
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।  
 क्रमेणथ परेणथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥  
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।  
 न्यबुवं बुन्दखर्वे च निखर्वं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।  
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २९ ॥  
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते क्वचित् ।  
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निखर्वं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥  
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।  
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्खुवृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥  
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमात्सङ्खगुणोत्तरम् ।  
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥  
 पङ्क्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।  
 संख्यायां द्व्येकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥  
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।  
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥  
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।  
 उपविशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥  
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।  
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥  
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाञ्छितराशयः ।  
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोधी पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥  
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।  
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥  
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः क्वचित् ।  
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥  
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा क्वचित् कार्षापणः पणः ।  
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥  
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।  
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥  
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिक्षा सैव मरीचिका ।  
 रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्रो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥  
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।  
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।  
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥  
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।  
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥  
 निष्कोऽस्त्री विशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।  
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥  
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याज्जोहितीकं त्रिमाषकम् ।  
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥  
 मधुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्यवा ।  
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥  
 तृतीये ध्वानका शाणभागे माषास्तु षोडश ।  
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥  
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।  
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥  
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निकुञ्चयाज्यपलानि च ।  
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥  
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।  
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥  
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो वाहिकोऽध्युषः ।  
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥  
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।  
 चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥  
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्व्याढकोऽस्त्रियाम् ।  
 कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥  
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः ।  
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी वाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥  
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भीं परे पुनः ।  
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं वाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥  
 वाहं केचिच्चतुःखारी खारीभागं च गोणिकाम् ।  
 वाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।  
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्ताम्रस्य सप्ततिः ॥ ५९ ॥  
 दशान्येषां शतं मानं साधै रूप्यपलैस्त्रिभिः ।  
 तुला पलशतं तास्तु दशार्श्वं घटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥  
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।  
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥  
 आचितं द्व्याचितं होढं हेलकं समकं समम् ।  
 वाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥  
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।  
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥  
 पाट्यं हस्तादिभिर्मानं दुवयं कुडबादिभिः ।  
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

## धर्मकर्माध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।  
 सहजं निजमाजानं धर्मसर्गौ निसर्गवत् ॥ १ ॥  
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।  
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥  
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।  
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥  
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।  
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥  
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।  
 वैपरीत्यं विपर्ययो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥  
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।  
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽभक्तिः ॥ ६ ॥  
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।  
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥  
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।  
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥  
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याज्कम्पः सम्पातपाटवम् ।  
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥  
 यात्रा ब्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।  
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥  
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।  
 ब्रज्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥  
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।  
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥  
 निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।  
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥  
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।  
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।  
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥  
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।  
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥  
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।  
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥  
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।  
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥  
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।  
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥  
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।  
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥  
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।  
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥  
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।  
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥  
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।  
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥  
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।  
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥  
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।  
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥  
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।  
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥  
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।  
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥  
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।  
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥  
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।  
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥  
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।  
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।  
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥  
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।  
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्तवः स्तवः ॥ ३२ ॥  
 उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।  
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥  
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।  
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥  
 यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।  
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥  
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठीवनं च निष्ठीयूतिः ।  
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥  
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।  
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥  
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।  
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥  
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।  
 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥  
 विधूननं विधुषनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।  
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥  
 सम्मूर्च्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा ।  
 आवर्तनं काथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥  
 संवीक्षणं विचथनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।  
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धानुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 सामान्यकाण्डे धर्मकर्मभाष्यः ॥ २ ॥

### गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।  
 मसृणत्वे तु मारुङ्गकासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥  
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।  
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥  
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।  
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥  
 उक्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।  
 पिच्छिले स्याद् विजविलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥  
 कठोरनिष्ठुरकूरदृढदारुणकक्खटाः ।  
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥  
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।  
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥  
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।  
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥  
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।  
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूष्वो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥  
 तीक्ष्णश्चण्डोत्बणप्रोन्द्रकरालिविकारालिनः ।  
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥  
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुण्ड्रको धवलोऽर्जुनः ।  
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥  
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।  
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥  
 उत्पिशास्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।  
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥  
 पिञ्जो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।  
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥  
 वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।  
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥

बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।  
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥  
 रक्तपीतासितश्वेते बोलः कारीषभस्मवत् ।  
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्रप्रधानकाः ॥ १६ ॥  
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।  
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥  
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।  
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशाङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥  
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।  
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥  
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।  
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥  
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।  
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥  
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।  
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥  
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।  
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नानावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥  
 कर्बुरः शुक्रहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।  
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥  
 कृष्णरक्तसितः शारः क्रिमिरः सितलोहितः ।  
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥  
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।  
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तित्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥  
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।  
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥  
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योगयोनयः ।  
 स्युः शाडववराश्रच्यूषाः श्रच्यूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥  
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।  
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूपः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥  
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।  
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तित्तकाषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।  
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥  
 सस्वाद्वम्ला लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।  
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥  
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।  
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥  
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।  
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥  
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।  
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥  
 कषायतिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।  
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥  
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।  
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥  
 मधुबोलः सोरणश्च क्वचिदन्त्यः करोलकः ।  
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीसुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥  
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।  
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥  
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।  
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोत्थुसौ ॥ ४० ॥  
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।  
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥  
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।  
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥  
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।  
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥  
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।  
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥  
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।  
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥  
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।  
 न स्यात् पूर्व्वरसस्याख्या परावररसाह्यात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।  
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तित्तः कषायकः ॥ ४७ ॥  
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।  
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥  
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।  
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घृणः ॥ ४९ ॥  
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।  
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥  
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।  
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥  
 वकुले स्यात् परिमलो वलनोऽगरुधूपके ।  
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥  
 कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।  
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥  
 आज्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।  
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥  
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।  
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तित्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥  
 उद्दंशे देहलिगोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुरौ ।  
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥  
 स्नेहदोषे मेचटिको गूधे स्थालिकवैणिकौ ।  
 चिक्षो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥  
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरं त्वाममांसकः ।  
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥  
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।  
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।  
 स शब्दो वाच्यवह्निङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥  
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।  
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥  
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।  
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥  
 वर्षीयान् दशमी व्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 जघन्यजो बवीयांश्च पूर्वजे त्वग्नियोऽग्रजः ॥ ४ ॥  
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।  
 पृथ्निः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥  
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।  
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥  
 पिचण्डिलस्तूद्रिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।  
 वलिनो वलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥  
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।  
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥  
 शमश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुद्ग्रदन् ।  
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥  
 आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वञ्जुस्त्वूर्ध्वजानुकः ।  
 संञ्जुः संहतजानुः स्यात् प्रञ्जुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥  
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गडुले न्युब्जकुब्जकौ ।  
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥  
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।  
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभ्रटः ॥ १२ ॥  
 केकरो वलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकदृक् ।  
 एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्छ्रुतिः ॥ १३ ॥  
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।  
 पङ्गुः श्रोणे खञ्जकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥



शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बालश्च द्विनग्रकः ।  
क्षपणश्रमणौ नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥  
आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।  
हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥  
प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।  
धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥  
अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।  
दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥  
प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।  
कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥  
अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।  
गर्विते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥  
मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।  
अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्गतौ ॥ २१ ॥  
नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।  
नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौन्तृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥  
कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।  
ढौण्डुको ढण्डुकरचाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥  
क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यंसकवञ्चकौ ।  
कौकृतो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥  
ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।  
कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥  
नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।  
अस्थिरप्रेमिण गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥  
अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।  
स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥  
परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।  
निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥  
अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।  
सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥  
यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।  
परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोऽसुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।  
प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥  
ग्रणेयः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।  
क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥  
सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।  
हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥  
दुर्मना त्रिमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।  
दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥  
कामुकः कमिताऽभीकः कम्पः कमयिताऽभिकः ।  
तृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लुब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥  
लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।  
बुसुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशानायितः ॥ ३६ ॥  
पिपासितस्तु तृषितः पिपासुस्तपितः सत्त् ।  
मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥  
नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।  
संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥  
दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।  
स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समाः ॥ ३९ ॥  
लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ।  
निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥  
उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।  
भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भातुकः ॥ ४१ ॥  
उत्पतिष्णुस्तुत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।  
स्थास्नुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुर्हिंस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥  
वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।  
आशंसुराशंसितरि वन्दारुर्भवादकः ॥ ४३ ॥  
जागरूको जागरिता ऋक्षणावाक् तु प्रियंवदः ।  
शक्को मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥  
वदो वदावदो वक्ता वागीशो वक्पतिः समौ ।  
वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥  
जल्पाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।  
मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गर्हवादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।  
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥  
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।  
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥  
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।  
 परान्नः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥  
 सर्वात्रीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौक्तिकः ।  
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽङ्गरः ॥ ५० ॥  
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।  
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥  
 अद्रुते धीरविस्त्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।  
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥  
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।  
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥  
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।  
 चतुरः पेशलो दक्षः सूस्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥  
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।  
 क्षेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥  
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्धिकः ।  
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकृतीति च ॥ ५६ ॥  
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।  
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥  
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।  
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥  
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।  
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥  
 अपि दुस्स्थक्रूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।  
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्था वनीपकः ॥ ६० ॥  
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।  
 जगत्त्रसचरप्राणमिषदिङ्गञ्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥  
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।  
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्षवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।  
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमप्रियम् ॥ ६३ ॥  
 परार्थ्यं ग्रामणीः स्पर्ध्यं जात्यं च वरमग्रणीः ।  
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि ह्रीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥  
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।  
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥  
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।  
 विमले वीदुधं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥  
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।  
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विक्रवो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥  
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।  
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी वधोद्यतः ॥ ६८ ॥  
 शत्रूणां तापयित्तरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।  
 द्वेष्यस्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥  
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।  
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥  
 वध्यो विध्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।  
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥  
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।  
 कार्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥  
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।  
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥  
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।  
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥  
 गर्होऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।  
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥  
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।  
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥  
 अग्र्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।  
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥  
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।  
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।  
 स्थास्नवेकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥  
 विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।  
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥  
 प्रांशुमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।  
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥  
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।  
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥  
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।  
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥  
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।  
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥  
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।  
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥  
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।  
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥  
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।  
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥  
 नूत्ने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।  
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥  
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।  
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥  
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।  
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युञ्जमुदुञ्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥  
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यगवागपाक् ।  
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥  
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।  
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥  
 यः सहाञ्चति सध्रयङ् स विष्वद्रयङ् विष्वगञ्चति ।  
 देवानञ्चति देवद्रयङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥  
 अविलम्बितमुञ्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।  
 उत्पिञ्जलं समुत्पिञ्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।  
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता धुते ॥ ९५ ॥  
 रुचिते हृद्यलपितवाञ्छितेष्टेडितेहिताः ।  
 संवीतं स्याद् बलयितं वेष्टितं रुद्धमावृतम् ॥ ९६ ॥  
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्रविद्धाः स्युरीरिते ।  
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दितां सितम् ॥ ९७ ॥  
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तमञ्च धूपिते ।  
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ९८ ॥  
 लब्धात्प्रासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।  
 प्रयत्ने मुदितप्रीतहृष्टाः सुहितवृषवत् ॥ ९९ ॥  
 आबर्हिते तूद्वृहितोन्मूलितोत्पाटितोदधृताः ।  
 ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥  
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।  
 त्यक्ते तु विधुतोऽस्मृष्टहीनधूतसमुष्मिताः ॥ १०१ ॥  
 कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छितार्दिताः ।  
 स्रस्ते अष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥  
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।  
 भजमाने प्राप्त्युक्तन्यायान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥  
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।  
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥  
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।  
 अपचायितं नमसितं नमस्थितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥  
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताःशस्ते ।  
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्गीर्णौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥  
 उन्नोत्तितिमितक्लिन्नस्नपितार्द्राणि सार्द्रवत् ।  
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥  
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतभुक्तभक्षितजक्षिताः ।  
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥  
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।  
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं सुतं स्नुतम् ॥ १०९ ॥  
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् ह्रस्वे प्रथितमुद्रितौ ।  
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्वृते विस्वृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।  
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥  
 ऊतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।  
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्दुदम् ॥ ११२ ॥  
 गुण्डितं रूषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम् ।  
 ज्ञप्तं तु ज्ञापिते हन्नं गूने मीढं तु मूर्त्रिते ॥ ११३ ॥  
 पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।  
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥  
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।  
 निष्पके कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥  
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निसृष्टं वृद्धमेधिते ।  
 काचितं शिक्थिते दिश्यं दिग्भवेऽभ्रभवेऽध्रियम् ॥ ११६ ॥  
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।  
 तत्तद्रात्रभवे दन्त्वं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥  
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रैणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।  
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥  
 व्रीहिणो व्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।  
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥  
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।  
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥  
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।  
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥  
 आभा प्रख्योपमाभिरुया प्रकारः सन्निभं निभम् ।  
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥  
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।  
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥  
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।  
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥  
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।  
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।  
 विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥  
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।  
 अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥  
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।  
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥  
 अयेकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।  
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थक्यम् ॥ १२९ ॥  
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।  
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥  
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।  
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥  
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।  
 वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥  
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।  
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥  
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।  
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥  
 शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।  
 न्युङ्गं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥  
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।  
 किञ्चिन्मात्रं मितं दभ्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥  
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।  
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥  
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।  
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥  
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।  
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।  
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।  
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।  
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रवणीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।  
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिध्ममर्मरौ ।  
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे  
अर्थवर्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

## ६. अथ द्यत्तरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।  
द्वयक्षरास्त्रयक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥  
अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।  
संग्रहो द्वयक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विनापुरा ॥ २ ॥  
अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।  
व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥  
अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।  
अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरद्रुमाः ॥ ४ ॥  
अट्टावतिशयक्षौमावधौ पूजाप्रतिक्रयौ ।  
अर्योः शास्तृस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥  
अंशुः सूत्रादिसूत्रमांशेऽप्यङ्कश्चिह्नेऽन्तिकोरसोः ।  
आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥  
यत्नेऽर्केऽर्धौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।  
आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥  
इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।  
इष्वोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥  
ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।  
ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥  
ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।  
करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥  
दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।  
क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥  
उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।  
कन्तू कुसूलकन्दर्पौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्केभवानराः ।  
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥  
 ऋतू अध्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।  
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥  
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।  
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिक्यदृग्जोः ॥ १५ ॥  
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः क्लेदौषधिशशाङ्कयोः ।  
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥  
 विकल्पेऽपि च कक्षस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।  
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥  
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्यर्केऽवनिलाः खगाः ।  
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुकमे खगे रवौ ॥ १८ ॥  
 गणाः प्रमथसङ्ख्यौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।  
 तन्तुनागाग्रहौ प्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥  
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।  
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुपु ॥ २० ॥  
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।  
 गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्रौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥  
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशे महीगुणे ।  
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥  
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।  
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥  
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।  
 टङ्कौ प्रमाणगर्वौ च डिम्बः प्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥  
 तर्काः काङ्कावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण युशिल्पिनि ।  
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥  
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।  
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥  
 दवदावौ वनारण्यवहयोः खगार्कयोर्द्युवा ।  
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥  
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।  
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २९ ॥  
 ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।  
 न्यङ्कुरुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥  
 नाशः पलायने मृत्यौ परिवर्धसेऽप्यदर्शने ।  
 नग्रा वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥  
 पीयुः काल उल्लूके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे ।  
 पुण्टः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥  
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।  
 पवी वाताम्बधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥  
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।  
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्षिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥  
 घृते विक्रयशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।  
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥  
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।  
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुल्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥  
 पाशो रञ्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।  
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥  
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।  
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥  
 श्वेतार्के डाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः ।  
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 बाष्पोऽश्रण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः ।  
 भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥  
 भवो भद्रे हरे प्राप्नौ सत्तासंसारजन्मसु ।  
 भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिष्ण्यपि ॥ ४१ ॥  
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।  
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥  
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।  
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥  
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।  
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृगादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।  
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्ख्यमूढताः ॥ ४५ ॥  
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।  
 मूत आतञ्जने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥  
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।  
 यन्ता हस्तिपके सूते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥  
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्चे योगो विस्त्रब्धघातिनि ।  
 प्राप्तौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतियुक्तिषु ॥ ४८ ॥  
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।  
 रेतस्यास्वादाने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥  
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।  
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥  
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।  
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिगुः ॥ ५१ ॥  
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।  
 वंशः पृष्ठास्त्रिंश्रु गोहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥  
 नासोर्ध्वास्त्रीक्षुभेदे च वहिरुद्दिण ह्येऽनले ।  
 वलो धान्येऽसुरे काके गवां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥  
 वेणु वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।  
 वालौ पुच्छाश्वपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥  
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।  
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥  
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रचे पुमिन्द्रयोः ।  
 वृत्राः शत्रुवमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥  
 वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।  
 शम्भुर्धातृहरार्हसु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥  
 शम्भो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रो ।  
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुक्रोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥  
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।  
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्घयोः ॥ ५९ ॥  
 कुक्कुटेऽसौ मयूरैऽशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।  
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

पञ्चमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।  
 सम्राजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥  
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।  
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥  
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।  
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥  
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।  
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥  
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चःरोहसूतयोः ।  
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥  
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।  
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥  
 स्तूपा वायुरणोच्छ्रया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।  
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥  
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।  
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्ष्णिकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥  
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।  
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।  
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थयपि ॥ १ ॥  
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।  
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥  
 आलिः सेतौ सखीपङ्कचोराशा दिगतिवृष्णयोः ।  
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाच्चिवा ॥ ३ ॥  
 इलाऽप्येतासु चार्धे च स्याद्विज्या यागपूजयोः ।  
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुपु ॥ ४ ॥  
 अन्ने च स्यादथो ईतिरूपसर्गप्रवासयोः ।  
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूत्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥  
 ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्ते तन्तौ मेपादिलोमसु ।  
 हिंसाविच्छेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥  
 कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।  
 कर्मा हाटकपुत्र्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥  
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।  
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥  
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।  
 करणारम्भपूजासु चेष्टार्यां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥  
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥  
 कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।  
 गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥  
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।  
 चिन्ताचचिक्ययोश्चर्चा चूर्णिर्ग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥  
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशुद्धिर्द्वान्तिरेतसोः ।  
 छाया त्वनातृपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।  
 जातिशुद्धन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥  
 अलक्ष्म्यग्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोल्थक्षभेदयोः ।  
 जिह्वा वाग्रसनाचिष्णु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥  
 तन्त्रीर्गुह्यचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।  
 तन्दूर्द्रोणिप्लवे दूर्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥  
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशशंशययोस्तुटिः ।  
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वमित्रये युगे ॥ १७ ॥  
 दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।  
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥  
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।  
 धनुः सुस्त्रीधनुर्ज्यासु धाना बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥  
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।  
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥  
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।  
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥  
 पालिरश्रिः प्रदेशोऽङ्कः सशमश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।  
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिर्गौरवपाकयोः ॥ २२ ॥  
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।  
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥  
 प्रसूर्जनन्यामश्रयां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।  
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥  
 पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।  
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥  
 भसदौ गुह्यविट्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।  
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्न्यायां धृतिसेवयोः ॥ २६ ॥  
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।  
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मुत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥



माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मणाद्यासु प्रसूमयोः ।  
 मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥  
 पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।  
 गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥  
 राजिः पङ्कौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।  
 रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥  
 प्रचारे श्रवणे पङ्कौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।  
 रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भाक्षि तन्निन्दिीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥  
 रेटिर्वहेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।  
 रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्भेदशाखयोः ॥ ३२ ॥  
 लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।  
 वलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥  
 वर्ध्नी स्नायुनि नध्र्या च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।  
 विधा विधाने हस्त्यन्ने भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥  
 वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्यध्वनोरपि ।  
 वीचिः पङ्क्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥  
 वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽब्धिजलवर्धने ।  
 काले सीमि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥  
 वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु दृप्रजि ।  
 अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥  
 शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।  
 शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥  
 शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पादद्रुमाङ्गयोः ।  
 श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥  
 शिखा ष्वालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाप्रमौलिषु ।  
 शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपि ॥ ४० ॥  
 शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।  
 संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।  
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥  
 संज्ञार्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।  
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥  
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।  
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥  
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।  
 राशमेखलयोः स्यूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥  
 स्थूणा सूमर्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।  
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अम्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।  
 अम्रं पुरःशिखामानशौष्ठ्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥  
 मुष्के पद्यादिकोशोऽण्डं दुःखेनोव्यसनेष्वघम् ।  
 अर्शासी व्याधिदुर्नाम्नी आज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥  
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्थं मुखविले मुखे ।  
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽद्भयोः ॥ ३ ॥  
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमी ।  
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजमम्बु च ॥ ४ ॥  
 कुण्डं स्थाल्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।  
 पिण्याको नम्रहः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥  
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।  
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥  
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।  
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥  
 चैत्यं चिताङ्गे बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।  
 चिह्नमङ्गे पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥  
 छन्दः श्रुतीच्छ्रापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।  
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥  
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।  
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्वालाहकपुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छेदे ।  
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥  
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुडुम्बव्यापृतावपि ।  
 तल्पं शय्याट्टजायासु तनुषी तनुविस्वृती ॥ १२ ॥  
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।  
 तीर्थ मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥  
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।  
 तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।  
 द्रव्यं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥  
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।  
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥  
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।  
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥  
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।  
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥  
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।  
 पद्म सूत्राद्यवयवे किञ्चल्के नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥  
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।  
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥  
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।  
 पार्थीषि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥  
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।  
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥  
 बीजं शुक्ले फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।  
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥  
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।  
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥  
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।  
 मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥  
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।  
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥  
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।  
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लमम्बु च ॥ २७ ॥  
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।  
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्तवे रजः ॥ २८ ॥  
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।  
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥  
 लिङ्गं शोफसि वेषेऽशो चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।  
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वर्चोऽर्चिरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।  
 व्रतं विष्णुवृतुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥  
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।  
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥  
 शास्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।  
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥  
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।  
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥  
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादाने वने ।  
 सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥  
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।  
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥  
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।  
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 द्व्यक्षरकाण्डे नर्पुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिःकृष्टयोः ।  
 क्लृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥  
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।  
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥  
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।  
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥  
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।  
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥  
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।  
 छिन्नाक्षे छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिब्लवत् ॥ ५ ॥  
 चोद्यं चित्रे चोदनाहे चारु चित्रवचस्यपि ।  
 जडो जालमश्च निबुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥  
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाप्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।  
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥  
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।  
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥  
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।  
 न्यक्षं छिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥  
 नीचं खर्वं निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।  
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥  
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।  
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥  
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।  
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥  
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।  
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ १३ ॥  
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।  
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लितो भक्षितदिग्धयोः ।  
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥  
 लोलं चले लोलुपे च व्यभो व्यापृत आकुले ।  
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीययोः ॥ १६ ॥  
 विद्धं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।  
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥  
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।  
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥  
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।  
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तकुलाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥  
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।  
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 द्वयक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

### नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव क्वचित् क्वचित् ।  
 उन्नेयमर्थवलिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥  
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।  
 शकटे पाशके कर्षे घृतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥  
 अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली लवणेऽम्बुजे ।  
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥  
 अविभूषुष्पवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाःसु ना ।  
 अजः पितामहेऽनादौ ह्यग्रे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥  
 अन्तोऽस्वयवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।  
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षाप्रध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥  
 अर्हन्तौ जिनसम्भान्यावर्षन्तौ ह्यकुत्सितौ ।  
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भाज्ज्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥  
 अस्त्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिरेशुष्णिगि ।  
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वाभोऽपकेऽपि रुष्यपि ॥ ७ ॥  
 इनास्त्वात्माधिपार्काह्या उष्णोऽग्नौ चतुरेशपि च ।  
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥  
 उस्त्रः किरण उस्त्रा गौर् ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।  
 कम्ब्वस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥  
 कल्को ना सिंहके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।  
 कारा बन्धनगोहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥  
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।  
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्होऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥  
 ग्रन्थौ स्तम्बे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।  
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥  
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।  
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वाद्रिशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥  
 अयोघनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।  
 कृष्णं सीसाघलोहेषु कृष्णो नीले नले क्लौ ॥ १४ ॥

शूद्रे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।  
 कोशोऽस्त्री कुड्मले दिव्ये शास्त्रेऽर्थधे गृहे तनौ ॥ १५ ॥  
 गुह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।  
 कोलं बदरतकोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥  
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्पल्योः कोलः खञ्जे प्लवे किटौ ।  
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुंमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥  
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।  
 श्रोण्यां भृशे किलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥  
 किङ्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।  
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले वाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥  
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कथने कुशे ।  
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्यं स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥  
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।  
 द्वेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥  
 चेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।  
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥  
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।  
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥  
 दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेके गृहे नषण् ।  
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥  
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।  
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरि ॥ २५ ॥  
 गव्यूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।  
 भाण्डागारे पुमान् गञ्जः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥  
 गुडौ पिण्डेक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।  
 गुरुगोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥  
 मात्रादौ स्त्री बृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।  
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नास्ति कुलेऽचले ॥ २८ ॥  
 गङ्गुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।  
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥  
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।  
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गर्हितं बर्हिचन्द्रकः ।  
 चुम्नो नारो विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥  
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।  
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥  
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।  
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥  
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।  
 भ्रषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥  
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।  
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥  
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्तौ समौक्तिके ।  
 उडुहृद्ध्ययोरकली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥  
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।  
 तीक्ष्णमुष्णे क्षुण्ते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥  
 कर्णमूलेऽभ्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।  
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥  
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।  
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥  
 दंष्ट्री प्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके किटौ ।  
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥  
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।  
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥  
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।  
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥  
 न्यायाचारयमार्हिसास्वस्त्री मेढ्राङ्कयोर्ध्वजः ।  
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥  
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्रुचोः ।  
 स्त्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥  
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।  
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्वन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥  
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।  
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।  
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥  
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां क्ली सङ्घ्यायां गजबिन्दुषु ।  
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्कोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥  
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।  
 पार्श्विणरुन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥  
 पुमांस्तु प्रतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।  
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे क्ली सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥  
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।  
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥  
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।  
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥  
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।  
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृगवादिविप्रर्विग्यज्ञधातृषु ॥ ५३ ॥  
 अर्केऽग्नौ क्ली तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।  
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूषु च ॥ ५४ ॥  
 बलो रामे बलाह्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।  
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥  
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।  
 साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥  
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।  
 बालोऽकली नीलभिण्ड्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥  
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकभूतिषु ।  
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥  
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।  
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाभिव कातरे ॥ ५९ ॥  
 अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।  
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदुसूर्यजाः ॥ ६० ॥  
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।  
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥  
 अकली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।  
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।  
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥  
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।  
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥  
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।  
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥  
 युगोऽस्त्री स्यन्दनाद्यङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।  
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥  
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।  
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥  
 राजते भूषणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।  
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥  
 राष्ट्रोऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।  
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥  
 वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।  
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥  
 वशा करिण्यां बन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।  
 वशो जनस्पृहायत्तेऽवायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥  
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।  
 त्रिष्वप्रथे क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥  
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।  
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥  
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।  
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥  
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिंसितृहिसयोः ।  
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥  
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्त्रीरुजोस्त्रिषु ।  
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ ह्यन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥  
 त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।  
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुंघर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥  
 वसुर्हृदेऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।  
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्स्त्रिषु शुष्क्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।  
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृषि स्त्रियः ॥ ७६ ॥  
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।  
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥  
 वर्षं न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।  
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥  
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।  
 गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिले नपुम् ॥ ८२ ॥  
 शङ्खोऽस्त्री वलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।  
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥  
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।  
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥  
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।  
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥  
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।  
 शुक्रं मेध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥  
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।  
 पश्वङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्ततः ॥ ८७ ॥  
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।  
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्घृते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥  
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।  
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥  
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।  
 शौण्डी जलदमालायां शौण्डी समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥  
 शको विष्ठा पशूनां स्याद्देशे च गवये शकाः ।  
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥  
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरो विक्रान्तकुक्कुटौ ।  
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूपयोः ॥ ९२ ॥  
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।  
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥  
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।  
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।  
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतध्ययोः ॥ ९५ ॥  
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पर्शुपताप्रदानयोः ।  
 साधुस्त्रिषुचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ९६ ॥  
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।  
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ९७ ॥  
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।  
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदध्रयोः ॥ ९८ ॥  
 सूनं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहार्दयोः ।  
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्रवांशुशुक्राग्निषु ॥ ९९ ॥  
 कपिभेकाहिंसिहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।  
 हयो वशीक्रिया मन्त्रे हृद्यं दध्न्युपलेपने ॥ १०० ॥  
 हत्प्रिये हृद्धिते हृज्जे ह्रीकौ नकुललाजितौ ।  
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्वयक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥

## ७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्त्री हस्तकूर्परौ ।  
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥  
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।  
 आम्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥  
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।  
 आकर्षः शारिफलको घृत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥  
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्याघ्रतावपि ।  
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥  
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।  
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥  
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।  
 आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥  
 श्रोण्याञ्जारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।  
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥  
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।  
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥  
 रुग्भीतितापेष्वतङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।  
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥  
 अग्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।  
 ईशानौ हरिधातारावुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥  
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्याघ्रतेऽपि च ।  
 उत्सवस्त्वच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥  
 उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।  
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥  
 ऊर्णायुर्हर्षनाभे स्थान्मेघतल्लोमकम्बले ।  
 ऋषभोऽग्रथे मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।  
 वेणौ द्रुमाङ्गे रोमाङ्गे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥  
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।  
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥  
 क्षारको मत्स्यपद्यादिपिटके पुष्पजालके ।  
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥  
 कौशिको गुग्गुलुत्कशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।  
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥  
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।  
 कारुजः कलभे नाके क्ष्वथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥  
 कर्परोऽग्नौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।  
 शरे किशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥  
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।  
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूलमुकेऽपि च ॥ २० ॥  
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।  
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥  
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।  
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥  
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।  
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥  
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने ह्ये ।  
 गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥  
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।  
 चिकिरोऽहौ गेहबध्नौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥  
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।  
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥  
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।  
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥  
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।  
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकी ॥ २८ ॥  
 तपनो भास्करे ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।  
 त्रिशङ्कू तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥



सपिण्डपुत्रौ दायदौ द्वापरौ युगसंशयौ ।  
 द्विवौकाश्चातके देवे द्रुघणौ धातृमुद्गरौ ॥ ३० ॥  
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।  
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥  
 द्रुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।  
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातृलोकार्काः ॥ ३२ ॥  
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।  
 निवेशौ शबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥  
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।  
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।  
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिकपथे ॥ ३५ ॥  
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।  
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥  
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।  
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥  
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।  
 निषघोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥  
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निकृतावपि ।  
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मश्रुत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥  
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।  
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारैऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥  
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।  
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥  
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।  
 पर्जन्यो गर्जदध्रेऽध्रध्वाने शक्रेऽस्त्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥  
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।  
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥  
 प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।  
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्चायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥  
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।  
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिंहके क्ण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।  
 पुरुषो धातृपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥  
 पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमास्त्रे हीरके क्रिमौ ।  
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥  
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।  
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥  
 तुलासूत्रेऽश्वादिर्शमौ प्रग्रहः प्रग्रहः पुनः ।  
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धुर्वधेषु च ॥ ४९ ॥  
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।  
 आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥  
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।  
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥  
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽल्लिन्दकेऽपि च ।  
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥  
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।  
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥  
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।  
 प्रतिघौ रुद्रप्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥  
 प्रसादौ स्वाच्छयानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।  
 प्रदोषौ दोषरात्र्यंशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥  
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।  
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥  
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।  
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥  
 पृथुक्श्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।  
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥  
 ध्रातृव्यौ ध्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करौ ।  
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥  
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्त्तृ तनौ पुमान् ।  
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥  
 धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।  
 सिक्थे वसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरुकौ भेककेकिनौ ।  
 मिहिं वायुमेघार्का यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥  
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।  
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥  
 रुचको भूषणे दन्ते रुचथः कुक्कुटे ध्वनौ ।  
 वज्रथः कौकिले काले वर्तकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥  
 व्यवाथो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।  
 वाहसौ वह्यजगरौ द्रुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥  
 विस्मभौ स्नेहविश्वासौ विद्युधौ सुरपण्डितौ ।  
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥  
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।  
 विश्वात्माकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥  
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।  
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥  
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्ट्रौ च विष्टरः ।  
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ बालुका ॥ ६९ ॥  
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरी विसर्गौ मुक्तिवर्चसी ।  
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥  
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।  
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥  
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।  
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेऽपि ॥ ७२ ॥  
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।  
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥  
 अध्वर्यौ च श्रपायः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।  
 कच्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥  
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करौ ।  
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥  
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।  
 क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥  
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।  
 समिको वृक्षवल्मीकौ सृदाकू व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।  
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥  
 स्वीकारोच्छ्वायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।  
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥  
 आवेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।  
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥  
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिण बृहस्पतिसवी च यः ।  
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥  
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।  
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥  
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।  
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥  
 हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दाचिष्णु हायनः ।  
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्रयक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्गण्यां जलपात्रे च दारवे ।  
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥  
 अभिरुया त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।  
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥  
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।  
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥  
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।  
 कणिका तिलकाण्डेऽशे गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥  
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।  
 कूर्चिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥  
 तुर्थेऽशे मापदण्डस्य माषस्यापि च काकणी ।  
 विशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥  
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।  
 वेश्याकरण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥  
 पार्यां कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्वरि ।  
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥  
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।  
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि भ्रूल्लरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥  
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।  
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥  
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।  
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥  
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।  
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥  
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।  
 पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥  
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।  
 गृहादिधिष्ण्ये पिण्डे च जङ्गामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥  
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।  
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।  
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥  
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।  
 वृद्धती पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥  
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।  
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥  
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।  
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥  
 गद्यत्ते रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।  
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥  
 पथ्यायां गद्युमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।  
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥  
 विपणिस्तु निषद्यापि वालुकोमिश्र च वालुका ।  
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥  
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।  
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्त्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥  
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।  
 वृषत्युतुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥  
 वनिता स्निग्धनार्याञ्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।  
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥  
 शङ्कुल्यपूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।  
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥  
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।  
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥  
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।  
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥  
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।  
 संविती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥  
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।  
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥  
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।  
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥  
 अनूकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।  
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिर्नोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥  
 रेतसीन्द्रियमत्ते च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।  
 उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योवनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥  
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।  
 उद्धानमुद्गमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥  
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।  
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥  
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।  
 कीलालं रुधरे तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥  
 कुरीरं प्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।  
 कैतवं कपटे घृते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥  
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।  
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥  
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।  
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥  
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।  
 कटित्रं चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥  
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुधनुर्धरः ।  
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥  
 कौलीनं प्राणिभिर्घृते कुलीनत्वापवादयोः ।  
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥  
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।  
 प्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यप्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।  
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥  
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।  
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥  
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।  
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशस्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥  
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽदिण च ।  
 धाराप्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥  
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।  
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥  
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।  
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥  
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्दमभेदयोः ।  
 प्रयाणं गजदृक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥  
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।  
 पातालं लोक और्वश्च पतत्रं खे गरुत्यापि ॥ २२ ॥  
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।  
 प्रमाणं बोधनेयन्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥  
 सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।  
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥  
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।  
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौषे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥  
 वाह्नीकं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।  
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तुणे कत्तणेऽपि च ॥ २६ ॥  
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।  
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥  
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्यापनेऽपि च ।  
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥  
 लाङ्गूलं वालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।  
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥  
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।  
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।  
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥  
 व्यसनं शक्तिविपदोर्देवानिष्टफलैऽहसि ।  
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥  
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।  
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥  
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।  
 शालूकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यथे ॥ ३४ ॥  
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।  
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥  
 साधनं शोफास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।  
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥  
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।  
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥  
 मणौ शीधौ शीधुपाने सरकं मद्यभाजने ।  
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥  
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।  
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥  
 हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नर्पुंसकालङ्काराध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभिकौ ।  
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्ह्यकृत्स्नयोः ॥ १ ॥  
 आविद्धौ क्षिप्रकुटिलावाहतौ सादराचितौ ।  
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥  
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।  
 आग्रस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥  
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।  
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डिके ॥ ४ ॥  
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।  
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥  
 उदूढावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।  
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥  
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याग्रयेऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।  
 उत्तलो द्रुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्धटे ॥ ७ ॥  
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।  
 कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥  
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।  
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥  
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्यया युते ।  
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥  
 देहान्तरचिकित्साहं गरले पारदारिके ।  
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥  
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलालपयोः ।  
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥  
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हृते ।  
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥  
 निष्ठयते प्रास्तवान्ते च वचने च द्रुतोदिते ।  
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥  
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।  
 प्रणारयोऽसम्मतेऽपि स्यादनभिष्वङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।  
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥  
 पिण्डलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।  
 प्रतीच्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥  
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।  
 सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैधितौ ॥ १८ ॥  
 पिण्डतौ घनसङ्घातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।  
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥  
 मिश्रास्त्रिगधौ च परुषौ प्रगाढो गहने दृढे ।  
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥  
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।  
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥  
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्करौ ।  
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥  
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञानसंश्रुतौ ।  
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेल्लितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥  
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विवित्तौ शुद्धनिर्जनौ ।  
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥  
 विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ ।  
 वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥  
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।  
 वदान्यो बल्गुवाग्दात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥  
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।  
 विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्लिष्टविश्लिष्टयोरपि ॥ २७ ॥  
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।  
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥  
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।  
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥  
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्युह्यं स्वयं क्वचित् ।  
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मनि ॥ १ ॥  
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।  
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥  
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।  
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥  
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।  
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥  
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।  
 नेत्ररोगे चाजुनं तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥  
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।  
 अव्यक्तराने शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रंभौ ॥ ६ ॥  
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशोषे रसायने ।  
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेम्नि गोरसे ॥ ७ ॥  
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यभिश्चयोः ।  
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययो ॥ ८ ॥  
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।  
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये ताम्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥  
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिरैऽपि च ।  
 न ना कवाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥  
 लाजेध्वभ्योषमभ्योषाः साव्याम्भःपेयसक्तवः ।  
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥  
 अविषो निर्विषेऽम्मोधावविषो दिवि पुंसि वा ।  
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥  
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।  
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडुची चामराः सुराः ॥ १३ ॥  
 क्त्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।  
 अजिरं जर्जरै कामे विषयाङ्कणयोर्दृते ॥ १४ ॥  
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।  
 विद्युत्पव्योरक्लृद्यशानिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेष्वनृतं वितथे कृषौ ।  
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥  
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।  
 शर्करायां दृषत्पुत्रे स्य्यस्य्यश्मन्युपलो मणौ ॥ १७ ॥  
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।  
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥  
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।  
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥  
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ स्वर्बकच्छपौ ।  
 अस्त्री कशिपु शय्यायां बस्त्रेऽन्ने तद्द्वयेऽपि च ॥ २० ॥  
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।  
 कल्याणी क्षोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥  
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।  
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥  
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।  
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशोलता ॥ २३ ॥  
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।  
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥  
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।  
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥  
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।  
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥  
 रक्ताब्जेषु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।  
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥  
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पणं ।  
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥  
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।  
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥  
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु ह्यागकम्बले ।  
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥  
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 किञ्चलकः केसरे खे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।  
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥  
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपश्चिमशेषयोः ।  
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥  
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुध्वनौ ।  
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूर्तौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥  
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।  
 कशेरुहेभ्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥  
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशो नापिते तु ना ।  
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥  
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।  
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वृचादयः ॥ ३७ ॥  
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।  
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥  
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।  
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्य्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 जृम्भितं जृम्भणोऽङ्गुल्लविवृद्धेषु विचेष्टिते ।  
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥  
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।  
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥  
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।  
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिदिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥  
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।  
 तातगुः शूद्रताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥  
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।  
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥  
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।  
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥  
 त्रिष्ववाकसरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।  
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥  
 स्त्री पुनर्भवास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।  
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।  
 धर्षणं सुरते घाष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥  
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।  
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥  
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिहे ना तु गीष्पतौ ।  
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥  
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिशः क्रूरखड्गयोः ।  
 नालीकमब्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥  
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।  
 पटलं द्रुक्छदिषोः क्ली न ना पिटके गणे ॥ ५२ ॥  
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।  
 प्रवणो दक्षिणे प्रहे क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥  
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।  
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥  
 वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।  
 असूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥  
 प्रमीवमस्त्री कलशे ग्रीवाप्रासादयोरपि ।  
 पाटला गवि पाटल्यामाशुव्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥  
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वनि ।  
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुंमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥  
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्वृतौ ।  
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥  
 मन्त्रे दधिन ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।  
 पुलस्त्यवंशये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥  
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्यासनचर्मणोः ।  
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥  
 भामत्से क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।  
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥  
 स्त्री स्यात् प्रथिव्यामुस्रायामेलायां कृत्तिकासु च ।  
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥  
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।  
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।  
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥  
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।  
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥  
 उपसूर्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।  
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥  
 पित्रादेः कन्वयाऽऽप्रेऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।  
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥  
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।  
 रसनं क्ली कषायेऽग्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥  
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।  
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥  
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।  
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ट्रेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥  
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणप्राणिण पारदे ।  
 रौहिषं रक्तकत्तणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥  
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।  
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥  
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।  
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नोलिन्यां चर्मणि भ्रुवि ॥ ७३ ॥  
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूर्तौ तु वस्त्रकौ ।  
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥  
 विनयं प्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान् ।  
 विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥  
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।  
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥  
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभशृङ्गिषु ।  
 भैक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दुर्दुरे न षण् ॥ ७७ ॥  
 वयःस्थाऽऽमलकीपथ्याब्राह्मीषु तरुणे त्रिषु ।  
 वलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥  
 वर्णकौऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यङ्गलेपने ।  
 दुःखे विलचे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना ॥ ७९ ॥



वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।  
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥  
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।  
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥  
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।  
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गजदन्तयोः ॥ ८२ ॥  
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।  
 स्कन्दे विशाख ऋत्ने स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥  
 पापेऽपि वृजिनं केशो पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।  
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योर्द्वैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥  
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।  
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥  
 शरत्पकादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।  
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥  
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंस्रे त्रिषु शार्वरः ।  
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥  
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।  
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥  
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।  
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥  
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।  
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥  
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।  
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥  
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।  
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिःसङ्कटौ ॥ ९२ ॥  
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।  
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥  
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

## ८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।  
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥  
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।  
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने । २ ॥  
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।  
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥ ३ ॥  
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।  
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि । ४ ॥  
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।  
 अवरोहोऽवतरणं शाखाप्याग्राद्गताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥  
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।  
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥  
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।  
 अपदेशस्तु लक्ष्णे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥  
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निरचये भावसूचके ।  
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥  
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।  
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिसयोः ॥ ९ ॥  
 अभिषङ्गस्त्वभिभवे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।  
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥  
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।  
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥  
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।  
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥  
 अनिमेपोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।  
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥  
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।  
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौं गृह्यगूधाववस्करौ ।  
 कूर्मेशोऽब्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥  
 अशिरस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।  
 आशाचनी तु वहीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥  
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।  
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥  
 उपक्रमश्चिकित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।  
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥  
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।  
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरानुच्चैःश्रवा ह्ये ॥ १९ ॥  
 दात्यौहाली कलकाणौ खड्गिखड्गौ करालिकौ ।  
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥  
 कुरुविन्दो हिङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।  
 ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥  
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षुकाम्बुदे ।  
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥  
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।  
 तमोपहोऽप्यथोल्बके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥  
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।  
 ददुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाम्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥  
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।  
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥  
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।  
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥  
 द्वारद्वाःस्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।  
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥  
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।  
 परिवारः प्रावारैऽपि नृपाहार्थैऽपि परिबर्हः ॥ २८ ॥  
 परिवर्तो जगन्नाशौ निमचैऽब्दे परिभ्रमे ।  
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छेदे ॥ २९ ॥  
 पत्नीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।  
 परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।  
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥  
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।  
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥  
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तपरिवारयोः ।  
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥  
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूष्प्रे पतद्रुहे ।  
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्ट्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥  
 दक्षादिष्वग्निजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।  
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥  
 धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।  
 महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥  
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।  
 रजसानू घर्ममेघौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥  
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।  
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रमीर्मृगे ॥ ३८ ॥  
 बाडवेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो ह्ये हरौ ।  
 विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥  
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।  
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥  
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।  
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥  
 वारवाणिश्र्यौतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।  
 वनस्पतिवृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रका विरोचनाः ॥ ४२ ॥  
 वयवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।  
 शासनै वित्तसंवादे विवादेऽसिवाणिश्र्ययोः ॥ ४३ ॥  
 वर्धमानः शरावे स्यादैरण्डे भूषणेऽपि च ।  
 शङ्कुकर्णौ गर्दभोष्ठावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्गौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।  
 सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥  
 स्तनयित्नुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।  
 उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥  
 समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।  
 समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्घृते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥  
 सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।  
 स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥  
 सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः ।  
 हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुञ्जरे ॥ ४९ ॥  
 ( इति चतुरक्षराः )

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।  
 आशुशुक्ष्णिरर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥  
 शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।  
 आम्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥  
 ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।  
 ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥  
 धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।  
 गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥  
 प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ ।  
 मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥  
 कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।  
 विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥  
 निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।  
 हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥  
 ( इति पञ्चाक्षराः )

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।  
 आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसांपतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगृह्यकौ ।  
 धन्देऽप्यथ वृक्षेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥  
 भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्ने जम्बूकनीपयोः ।  
 वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥  
 अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।  
 ( इति विषमाक्षराः )  
 आकाशो दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥  
 पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६०ई ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।  
 अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गद्गुहि ॥ १ ॥  
 धात्र्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।  
 प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥  
 अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।  
 रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥  
 उपलब्धिस्तु शोमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।  
 ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलधिषु ॥ ४ ॥  
 फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।  
 वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥  
 श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।  
 दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥  
 गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।  
 प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशलययोः ॥ ७ ॥  
 मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।  
 चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥  
 वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।  
 गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥  
 समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्कयोरपि ।  
 गौर्योमपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥  
 गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

( इति चतुरक्षराः )

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥  
 चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।  
 योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥  
 वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफज्यां प्रावृषायणी ।  
 हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।  
 पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुत्रा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।  
 रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥  
 ( इति विषमाक्षराः )

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वन्निकायोषितोः स्त्रियौ ।  
 उपायद्वारयोर्द्वीः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥  
 धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।  
 ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योम्योर्द्योदिवानुभौ ॥ १७ ॥  
 ऋशब्दः स्याद्द्विव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।  
 उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् सुक् सुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥  
 लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।  
 रुग्न्वालाकान्तिवाञ्छासु तृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥  
 यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवत्कयोः ॥ १९ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।  
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥  
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।  
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥  
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।  
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥  
 आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।  
 आराधने तोषणाप्री घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥  
 जन्मोद्गमावुत्पतने रहोऽन्तिकमुपहरे ।  
 उद्घासने वधोद्घासावधुत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥  
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।  
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चाम्लवेतसे ॥ ६ ॥  
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।  
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासघनार्पणे ॥ ७ ॥  
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।  
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥  
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।  
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥  
 प्राणिद्यूतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।  
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥  
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।  
 विदारणं तु काष्ठादेद्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥  
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥  
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।  
 ( इति चतुरक्षराः )  
 अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्जले ॥ १३ ॥  
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।  
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।  
 ( इति पञ्चाक्षराः )

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥  
 आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।  
 शकुनं च निमित्तं च शुभादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥  
 यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।  
 गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥  
 स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।  
 पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्वपि ॥ १८ ॥  
 ( इति विषमाक्षराः )

स्वमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १९ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभिधेयवह्निसाध्यायः ॥ ४ ॥

( अर्थवह्निसाध्यायः )

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।  
 अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥  
 अभिपन्ना विपन्नाप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।  
 अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥  
 निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।  
 अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥  
 अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।  
 उज्जिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥  
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।  
 उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥  
 उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।  
 कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥  
 दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।  
 परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥  
 प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।  
 विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥  
 समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।  
 पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥  
 पौरुषेयं वधे पुंसो बृन्दे कार्यविकारयोः ।  
 ब्रह्मबन्धुरधिच्छेप्ये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥  
 यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्जितेऽपि च ।  
 लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥  
 विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।  
 मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्न्यगर्वितौ ॥ १२ ॥  
 ( इति चतुरक्षराः )  
 कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।  
 ( इति पञ्चाक्षरः )

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥  
 सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।  
 स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥  
 कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।  
 प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

( इति विषमाक्षराः )

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।  
 किं प्रश्नाच्चेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥

( इत्येकाक्षरौ )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अभिधेयवह्निसाध्यायः ॥ ४ ॥

## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाध्यर्का अद्यथिषा अद्यथिष्यौ निशाक्षिती ।  
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥  
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्न आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।  
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।  
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥  
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।  
 उदुम्बरो द्रुदेहत्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥  
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।  
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥  
 कर्णपुरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।  
 काण्डपृष्ठः क्रीतसुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥  
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।  
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥  
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।  
 जीवितेशः प्रेतनाथे दायते द्रविणागमे ॥ ८ ॥  
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।  
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥  
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।  
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥  
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।  
 निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥  
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।  
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसर्पौ निशाचरौ ॥ १२ ॥  
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।  
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥  
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यते त्रिष्वग्रसहाययोः ।  
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरत्ते व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।  
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥  
 नीचे व्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।  
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुष्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥  
 ना त्वाग्ने दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।  
 दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥  
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।  
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥  
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।  
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥  
 ओत्तौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।  
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥  
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ श्वरे हरौ ।  
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥  
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।  
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥  
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।  
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥  
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।  
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥  
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

( इति चतुरक्षराः )

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥  
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।  
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥  
 मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।  
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।  
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥  
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।  
 धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरी ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ६० ॥  
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।  
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ३१ ॥  
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।  
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ३२ ॥  
 श्रेयसी हस्तिपिप्लयामभयाराक्षयोरपि ।  
 सरस्वती सरिद्धेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ३३ ॥  
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

( इति विषमसङ्ख्याः )

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ३४ ॥  
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।  
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ३५ ॥  
 गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

( इति विषमाक्षराः )

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ३६ ॥  
 द्युपश्विष्वंशुवज्जम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।  
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ३७ ॥  
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।  
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न स्त्री धनरुक्मयोः ॥ ३८ ॥  
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।  
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥  
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ३९ ॥

( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

### पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्रान्ते स्युश्चतुर्मुखे ।  
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥  
 गुग्गुलुलककुटजेष्विन्द्रस्याग्नेश्च चित्रके ।  
 भङ्गातकेऽप्यथार्कस्य भङ्गातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥  
 कर्पूरकम्पिप्लकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।  
 गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥  
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।  
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥  
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।  
 ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासभहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वादिवेशमसु ।  
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥  
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिह्णके ।  
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥  
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।  
 कुष्ठाख्यभेषजे व्याघेर्मातुर्गौर्यां दृषद्गवोः ॥ ८ ॥  
 पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।  
 अपराषे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥  
 रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।  
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥  
 रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।  
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥  
 माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।  
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे क्ली किंशुके नरः ॥ १२ ॥  
 गणस्यान्धेश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।  
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥  
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।  
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥



धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।  
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥  
 अग्रहण्यसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसेः ।  
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥  
 धृत्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।  
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥  
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।  
 वीरात् परास्ते भङ्गाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥  
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।  
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेङ्कुचगस्तिषु ॥ १९ ॥  
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।  
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥  
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।  
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकितार्क्षयोः ॥ २१ ॥  
 पञ्चपूर्वास्तु वक्रत्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।  
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो श्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥  
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।  
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥  
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।  
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥  
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे  
 पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

### अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यव्ययान्यतः ।  
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥  
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।  
 ऐ दुःखभावेने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥  
 औ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।  
 प्रश्ने क्षेपे विलकपे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥  
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।  
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥  
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावनिर्णययोः ।  
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥  
 प्रश्ने विकल्पे तु स्विच्च प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।  
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥  
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।  
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥  
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।  
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुगतिषु ॥ ८ ॥  
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।  
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥  
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।  
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥  
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।  
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥

( इत्येकाक्षराः )

अमा सहार्थे सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।  
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥  
 पीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।  
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥  
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।  
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।  
 पश्चाद्धेतुनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥  
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।  
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥  
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।  
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥  
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।  
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥  
 पादपूरणकृत्वायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।  
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भावयोः किल ॥ १९ ॥  
 निषेधे वागलङ्कारे वीप्सनेऽनुनये खलु ।  
 तूष्णीमर्थे मुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥  
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।  
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥  
 तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।  
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥  
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।  
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥  
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।  
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥  
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।  
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥  
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।  
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥  
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।  
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥  
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।  
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥  
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।  
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥  
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।  
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविषादयोः ॥ ३० ॥

( इति द्वयक्षराः )

अङ्गसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।  
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥  
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।  
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेद्युः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥  
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यमे पुराप्रथमयोरपि ।  
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥  
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३ ॥  
 ( इति त्रयक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्राथे भटिति स्याद्राक् मङ्ग्वहाय सपद्यपि ।  
चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥  
विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।  
सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे हे भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥  
वौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्व्वाक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।  
परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥  
किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।  
पृथग्विना हिरुड् नानाऽन्तरेणते च वर्जने ॥ ४ ॥  
कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।  
यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥  
शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।  
द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृतेः ॥ ६ ॥  
कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।  
दोषा नक्तं च निश्चहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥  
अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।  
उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वैद्युरादयः ॥ ८ ॥  
उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।  
ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥  
सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।  
अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुद्देशमः ॥ १० ॥  
अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।  
मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽप्रतः ॥ ११ ॥  
सङ्कोचे चिच्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।  
किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥  
निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्हे सुष्ठु सु शोभने ।  
मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥  
मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।  
युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समया निकषा हिरुक् ।  
साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥  
प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।  
अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥  
समकं तु सजूः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।  
सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥  
हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।  
प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥  
उपरिष्ठादुपयुध्वे स्यादधस्तादवागधः ।  
तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥  
प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।  
द्विधा द्वेषा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥  
अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।  
इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

## लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।  
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥  
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।  
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरञ्ज्वादि किञ्चन ।  
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥  
 णचोऽन्वि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।  
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥  
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्विबन्ताः सम्पदादयः ।  
 इन्वि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥  
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाल्लवाद्या घञस्तु ज्ञे ।  
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ल्याबूङ्ङ्यन्धतादयः ॥ ६ ॥  
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लुक्किकादयः ।  
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥  
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहरार्थकद्विगौ ।  
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

( इति स्त्रीलिङ्गाः )

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।  
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥  
 इदन्नेष्वरतिर्वमिर्वणिर्वाहिर्ग्रहिः ग्रहिः ।  
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥  
 अङ्ङ्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहितरत्तथा ।  
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥  
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।  
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥  
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।  
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमथ्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥  
 प्रशनाद्या नङ्कि पाकाद्या घञि ल्यौ नन्दनादयः ।  
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

( इति पुल्लिङ्गाः )

त्रान्तद्वयच्छकासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।  
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥  
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यः शङ्खन्दोऽणि त्रिष्टुभादयः ।  
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥  
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।  
 सांराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥  
 एकद्वन्द्वान्ययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।  
 अनव्युत्तपुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥  
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।  
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥  
 अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।  
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥  
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।  
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥  
 शशादूर्णा गुहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।  
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥  
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।  
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

( इति नपुंसकलिङ्गाः )

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।  
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ध्वुन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥  
 कचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।  
 सृपाटी त्रिसरा सूर्मिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥  
 कलम्बी शल्लकी मल्ली वरटा जाटलिः कुटी ।  
 शाटी रेणुहरेणूरुजळकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥  
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रथिरञ्जलिः ।  
 कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्गोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

( इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः )

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृङ्गीबलिङ्गकम् ।  
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।  
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥  
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्करप्राणिगोचरः ।  
 विशेषकञ्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे ॥ ३० ॥  
 द्वेडाशच कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।  
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥

( इति नृषण्डाः )

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।  
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥  
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।  
 मद्ये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥  
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।  
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥  
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।  
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वृष्ण्यञ्चोः ॥ ३५ ॥  
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।  
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्व्यपि ॥ ३६ ॥

( इति स्त्रीषण्डाः )

त्रिलिङ्गां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।  
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥  
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।  
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जृम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥  
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।

( इति त्रिलिङ्गाः )

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥  
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।  
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥  
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।  
 अतन्नीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाश्रीयते पुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।  
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥  
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।  
 योनिस्त्वन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥  
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।  
 आचार्यत्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥  
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।  
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥  
 भट्टारको भट्टारको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।  
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥  
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।  
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥  
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।  
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥  
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः ।  
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥

( इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः )

कृत्तद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।  
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥  
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडबौ नरि ।  
 तथैवोक्षवशावहरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥  
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धान्ना पञ्चस्वार्थना ।  
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धिताथो द्विगुस्त्रिषु ॥ ५२ ॥  
 प्रादिप्राप्तलमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।  
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥  
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपञ्चन्वये स्त्रियः ।  
 क्ल्यक्कलीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥  
 परवद् वानुवादिषु तिङ्गव्ययमलिङ्गकम् ।  
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः ॥ ५५ ॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।  
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥  
 यवश्च व्रीहयो व्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।  
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥  
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।  
 सङ्ख्यार्थस्याबहुव्रीहेर्यथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥  
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।  
 ( इति सामान्यन्यायाः )

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥  
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ५९ ॥  
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा  
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥  
 अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

### ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः  
 प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।  
 व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्  
 सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥  
 एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-  
 भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।  
 धत्तां विशाले हृदये मुरारि-  
 स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥  
 एवं सूक्ष्मैर्यायनिर्णीतशब्दैः  
 सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।  
 संवित्तीनां भूषणं सत्कवीनां  
 प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥  
 [ नानाविद्यावेद्यवाप्रज्ञमाला  
 मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।  
 रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं  
 प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥ ]  
 ( इति वैजयन्ती समाप्ता )

## परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

भिदुरम्	११२१३	भिद्विरम्	अमरकोषः ( व्याख्यासुधा ) १११४७
क्रकरः, क्रकरः	२१३३६	क्रकरः, क्रकणः	" २१५९
महलः	२१४१०	मर्दलः	" ( व्याख्यासुधा ) ११७८
रुशती	२१४१८	उषती	" " ११७८
फणिर्जकः	३३१२०	फणिज्जकः	" २१४७९
पिण्या	३३१४०	पण्या	" २१४१५०
बिम्बोष्ठी	३३१४७	बिम्बिका	" २१४१३९
वाध्रीणसः	३१४१८	वाध्रीणसः	त्रिकाण्डशेषः २१५३
		वाधीनसः	" २१५३
नैचिकी	३१४४६	नैचिकम्	" २१५२२
स्थूरी	३१४५६	स्थूरी	अमरकोषः २१८४६
कुक्कुरः	३१४६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः ४३४५
		कुक्कुरः	" ४३४५
कदक्षिका	३१६३१	कलिन्दिका	" २१७०२
		कडिन्दिका	" ( मणिप्रभा ) २१७०२
		कलन्दिका	" " २१७०२
वैष्णुतम्	३१६९५	वैष्णुतम्	" ३१५०१
		वैष्णुभम्	त्रिकाण्डशेषः २१७०७
ब्रसी	३१६१४९	बृषी	अमरकोषः २१७१६
		बृषी	" ( व्याख्यासुधा ) २१७१६
क्रियदेहिफा	३१६१३६	क्रियदेहिफा	त्रिकाण्डशेषः ( व्याख्या ) ११७१४
चूषा	३१७८४	दूष्या	अमरकोषः २१८४२
जागरः	३१७१५३	जागरः	अभिधानचिन्तामणिः ३१४३०
		जागरः	अभिधानरत्नमाला २१३०४
भिण्डिपालः	३१७१६६	भिण्डिपालः	अमरकोषः ३१८९१
		"	अभिधानचिन्तामणिः ३१४४९

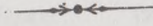
( २२७ )

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३१७२०३	समीकम्	अमरकोषः २१८१०४
खले पाली	३१८३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः ३१५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३१८३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	" ४२४०
		अमरकोषः	२१९१७
विडङ्गः	३१८९७	विटङ्गम्	" २१२१५
यष्टिमधुका	३१८१०३	यष्टीमधुकम्	" २१४१०९
		मधुयष्टी	" ( व्याख्यासुधा ) २१४१०९
		यष्टी	"
मणिमन् शितशिवम्	३१८१२०	शीतशिवं माणिमन्धम्	" २१९४२
		सितशिवम्	" ( व्याख्यासुधा ) २१९४२
		माणिबन्धम्	" ( क्षीरस्वामी ) २१९४२
मूका	३१९१७	मूषा	" २१९०३३
कुठारः	३१९३२	कुठरः, कुटरः	" २१९७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः ४८९
कल्कत्वम्	३१९८५	कल्लत्वम्	" २१२२०
निकार्यं	४३११८	निकार्यः	अमरकोषः २१२१५
		निकार्यः	" २१२१५
		निकार्यः	अभिधानचिन्तामणिः ४५६
कुण्डिनी	४३२२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः २१९६६
मण्डपः	४३२२८	मण्डपः	अमरकोषः २१२१९
		"	अभिधानचिन्तामणिः ४६९
भिरिसटा	४३२७७	भिरिसटा	" ३१६०
		"	अमरकोषः २१९४९
मुकुटः	४३२१३५	मुकुटः	" २१६२०२
		मुकुटः	" ( व्याख्यासुधा ) २१६२०२
		"	अभिधानचिन्तामणिः ३३१४
		मुकुटः	" ( स्वोपज्ञवृत्तिः ) ३३१४
पिचिण्डिका	४३४५८	पिचिण्डिका	" २१२७९

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसृतः	४।४।७७	प्रसृतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" ( मणिप्रभा )	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी (-किन्)	"	२।६।५९
श्लेष्मसूः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	"	२।६।२२
निर्धार्यः	५।४।७३	निर्धार्यः	" ( व्याख्यासुधा )	३।१।३



## वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[ इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क ( १. पुलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय ), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा ( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं ]

शब्दाः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दाः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दाः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः
अ		अकुत्स १.	३।१।५५	अक्षपात १.	३।१।६१
अ ४.	८।७।१०	अकुप्य ३.	३।८।७४	अक्षफल १.	३।३।७९
अंश १.	४।४।५५	अकुप्यसहाय १.	५।१।५४	अक्षर ३.	३।६।१६२
," १.	५।२।६	अकूपार १.	४।२।१२	," १ व.	७।५।३
अंशु १.	२।१।१५	," १.	८।१।१५	अक्षरचुम्बु १.	३।१।२३
," १.	२।१।१६	अकृत १.	३।६।९७	अक्षरजीवन १.	३।१।२३
," १.	२।१।२६	अक्ष १.	३।७।१३१	अक्षरपातक १.	२।१।५२
," १.	६।१।६	," १.	३।८।१५	अक्षवती २.	३।१।५९
," १.	८।१।२५	," ३.	३।८।१२५	अक्षि ३.	४।४।९४
अंशुक ३.	४।३।११६	," १.	३।१।६०	अक्षिगत १.२.३.	५।४।६९
," ३.	७।३।१	," ३.	५।१।४९	अक्षित ३.	५।१।३०
अंशुमत् १.	२।१।१५	," १. ३.	६।५।२	अक्षिसंस्कार १.	४।३।१५७
अंस १. ३.	४।४।७१	अक्षकील १.	३।७।१३१	अक्षीव ३.	३।८।१२०
अंसल १. २. ३.	५।४।६	अक्षज ३.	३।१।७३	अक्षोड १.	३।३।४६
अंससन्धि १.	४।४।६९	अक्षजीविन् १.	३।१।५९	अक्षीहिणी २.	३।७।५८
अंसान्त १.	४।४।७०	अक्षत १. २. ३.	७।५।१४	अखण्ड १. २. ३.	५।४।८६
अंहति २.	३।६।११९	अक्षताडन ३.	३।१।१३७	अखात ३.	४।२।५
अंहन ३.	५।२।१३	अक्षति २.	३।६।९०	अखिल १. २. ३.	५।४।८५
अंहस् ३.	३।६।१६८	अक्षत्र ३.	४।४।८५	," १. २. ३.	७।४।१
अकषाय १.	५।३।३९	अक्षदर्शक १.	३।८।१४	अग १.	३।२।१
अकार्यसेवन ३.	३।६।११७	अक्षधूर्त १.	३।१।५८	," १.	८।१।५८
अकिञ्चन १.२.३.	५।४।५९	अक्षधूर्तिल १.	३।४।५२	अगच्छ १.	३।३।५



अगद ]

अगद १.	४४१४१
अगदङ्कार १.२.३.	४४१४३
अगम १.	८११५८
अगरी २.	३३३८६
अगरु १.	३८११०६
अगस्ति १.	३३३१५६
," १.	३३३१५१
अगस्त्य १.	३३३१५६
," १.	३३३१५१
अगाध १.	४११२
," १.२.३.	४२११९
अगार ३.	४३११७
अगृहीतदिश १.२.३.	३१७२१९
अग्राथी २.	१२११९
अग्नि १.	१२११५
," १.	८६२
अग्नि १.	३३३२२१
अग्निकारिका २.	३३३११४
अग्निकार्य ३.	३३३११४
अग्निगौच ३.	४३३११९
अग्निचित् १.	३३३१७५
अग्निजा २.	३३३४३
अग्निपूर्णिमा २.	२११७४
अग्निबीज ३.	३३३२०
अग्निमन्थ १.	३३३८६
," १.	३३३८४
अग्निमुखी २.	३३३१५
अग्निविश्व २.	१२३३२
अग्निशिख ३.	३३३११७
अग्निष्टोम १.	३३३८७
अग्निष्ठ १.२.३.	३३३१०४
अग्निस्त्र १.	१२३४९
अग्निस्त्रग्रह १.	३३३६८
अग्निस्त्रक १.	३३३८२
अग्निहोत्र ३.	३३३१०
अग्निहोत्रहवणी २.	३३३१००
अग्निहोत्री २.	३३३१५
अग्निन्धन ३.	३३३१४
अग्न्याधान ३.	३३३६९

वैजयन्तीकोषः

अग्न्याहित १.	३३३७३
अग्न्युत्पात १.	१२३३३
अग्र १.	३३३१९८
," १.२.३.	५४३६३
," ३.	६३३१
," १.	८१३६०
अग्रज १.	४४३३१
," १.२.३.	५४३४
अग्रजन्मन् १.	३३३१
अग्रणी १.२.३.	५४३६४
अग्रतः ( -स् ) ४.	८८११
अग्रतःसर १.२.३.	३३३१४५
अग्रदिधिषु १.	३३३४४
अग्रद्रवसंहतिर. ३.	३३३४७
अग्रमांस ३.	४४३११४
अग्रयान ३.	३३३२०३
अग्रसन्धानी २.	१२३३६
अग्रस्थ १.२.३.	५४३७७
अग्राम्य १.२.३.	५४३२०
अग्रिम १.२.३.	५४३७७
अग्रिय १.२.३.	५४३४
," १.२.३.	५४३६३
अग्रीय १.२.३.	५४३६३
अग्नेदिधिषु १.	३३३४४
अग्नेदिधिषू १.	३३३४४
," २.	३३३४५
अग्नेसर १.२.३.	३३३१४५
अग्रय १.२.३.	५४३७७
अघ ३.	३३३१६८
," ३.	६३३२
अघन १.२.३.	५४३२५
अघायु १.२.३.	३३३११
अङ्क १.	२१२२९
," १.	३३३१००
," १.	४४३६०
," १.	६३३१६
अङ्कण १.	४३३३६
अङ्कति १.	१२३४८
अङ्कपालि २.	८२३२
अङ्कपाली २.	४३३१७०
अङ्कलि २.	४३३१५४

[ अङ्कुल ]

अङ्कुट १.	४३३४८
अङ्कुर १.३.	३३३१०
अङ्कुश १.३.	३३७८४
अङ्कूर १.३.	३३३१०
अङ्कोठ १.	३३३४१
अङ्कोल १.	३३३४१
अङ्कय १.	३३३१२९
अङ्क १ व.	३३३३१
," ३.	३३३२०८
," ३.	४४३५२
," ३.	४४३५५
," १.२.३.	६३३३
," ४.	८८२१
अङ्कचेष्टा २.	३३३१९८
अङ्कज १.	४४३३९
," १.	५३३३८
," १.३.	७५३१०
अङ्कजा २.	४४३३९
अङ्कद ३.	४३३१४३
अङ्कद्वीप ३.	३३३१३
," ३.	३३३१४
," ३.	३३३१५
अङ्कना २.	२३३१९
," २.	४४३५
अङ्कनाप्रिय १.	३३३२५
अङ्कमर्दिन् १.	३३३१५
अङ्कलोड्यक १.	४३३४६
अङ्कविक्षेप १.	३३३१७
अङ्कसंस्कार १.	४३३११२
अङ्कहार १.	३३३१७
अङ्कार १.३.	१२३३२
," १.	२३३३१
," १.	५३३३८
अङ्कारधानी २.	४३३५५
अङ्कारशकटी २.	४३३५५
अङ्कारशाकट १.२.३.	३३३३३
अङ्किन् १.	४४३१
अङ्कीकार १.	५३३३७
अङ्कु १.	२३३१
अङ्कुल १.३.	३३३५२

अङ्कुल ]

अङ्कुल १.	३३३२७
," १.	३३३१५९
," १.	४४३७९
अङ्कुलाल १.	३३३११२
अङ्कुलि २.	४४३७४
अङ्कुलित्र ३.	३३३१५६
अङ्कुलिमुद्रा २.	४३३१४५
अङ्कुलीयक ३.	४३३१४४
अङ्कुष्ठ १.	४४३७४
अङ्कुष्ठकान्तर १.	४४३५७
अङ्गि १.	४४३५६
अङ्गिनामन् १.	३३३१२
अङ्गिप १.	३३३४
अचल १.	३३३१
अचला २.	३३३४
अचिरव्यूढा २.	४४३७
अच्छमल्ल १.	३३३७
अच्युत १.	१३३११
अज १.	३३३६२
," १.२.३.	६३३४
अजगर १.	४३३१७
," १.	४३३१९
अजगाव ३.	१३३५०
अजगाव ३.	१३३५०
अजन्य ३.	३३३१९०
अजप १.२.३.	३३३११
अजमोदा २.	३३३१०२
," २.	८२३१
अजय्य ३.	३३३१८६
अजवीथी २.	२३३४६
अजशृङ्गी २.	३३३१४१
अजस्र १.२.३.	५४३३०
अजहा २.	३३३१२९
अजा २.	३३३६३
आजाजी २.	३३३८३
अजाजीव १.	३३३२९
अजित १.	१३३१२
अजितनेमि १.	३३३१९
अजिन ३.	३३३२१
अजिनपत्रा २.	२३३४४
अजिनयोनि १.	३३३२५

शब्दानुक्रमिका

अजिर ३.	४४३३६
," १.२.३.	५४३२५
," १.२.३.	७५३४
अजीगव ३.	१३३५०
अजुका २.	३३३१०४
अज्ञ १.२.३.	५४३२१
अज्ञति १.	१२३१८
अज्ञन ३.	३३३३९
अज्ञल १.	४३३३३
अज्ञित १.२.३.	५४३१३
अज्ञन १.	२३३८
," १.	३३३१०७
," ३.	४३३१५७
अज्ञनकेशी २.	३३३१०१
अज्ञनवस्त्रिका २.	३३३३५
अज्ञनावती २.	२३३९
अज्ञनिका २.	४३३२९
अज्ञलि १.	४४३७८
," १.	५३३५३
," १.	५३३६३
," १.	८३३२७
अज्ञलिकारिकार. ३.	३३३१४८
," २.	३३३१३
अज्ञसा ४.	८३३३१
अज्ञि १.	३३३८२
अटनी २.	३३३१७७
अटवी २.	३३३११
," २.	८३३११
अटाव्या २.	५३३११
अट्ट १.	४३३३३
," १.	६३३५
अट्टहास १.	३३३८४
अट्टालिका २.	४३३३३
अट्टन ३.	३३३२००
अणक १.२.३.	५४३७५
अणव्य १.२.३.	३३३२०
अणि १.	२३३७९
," १.२.	३३३३३
," १.२.	४३३५२
," १.२.	६३३५
अणिकूर्च १.	२३३८०

[ अतिमुक्त ]

अणु ३.	३३३११९
," १.२.३.	५४३३६
अणुराजि २.	३३३१३३
अणह ३.	२३३५०
," १.	३३३१६२
," १.३.	४३३६३
," ३.	६३३२
अण्डज १.	४३३४२
," १.२.३.	४३३२
," १.	७५३११
अण्डजा २.	७५३११
अण्डप्रहरण १.	४३३४७
अण्डमूलक ३.	४३३६०
अण्डवर्धन ३.	४३३३३
अण्डिक १.	४३३३३
अण्डिका २.	५३३४८
अण्डीर १.	७५३१५
अण्डुक १.	२३३३४
," १.	४३३४७
," १.	४३३६३
अतः ( -स् ) ४.	८३३१६
अतलस्पर्श १.२.३.	४३३१९
अतसी २.	३३३४५
अति ४.	८३३१५
," ४.	८३३४
अतिकृच्छक ३.	३३३३९
अतिक्रम १.	३३३११४
," १.	५३३१६
अतिचरा २.	३३३८९
अतिचाटुवाच् २.	२३३२५
अतिच्छत्र १.	३३३३३
अतिजव १.२.३.	३३३१५०
अतिथि १.	३३३६८
अतिथ्यर्थ १.२.३.	३३३६७
अतिपथिन् १.	३३३४९
अतिपात १.	३३३११४
अतिबला १.	३३३१२८
अतिमर्याद १.२.३.	५४३३३
अतिमात्र १.२.३.	५४३३३
अतिमानक १.२.३.	५४३३३
अतिमुक्त १.	३३३१८८

अतिमुक्तक ]

अतिमुक्तक १.	३१३४६
अतिमृगा २.	३१३१७२
अतियव १.	३१८५२
अतिरिक्त १. २. ३.	५१४१३७
अतिविषा २.	३१८१०
अतिवेल १. २. ३.	५१४१३१
अतिशय १.	५१२३
अतिशयित १. २. ३.	५१४१३७
अतिसन्धान ३.	५१२३५
अतिसर्जन ३.	५१२१९
अतिसारकिन् १. २. ३.	४१४१४६
अतिस्थिर १. २. ३.	५१४१७९
अतिहस्तक १.	३१७७०
अतिहास १.	३१८८५
अतिहिंसन ३.	३१७२८
अतीन्द्रिय १. २. ३.	५१४१३३
अतीव ४.	८१८४
अतीसार १.	४१४१२९
अत्यन्त १. २. ३.	५१४१३१
अत्यन्तीन १. २. ३.	३१७१४९
अत्यमला २.	३१३३३
अत्यय १.	७१११
अत्यर्थ १. २. ३.	५१४१३१
अत्यर्थस्वादु ३.	३१८१३६
अत्याकार १.	३१६१७१
अत्याधान ३.	५१२१६
अत्याहित ३.	८३११
अत्यूह १.	३१७८०
अत्रिनेत्रज १.	२११२५
अथ ४.	८१७१४
अथर्वाणि ३.	८१११३
अथो ४.	८१७१४
अदन ३.	४१३१०२
अदभ्र १. २. ३.	५१४८५
अदय १. २. ३.	५१४२४
अदस् १. २. ३.	६१४१
अदातृ १. २. ३.	५१४५९
अदिति २.	३१६१९१
” २.	७१२१
अदितिनन्दन १.	१११३

वैजयन्तीकोषः

अदृष्ट ३.	३१७१४
अदृष्टि २.	३१९१०
अद्धा ४.	८१७१२
अद्भुत १.	११२२७
” १.	३१७७५
” १.	३१७७७
” १. २. ३.	३१७७८
अद्भर १. २. ३.	५१४५०
अद्य ४.	८१८७
अद्यश्चीन २.	४१४१७
अद्रि १.	२११११
” १.	३१२१२
” १.	६११४
अद्रिज ३.	३१२१६
अद्रिजा २.	१११५८
अद्रिघट १.	१११२५
अद्भुत १. २. ३.	५१४५२
अद्भ्यवादिन् १.	१११३४
अधः ( -स् ) ४.	८१८१९
अधःपुष्पी २.	३१३१५७
अधम १. २. ३.	५१४७५
” १. २. ३.	७१४१
अधमर्ण १. २. ३.	३१८१९
अधर १.	४१४८७
” १. २. ३.	५१४४७
” १. २. ३.	७१५१६
अधरा २.	२११६
अधरेद्युः ( -स् ) ४.	८१८८
अधरोष्ठ १.	४१४८७
अधर्म १.	३१६१६८
अधस्तात् ४.	८१८१९
अधि ४.	८१७१३
अधिक १. २. ३.	५१४८५
” १. २. ३.	५१४१३१
” १. २. ३.	५१४१३७
अधिकर्षिक १. २. ३.	५१४५६
अधिका २.	५११४०
अधिकाङ्ग ३.	३१७१५६
अधिकार १.	२१४४१
अधिकृत १. २. ३.	३१७१९
अधिष्ठित १. २. ३.	८१४२

[ अनमिक

अधिलेप १.	२१४३२
अधिल्यका २.	३१३१९
अधिप १. २. ३.	५१४५८
अधिपति १. २. ३.	५१४५८
” १. २. ३.	८१५२
अधिमू १. २. ३.	५१४५८
अधिरोहिणी २.	४१३५१
अधिवास १.	८११६
अधिवासन २. ३.	४१३१५६
अधिविज्ञा २.	४१४१३
अधिभ्रयणी २.	४१३५४
अधिष्ठातृत्व ३.	१११४८
अधीतवेदक १.	३१६१८
अधीर १. २. ३.	५१४१८
अधीश १. २. ३.	५१४५८
अधीश्वर १.	३१७२
अधुना ४.	८१८५
अधोऽशुक ३.	४१३१२१
अधोऽञ्ज १.	१११३३
अधोनापित १.	३१५४१
अधोभुवन ३.	४१११
अधोमुख १. २. ३.	५१४१०
अध्यक्ष १. २. ३.	३१७१९
” १. २. ३.	५१४१३३
” १. २. ३.	७१४१
अध्यण्डा २.	३१३१२९
” २.	३१३१७७
अध्ययन ३.	३१६१६३
अध्यवसाय १.	३१६१६७
अध्यस्त १. २. ३.	५१४१०४
अध्यापन ३.	३१६१६३
अध्याय १.	३१३१३
अध्युष १.	५११५३
अध्युदा २.	४१४१३
अध्येषणा २.	३१६१२०
अध्वन् १.	३१४१९
अध्वर १.	३१६१८२
अध्वर्यु १.	३१६७९
अनंशुमत्फला २.	३१३१७३
अनन्तर १. २. ३.	२१४१६
अनमिक १.	३१६७३

अनङ्ग]

अनङ्ग १.	१११२७
अनङ्गु १.	३१४५२
अनङ्गुही २.	३१४४२
अनङ्गुवाही २.	३१४४२
अनन्त १.	४११३
” १. २. ३.	७१५४
अनन्तशायिन् १.	११११३
अनन्ता २.	२११५
” २.	३१३१२५
” २.	७१५४
अनन्यज १.	१११२८
अनन्यवृत्ति १. २. ३.	५१४१२८
अनपरार्थ्य १. २. ३.	५१४६३
अनम्बु १.	२१३३२
अनर्गल १. २. ३.	५१४१३२
अनर्थक १. २. ३.	२१४१८
अनल १.	११२१५
” १.	३१८८१
अनलज्वाला २.	३१३१९७
अनलोपल १.	३१२३७
अनवधानता २.	३१६१७८
अनवरत १. २. ३.	५१४१३०
अनवरत्कर १. २. ३.	५१४६६
अनसू ३.	३१७१२५
अनादर १.	३१६१७१
अनाहत १. २. ३.	५१४९५
अनामय ३.	४१४१४२
अनामिका २.	४१४७४
अनारत १. २. ३.	५१४१३०
अनालम्बी २.	३१९११८
अनावृष्टि २.	२१२८
अनाशक ३.	३१६१४४
अनाशकिन् १.	३१६१६०
अनि १. २.	३१७१३१
अनिच्छु १.	३१३१२६
अनिमिष १.	८१११३
अनिमेष १.	८१११३
अनिरुद्ध १.	१११२९
अनिर्बद्ध १. २. ३.	२१४१७
अनिर्वाप १.	२११३३

शब्दानुक्रमिका

अनिल १.	११२४७
” १.	३१७१६१
अनिलाशन १.	४११६
अनिदा ३.	५१४१३०
अनिष्ट १. २. ३.	५१४६९
अनी २.	४१३४७
अनीक १. ३.	७१५१५
अनीकवत् १.	११२२५
अनीकस्थ १.	८१११४
अनीकिनी २.	३१७५५
” २.	३१७५८
अनु ४.	८१७१६
अनुक १. २. ३.	५१४३४
अनुकण्ठी २.	४१३१४१
अनुकम्पा २.	३१६१९२
अनुकर्ष १.	३१७१३३
अनुकर्षण ३.	३१५१३
अनुकल्पक १.	३१६११३
अनुकामीन १.	३१७१५०
अनुकार १.	५१२१७
अनुकूल १. २. ३.	५१४१२७
अनुक्रम १.	३१६११३
अनुक्रोश १.	३१६१९२
अनुग १.	३१७१६
अनुचर १.	३१७१६
अनुज १.	४१४३१
” १. २. ३.	५१४४
अनुजीविन् १.	३१७१७
अनुताप १.	३१६१८५
अनुत्तर १. २. ३.	४१४२२
अनुदात्त १. २. ३.	३१६३७
अनुद्वीप १.	३१११३
अनुनय १.	५१२३८
अनुनासिक १. २. ३.	३१६३७
अनुपद ४.	५१४१२८
अनुपदिन् १. २. ३.	७१३२७
अनुपदीना २.	४१३१६२
अनुपमा २.	२११९
अनुपात्यय १.	३१६११४
अनूचान १.	३१६१८२
अनूचीन १. २. ३.	५१४१२७

[ अन्तर्धि

अनूप १. २. ३.	३११४५
अनूराध १ ब.	२११४४
अनूरुसारथि १.	२११११
अनृङ्ग १.	४१३४
अनृजु १.	११३४
” १. २. ३.	५१४२२
अनृत १. २. ३.	२१४१७
” ३.	३१८३
” ३.	७१५१६
अनेक १. २. ३.	८१९५८
” १. २. ३ ए.	८१९५८
अनेकप १.	३१७६०
अनेह १. २. ३.	५१४२१
अनेहमूक १. २. ३.	५१४१३
” १. २. ३.	५१४१४
अनेहस् १.	२११५२
अनोकह १.	३१३५
अन्त १.	३१६१७६
” १. २. ३.	५११२९
” १.	५१३३१
” १. ३.	६१५१
अन्तःकरण ३.	२१६१७३
अन्तःपुर ३.	४१३३६
अन्तक १.	११२३४
अन्तर ३.	२११७
” ३.	२११९३
” १. २. ३.	३१८१०
” १.	७१५१
अन्तरगाहन ३.	५१२१४
अन्तरद्वीप १.	३१११२
अन्तरा ४.	८१८१८
अन्तराय १.	५१२४
अन्तराल ३.	२११७
अन्तरिक्ष ३.	२१११
अन्तरिक्षासन ३.	३१६१२९
अन्तरीप ३.	४१३३६
अन्तरीय ३.	४१३१२१
अन्तरेण ४.	८१८४
” ४.	८१८१८
अन्तर्गङ्गु ३.	५१२६
अन्तर्धि १.	२११६३

अन्तर्मनस् ]

अन्तर्मनस् १.२.३. पा४३४
अन्तर्यामि १. ३१६१२
अन्तर्वशिक १. ३१७२२
अन्तर्वह्नी २. ४४११६
अन्तर्वाणि १.२.३. पा४३१
अन्तशय्या २. ८१२२२
अन्तस्था २. ३१६३६
अन्तावसायिन् १. ३१५४९
” १. ३१५८७
” १. ३१५९७
” १. ३१५९७
” १. ३१५९७
” १. ३१५९७
अन्तिका २. ४३१५४
अन्तिकाश्रय १. ४३१५२
अन्तिकेशय १. ४३१६८
अन्तिम १. २. ३. पा४३७
” १. २. ३. पा४३४०
अन्तेवासिन् १. ८११३३
अन्त्य १. २. ३. पा४३७
” १. २. ३. ६४११
अन्त्यजाति १. ३१५२
” २. ३१५१२१
अन्त्यजालय १. ३१५३२
अन्त्यवर्ण १. ३१५१
अन्दुक १. ३१७८३
अन्दू २. ६१२११
अन्ध १. २. ३. पा४१३
” १. ६१५६
अन्धक १. ३१६२०१
(इन्धक)
अन्धकसूदन १. १११४३
अन्धकार १. ३. २११६२
अन्धकी २. २११४
अन्धतमस ३. २११६२
अन्धता २. ८१५६
अन्धमेहल १. पा३१५६
अन्धस् ३. ४३१७५
अन्धु १. ४३२३
अन्ध १. २. ३. ३१५३५
” १. ३१५९२

वैजयन्तीकोषः

अन्ध १. ३१५९३
” १. ३१५९७
अन्न ३. ४३१७५
” १. २. ३. पा४१०७
” ३. ८१६८
अन्नमञ्जिका २. ३३१२७
अन्नाद १. ११२२७
अन्य १. २. ३. ६४४२
अन्यतरेद्युः ( -स् ) ४. ८१८८
अन्यथा ४. ८१८२०
अन्यथाकृति २. पा२२४
अन्यथाभाव १. पा२२४
अन्यदा ४. ८१८७
अन्यनिहति २. २४४४०
अन्यपीडन ३. पा२२३
अन्यपुष् १. २३११६
अन्यभृत १. २३१२६
अन्यलोहक ३. ३१२२८
अन्यवाप १. २३११६
अन्यशाखास्थ १. २. ३. ३१६१३
अन्यानुरक्ता २. ३१६४८
अन्येद्युः ( -स् ) ४. ८१७४
अन्योन्य १.२.३. पा४१२३
अन्वत् १. २. ३. पा४१२८
अन्वच् १.२.३. पा४१२८
अन्वय १. ४४४४९
अन्ववाय १. ४४४४९
अन्वाहार्य ३. ८३१२
अन्वाहार्यवचन १. ११२३
अन्विष्ट १. २. ३. पा४१९८
अन्वेषणा २. ३१६१२१
अन्वेषित १.२.३. पा४१९८
अन्वेषट्ट १. २. ३. पा४१२७
अप् २. ४. ४३२३
” २. ८१७६३
अप ४. ८१७२५
अपकार १. पा२२२
” १. पा२२३
अपकृष्ट १. २. ३. पा४३७१

[ अपरान्त ]

अपकृष्ट १. २. ३. पा४३७५
अपक्रम १. ३१७२१०
अपगम १. पा२२७
अपगतभक्त १.२.३. पा४१७
अपघन १. ४४४५५
अपचायित १. २. ३. पा४१०५
अपचित १.२.३. पा४१०५
अपचिति २. ३१७४४
” २. ८१२१
अपच्छयज्ञ १. ३१६१७
अपटी २. ४३१२४
अपटीका २. ३१२८६
अपटु १. २. ३. ४४१४४
अपतर्पण ३. ४४१३९
अपत्य ३. ४४४४१
अपत्रपा २. ३१६१९४
अपत्रपिण्णु १.२.३. पा४३०
अपथ ३. ३११५०
अपथिन् १. ३११५०
अपदंश १. ३११५२
अपदंशक १. ४३१८६
अपद्रोहिणी २. ३३१८४
अपदान ३. ३१७२०९
” ३. ८३३१
अपदालक १. ४११४२
अपदिश ४. २११३
अपदेश १. ८११७
अपध्वंसज १. ३१५१२०
अपध्वस्त १.२.३. पा४३७१
अपभरणी २. २११४१
अपभ्रंश १. ८११७
अपरगन्धिक १. ३११८
अपरति २. पा२३६
अपररात्रक १. २११६६
अपराजित १. ८११५०
अपराजिता २. २११५
” २. ३३१३३
” ३. ३३१२०८
अपराद्धशर १. २. ३. ३१७२१८
अपराध १. ३१७४७
अपरान्त १. ३. ३१३१५

अपराह ]

अपराह १. २११६५
अपरुजा २. १११५९
अपरेद्युः ( -स् ) ४. ८१८८
अपर्णा २. १११५९
अपलाप १. २१३३०
अपलासिका २. ३१६१८१
अपवंश १. ३१७४७
अपवन ३. ३३३२
अपवरक १. ४३१५१
अपवर्ग १. ८११६
अववर्जन ३. ३१६१९९
अपवाद १. २१३३३
” १. ३१७४७
” १. ८१११४
अपवारण ३. २११६३
अपव्यय १. २१३३०
अपशब्द १. ३१५१२०
” १. २. ३. पा४३२२
अपशाला २. ४३३३८
अपष्ट ३. पा२८
अपष्टु ३. पा२८
अपसर १. पा२३२
अपसर्प १. ३१७२९
अपसव्य १. ११२२८
अपस्कर १. ३१७१३५
अपस्नान ३. ३१६६४
अपहस्तित १.२.३. पा४१९५
अपहार १. पा२१९
” १. ८११३
अपहास १. ३१९८५
अपहित १.२.३. पा४१०४
अपह्व १. २१३३०
” १. ८१११४
अपाङ्गर्भ १. ८१११५
अपाच् ४. पा४१९१
अपाचीन १.२.३. पा४१५१
अपाटव ३. ४४१३३८
अपादान ३. पा२१९
अपान ३. ४४६०
” १. ७५१२२
अपानिक १. ३३३९२

शब्दानुक्रमणिका

अपान्नपात् १. ११२३३
अपामार्ग १. ३३११५
अपाम्पति १. ४२११०
अपाम्पित्त ३. ११२१९
अपाय १. ३१७२१०
” १. पा२२७
अपार १. ४२११०
अपार्थक १.२.३. पा४३२९
अपावृत्त १. २. ३. पा४३२७
अपाश्रय १. ४२११६४
अपि ४. ८१७१४
अपिधान ३. २११६४
अपुञ्ज १. ११२२१
अपुनर्भव १. ३१६२३८
अपूप १. ४३३७२
अपेक्षा २. पा२२९
अपोनपात् १. ११२३३
अपौर १. ३१८३३
अप्पति १. ११२४५
” १. ४२१११
अप्पित्त ३. ११२१९
अप्पुष्प ३. ४२३३७
अप्फल ३. ३३३२२०
अप्य ३. ३१८८०
अप्रकाण्ड १. ३३३७
अप्रच्छन्न ३. ३३३३३६
अप्रहत १. २. ३. ३१८११८
अप्रहृष्टक १. २३३१६
अप्सरस् २. १३३११
अप्सरसापति १. ११२३६
अफला २. ३३३९९
अबद्ध १. २. ३. २१४१८
अबद्धमुख १.२.३. पा४४६
अबल १. ४४३३२
अबला २. ४४४५
अबाल ३. ३३३२२०
अब्ज ३. ४२३३७
” १. ६१५३
अब्जल १. ३१७९६
अब्जारि १. २११२६
अब्द १. २११९०

[ अभिनिष्ठान ]

अब्द १. २२२१
अब्ध १. ४२३७
अब्धा २. ४२३३
अब्धि १. ४२३१२
” १. ८३३३३
अब्धिजा २. ११३३६
अब्धिमण्डूकी २. ४१३५६
अब्धिवस्त्रा २. ३१३३
अब्रह्मण्य ३. ३१९१०९
अभय ३. ३३३३३२
अभया २. ३३३१७८
अभवनि २. ८१९८
अभि ४. ८१७१६
अभिक १. २. ३. पा४३५
अभिक्रम १. ३१७२०२
” १. पा२१५
” १. पा२१६
अभिव्या २. पा४३२२
” २. ७२३२
अभिव्यान ३. २१३३२
अभिग्रह १. पा२१८
” १. ८११११
अभिचार १. ३३३१७
अभिज १. २. ३. पा४६१
अभिजन १.२.३. पा४१९
” १. ८११११
अभिजात १. २. ३. ८१४१
अभिज्ञ १. २. ३. पा४१९
अभिज्ञान ३. २१३२९
अभितः ( -स् ) ४. ८१७३१
अभिताडन ३. पा२१९
अभिताप १. ४४१३५
अभिधा २. २१३३१
अभिधान ३. २१३३१
अभिध्या २. ३३३१७९
अभिनय १. ३१९९८
” १. ३१९९८
अभिनव १. २. ३. पा४८८
अभिनवेश १.२.३. पा२१४
अभिनिष्ठान १. ३३३३७
” १. ८११५०

अभिनित ]

अभिनीत १. २. ३. ८४११
अभिपन्न १. २. ३. ८४१२
अभिप्राय १. ३६१७४
अभिभूत १. २. ३. ५४६७
अभिमन्त्रण ३. ३६१९३
अभिमर १. ८११२
अभिमर्द १. ३७२०५
अभिमान १. ३६१६९
” १. ८११९
अभियाति १. ३७२४२
अभियुक्त १. २. ३. ३८१०
अभियुक्त १. २. ३. ३८१०
अभिरूप १. २. ३. ८४१५
अभिलाष १. ३६१८०
अभिलाषुक १. २. ३. ५४३५
अभिवादक १. २. ३. ५४३३
अभिवादन ३. ३६३९
अभिवान्या २. ३४५१
अभिवांसन ३. २४३२
अभिशास्त १. २. ३. ३८११
अभिशास्ति २. ८२२
अभिदाप १. २४३२
अभिषङ्ग १. ८११०
अभिषव १. ३७५१
” १. ८१११
अभिषिक्त १. ३५५
अभिषिक्तक १. ३५६६
अभिषुत ३. ४३८२
अभिषेक १. ४३११३
अभिषेणन ३. ३७२०१
अभिसन्धान ६. ३७१९४
अभिसम्पात १. ३७२०५
अभिसार १. ३७१६
अभिसारिका २. ३६३६
” २. ४४१२
अभिहार १. ५२१८
” १. ८११०
अभीक १. २. ३. ५४३५
” १. २. ३. ७४११
अभीचण ३. ७३१२
अभ्यग १. २. ३. ५४८९

वजयन्तीकोषः

अभ्यग १. २. ३. ५४११४०
अभ्यङ्ग १. ४३११२
अभ्यन्तर ३. २११७
अभ्यमित १. २. ३. ४४११४४
अभ्यमित्र १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रीण १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रीय १. २. ३. ३७११४६
अभ्यर्ण १. २. ३. ५४११४०
अभ्यवकर्षण ३. ५२११७
अभ्यवस्कन्द १. ३८११६
अभ्यवस्कन्दन ३. ३७२०७
अभ्यवहार १. ४३१०२
अभ्यवहृत १. २. ३. ५४११०८
अभ्यागम १. ३७२०५
अभ्यागारिक १. २. ३. ५४१५२
अभ्यादान ३. ५२११५
अभ्याधान ३. ८३१२
अभ्यान्त १. २. ३. ४४११४४
अभ्यारूढ १. २. ३. ८४१५
अभ्याश १. २. ३. ५४११४०
अभ्यास १. ३७११५५
अभ्यासादन ३. ३७२०७
अभ्युत्थान ३. ५२१२०
अभ्युपगम १. ५२१३७
अभ्युपाय १. ५२१३७
अभ्युष १. ७५१११
अभ्र ३. ६३११
अभ्रक ३. ३२११५
अभ्रनाग १. १२११२
अभ्रपिशाच १. २११३७
अभ्रपुष्प १. ३३३३१
अभ्रफुल्लक १. ३९१६३
अभ्रभव १. २. ३. ५४११६
अभ्रमु २. २११९
अभ्रमुप्रिय १. १२११२
अभ्रावकाशिक १. २. ३. ३६१३०
अभ्रि १. ३६१०२
” २. ३८१२९

[ अमृतांशु

अभ्रिय १. २. ३. ५४१११६
अमत १. ३. ३६१२०२
अमति २. ७२१२
अमत्र ३. ४३६२
अमन १. ३३३४९
अमनि २. ७२११
अमर १. ७५११३
अमरा २. ३३११२७
” २. ४३११९
” २. ७५११३
अमरावती २. १२११०
अमरावली २. १२१३३
अमर्त्य १. १३१५
अमर्त्यभवन ३. ५११२
अमर्ष १. ३६११८३
अमर्षिन् १. २. ३. ५४३२
अमलपालिक १. १२१५३
अमा ४. ८७१२
अमात्य १. ३७३६
” १. ३७१९
अमात्यक १. ३७२०
अमामंस्या २. २११७१
अमामसी २. २११७१
अमावसी २. २११७०
अमावस्या २. २११७१
अमावासी २. २११७०
अमावास्या २. २११७१
अमित्र ३. ३७१४०
अमुक्त ३. ३७१९६
अमुत्र ४. ८८११५
अमृणाल ३. ३३२३१
अमृत ३. ३८१२
” ३. ३८११४६
” १. २. ३. ५४१८८
( अवमृत )
” ३. ७५१७
अमृतत्व ३. ३६१२८
अमृतफल १. ३३१६६
अमृतवह्निका २. ३३१३३
अमृता २ ब. २१११८
अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन

अमृताशन १. १११४
अमृतोद्भव १. ३३२०४
अमोघ १. ४११५२
अमोघा २. ३३१९०
” २. ३८१९७
अम्बक ३. ४४१९४
अम्बर ३. २११२
” ३. ४३११६
अम्बरीष १. ३. ४३१५६
” १. ८५३
अम्बला २. ४३११०७
अम्बल्लोर्ण ३. ४३११०७
अम्बष्ठ १. ३५३
” १. ३५६५
” १. ३५६६
” १. ३५७०
अम्बष्ठा २. ३३११३१
” २. ३३११३३
” २. ३८१७७
अम्बा २. ३९११०६
” २. ४४१२६
” २. ४४१२७
अम्बिका २. ४४१२७
” २. ७२१२
अम्बु ३. ४२१२
” ३. ८१११५
अम्बुक १. ३३३६५
” १. ३३३१९४
अम्बुकपि १. ४११५४
अम्बुकफ १. ४२१३३
अम्बुकान्तार १. १२१४५
अम्बुकुकुट १. २३१२२
अम्बुज १. २३३३२
” १. ३३३६७
” ३. ४२३९
” ३. ५३३२८
” १. ८६१३३
अम्बुजा २. ११३३६
अम्बुवृत् १. २२१२
अम्बुवर्धन ३. ४२१३३
अम्बुवह्नी २. ३४१६४

शब्दानुक्रमणिका

अम्बुवास १. २११४५
अम्बुवेतस १. ३३३३०
अम्बुसूकर १. ४११५३
अम्बुकृत १. २. ३. २४११८
अम्भस् ३. ४२११
अम्भरा २. ४३३४४
अम्ल १. ५३३२६
अम्लजुण्डी २. ३८११४१
( अम्लजुण्डी )
अम्लतिक्तकषाय १. ५३३३५
अम्लदुण्डी २. ३८११४१
अम्ललोणी २. ३३३१६३
अम्लवेतस १. ३८१३३
अम्लान १. ३३३१८८
अम्लिका २. ३३३८१
अम्लोट १. ३३३९४
अय १. ३६१८९
” १. ३९१६१
अयन ३. ७३३१
अयन्त्रित १. २. ३. ५४१३२
अयश्शालाका २. ३७१८४
अयस ३. ३२३३
” ३. ८६१६६
” ३. ८६१७७
अयस्कान्त १. ३२३२८
अयस्कार १. ३९११६
अयाचित ३. ३८१२
अयि ४. ८७१२२
अयुगच्छद १. ३३३४६
अयुगम १. २. ३. ५४३२३
अयुत ३. ५३३२८
अयोध्या २. ४३३५
अयोनि १. ४३३६५
अयोमणि १. ३२३३७
अयोमल ३. ३२३३६
अयोमुख ३. ३१३२०
अयोर्गला २. ४३३४८
अर १. ३७१३५
” १. २. ३. ५४१२४
अरघट्टक १. ४२३२१

[ अरुन्तुद

अरणि १. २४३२२
” १. ३३३८६
” २. ३६१५०
” १. २. ३६१०८
अरण्य ३. ३३३१
अरण्यजतिल १. ३८३३९
अरण्यमक्षिका २. २३३४५
अरण्यानी २. ३३३२
अरति १. ८९११०
अरत्नि १. ३११५५
” १. ७१११
अरर ३. ४३३४६
” १. ७५११०
अरविन्द ३. ४२१७
अराति १. ३७१४०
अराल १. ३८११११
” १. २. ३. ५४१२४
अरि १. ३७१४०
अरिचिन्तन ३. ३८११४
अरिज ३. ३२३२२
अरिन्न ३. ४२११६
अरिन् ३. ३७१३४
अरिम १. ३३३६४
अरिमर्दन १. १२११२
अरिमेदक १. ३३३६४
अरिश्रेणी २. २११७७
अरिष्ट १. २३३१७
” १. ३३३३२
” १. ३३३२०४
” ३. ३३३१९०
” ३. ४३३२०
” १. ४३३३९
अरिष्टताति १. २. ३. ५४१५५
अरिष्टनेमि १. ११११२
अरुण १. ५३३१७
” १. २. ३. ७५१६
अरुणा २. ३८१९०
” २. ७५१६
अरुणोपल १. ३३३२०
अरुन्तुद १. २. ३. ५४११२

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३१८७३
अरुणकर १.	३३३१५	" १.	६११३
अरुसू ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३१६१२०
अक १.	२१११०	अर्थवाद १.	२१४३७
" १.	३३२१७	" १.	३१६३३
" १.	५१४४	अर्थशास्त्र ३.	३१६३०
" १.	८१६२	अर्थसञ्चय १.	३१७४४
अर्कवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५१४६०
अर्कात्मजा २.	४२२२५	अर्थ्य १.	२३३३६
अर्केष्ट ३.	३१८११३	" ३.	३३२१६
अगल ३.	३१७५५	" १. २. ३.	६१४१
" १. २. ३.	४३३४७	अर्दना २.	३१६३०
" ३.	४३३५०	अर्दनि १.	८१९१०
" १. २. ३.	४३३५०	अर्दित १. २. ३.	५१४१०२
" १. २. ३.	८१९३८	" १. २. ३.	५१४११२
अर्ग्वध १.	३३३४८	अध १.	४१४५६
अर्घ १.	३१८१०	अर्घचन्द्र १.	३१७१८२
" १.	६११५	अर्घगुच्छ १.	४३३१४०
अर्घ्य १. २. ३.	६१४१	अर्घजाह्नवी २.	४२२२८
अर्घ्या २.	३३४४१	अर्घतूर १.	३१९१३९
अर्चना २.	३६३३९	अर्धनाकुल ३.	३६३२१८
अर्चा २.	३६३३९	अर्धनाराच १.	३१७१८१
" २.	६२२१	अर्धपद १.	३११५१
अर्चिष्मत् १.	१२२१६	अर्धपद्मासन ३.	३६३२११
अर्चिसू ३.	१२२२९	अर्धमुकुट १.	१११४७
" २. ३.	६१५६	अधमाणव १.	४३३१३९
" २. ३.	७५३३२	अधमानव १.	३१९६५
अर्जक १.	३३३१९९	अधमानुष १.	३१९६५
अर्जुन १.	३३३३९	अधमायूरी २.	३१९१३१
" ३.	३३३२३५	अधमास १.	२११७९
" १.	५३३१०	अधमासतम १. २. ३.	५१११९
" १. २. ३.	७५५५	अधमुष्टिक १.	४१४८०
अर्जुनी २.	४२२२६	अधरात्र १.	८१९३२
" २.	७५५५	अधरात्रक १.	२११६६
" २.	८१९५५	अधरूपक १.	३१८३७
अर्ण १. ३.	२१४२१	अधर्च १. ३.	८१९२८
अर्णव १.	४२२१२	अधर्शत्य ३.	३१७१८१
अर्णसू ३.	४२२१	अधसूची २.	३६३२१५
अर्णिका २.	४१४४	अधहस्तक १.	३११५८
अर्ति २.	३१७१७८	अधहार १.	४३३१४०
" २.	६२२१	अधोक्त ३.	४३३१२२

अलस १.	४१४१३५	अवक्रय १.	३१८१०	अवनाट १. २. ३.	५१४१२
" १. २. ३.	५१४५५	अवक्षेपणी २.	३१७११४	अवनि २.	३११४
" १. २. ३.	७५५५५	अवखात १.	४११३	" २.	३३३६७
अलसान्द्र १.	३१८४६	" १.	४२२७	अवन्ति १ व.	३१३३७
अलरफुटिन् १.	३६३११२	अवगति २.	३६३१६४	अवन्तिसोम ३.	४३३८२
अलात ३.	१२३३२	अवगाह १.	४३३६१	अवन्ती २.	४३३९
अलावू २.	३३३१६७	अवगीत १. २. ३.	३६३१२	" २.	४१४२७
अलि १.	२३३४२	" १. २. ३.	८१५१	अवन्ध्य १. २. ३.	३३३८
अलि (-न्) १.	४१३३२	अवग्रह १.	८११४	अवपात १.	३१७५२
अलिक ३.	४१९६	अवग्रह १.	२२२४	अवभ्रत १. २. ३.	५१४१२
अलिङ्ग ३.	३६३१६२	अवघात १.	४३३६६	अवम १. २. ३.	५१४७५
अलिङ्गर ३.	४३३५६	अवचूड १.	३१७१३४	अवमर्द १.	३१७२०७
अलिन् १.	२३३४२	अवच्छेद १.	३६३३३	अवमानना ३.	३६३१७२
" १.	८६३१४	अवज्ञा २.	२१४३०	अवमुण्ड १. २. ३.	३६३६६
अलिन्द १.	४३३४५	" २.	३६३१७२	अवयव १.	४१४५५
अलिप्रिय १.	८११५९	अवज्ञात १. २. ३.	५१४५५	अवर ३.	३१७७८
अलीक १. २. ३.	२१४१७	अवट १.	२३३४	( अपर )	
" ३.	७३३२	" १.	३११५४	अवरक्षणी २.	३१७११२
अलीमक ३.	३११५७	" १.	४१३३	अवरज १.	४१४३१
अलोचक ३.	४३३११४	अवटीट १. २. ३.	५१४१२	" १. २. ३.	५१४४
अल्प १.	१२२५३	अवट्ट १. २.	४१४८५	अवराविला २.	२११७६
" १. २. ३.	५१४१३६	" १. २.	८६३९	अवरीण १. २. ३.	५१४११०
अल्पतनु १. २. ३.	५१४५	अवटोमनहस्त १.	४१४८१	अवरंट १.	३१५६०
अल्पतुम्बी २.	३३३१६८	अवतंस १.	८११५९	अवरोध १.	४३३३६
अल्पपच १.	३३३१२०	अवतमस ३.	२११६३	अवरोह १.	३३३५२
अल्पपल्लव ३.	४२३६	अवतरण ३.	८३३३३	" १.	८११५
अल्पपुष्प ३.	३३३७०	अवतार १.	४२२२०	अवरोहक २.	३१८३३
अल्पफला २.	३३३१७५	" १.	५३३२३	अवर्ण १. ३.	२१४३२
अल्पमात्र १.	३३३१२१	" १.	८११५	अवर्णवाद १.	२१४३३
अल्पहरिण १.	३३३१३	अवतारण १. २. ३.	३१९१४१	अवलम्न १.	४१४६७
अवकटा २.	३१९८६	अवतीर्ण १. २. ३.	५१४९५	अवलेप १.	८११५५
अवकर १.	४३३५२	अवतोका २.	३१४४७	अवलोक १.	३१९९०
अवकरालय १.	३६३१११	अवदात १.	५३३१०	अवलोर्ण १.	८१११६
अवका २.	३६३६०	" १. २. ३.	८१४३	अवलोलुक १.	५१४५२
" २.	४२२४८	अवदारण ३.	३१८२८	अवल्गुज १.	३३३१०८
" २.	४२२४९	अवदाह १.	३३३२३२	अवश्यम् ४.	८१८१२
अवकाश १.	२११७	अवद्य १. २. ३.	५१४७५	अवश्याय १.	२२२९
अवकीर्णिन् १. २. ३.	३६३१३	अवधारणा २.	२१४४०	" १.	८१९१३
अवकील १.	३१८२६	अधधि १.	४११३	अवष्टम्भ १. २. ३.	८१४४
अवकेशिन् १. २. ३.	३३३८	अवधीरण ३.	३१७१३	अवष्टम्भ १.	३१७२०८
अवक्र १. २. ३.	५१४१२४	अवध्वस्त १. २. ३.	८१४४	" १.	८११४

अवसविधिका ]

अवसविधिका २.	३१६१५०
अवसर १.	५१२१७
अवसाद १.	३१६१९१
अवसादनी २.	३१३१९१
अवसित १. २. ३.	८१४३
अवसुधिरा २.	४१४८४
अवस्कन्द १.	३१७२०३
" १.	३१८१७
अवस्कर १.	८१११५
अवस्था २.	५१२१२
अवहिस्था २. ३.	३१९८६
अवहेल ३.	३१६१७२
अवाक ४.	८१८१९
अवाक्युति १. २. ३.	५१४१३
अवाच् १. २. ३.	५१४१४
" ४.	५१४१५
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३.	५१४१५
अवाच्य १. २. ३.	२१४१६
अवान्तरदिशा २.	२१३३
अवार ३.	४१२३२
अवि १.	३१४६४
" १.	५१४३
" १. २.	६१५४
अविदूस् ३.	३१८१४७
अविन १.	७११९
अविनीत १. २. ३.	५१४३१
अविनीता २.	४१४१२
अविमरीस ३.	३१८१४७
अविरत १. २. ३.	५१४१३०
अवलम्बित १. २. ३.	५१४१४
" १. २. ३.	५१४१२५
अविला २.	३१४६५
अविशेष १.	३१६२०५
अविष १. २. ३.	७१५१२
अविषाद १.	३१७२८
अविसोढ ३.	३१८१४७
अविस्तर १.	२१४४०
अवीची १.	११२३७
अवीरा २.	४१४२०
अव्यक्त ३.	३१६१६२
" १. २. ३.	७१५१३

वैजयन्तीकोषः

अव्यय १.	३१३१९१
अव्यथा २.	३१३१७८
" २.	३१८८९
अव्यथिष १. २.	८१५१
अव्यय १. ३.	१११४८
" ३.	८१७१
अव्यादा २.	३१८५८
अशन ३.	४१३१७५
" ३.	४१३१०२
अशनाया २.	३१६१८२
अशनायित १. २. ३.	५१४३६
अशानि १. २.	२१२१६
" १. २.	२१२१६
" १. २.	७१५१५
अशिख १. २. ३.	३१६१६
अशित १. २. ३.	५१४१०७
अशिरस् १.	३१७२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिशिषा २.	३१६१८२
अशिक्षी २.	४१४२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५११२७
अशूर १. २. ३.	३१७१४७
अशोक १.	३१३१४०
अशोकवनिना २.	११२१४४
अशोका २.	३१८१८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	५१४४८
अश्मकुट्टक १.	३१९२२
अश्मगर्भ ३.	३१२३८
अश्मज ३.	३१२१६
अश्मन् १.	३१२१८
" १.	३१६१०२
अश्मन्त ३.	४१३१०४
अश्मन्तक १	३१३१४
अश्मन्तिका २. ३.	८१८३२
अश्मरी २.	४१४१२८
अश्मरीरिपु १.	३१३१४१
अश्ममारक १.	३१२३४
अश्र १.	४१३१५२
अश्रान्त १. २. ३.	५१४१३०

[ अष्टावक्र

अश्रि २.	४१३१५२
अश्रु ३.	३१९८७
अश्रुष्टार्थ १. २. ३.	२१४१७
अश्व १.	१११३०
" १.	३१७१०
" १.	८१६१७
अश्वकन्द १.	३१३१२८
अश्वकर्ण १.	३१३३८
अश्वखुरी २.	३१३१३४
अश्वगन्धी २.	३१३१२८
अश्वतर १.	३१७१०८
अश्वस्थ १.	३१३२७
अश्वपण्य १.	३१५१२
" १.	३१५७१
अश्वपोत १.	३१७१०७
अश्वप्रिय १.	३१८१५२
अश्ववडव १ द्वि.	८१५११
अश्वमारक १.	३१३१९२
अश्वमुख १.	११३३
अश्वयुज २.	२११४२
अश्वरिपु १.	३१३१९२
अश्ववाल १.	३१३२२७
अश्वार २.	३१७१०७
अश्वारि १.	३१४१८
अश्विन् १ द्वि.	११३२
अश्विनी २.	२११४२
अषाढा १ व.	२११४३
अष्टकर्मपरिभ्रष्ट १.	१११३५
अष्टग्रास १. २. ३.	३१६१३३
अष्टपाद १.	३१४३२
अष्टम १. २. ३.	५११२०
अष्टमक १. २. ३.	५११५०
अष्टमकालभुज् १. २. ३.	३१६१२६
अष्टमङ्गल १.	३१७१३
अष्टमान ३.	५११५३
अष्टमिका २.	५११५०
अष्टवर्ग १.	३१७१९
अष्टाङ्ग १.	३१६२०८
अष्टापद १. ३.	८१५२
अष्टावक्र १.	३१६१५७

अष्टी ]

अष्टी २.	३१६११६
" २.	६१२११
अष्टीला २.	४१४११३
अष्टीवत् १. ३.	४१४५९
असक्त १. २. ३.	५१४१३०
असङ्ग्रह १.	३१६२०९
असत् ३.	३१६१६२
असती २.	४१४१९
असतीसुत १.	४१४४३
असद्व्युत् १. २. ३.	३१६१११
असन १.	३१३३९
असम्पुष १.	११११५
असम्पुक्त १. २. ३.	८१४४
असहन १.	३१७४१
असार १. २. ३.	५१४७६
असि १.	३१७१५८
" १.	३१७१५९
" १.	८१६१६
असिक्ती २.	३१७३९
असित १.	२११३५
" १.	३१९४९
" १.	५१३११
असितानन १.	३१४४०
असिद १.	३१८३०
असिधावक १.	३१९१५
असिधेनुका २.	३१७१६३
असिपत्त्रिका २.	३१३१७
असिपुत्री २.	३१७१६३
असिप्लव ३.	४११५५
असु १ व.	३१६२०३
असुर १.	११३१९
" १.	३१७६१
" १.	३१८१२४
असुरभि १.	५१३१७
" १.	५१३१८
असुराचार्य १.	२११३४
असुराह्वय ३.	३१२२८
असुवर्चिका २.	३१८१२९
असूया २.	३१६१८४
असूर्जन ३.	३१६१७२

शब्दानुक्रमणिका

असृकर १.	४१४१०४
असृग्धरा २.	४१४१०३
असृज् ३.	४१४१०६
असोढ १.	३१७६९
असोल १.	५१३३६
अस्त १.	३१२१६
" १. २. ३.	५१४१७
अस्तम् ४.	८१८१६
अस्तमयाचल १.	३१२१६
अस्तित् १. २. ३.	५१४५७
अस्तु ४.	८१७१३
अस्तेय ३.	३१६२०९
अस्त्र ३.	३१७१५७
अस्त्रग्राम १.	५१११७
अस्त्रजीवन १. २. ३.	३१७१४३
अस्त्रशासन ३.	३१६३०
अस्त्रिन् १. २. ३.	३१७१४३
अस्थान ३.	३१७५६
" १. २. ३.	४१२१९
अस्थि ३.	४१४१०८
" ३.	४१४१०८
अस्थिखाद १.	३१४१०
अस्थितेजस् ३.	४१४११०
अस्थिपञ्जर ३.	४१४११४
अस्थिमत् १.	३१३१३०
अस्थिर १. २. ३.	५१४६८
अस्थिप्रेमन् १. २. ३.	५१४२६
अस्थिसङ्घात १.	३१३१३०
अस्थिसङ्ग्रह १.	४१४१३०
अस्थिसम्भव ३.	४१४११०
अस्थिस्नेह १.	४१४११०
अस्पन्दनस्थिति २.	३१९८९
अस्फुटभाषण १. २. ३.	५१४४७
अस्मद् १. २. ३.	८१९४९
अस्मिता २.	३१६१६९
अस्त्र ३.	४१४१०५
" १. ३.	६१५७
अस्तु ३.	३१९८७
अस्वप्न १.	१११३

[ आ

अह ४.	८१७१२
अहंयु १. २. ३.	५१४२९
अहङ्कार १.	३१६१६९
अहङ्कारिन् १. २. ३.	५१४२९
अहत ३.	४१३१२०
अहन् ३.	२११५६
अहमहमिका २.	३१६१७१
अहम्पूर्विका २.	३१६१७०
अहर्गण १.	३१६१८४
अहर्पति १.	२१११२
अहर्मुख ३.	२१६६८
अहस्कर १.	२१११२
अहस्तान १.	१२१२६
अहह ४.	८१७३२
अहार्य १.	३२११
अहि १.	४११५
" १.	६११५
अहिंसा २.	३१६२०९
अहिक १.	४११४३
अहिच्छत्र १ व.	३११२६
" ३.	३१३१५३
अहित १.	३१७४०
अहिनिस्वयनी २.	४११२१
अहिपताक १.	४१११८
अहिपृष्ठ ३.	३१७५३
अहिभय ३.	३१७१५
अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
अहिर्घ्नित् १. २. ३.	३१६१३१
अहीन १.	३१६१८५
" १.	३१६१८५
अहीरिणि २.	४११२०
अहेरु २.	३१३१४२
अहो ४.	८१८१६
अहोत्र ३.	३१६१९६
अहोरात्र ३.	२११५५
अह्नाय ४.	८१८११
आ	
आ ४.	८१७११
" ४.	८१७१२

[ आ ]

आः ४.	८७२
आकम्पित १.२.३.	५४१५५
आकर १.	३२११०
" १.	५११२
" १.	७११९
आकर्णक १.२.३.	४३११०८
आकर्णकर्षण ३.	३१११९१
आकर्ष १.	३१७७२
" १.	७११३
आकलन ३.	८३१३
आकल्प १.	४३११३२
आकार १.	५२१२२
" १.	७११७
आकारगोपना २.	३११८६
आकारणा २.	२४३३०
आकालिकी २.	२२१४३
आकाश १. ३.	२११२
आकीर्ण १.२.३.	५४१११०
आकुल्य ३.	४४११३८
आकृत ३.	३१६१७४
आकृति २.	३१६१७४
आकृति २.	७२१२
आक्रन्द १.	७११५
आक्रम १.	५२११६
आक्रीड १.	३३३३
आक्रीश १.	१४३३२
आक्षारण ३.	२४३३४
आक्षारित १.२.३.	३१८१११
आक्षिप्त १. २. ३.	५४३६७
आक्षेप १.	७१११०
आक्षेपक १.	४४११३६
आक्षोड १.	३३३४६
आखण्डल १.	१२१६
आखनिक १.	३४३६
आखु १.	४११३१
" १.	६११७
आखुभुज् १.	३४३७१
आखुयान १.	१११५४
आखेट १.	३११३९
आखोर १.	२११८८
आख्या २.	२४३३१

वैजयन्तीको

आख्यान ३.	२४३३८
आख्यायनी २.	२४३२५
आख्यायिका २.	२४३३८
आगन्तु १.	३१६६८
आगम १.	७११८
आगस् ३.	३१७४७
" ३.	८३११६
आगू (-अगुर्) २.	३१८४७
आग्निमासुत ३.	३१६१५२
आग्नीध्री २.	३१६११४
आग्नेय ३.	२११९०
" १.	२११९०
" १.	२११९२
" ३.	३१६६५
" १.	३१६१५२
" ३.	४४११०६
" १. २. ३.	५४१११८
आग्नेयी २.	२११४
" २.	२११९१
आग्रह १.	७११२
आग्रहायणिक १.	२११८१
आग्रहायणी २.	२११३८
" २.	२११७४
आग्रायणी २.	२११७४
आवट्टलिका २.	३१७१२५
आघात १.	७११८
आघारण १.	३१६१००
आङ्गलौकिक १.	३१६१९८
आङ्गिक १. २. ३.	३१७१९९
" १. ३.	४३३१२८
आङ्गिरस १.	२११३३
आचाम १.	४३३७८
आचार १.	३१६११५
आचारा २.	११११६
आचार्य १.	३१५५६
" १.	३१६२२
" १. २.	८११४४
आचार्या २.	४४३२३
आचार्यानी २.	४४३२२
आचित ३.	५११६२
" १. २. ३.	५४१११५

( १४ )

[ आख्य ]

आच्छादन ३.	२११६४
" ३.	४३१११६
" ३.	८३३३
आच्छुरित ३.	४३१११२
आच्छुरितक ३.	३१९१४
आच्छोटन ३.	३१९३८
आजक ३.	५१११०
आजान ३.	५२११
आजानज १.	१११६
आजानेय १.	३१७१४
आजि २.	६२३३
आजीव १.	३१८११
" १. ३. ३.	५४११६
( आजिल )	
आज्ञा २.	३१७३४
" २.	३१७४८
आज्ञागणिका २.	३१७३४
आज्य ३.	३१८१३८
" ३.	५११५१
" ३.	६३३२
आज्याधिवासन ३.	३१६९०
आज्याधिभ्रयण ३.	३१६९०
आज्यावेक्षण ३.	३१६९०
आटक १.	३३३१८
आठरूष १.	३३३१०१
आटि ३.	३३३११
आटोप २.	३१९१८९
आडम्बर १.	३१९१३८
" १. ३.	८१५४
आडिण्डिक ३.	३१६६
आडक ३.	४३३४१
" १.	५११६३
आडकिक १.२.३.	३१८२१
आडकी २.	३२११७
" २.	३१८१८
आढा २.	४११३३
आढिक ३.	४४११०८
आढ्य १. २. ३.	५४११७

[ आणवीन ]

आणवीन १.२.३.	३१८२०
आतङ्क १.	७११९
आतञ्जन ३.	३१८१४४
" ३.	८३३४
आतनायिन् १.२.३.	५४३६८
आनति २.	२११६२
आतप १.	१२३३१
" १.	२११२२
आतपत्र ३.	३१७१६
आतर १.	४२११८
आताना २.	३३११८६
आतपिन् १.	२३३२८
आताल १.	३१७११३
आति २.	२३१११
आतिथ्य १.२.३.	३१६६७
" १.	३१६६८
आतिवाहिक १.	१२३३८
आतुर १. २. ३.	४४११४४
आतोद्य ३.	३१९११४
आत्तगन्ध १.२.३.	५४३६७
आत्मगुप्ता २.	३३३१२९
आत्मघोष १.	३३३१५
आत्मज १. २.	४४३३९
आत्मन् १.	६११६
आत्मनीन १.	८१५३
आत्मभू १.	७११६
आत्मस्मरि १.२.३.	५४३५०
आत्मयोनि १.	८१११६
आत्मसम्बन्ध १.	१११४८
आत्माशिन् १.	४११४१
आत्मीय १.२.३.	३१७३३
आत्रेय १.	४४११०४
आत्रेयी २.	४४११५
आथर्वण ३.	३१६३७
" ३.	४३३२०
आदर्श १.	४३३१६२
आदान ३.	३१७१८९
आदाली २.	३३३१६२
आदि १.	५४३७६
आदितेय १.	१११३
आदित्य १.	११३३

शब्दानुक्रमणिका

आदित्य १.	११११९
" १.	१३३८
" १.	२१११५
आदिदेव १.	१११५
आदिम १. २. ३.	५४३७६
आदीनव १.	५२३४
आहत १. २. ३.	७४३२
आदेशिन् १.	३१७२५
आद्य १. २. ३.	५४३७६
" १. २. ३.	६४३२
" १.	६५३७
आद्यून १. २. ३.	५४३५१
आधान ३.	३१६६९
आधानिक ३.	३१६३
आधार १.	४२३६
" १.	७११५
आधि १.	६११७
आधिक १.	३१८७०
आधूत १. २. ३.	५४३९५
आधेय ३.	३१६६९
आधोरण १.	३१७८८
आध्यात्मिक १.	३१६२०८
आन १.	३१६२०४
आनक १.	३१९१३३
" १. ३.	३१९१३४
आनकदुन्दुभि १.	१११२६
आनत १. २. ३.	५४३८३
आनद्ध ३.	३१९११५
आनन ३.	४४३८६
आनन्द १.	३१६१८८
आनन्दन ३.	३१६१८६
आनन्दना २ ब.	२१११८
आनर्त १.	७११४
आनाय १.	३१६७
" १.	७११४३
आनाह १.	३१६६१
" १.	४४३२८
" १.	५२३५
आनील १.	३१७१००
आनुपूर्वी २.	३१६११४
आनुपूर्व्य ३.	३१६११३

( १५ )

[ आभिगामिकगुण ]

आन्तरालिक १.	३१५११९
आन्त्र ३.	३४३११३
( अन्त्र )	
आन्दोल १.	३१७१३७
आन्दोलन ३.	३१७१३७
आन्धसिक १.२.३.	४३१९२
आन्वीक्षिकी २.	३१६३१
आपगा २.	४२३२३
आपण १.	४३३३४
आपद् १.	३१६१९१
आपन ३.	५२३३३
आपन्न १. २. ३.	५४३१०९
" १. २. ३.	७४३२
आपन्नसत्त्वा २.	४४३१६
आपमित्यक ३.	३१८६
आपव १.	३१६१५५
आपाण्डुफल १.	३३३१६६
आपात १.	७११९
आपान ३.	३१९५०
आपिङ्गलक १.	३१६१२२
आपिञ्जन ३.	३१८११४
आपीड १.	४३३१५४
आपीन ३.	३३३५१
आपूपिक ३.	५११११
आप्त १. २. ३.	३१७३३
" १. २. ३.	३१८१९
" १. २. ३.	५४३९९
आप्रपदीन १. २. ३.	
४३३१२१	
आप्राप्त १.	३१६१९१
आप्लव १.	४३३११३
आप्लाव १.	४३३११३
आप्लुत १. २. ३.	७४३३
आबद्ध १. २. ३.	३१७१४२
आबन्ध १.	३१८२८
आबर्हित १.२.३.	५४३१००
आलुक १.	३१९१०६
आभरण ३.	४३३१३३
आभा १. २. ३.	५४३१२२
आभाषण ३.	२४३२३
आभिगामिकगुण १.	३१७३
" १.	३१७८

आभीर ]

आभीर १.	३१५६
" १.	३१५९९
" १.	३१९२८
आभीरपल्ली २.	३१९३२
आभील ३.	१२३२९
" १. २. ३.	३१९७९
" १. २. ३.	७३१२
आभोग १.	७११७
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३१९७४
आम् ४.	८८११७
आम १.	४३१३८
" १.	६१५७
आमण्ड १.	३३३६५
आमनस्य ३.	१२३२९
आमन्त्रण ३.	२३३३१
आमन्त्रणिक ३.	३३३३३
आमपात्र ३.	३३३३४
आममांसक १.	५३३३६
आमय १.	४३३३८
आमयाचिन् १. २. ३.	४३३३५
आमलक १. २. ३.	३३३३७
आमिच्छा २.	३३३३८
आमिष १.	३३३३९
" ३.	४३३३७
" १.	४३३३४
" ३.	५३३३५
आमिषाशिन् १. २. ३.	५३३३०
आमिषी २.	३३३३०
आमुक्त १. २. ३.	३३३३२
आमुष्यायण १. २. ३.	५३३३३
आमोद १.	५३३३०
" १.	७३३३७
आम्नाय १.	७३३३३
आम्न ३.	३३३३१
" १.	३३३३५
आम्नात १.	३३३३३
आम्नेडन ३.	५३३३९
आम्नेडित १. २. ३.	२३३३२

वैजयन्तीकोषः

आय १.	३३७४४
आयत १. २. ३.	५३३८१
आयति २.	७३३३३
आयत्त १.	३३३३४
" १. २. ३.	५३३२८
आयल्लक ३.	३३३३७
आयश्शूलिक १. २. ३.	५३३७४
आयस्त १. २. ३.	७३३३३
आयान ३.	३३३३६
आयाम १.	३३३३७
" ३.	३३३३९
" १.	५३३३५
आयास १.	३३३३९
आयु १.	१३३२५
आयुध २.	३३३३७
" २.	३३३३६
आयुध ३.	३३३३३
" ३.	३३३३७
" ३.	८३३३९
आयुधाग्रय २.	३३३३७
आयुधिक १. २. ३.	३३३३३
आयुधीय १. २. ३.	३३३३३
आयुर्वेद १.	३३३३९
आयुर्वेदिन् १. २. ३.	४३३३४
आयुस् ३.	३३३३१
" ३.	६३३३५
आयोग १.	७३३३४
आयोगव १.	३३३३२
" १.	३३३३२
" १.	३३३३२
" १.	३३३३६
आयोधन ३.	३३३३४
" ३.	८३३३४
आर १.	३३३३३
" १.	३३३३६
आरकूट १. ३.	३३३३६
आरक्ष १.	३३३३८
" १.	३३३३४
आरग्वध १.	३३३३८
आरट्ट १ व.	३३३३४

[ आर्य ]

आरट्ट १. २. ३.	३३३३६
" १.	३३३३६
आरणिन् १.	३३३३३
आरति २.	५३३३६
आरनाल ३.	४३३३१
आरभट १. २. ३.	३३३३७
आरभटी ३.	३३३३०
आरम्भ १.	३३३३०
" १.	५३३३५
आरलु १.	३३३३९
अरव १.	३३३३३
आरा २.	३३३३३
आराग्र ३.	३३३३५
आरात् ४.	८३३३६
आराधन ३.	३३३३८
" ३.	८३३३४
आराम १.	३३३३३
आरालिक १. २. ३.	४३३३२
आराव १.	३३३३३
आरु १.	३३३३४
" १.	५३३३४
आरूढ १.	३३३३२
आरेवत १.	३३३३८
आरोग्य ३.	४३३३४
आरोपित १. २. ३.	५३३३०
आरोह १.	३३३३८
" १.	७३३३७
आरोहण ३.	४३३३५
" ३.	५३३३५
आरुवध १.	३३३३८
आर्जिक १. २. ३.	४३३३३
आर्तगल १.	३३३३९
आर्तव ३.	४३३३६
आर्ति २.	३३३३७
" २.	३३३३७
आर्द्र १. ३.	३३३३४
" १. २. ३.	५३३३०
आर्द्रक १. ३.	३३३३४
आर्द्रा २.	२३३३०
आर्य १.	३३३३३
" १.	३३३३०

आर्य ]

आर्य १. २. ३.	५३३३१
" १. २. ३.	६३३३३
आर्यक ३.	३३३३६
आर्यपुत्र १.	३३३३०
आर्या २.	१३३३८
आर्यावर्त १.	३३३३३
आर्यभ ३.	३३३३९
आर्यभी २.	२३३३७
आर्यभ्य १. ३.	३३३३५
आल ३.	३३३३४
आलगन्धिका २.	३३३३४
आलम्भ १.	७३३३०
आलय १.	४३३३८
आलवाल ३.	४३३३०
आलस्य ३.	३३३३८
" १. २. ३.	५३३३५
आलान ३.	३३३३२
" ३.	७३३३३
आलाप १.	२३३३३
आलावर्त १.	४३३३५
आलास्य १.	४३३३३
आलि १.	४३३३२
" २.	५३३३४
" २.	६३३३३
आलिङ्गन ३.	४३३३७
आलिङ्ग्य १.	३३३३९
आलिन्द १.	४३३३५
आली २.	३३३३६
" २.	४३३३५
आलीढ ३.	३३३३७
आलु २.	४३३३७
आलुक १.	५३३३४
आलेख्यलेखा २.	३३३३४
आलेप १.	४३३३७
आलोक १.	१३३३१
" १.	७३३३८
आवतारिक १.	४३३३३
आवन्त्य १.	३३३३३
" १.	३३३३०
आवपन ३.	४३३३३
आवर्जन ३.	५३३३०

शब्दानुक्रमणिका

आवर्त १.	४३३३०
आवर्तन ३.	३३३३१
" ३.	५३३३१
आवलि २.	५३३३४
आवसथ १.	४३३३८
आवसथ्य १.	१३३३५
" १.	४३३३७
आवसित १. २. ३.	३३३३७
आवाप १.	३३३३४
" १.	७३३३६
आवापक १.	४३३३४
आवाल ३.	४३३३०
आवालि २.	४३३३५
आवाह १.	४३३३६
आविः (-स्) ४.	८३३३८
आविक १.	४३३३२
आविक १. २. ३.	५३३३३
" १. २. ३.	७३३३२
आविध १.	३३३३८
आविल ३.	४३३३४
आविश १.	३३३३६
(आवश)	
आवृत्त १.	३३३३०
आवृत् २.	३३३३३
" २.	३३३३४
आवृत्त १.	३३३३५
" १. २. ३.	५३३३६
आवेश १.	३३३३९
आवेशन ३.	४३३३२
आवेशिक १.	३३३३८
आवेशक १.	४३३३४
आशंसितृ १. २. ३.	५३३३३
आशंसु १. २. ३.	५३३३३
आशङ्का २.	३३३३६
आशय १.	३३३३७
" १. २. ३.	५३३३४
" १.	७३३३७
आशर १.	१३३३१

[ आषाढ ]

आशा २.	२३३३२
" २.	६३३३३
आशाबन्ध १.	४३३३५
आशासन ३.	३३३३०
आशितम्भव १.	८३३३५
आशिर १.	१३३३९
" १.	७३३३६
आशिस २.	६३३३२
आशीविष १.	४३३३५
" १.	४३३३३
आशु ३.	३३३३२
" १. २. ३.	५३३३२
आशुग १.	१३३३९
" १.	७३३३९
आशुशुक्ति १.	८३३३०
आशोचनि १.	३३३३६
आश्रय १. २. ३.	३३३३८
आश्रम १. ३.	४३३३६
" १. ३.	७३३३६
आश्रय १.	३३३३६
आश्रयाश १.	१३३३७
आश्रव १.	५३३३४
" १.	५३३३७
" १. २. ३.	५३३३९
आश्लेष १.	४३३३६
आश्लेषा २.	२३३३३
आश्व ३.	५३३३०
आश्वकिनी २.	२३३३२
आश्वस्थ ३.	३३३३२
आश्वयुज १.	२३३३५
आश्वस १.	३३३३५
आश्विक १.	३३३३७
आश्विन १ द्वि.	१३३३६
" १.	२३३३५
आश्विनी २.	२३३३६
आश्विनेय १ द्वि.	१३३३६
आश्वीन १. २. ३.	३३३३८
आश्वीय ३.	५३३३०
आषाढ १.	२३३३४
" १.	३३३३३



आषाढ ]

आषाढ १.	३१६१८
आषाढी २.	२११७६
आस १.	३१७१७२
" १.	५३३२८
आसक्त ३.	२११६२
आसङ्ग ३.	३१११३
" १.	३१७१५९
आसन ३.	३१६२१०
" ३.	३१७६
" ३.	४३११६४
" ३.	५३१४०
" ३.	७३३
आसना २.	५२११४
आसन्दी २.	४३११६०
" २.	४३११६४
आसन्न १. २. ३.	५४११४१
आसव १.	३३३२१७
" १.	३१९४७
" १.	३१९४९
" १.	३१९५१
" १.	३१९५२
आसादित १. २. ३.	५४१९९
आसार १.	३१७२०१
" १.	७११२
आसारी २.	३११४२
आसाविक १.	३१५११२
आसिक ३.	३१७१९४
आसीन १. २. ३.	५४११०
आसुतीवल १.	३१९४४
" १.	८११५०
आसुर १.	२३११७
" ३.	३२३३४
" १.	३१८१२४
" ३.	४१४१०५
आसुरी २.	३१८४२
आसूति २.	३१९५१
आसेचनक १. २. ३.	५४१६५
आस्कन्दन ३.	३१७२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३१७११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३१७१२०
आस्तरण ३.	४३११६६
आस्ताव १.	३१६११०
आस्तिक १. २. ३.	५४३३७
आस्था २.	३१८१३३
" २.	५२३३७
" २.	६२३२
आस्थान ३.	३१८११४
आस्थानगृह ३.	४३३२०
आस्थानी २.	३१८११४
आस्पद ३.	७३३
आस्फोटनी २.	३१९११८
आस्फोट १.	३३३२९
आस्फोता २.	३३३१३४
" २.	३३३१८५
आस्य ३.	४४३८६
" ३.	६३३
आस्या २.	५२३१४
आस्र ३.	३१९१८७
" १.	६५५७
आस्वाद्य ३.	४३३९१
आहत १. २. ३.	२४३१७
" १. २. ३.	७४३
आहति २.	३१६१८९
आहर १.	३१६२०४
आहव १.	३१७२०५
आहवनीय १.	१२३२४
आहार १.	७११८
आहार्य ३.	३१८११४
" १. २. ३.	३१९१९९
" ३.	४३३७६
आहाव १.	४३२९
आहिक १ व.	२१३३७
" १.	३१६१५४
आहिण्डिक १.	३१५४४
(आहिण्डिक)	
" १.	३१५९३

[ इच्छु

आहिताग्नि १	३१६१७३
आहितुण्डिक १.	४११२५
आहुक ३.	४३३८
आहुति २.	३१६६९
आहोपुरुषिका २.	३१६१७०
आहोस्वित् ४.	८१८२
आहिक १.	३१६३२
आह्वय १.	२४३३१
आह्वार २.	२४३३१
आह्वान ३.	२४३३१
इ ४.	८१११०
इच्छु १.	३३३२२५
इच्छुगन्धा २.	३३३१४१
इच्छुगन्धिका २.	३३३१९६
( गण्डिका )	
" २.	३३३२२७
इच्छुपालिका २.	३३३२२६
इच्छुभेद १.	३३३२२६
इच्छुर १.	३३३१०१
इच्छुविदारिकार. ३.	३३३१९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३१८२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३१८२२
इच्छुसूनिका २.	४३३२५
इच्छुदक ३.	३११११
इच्छुवाकु १.	३३३४९
" २.	३३३१६८
इङ्ग १.	५२३२२
इङ्गत् १. २. ३.	५४३६१
इङ्गल १.	१२३३२
इङ्गित ३.	५२३२२
इङ्गुद १. २. ३.	३३३१०८
इङ्गुदी २.	३३३१३९
इङ्गुला २.	३३३१७९
" २.	३३३१८२
इङ्गुवासु १.	१२३५८
इच्छु २.	४३३११

इज्जल ]

इज्जल १.	३३३६७
इड्या २.	३३३३१
" २.	६२३४
इज्याशील १.	३३३७५
इट्ठर १.	३३३५३
इडा २.	६२३३
इतर १. २. ३.	५४३२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५४३२३
इतरेद्युः (सू) ४.	८१८८
इति ४.	८१७१७
इतिकथा २.	८२३
इतिह ४.	२४३३८
" ४.	८१८२१
इतिहास १.	२४३३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५२३२३
इत्थरी २.	४४३९
इत्वास १.	३३३१९९
इदानीम् ४.	८१८५
इद्ध ३.	२१३२२
इध्म १. ३.	२११८८
" १.	३३३१९६
इध्मप्रोक्षण ३.	२३३९०
इध्मवाहक १.	३३३१५७
इन १.	६५५७
इन्द्विन्दिर १.	२३३४३
इन्द्विरा २.	११३३६
इन्द्वीवर ३.	४२३३५
इन्द्वीवरी २.	३३३१४२
इन्दु १.	२१३२५
" १.	५११५२
" १.	८३३
" १.	८३३
इन्द्र १.	१२३१
" १.	६११८
" १.	८३३
इन्द्रक ३.	४३३२०
इन्द्रकोश १.	४३३३२
इन्द्रच्छद १.	४३३३३८
इन्द्रजाल ३.	३३३१३

शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	१२३४४
इन्द्रदारद १.	४१२३४
इन्द्रधनुस् ३.	२३३३
इन्द्रनील ३.	३२३४०
इन्द्रभगिनी २.	१११६२
इन्द्रमद १.	४४३३३
इन्द्रमह १.	३३३६९
इन्द्रयव १. ३.	३३३७३
इन्द्रलुप्तक ३.	४४३२६
इन्द्रवस्ति १.	४४३५७
इन्द्रवारुणी २.	३३३१७२
इन्द्रवृद्धि १.	३३३९८
इन्द्रव्रतादिक ३.	३३३६
इन्द्रसुरस १.	३३३११८
इन्द्रस्वमृ २.	११३६२
इन्द्राणी २.	१२३११
इन्द्राणीमह १.	३३३५७
इन्द्रायुध ३.	२३३३
" १.	३३३९२
इन्द्रावरज १.	११३१९
इन्द्रिय ३.	३३३२०३
" ३.	७३३४
इन्द्रियग्राम १.	५१३१७
इन्द्रियार्थ १.	५१३२
इन्द्रधन ३.	३३३९६
इन्द्रका २ व.	३३३३९
इभ १.	३३३६०
इभ्य १. २. ३.	५४३५७
इभ्या २.	३३३१०३
इरम्मद १.	१२३२०
इरा २.	३३३४५
" २.	६२३४
इरिण १. २. ३.	३३३१८
" १. २. ३.	७३३४
इर्वारु १.	३३३१६६
" २.	३३३१७२
इला २.	३३३३
" २.	६२३४
इलावृत्त ३.	३३३७
इलिक १.	३३३३३
इली २.	३३३१६०

इस्वला २ व.	२१३३९
इव ४.	८१८१५
इष १.	२१३८५
इषीक १ व.	३३३३४
इषीका २.	३३३२३५
इषु १. २.	३३३१८०
इषुधि १. २.	३३३१७९
इष्ट ३.	३३३११५
" १. २. ३.	३३३७३
" १. २. ३.	५४३९६
इष्टका २.	३३३२५
इष्टि २.	६२३४
इष्टव १.	६१३८
इष्टवास १.	३३३१७२
ईक्षण ३.	४३३९४
" ३.	७३३४
ईक्षणिका २.	४३३११
ईजान १.	२१३८४
ईडित १. २. ३.	५४३९६
" १. २. ३.	५४३१०६
ईति २.	६२३५
ईहशू १.	१३३१०
ईप्सा २.	३३३१८०
ईरित १. २. ३.	५४३९६
ईर्म १. ३.	३३३२१७
ईर्यापथस्थिति २.	३३३११६
ईर्या २.	३३३१८४
ईषिका २.	४३३११६
ईली २.	३३३३७
ईश १.	११३४०
" १. २. ३.	५४३५८
" १.	८३३३५
ईशशक्ति २.	११३४९
ईशान १.	११३४०
" १.	७३३१०
ईशित् १. २. ३.	५४३५८
ईश्वर १.	११३४०
" १.	३३३३७
" १.	३३३५३

ईश्वर १.	४४११३५	उग्र २.	३३११९७
" १. २. ३.	५४१५७	" २.	३१८१०२
" १.	७५३३५	" २.	८१२१४
ईश्वरप्रिय १.	२३३३५	उग्रिका २.	३३६१९२
ईश्वर ४.	८१८१२	उचित १. २. ३.	५४११०३
ईश्वर २.	३१८१२७	" १. २. ३.	७४१७
ईश्वरान्त १.	३१७६९	उच्च १. २. ३.	५४१८१
ईश्वरान्तबन्धन ३.	३१७१३०	उच्चकैः (-स्) ४.	८१८१९९
ईश्वरि १.	११२१९	उच्चण्ड १. २. ३.	५४१९४
ईश्वरहन ३.	५२१११	उच्चतालक ३.	३१९५४
ईश्वरहा २.	३३६१७९	उच्चन्द्र १.	२११६६
" २.	६१२५	उच्य १.	४३११३०
ईश्वरमृग १.	५५५८	उच्चल ३.	३३११७२
" १.	३१७१००	" ३.	३१७१७५
ईहित १. २. ३.	५४१९६	उच्चलित ३.	३१७१७२
उ		उच्चस्वन १.	२४३३
उ ४.	८१७१०	उच्चार १.	४३१११९
" ४.	८१७११	उच्चारणा २.	३३६३५
उक्थ ३.	३३६१११	उच्चूड १.	३१७१३४
उच्चतर १.	३३४५५	उच्चैः (-स्) ४.	८१८१९९
उच्चन् १.	३३४५२	उच्चैःश्रवस् १.	१३३११
" १.	८१६५	" १.	८१११९
उच्चवश १.	८१९५१	उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
उखा २.	४३३५५		३३६१०
उख्य १. २. ३.	४३३९४	उच्छीर्ष ३.	४२१६७
उग्र १.	१११४६	उच्छुन ३.	२११८३
" १.	३१५१३	उच्छूर १.	२११६५
" १.	३१५७२	उच्छृङ्खल १. २. ३.	
" १.	३१५७६		५४१३२
" १.	३१५११६	उच्छ्राय १.	३३३१६
" ३.	३१८१२४	उच्छ्रित १. २. ३.	७४१५
" ३.	३१८१४८	उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
" १. २. ३.	३१९७९		५४१८१
उग्रगन्ध १.	३३३१७१	उच्छ्रास १.	३१५३२
" १.	८१५५	" १.	३३३२०४
उग्रगन्धा २.	३३३१९७	उज्जट १. २. ३.	३३३१४५
" २.	३१८१०२	उज्जासन ३.	३३७२१५
" २.	८१५५	उज्ज्व १.	३१८१
उग्रता २.	३३३१९२	उज्ज १. २.	४३३२६
उग्रधन्वन् १.	११२१६	उहु २. ३.	२११३८
उग्रविष १.	३३३१९३	उहुप ३.	४२११६

उहुराज १.	२११२७
उहुनि ३.	२३१५०
उहुनीश १.	१११४५
उत १. २. ३.	५४१११२
" ४.	८१७१८
" ४.	८१८१
उताहो ४.	८१८१
उत्क १. २. ३.	५४३३४
उत्कट १.	३३३१३०
( इटकट, तिलकट )	
" ३.	३३६११६
" ३.	३१८१८०
" ३.	३१८१०४
" १. २. ३. ५४३३७	
" १. २. ३.	५४३३७
" १. २. ३.	७४३७
उत्कण्ठ १. २. ३.	८१९२७
उत्कण्ठा २.	३३६१७८
उत्कर १.	३३६१११
" १.	५१३३
उत्कलिका २.	३३६१७८
" २.	४२१२४
उत्कार १.	५२१२१
उत्कारिका २.	४३३७२
उत्कीर्ण १.	४२१७
उत्कुञ्ज १.	४३३६९
उत्कोच १.	३३७४६
उत्क्रम १.	५२११६
उत्क्रोश १.	२३३३४
उत्क्रिसिका २.	४३३१३४
उत्क्रुद्रल १.	५३३४
उत्खात १.	३३६१२९
उत्खेद १.	३३६१८३
उत्त १. २. ३.	५४१०७
उत्तंस १.	४३३१५४
" १.	८११५९
उत्तस ३.	४३३८९
उत्तम १. २. ३.	५४६२
" १. २. ३.	७४६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३१८१
उत्तमसाहस १.	५११४१

उत्तमा २.	३३३१६०	उत्पिब १.	२३३३५
उत्तमाङ्ग ३.	४४१८५	उत्पिषा १.	५३३१२
उत्तमोत्खात १.	३३६२३०	उत्प्रास १.	२४३३५
उत्तमोत्तमिक ३.	३१९१२२	उत्प्रेक्षा २.	३३६१७४
उत्तर ३.	२४३३७	उत्फुल्ल १. २. ३.	३३३९
" ३.	३१८१६	उत्स १.	३२१७
" १. २. ३.	७५११८	उत्सङ्ग १.	३१७७६
उत्तरच्छद् १.	४३३१६६	" १.	४४६०
उत्तराङ्ग ३.	४३३३३	उत्सन्नाम्नि १.	३३६१७१
उत्तरायण १.	२११९०	उत्सर्जन ३.	३३६११९
उत्तरासङ्ग १.	४३३१२३	उत्सव १.	३३६६१
उत्तरीय ३.	४३३१२२	" १.	७११११
उत्तरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८	उत्सादन ३.	८३३५
उत्तान १. २. ३.	५४१२०	उत्साधन ३.	४३३११३
उत्तानशय १. २. ३.	५४१२	उत्साह १.	३३६१६७
उत्ताल १. २. ३.	५४१५२	" १.	३३९७६
" १. २. ३.	७४३७	उत्साहा २.	३३२२५
उत्प्रास १.	३३६१०६	उत्सुक १. २. ३.	५४३३०
उत्थान ३.	४४३१२८	उत्सृष्ट १.	३३३१५१
" ३.	७३३५	" १. २. ३.	५४१०१
उत्थित १. २. ३.	३३८१८	उत्सेध १.	७१११०
" १. २. ३.	५४१५२	उदक ३.	४२२
उत्थुस १.	५३३४०	उदक्या २.	४४१५५
उत्पतन ३.	८३३५	उदम १. २. ३.	५४१८१
उत्पतिवृ १. २. ३.	५४३४२	उदग्रदत् १.	३३७६९
उत्पतिष्णु १. २. ३.	५४३४२	" १. २. ३.	५४३९
उत्पत्ति २.	४४३१८	उदच् ३.	२११८
उत्पल ३.	३३८९९	" १. २. ३. ४.	
" १.	४११४६		५४३९१
" ३.	४२३३४	उदज १.	५२३३१
" ३.	४२३३५	उदञ्चन ३.	४३३५५
उत्पलावर्त १ व.	३३३३३	उदधि १.	४२३१०
उत्पश्य १. २. ३.	५४३५४	उदन्त १.	२३३३९
उत्पाट १.	४४३१३७	उदन्त्या २.	३३६१८१
उत्पाटित १. २. ३.		उदन्वत् १.	४२३१०
		उदपान १. ३.	४२३९
		उदय १.	३३२३६
		" १.	३३७४४
		उदयनीय १.	३३६१८
		उदयाद्रि १.	३३२३६
		उदर ३. २.	४४३६७

उदरग्रन्थि १.	४४३१३०
उदरत्राण ३.	३३७१५४
उदरिल १. २. ३.	५४३७
उदर्क १.	७१११२
उद्विस् १.	११२१५
उद्वसित १. २. ३.	
	४३३१९
उद्विष्ट ३.	३३८१५०
उदात्त १. २. ३.	३३६३७
" १. २. ३.	८१७६
उदान १.	७१११२
उदार १. २. ३.	५४३२०
" १. २. ३.	५४३५६
" १. २. ३.	७४३४
उदारक १.	३३८५९
उदावर्त १.	४४३३३२
उदासीन १.	३३७४०
उदास्थित १.	३३७२७
" १.	८१११९
उदाहार १.	२३३४१
उदित १. २. ३.	७४३५
उदीची २.	२११५
उदीचीन १. २. ३.	
	५४३९१
उदीच्य १.	३३३१२
उदीर्ण १. २. ३.	५४३५६
उदुब्ज १. २. ३.	५४३९०
उदुम्बर १ व.	३३३३९
" ३.	३३२२५
" १.	३३३२८
" १. ३.	८१५४
उदुम्बरा २.	४३३४४
उदूखल २.	४३३६५
उदूढ १. २. ३.	५४३८०
" १. २. ३.	७४३६
उदूत १. २. ३.	५४३१४४
उदूमनीयक ३.	४३३१२०
उदूढा १. २. ३.	५४३३१
उदूढा १.	३३६१७९
उदूगार १.	४४३१२६
उदूगाल १.	४४३१२६

## उद्गूर्ण ]

उद्गूर्ण १. २. ३. ५४११४
उद्गाहित १. २. ३. ८४४६
उद्गीव १. २. ३. ५४२०
उद्ग १. ८१५४२
उद्गन १. ३१९३५
उद्गादन ३. ४२२१
उद्गात १. २४४१
" १. ३७२४
" १. ४३३२
उद्दंश १. ४११३५
उद्दण्ड १. ४१४६
उद्दाम १. १२४६
" १. २. ३. ५४१३२
उद्दाल १. ३३६०
" १. ३१५४३
उद्द्राव १. ३७२११
उद्दन १. ३६१०२
उद्दरण ३. ८३६
उद्दर्ष १. ३६६१
उद्दव १. ३६६१
उद्दान ३. ४३५४
" ३. ७३५
उद्दार १. ३८४
उद्धूम १. २४२८
उद्दृष्ट १. २. ३. ५४१००
" १. २. ३. ५४११२
" १. २. ३. ७४५
उद्दथ १. ४२२९
उद्दन्ध १. ३५४१
उद्दन्धवृषभ १. ३६१२२
उद्दुद्ध १. २. ३. ३३१९
उद्दृहित १. २. ३. ५४१००
उद्दव १. ४४१८
उद्दिज्ज १. २. ३. ४४१
उद्दिद् २. ४४१
उद्दिद् ३. ३८१२२
" १. ४११८
" १. २. ३. ४४१
उद्दभ्रम १. ५२३३

## वैजयन्तीकोषः

उद्यत १. २. ३. ५४११४
उद्यम १. ३६१६७
" १. ५२३४
उद्यान ३. ३३३
" ३. ७३४
उद्युक्त १. २. ३. ५४३०
उद्योग १. ३. ५२२५
उद्योत १. २११६
उद्ग १. ४१५४
( दर )
उद्गकलाहक १. ३७१०१
उद्गर्तन ३. ४३११३
उद्गान्त ३. ३७६८
" १. २. ३. ५४११४
उद्गासन ३. ३७२१४
" ३. ८३५
उद्गाह १. ३६५५
उद्गेग १. ३६१६७
" ३. ४३१०६
" १. ५२३३
उद्गेगकर्तरी २. ५३१०८
उद्दुर १. ४१३१
उद्ग १. २. ३. ५४१०७
उद्गत १. २. ३. ५४१८१
उद्गतनासिक १. २. ३. ५४६
उद्गतानत १. २. ३. ५४८३
उद्गति २. ५२२४
उद्गाम १. ५२२४
उद्गाल १. ३८५५
उद्गिद् १. २. ३. ३३१९
उद्गत्त १. ३३३७६
उद्गदिष्णु १. २. ३. ५४४१
उद्गनस् १. २. ३. ५४३४
उद्गथ १. ३७२११
उद्गाथ १. ३१५४०
उद्गाद् १. ३६१७७
उद्गान ३. ५१५६
उद्गामि १. २. ३. ३३१९

## [ उपताप

उन्मीलन ३. ३१९९०
उन्मीलित १. २. ३. ३३१९
उन्मुख १. २. ३. ५४५४
" १. २. ३. ५४१९०
उन्मूलित १. २. ३. ५४१००
उन्मेष १. ३१९९०
उप ४. ८७१८
उपकण्ठ १. २. ३. ३७१२०
" १. २. ३. ५४१४१
उपकर्या २. ४३३३०
उपकरूप १. ३३११३
उपकार १. ५२२२
उपकारिका २. ४३३०
उपकार्या २. ४३३०
उपकुञ्जिका २. ३८८५
" २. ३८८७
उपकुर्वाण १. ३६१८
उपकुल्या २. ३८७७
उपक्रम १. २४४१
" १. ३६२५
" १. ५२१५
" १. ८११८
उपक्रिया २. ५२२२
उपक्रोश १. ३६१९३
उपखिल ३. ३६३३
उपगूहन ३. ४३१६९
उपग्रह १. ८११८
उपग्राह्य ३. ३७४५
उपग्र ३. ४३१२
उपचर्या २. ४४१३९
अपचार १. ८११७
उपचित १. २. ३. ५४५७
" १. २. ३. ५४१०८
उपचित्रा २. ३३११३
उपच्छन्दन ३. २४३२
उपजाप १. ३७१३
उपजिह्विका ४. ४१३८
उपजोषम् ४. ८८१७
उपज्ञा २. ३६२५
उपताप १. ८११९

## उपत्यका ]

उपत्यका २. ३२१९
उपत्रिंश १. २. ३. ५१३५
उपदंश १. ३१५२
" १. ४३८६
" १. ४४१३२
उपदा २. ३७४५
उपदीका २. ४१३८
उपदेहिका २. ४१३८
उपद्रव १. ३६१९०
उपद्रष्टृ १. ३६१८१
उपधा २. ३६१९५
" २. ७२३
उपधान ३. ४३१६७
उपनत १. २. ३. ५४१०४
उपनय १. ३६१७
उपनाय १. ३६१७
उपनाह १. ३११२१
" १. ८११७
उपनिधि १. ३८१२
उपनिमन्त्रण ३. ३६१९३
उपनिवेशिनी २. २११७
उपनिषद् २. ८२३
उपन्यास १. २४४१
उपपति १. ४४३८
उपप्राप्त १. २. ३. ५४१०४
उपप्लव १. २१३०
" १. ३६१९०
उपबर्ह ३. ४३१६७
उपबर्हण ३. ४३१६७
उपभृत् २. ३६१००
उपमन्त्रण ३. २४४१
उपमा २. ५४१२२
उपमान ३. ३१२१
" ३. ८११७
उपयम १. ३६१५
उपयाम १. ३६१५
उपयोग १. ५२२५
उपरक्त १. २१३०
" १. २. ३. ५४६८

## शब्दानुक्रमणिका

उपरक्षण ३. ३७५९
उपरति २. ४२३६
उपरथ्या २. ४३१६
उपरमग ३. ५२३६
उपराग १. २१३०
उपराम १. ५२३६
उपरि ४. ८८१९
उपरिष्ठात् ४. ८८१९
उपरिस्थूणा २. ४३१४
उपल १. ३२१८
" १. २. ३. ७५१७
उपलब्धि २. ३६१६४
" २. ८२४
उपलम्भ १. ५२१९
उपलवण १. ३८१२६
उपला २. ४३१६३
उपलिङ्ग ३. ३६१९०
उपवन ३. ३३२
उपवर्ण १. ३५२
उपवर्तन ३. ३७४९
" ३. ३७१११
उपवर्ष १. ३६१५४
उपवसथ १. ४३२
उपवस्तु १. ३६१४४
उपवास १. ३६१४४
उपविंश १. २. ३. ५१३५
उपविषा २. ३८१९०
उपविष्कर ३. ४३१७
उपविष्ट १. २. ३. ५४१०
उपवीत ३. ३६२०
" ३. ८३१७
उपवेद १. ३६३०
उपवेश ३. ५२१४
उपवेणव ३. २१६७
उपशक्त्यक ३. ४३११
उपशाय १. ४३१६७
उपश्रुत १. २. ३. ५४१०६
उपसंव्यान ३. ४३१२१
उपसंहार १. ५२१८
उपसंग्रहण ३. ३६४०

## [ उपानह

उपसन्न १. २. ३. ५४१०४
उपसम्पन्न १. २. ३. ३७२२०
" १. २. ३. ४३१९४
" १. २. ३. ८५२६
उपसम्भाषण ३. २४२३
उपसर्ग १. ३६१९०
उपसर्जन ३. ५४६४
उपसर्था २. ३४४६
उपस्कर १. ४३१९०
उपस्करस्खलिनी २. ३७५४
उपस्करव्रत ३. ३६१४८
उपस्थ १. ३६१०३
( उपस्थाव )
" १. ४४६०
" १. ३. ४४६७
उपस्थान ३. ५२२१
उपस्थित १. २. ३. ५४१०४
उपस्पर्श १. ४३११३
" १. ८११९
उपस्पर्शन ३. ८३१४
उपहसित ३. ३१८४
उपहार १. ३७४५
उपहालक १. ३. ३११७
उपह्वर ३. ८३५
उपांशु १. ३६१२
" ४. ८७३२
उपाग्र १. २. ३. ५४६४
उपात्यय १. ३६११४
उपादान ३. ५२१८
उपाधि १. ७१११
उपाध्याय १. ३६२२
" १. २. ३. ८१४४
उपाध्याया २. ४४२३
उपाध्यायानी २. ४४२२
उपाध्यायी २. ४४२२
" २. ४४२३
उपानह २. ४३१६२

उपान्त ]

बैजयन्तीकोषः

[ ऊरव्य

ऊरी ]

शब्दानुक्रमणिका

[ एकविंशतितम

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३११४	उषस् २. ३.	२११६९
५४११४२	" २.	३१८१७	" २. ३.	६५५८
उपायन ३.	उर्वारु २.	३३११६७	उषा २.	२११५७
३१७४५	" १.	३३११७२	" २.	३१४४१
उपालम्भ १.	उर्वी २.	३१११	" ४.	८८१११
२१४३५	उलङ्गल १.	४११३७	उपापति १.	१११२९
उपावृत्त १. २. ३.	उलन्द १.	१११४६	उषित १. २. ३.	७४४७
३१७१०७	उलप १.	३३३७	उषू १.	३१४६७
उपासङ्ग १.	" १.	३३३२९	उषूग्रीवक १.	४४१३१
३१७१७८	उलम्ब ३.	४३३७०	उषूधूमपुच्छिका २.	३३३१२६
उपासत्त ३.	उलक १.	२३३२२	उष्टिका २.	४३३६१
३१७१९५	उलकचेटी २.	२३३२१	उष्ण १.	२११८८
उपासना २.	उलकारि १.	२३३१६	" १.	३३३५६
३३३३८	उलखल १.	३३३१९	(कृष्ण)	
उपासित १. २. ३.	" ३.	४३३६५	" ३.	५३३७
५४११०५	उलखली २.	३१७१११	" १. २. ३.	६५५८
उपाहित १.	उल्लु १.	३३३१७	उष्णक १. २. ३.	५४५५४
१२११७	उल्का २.	१११३२	उष्णवीर्य १.	४११५४
उपेक्षा २.	उल्ब ३.	४४११८	उष्णागम १.	२११८८
३१७१३	उल्बण १.	५३३१९	उष्णिका २.	४३३८०
उपेन्द्र १.	" १. २. ३.	५४१३४	उष्णीष १. ३.	४३३१२४
११११९	" १. २. ३.	५४१३७	" ३.	४३३१३५
उपोढ १. २. ३.	उल्बणक ३.	३३३१८२	उस्त्र १.	२१११६
७४४६	उल्बस्थूणा २.	४३३३९	" १. २.	६५५९
उपोदिका २.	उल्मुक ३.	१३३३२	उस्त्रा २.	३३३४२
३३३१४४	उल्लसनक ३.	३३३१८२	ऊ	
उपोद्घात १.	उल्लाघ १. २. ३.	४३३१९३	ऊक १.	२३३३
२४४४१	उल्लाघ १.	२३३२९	ऊख १.	४४४६५
उप्तकृष्ट १. २. ३.	उल्लिखित १. २. ३.	८३३५	ऊत ३.	४३३४
३३३२३	उल्लु १.	३३३२०८	" १. २. ३.	५४११००
उभयद्युः (-स्) ४. ८८८९	उल्लुक १.	३३३२२९	" १. २. ३.	५४१११२
उभयद्युः (-स्) ४. ८८८९	उल्लेखनीय १.	३३३३२	ऊति २.	६३३५
उमा २.	उल्लोच १.	४३३१२३	ऊधस् ३.	३३३५१
१११५८	उल्लोल १.	४३३१४	ऊधस्य ३.	३३३१४६
३३३४५	उशनस् १.	२३३३४	ऊन १. २. ३.	५४३८६
उमापति १.	उशि १. ३.	६५५८	ऊम् ४.	८८११४
१११४५	उशीर १. ३.	३३३२३१	ऊम १.	६३३८
उमासुत १.	उष १.	२३३६८	ऊररी ४.	८१७१७
१११५४	उष १.	३३३७९	ऊरव्य १.	३३३१
उम्बुरा २.	उषर्बुध १.	१३३१५		
४३३४४				
उम्य १. २. ३.				
३३३२०				
उरग १.				
४३३१५				
उरगाशन १.				
१३३३७				
उरण १.				
३३३६४				
उरभ्र १.				
३३३६४				
उररी ४.				
८१७१७				
उरस् ३.				
४३३६८				
" ३.				
६३३३				
उरसिल १. २. ३.				
३३३१५१				
उरस्य १.				
४३३४५				
उरस्वत् १. २. ३.				
३३३१५१				
उरस्सूत्रिका २.				
४३३१३७				
उराह १.				
३३३१०१				
उरु १. २. ३.				
५४३८०				
उरुकम १.				
१३३१९				
उरुवल्ली २.				
३३३१६४				

ऊरी ४.	८१७१७	ऊषणा २.	३३३७६	ऋवभ १.	३३३७७
ऊरु १. २.	४३३५९	(दूषणा)		" १.	३३३१३२
" १. २.	८३३२६	ऊषर १. २. ३.	३३३१८	" १.	७३३१३
ऊरुज १.	३३३१	ऊषरज ३.	३३३१२३	ऋषभा २.	३३३५१
ऊरुपर्वन् ३.	४३३५९	ऊषवत् १. २. ३.	३३३१८	ऋषभी २.	३३३१२९
ऊरुमूल ३.	४३३५९	ऊषमक १.	२३३८८	ऋषि १.	१३३३०
ऊर्ज २.	८३३१८	ऊषमन् १.	२३३८८	" १.	३३३१५०
ऊर्ज १.	६३३१३	" १.	३३३३६	" २.	३३३१९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.	३३३१५१	" १.	५३३१९	" १.	३३३१५८
ऊर्जस्विन् १. २. ३.	३३३१५१	ऊह १. २.	३३३१७५	ऋष्टि १. २.	३३३१५८
	३३३१५१	ऊहन ३. २.	३३३१७५	ए	
ऊर्जित १. २. ३.	३३३१५१	ऋ		एक १. २. ३.	५३३२५
ऊर्णनाभ १.	४३३३४	ऋ २.	८३३१८	" १. २. ३.	६३३३
ऊर्णवाहि १.	४३३३५	ऋक्ष १.	३३३६९	एककुण्डल १.	८३३५१
ऊर्णा २.	३३३२५	" १.	३३३७	एकग १. २. ३.	५३३१२८
" २.	३३३३३	" ३.	५३३६०	एकगुरु १.	३३३२४
" २.	६३३३६	" १. २. ३.	६३३५९	एकग्रन्थ १.	३३३३३
ऊर्णायु १.	७३३१३	ऋक्षगन्धिका २.	३३३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णवाहि १.	४३३३५	ऋक्षर १.	७३३१४		५३३१२९
ऊर्ध्वक १.	३३३१२९	ऋक्ष २.	३३३२६	एकतीर्थिन् १.	३३३२४
ऊर्ध्वजानुक १. २. ३.	५३३१०	ऋक्षीष ३.	४३३५७	एकदन्त १.	१३३५३
	५३३१०	ऋक्षु १. २. ३.	५३३२४	एकदा ४.	८३३६
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५३३१०	" १. २. ३.	६३३२	एकदृश १. २. ३.	५३३१३
ऊर्ध्वधन्वन् १.	१३३३	ऋक्ष ३.	३३३४	एकदेश १.	४३३५५
ऊर्ध्वनापित १.	३३३५७	ऋक्ष ३.	३३३३	एकधुर १. २. ३.	३३३५८
ऊर्ध्वमूल १.	३३३२२९	" १. २. ३.	५३३३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वलोक १.	१३३१	" ३.	६३३३		३३३५८
ऊर्ध्वसूचिका २.	४३३४८	ऋक्षु १.	२३३८६	एकपत्ति २.	२३३६९
ऊर्ध्वा २.	२३३६	" १.	४३३१६	एकपटलमाली २.	
ऊर्मि १. २.	४३३१४	ऋक्षुमती २.	४३३१५		३३३१८५
ऊर्मिका २.	४३३१४४	ऋक्षे ४.	८३३४	एकपद् ३.	५३३६
ऊर्मिमत् १. २. ३.	५३३१२३	ऋक्षिवज् १.	३३३७८	एकपदी २.	३३३४९
	५३३१२३	" १.	८३३४४	एकपर्णा २.	१३३६१
ऊर्मिला २.	३३३४५	ऋक्ष १. २. ३.	३३३६७	एकपाटला २.	१३३६१
ऊर्ध्व ३.	३३३२०५	ऋक्षु १.	१३३३	एकपिङ्ग १.	१३३५८
ऊष १.	३३३२५	ऋक्षुक्षिन् १.	१३३४	एकरूप १. २. ३.	५३३७९
" ३.	३३३१२३	ऋक्षय १.	३३३१४	एकवर्ण १.	३३३३
" १.	५३३२८	ऋक्षयकेतु १.	१३३२९	एकविंश १. २. ३.	
ऊषण ३.	३३३७५	ऋक्षयप्रोक्ता २.	३३३३		५३३२२
" १.	५३३२६	" २.	८३३४	एकविंशतितम १. २. ३.	५३३२२
		ऋक्षणी २.	३३३१२४		

एकशततम ]

वैजयन्तीकोषः

[ ओषधि

ओषधीश ]

शब्दानुक्रमणिका

[ कटक

एकशततम १. २. ३.	५११२३
एकसर्ग १. २. ३.	५११२८
एकहायनी २.	३११४५
एकान्त १.	२३११५
एकान्ति १.	३११७३
एकान्त १. २. ३.	५११२८
एकान्त १.	२११३२
एकान्तग्रह १.	४११३४
एकान्तुल ३.	४११२०
एकान्त १. २. ३.	५११२१
एकान्त २.	३११११८
एकान्त १. २. ३.	५१११९
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	५११३२
एकान्तरिति १. २. ३.	३११३५
एकान्तरिन् १. २. ३.	३११३५
एकान्त १. २. ३.	५११२८
एकान्त १. २. ३.	५११२९
एकावली २.	४३११४१
एकाष्टील १.	३३११९४
एकाष्टीला २.	३३११३०
एकाह १.	३३१८४
एजन ३.	३११८९
एड १. २. ३.	५१११३
एडक १.	३३१६४
एडगज १.	३३११५८
एडमूक १. २. ३.	५१११३
एडक ३.	४३३३७
एण १.	३३११२
एणीकृत १. २. ३.	२३११४
एत १.	५३३२३
एतन १.	३३३२०४

एतर्हि ४.	८१८५
एतश १.	३३६१
एतावतिथ १. २. ३.	५११२०
एतिन् १.	३३३२०५
एत्थाल १.	४११४४
एध १.	३३३९६
एधस् ३.	३३३९६
एधित १. २. ३.	५१११६
एनस् ३.	३३३४७
" ३.	८३३१६
एरका २.	३३३२३३
एरण्ड १.	३३३६४
एलक १.	३३३३६
एला २.	३३३१०३
" २.	३३३८७
एलारसालक ३.	५३३३६
एलावालुक ३.	३३३९५
एव ४.	८३३१८
" ४.	८३३१५
एवम् ४.	८३३१९
" ४.	८३३१५
" ४.	८३३१७
एषण १.	३३३१८०
एषणा २.	३३३१५०
एषणिका २.	३३३१९
एषमः (-स्) ४.	८३३१०
ऐ	
ऐ ४	८३३२
ऐकागारिक १.	३३३१५५
ऐडगुद ३.	३३३२२
ऐतिह्य ३.	२३३३८
ऐन्द्र १.	३३३८६
ऐन्द्रलुसिक १. २. ३.	४३३१४७
ऐन्द्र १.	२३३१७
ऐन्द्री २.	१३३६२
" २.	२३३१४
" २.	३३३१७२
ऐरावण १.	१३३१२

ऐरावत १.	१३३१२
" १.	२३३१८
" ३.	२३३१९
" ३.	२३३३
" ३.	३३३११५
ऐरावती २.	२३३१४६
" २.	२३३१५
ऐरुक ३.	३३३१८८
ऐरुण्डक १.	४३३४३
ऐलविल १.	१३३१५६
ऐलेय ३.	३३३१५५
ऐश्वर ३.	३३३१५८
" ३.	३३३११०
ऐश्वर्य ३.	१३३१४७
" ३.	८३३३४
ऐह १.	३३३१६५
ओ	
ओकस् ३.	४३३१९
" ३.	६३३३
ओष १.	३३३१२३
" १.	४३३३०
" १.	६३३१०
ओङ्कार १.	३३३२३३
ओज १. २. ३.	५३३२३
ओजस् ३.	६३३३
ओजस्विन् १. २. ३.	३३३१५१
ओट्टित ३.	३३३१५
ओत १. २. ३.	३३३१२
ओतु १.	३३३१७१
ओदन १. ३.	४३३१७६
ओम् ४.	८३३३
ओराल १.	५३३२०
ओलक १.	३३३१५१
" १.	५३३४३
" १.	५३३४४
" १.	५३३४४
ओलहन १.	३३३१४४
ओषक ३.	३३३१५६
ओषधि २.	३३३३६
" २.	३३३१७५

ओषधीश १.	२३३१२५
ओष्ट १.	४३३१८७
ओष्टय १. २. ३.	५३३११७
ओष्ण ३.	५३३१९
ओसर १.	३३३१८४
ओहार १.	४३३१५०
औ	
औक्षक ३.	५३३१०
औजस ३.	३३३११८
औत्सुन्य ३.	३३३१७८
औदनिक १. २. ३.	४३३१२३
औदर १.	४३३१८२
औदरिक १. २. ३.	५३३१५१
औदुम्बर १.	३३३१२५
औदुम्बरायण १.	३३३१८
औदालक ३.	३३३१३६
औपगवक ३.	५३३१७
औपयिक १. २. ३.	५३३१०३
औपरोधिक १.	३३३१९
औपवाह्य १.	३३३१६९
औसिका २.	३३३१०६
औमीन १. २. ३.	३३३१२०
औरञ्ज १.	४३३१२९
औरञ्जक ३.	५३३११०
औरस १.	४३३१४५
और्ध्वरथ्यक १. २. ३.	३३३१७
और्व १.	१३३२१
और्वव्रतिन् १. २. ३.	३३३१३५
और्वशेय १.	३३३१५१
औलक १. २. ३.	३३३१३२
औशीर ३.	५३३१७
" ३.	७३३१५
औषध ३.	३३३१७५
" ३.	४३३१४१

औष्टक ३.	५३३१५
औष्णिह ३.	३३३३४
क	
क १.	१३३१७
" ३.	४३३२२
" १.	८३३३६
कवि २.	४३३१२३
कंस ३.	५३३१५५
" १. ३.	६३३११
कंसरिपु १.	१३३२६
कंसोत्पल ३.	४३३१७२
ककुद् १. २.	८३३२८
ककुद् ३.	३३३१८०
" ३.	८३३२८
ककुदावर्त १.	३३३१७७
ककुदिन् १.	३३३१४४
ककुवत् १.	३३३१४४
ककुवती २.	४३३३४
ककुम् २.	२३३२१
ककुम्भ १.	३३३१२०
ककुहा २ व.	२३३२१
कक्खट १.	५३३१५
कक्खटी २.	३३३१३
कक् १.	४३३१३१
" १.	६३३३४
" १. २. ३.	४३३३७
कक्यक ३.	३३३१३
कक्या २.	३३३१८४
" २.	४३३१३१
" २.	६३३२७
कक्यापट १.	४३३१२९
कक्क १.	२३३३१
कक्कट १.	३३३१५३
कक्कटीक १.	१३३१५५
कक्कण ३.	४३३१४३
" ३.	७३३११
कक्कत १.	४३३११२
" १. २. ३.	८३३२७
कक्कपत्र १.	३३३१८१
कक्कमुख १.	३३३१७

कङ्काल १. ३.	४३३११४
कङ्कलि १.	३३३१४०
कङ्कु २. ३.	३३३१५५
कच १.	३३३१५५
" १.	५३३१७७
कचङ्गला २.	३३३१४२
कचू १.	३३३२०८
कच्चर १. २. ३.	५३३३६
कच्चित् ४.	८३३१९
कच्चोर ३.	३३३२०३
कच्छ १.	४३३३२
" १.	४३३१३१
" १.	६३३१४
कच्छप १.	१३३३०
" १.	४३३१५०
कच्छपी २.	४३३११९
कच्छुर १. २. ३.	४३३१४५
कच्छुरा २.	३३३१२५
" २.	३३३१२९
कच्छू २.	४३३१३३
कच्छूदार १.	३३३१५४
( कच्छूदार )	
कच्छूरक १	३३३११७
कज्जल ३.	४३३१५७
कञ्चुक १.	४३३१२१
" १.	४३३१२८
" १.	७३३१५
कञ्चुकिन् १.	३३३२३
कज्ज ३.	४३३३६
" १.	४३३१८
कज्जल ३.	४३३३६
कट १.	३३३७५
" १.	३३३२१६
" ३.	३३३७५
" १.	४३३२३
" १.	४३३१२
" १.	४३३१६६
" १.	४३३६५
" १. २. ३.	६३३१८
" १. २. ३.	८३३२७
कटक १. ३.	३३३३

कटक ]

वैजयन्तीकोषः

[ कतृण

कटक १. ३.	४३१४
" १. ३.	४३१४४
" १. ३.	७५३१
कटकट ३.	३११११९
कटकर १.	३१५१७
" १.	३१५७६
कटकर्मन् १.	३१५१७
कटकी २.	४३२४४
कटङ्कटेरी २.	३३२२३
कटम् १.	१११४६
कटभी २.	३३१३९
कटमोष १.	३६२०१
कटशर्करा २.	४११५७
कटाटङ्क १.	१११४४
कटाह १.	३३११०
" १.	४३१५६
कटि २.	४३१६४
कटिका २.	३७१९९
कटिन्न ३.	७३१११
कटिप्रोथ १.	४३१६५
कटिल्लक १.	३३११६३
कटिल्लका २.	३३११४६
कटिसीर्षक १.	४३१६५
कटिसूत्र ३.	४३११४६
कटी २.	८१२२७
कटीकूप १.	४३१६५
कटीर ३.	७३१६
कटु १.	३३१५३
" १.	३३११२८
" १.	३३२०४
" ३.	३३२१३
" ३.	३११७९
" ३.	३११८०
" २.	३११८६
" १.	३११३०
" १.	५३२२६
" १.	५३२२६
" १.	५३१४७
" १. २. ३.	६१११३७
" १. २. ३.	६१४४
कटुकषायक १.	५३३३०

कटुका २.	३११५०
कटुकाण १.	२३३३४
कटुक्ति १.	५३३३०
कटुक्तिषाय १.	
कटुतुम्बी २.	३३११६७
कटुभङ्ग ३.	३३२१४४
कटुम्भरा २.	३११८६
कटुरोहिणी २.	३११८६
कटुकट ३.	३३२१३
" ३.	३११८०
कटुफल १.	३३१५८
कटुवङ्ग १.	३३३६८
कटुवर ३.	३११४९
कटुवाङ्ग १.	३३३६८
कटुवार १.	३११३९
" १.	५३३३२
कटाकु १.	७१११८
कठार १.	३११३२
कठिञ्जर १.	३३१११८
कठिन १.	५३३४
कठिनी २.	३२११३
कठोर १.	५३३५
कडङ्गर १.	३११६४
कडम्बक १.	४३३९०
कडार १.	५३३१८
कण १.	३१५३०
" १.	४३३७
" १.	४३३७०
" १.	६१११५
कणकुक्कुट १.	३१५३४
कणजीरण १.	३११८४
कणय १.	३७१६७
कणा २.	३११८४
कणि १.	२४२
कणिका २.	३१२२५
" २.	३१११२०
" २.	७२४
कणिका ३.	३११६४
कण्टक १.	२३११५
" १.	३११८४

कण्टक १.	७१११४
कण्टकच्छेदन १.	३१७१६५
कण्टकप्रतीसारा २.	
	३१७५३
कण्टका २.	२३३४७
कण्टकानना २.	२३३४७
कण्टकारी २.	५३१०५
कण्टकाली २.	५३१०६
कण्टकिन् १.	३३१५०
" १.	३३३६४
कण्टकिफल १.	३३३७४
" १.	३३३४१
कण्ट १. २. ३.	४३१८३
" १.	६११३३
कण्टकूणिका २.	३१११७
कण्टदोष १.	३१११२
कण्टपाल १.	२३३२६
कण्टभूषा २.	४३१३७
कण्टमणि १. २.	४३३७०
कण्टीरव १.	३३३२
कण्टकाल १.	१११४५
कण्टेगुड १.	४३३७०
कण्डन ३.	४३३६६
" ३.	४३३६७
कडार ३.	४२३९
" १.	५३३१३
कण्डू २.	४३१२४
कण्डूति २.	४३१२४
कण्डूयन ३.	४३१२४
कण्डूया २.	४३१२४
कण्डूर १.	३३३२०
कण्डूरा २.	३३३२९
कण्डोल ३.	४३३६४
कण्डोलवीणा २.	३११२७
कण्व १. २. ३.	५३१३३
कत ३.	४२११
कतक १.	३३३४२
" ३.	३११५०
कतिथ १. २. ३.	५३१२०
कतिपयथ १. २. ३.	५३१२०
कतृण ३.	३३३३४

कथम् ]

शब्दानुक्रमिका

[ कपोल.

कथम् ४.	८११२०
कथा २.	२३३३८
" २.	३१११४२
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.	
	८३१३३
कथित १.	५३१५८
कदध्वन् १.	३११५०
कदन ३.	३७२१५
कदन्निका २.	३३३३१
कदम्ब १.	३३३६०
" १.	३३३६७
कदम्बक १.	३११४१
" ३.	५३१२
कदर १.	३३३६३
" १.	४३१२३
कदर्य १. २. ३.	५३१५९
कदल १.	३३३७३
कदलि २.	३७८६
कदली २.	३३३७४
" २.	३३११८
" २.	३३१२५
कदाचित् ४.	८११७
कदुष्ण ३.	५३३९
कदु १.	५३३१८
कद्वद १. २. ३.	५३१२५
" १.	५३१२७
कनक ३.	३२११९
कनकाक्षी २.	२३३२१
कनिष्ठ ३.	३११२२
कन्दर्प १.	१११२७
" ३.	४३३३१
" १. २. ३.	५३३४
" १. २. ३.	७३३९
कनिष्ठा २.	४३३२७
" २.	४३३७४
कनीनिका २.	४३३७४
" २.	४३३९४
कनीयस् १. २. ३.	७५१९
कनीयस ३.	३३३२४
कन्तु १.	६११२२
कन्थटिका २.	४३३१२८

कन्था २.	४३३३७
" २.	४३३२८
कन्द १. ३.	३३३२०८
" १. ३.	४२३२२
" १. ३.	४३३९०
" १.	८३३२५
कन्दर १. २. ३.	३३३३६
" १.	३३३३०
" १. २. ३.	८१३३७
कन्दराल १.	३३३५९
कन्दरी २.	८१३३७
कन्दल १.	३३३२१०
" १.	८१३३१
" १. २. ३.	८१३३८
कन्दली २.	३३३२१०
" २.	८१३३८
कन्दु १.	४३३५६
" १. २. ३.	८१३२७
कन्दुक १.	४३३१६२
कन्दोब्ज ३.	४३३३४
कन्दोष्ठ ३.	४३३३४
कन्धरा २.	४३३३३
" २.	४३३१७
कन्यका २.	४३३६
कन्यसा २.	४३३२७
कन्या २.	३३३६७
" २.	३३३१८८
" २.	४३३६
" २.	८३३१४
कन्याकुब्ज १.	४३३७
कन्यापिपीलिका २.	४३३३७
कन्याप्रसूतिजा २.	३३३४८
कप १.	३३३७२
( कृपा )	
कपट १. ३.	३३३९५
कपर्द १.	१११५०
" १.	४३३५७
कपर्दिन् १.	१११४०
कपाल १. २. ३.	४३३५९
" १. ३.	४३३१५
कपालिन् १.	१११४०

कपालिनी २.	११३६४
कपाली २.	४३३५९
कपि १.	३३३३९
" १.	३७३१
" १.	६१३३३
" १.	८१३१०
कपिकच्छू २.	३३३२९
कपिकोडा २.	३३३७९
कपिञ्जल १.	२३३२०
कपित्थ १.	३३३३३
( कृप )	
कपित्थपत्नी २.	३३३५७
कपिप्रिया २.	३३३८१
कपिल १.	११३३०
" १.	११३३१
" १.	३३३६९
" १.	३१३११०
" १.	५३३१८
कपिला २.	२१३९
" २.	३३३२७
" २.	३३३९२
" २.	३३३४३
" २.	३११५५
कपिलोहक ३.	३३३२७
कपिवल्ली २.	३११७८
कपिशा १.	३११४८
" १.	५३३१८
कपिशा २.	४३३३६
कपी २.	३७३५६
कपीतन १.	३३३३१
" १.	३३३५९
" १.	३३३७२
कपोत १.	२३३२३
" १.	३१३२९
" १.	५३३१२
" १.	७३३२०
कपोतपाली २.	४३३५३
कपोताङ्घ्रि २.	३१३१००
कपोताञ्जन ३.	३३३४२
कपोल १.	४३३९०
कपोल २.	३१३६६

कप्याख्य १.	३१८११०	करक १.	२१२७
कफ १.	४४१२२१	" १.	३३१२५
कफणि १. २.	४४४७२	" १.	३३१७२
कफहरी २.	३१८४८	" १.	४३१५७
कफिल १.	३१९११३	" १.	४४१३७
कफोणि १. २.	४४४७२	करकवर्तिका २.	४३१६०
कबत १.	४३११०१	करङ्क १.	४३१५८
कबन्ध १. ३.	३१७२१६	" १.	४३१०७
कबरी २.	४४११००	" १.	४४११४
कबल १.	४३११०१	करज ३.	३१८१९९
कबली २.	४३११११	" १.	४४१७६
( कपिली )		करञ्ज १.	३३१६२
कम् ४.	८१७३	करञ्जक १.	३१६१०७
कमठ १. २. ३.	७५२०	करट १.	२३११७
कमण्डलु १.	३१६१२४	" १.	३१७७५
" १. ३.	८१९३१	" १.	३१८११६
कमन १. २. ३.	५३३३४	" १.	७५२११
कमनीय १.	३३३८२	करटा २.	३१४४९
कमल ३.	३१८१२२	करण १.	३५११७
" ३.	४२३२९	" १.	३५५५५
" १. २. ३.	७५२६	" १.	३५७७४
कमलच्छद् १.	२३३३१	" १.	३५११०३
कमित् १. २. ३.	५४३५	" ३.	३६६०
कमुजा २.	४४११०२	" ३.	३६२१०
कम्प २.	३१८१९	" १.	३१२२३
कम्पिल्ल १ व.	३३१९५	" ३.	३१९९८
कम्प १. २. ३.	५४४७९	" ३.	४४५५२
कम्बर १. २. ३.	५४४७८	" १.	४४४७१
कम्बल १.	४३११२९	" ३.	७३१९
कम्बु १.	३१७६२	करणीपरिवर्तन ३.	
" १. २. ३.	४११५५		३१९१४१
" १. २.	६५१९	करण्डी २.	३१९३३
कम्बुग्रीवा २.	४४४८४	करपत्र ३.	३१९३६
कम्बोज १.	३३३७०	करपोणि १.	४४४७१
कम् १. २. ३.	५४३५	करभ १.	३३६७
कर १.	३१७४५	" १.	३३६७
" १.	३१८३३	" १.	४४४७५
" ३.	४३१७६	" १.	७५११९
" १.	४४४७३	करमर्द १.	३३१८३
" १.	६१११०	करमर्दिका २.	३३१८४
" १.	८१९१२	करम्ब १.	४३१०६

करम्ब १. २. ३.	५४४७८	करम्ब १. २. ३.	५४४७८
करम्भ १.	४३१७१	करम्भ १.	४३१७१
करवालिका २.	३१७१६०	करवालिका २.	३१७१६०
करवी २.	३१८१३२	करवी २.	३१८१३२
करवीरक १.	३३१९९१	करवीरक १.	३३१९९१
करवीरा २.	३२११२	करवीरा २.	३२११२
करवीरिका २.	३१८४८	करवीरिका २.	३१८४८
करशाखा २.	४४४७५	करशाखा २.	४४४७५
करहाट १.	४२१४२	करहाट १.	४२१४२
कराल १.	३३११२२	कराल १.	३३११२२
" ३.	४३१६२	" ३.	४३१६२
" १. २. ३.	७४४८	" १. २. ३.	७४४८
करालिक १.	३३१५	करालिक १.	३३१५
" १.	८११२०	" १.	८११२०
करालिका २.	१११६१	करालिका २.	१११६१
करालिन् १.	३१७९७	करालिन् १.	३१७९७
" १.	५३१९	" १.	५३१९
कराली २.	१२१३०	कराली २.	१२१३०
करिणा २.	३१७७०	करिणा २.	३१७७०
करिणीचार ३.	२११७	करिणीचार ३.	२११७
करिन् १.	३१७६०	करिन् १.	३१७६०
करिशोलुक ३.	२११६	करिशोलुक ३.	२११६
करीर १.	४३१५८	करीर १.	४३१५८
" १.	७५१९	" १.	७५१९
करीरपृष्ठ ३.	३१७१७६	करीरपृष्ठ ३.	३१७१७६
करीष १. ३.	३३१६१	करीष १. ३.	३३१६१
करीषाग्नि १.	१२१२०	करीषाग्नि १.	१२१२०
करुण १.	३३३३५	करुण १.	३३३३५
" १.	३३१५०	" १.	३३१५०
" १.	३१७७५	" १.	३१७७५
" १. २. ३.	३१७७९	" १. २. ३.	३१७७९
करुणा २.	३३१९२	करुणा २.	३३१९२
करुडा १ व.	३१३३६	करुडा १ व.	३१३३६
करणु २.	३१७७०	करणु २.	३१७७०
" २. १.	७५११९	" २. १.	७५११९
करैरक ३.	५२१४	करैरक ३.	५२१४
करोटक ३.	४३३६३	करोटक ३.	४३३६३
करोटि २.	४४१११५	करोटि २.	४४१११५
करोटिका २.	४३३७७	करोटिका २.	४३३७७
करोलक १.	५३३३८	करोलक १.	५३३३८
कर्क १.	३१७९९	कर्क १.	३१७९९

कर्कट १.	४११४६	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मण्यकृत १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२३३३१	" २.	३१८६७		५४४७३
कर्कटि १.	३३१६६	" २.	३१९३०	कर्मण्या २.	२१९६
कर्कटिनी २.	३३१९३	" २.	४२१४६	कर्मदेव १.	१११६
कर्कटू १. २.	७५३२७	" २.	४३१३३	कर्कन् ३.	३३३३७
कर्कर १.	४४१०९	कर्णिकार १.	३३१७२	( कर्मठ )	
कर्कराल १.	४४१९८	कर्णिकारल १.	३१७१८२	" ३.	३१९१८
कर्करा २.	४३११७	कर्णरिथ १.	३१७१२६	" ३.	५२१९
कर्करा १.	३३१९५	" ३.	३१७१२७	" ३.	६३३४
" १.	३३१६५	कर्णजप १. २. ३.	५४२५	" १. ३.	८१९३१
" १.	५३३३	कर्तन ३.	३१७१११	कर्मन्दिन् १.	३३३६०
" १. २. ३.	७४४८	" ३.	३१९१०	कर्मफल १.	३३३३७
कर्कशिन् १.	३३३७४	" १.	३१९३६	कर्मभेद १.	५३३९
कर्कशी २.	३३३८९	कर्तनभाण्ड ३.	३१९९	कर्मरङ्ग १.	३३३३७
कर्कार १.	३३३६८	कर्तनी २.	३१९२६	कर्मवत् १. २. ३.	५४४७४
" १.	३३३६९	कर्तरी २.	३१७१८५	कर्मवाटी २.	२११६९
कर्कोट १.	३३३६४	" २.	३१९३७	कर्मशाला २.	४३३२३
कर्कोटकी २.	३३३६१	" २.	४३११०८	कर्मशील १. २. ३.	
कर्ण १. २. ३.	३४१५९	" २.	७२३		५४४७२
" ३.	४२११७	कर्तु १.	३३३३७	कर्मशूर १. २. ३.	५४४७२
" १.	४४१९२	कर्त्रिका २.	३१९२६	कर्मसाक्षिन् १.	२१११३
कर्णजमल १.	४४१९२	कर्दम ३.	२१३१८	कर्मार १.	३३३२१४
कर्णजलका २.	४१३३३	कर्दम १.	३१८२५	" १.	२१९१६
कर्णजाह ३.	८१९१६	कर्पट १.	४३३३०	कर्मारवी २.	२१९१३१
कर्णधार १.	४२११९	कर्पर १.	४३३५६	कर्मिन् १. २. ३.	५४४७४
कर्णपूर १.	३३३७०	" १.	४३३५९	कर्मी २.	६२३७
" १.	५३३३४	" १.	४४११५	कर्वट १. ३.	४३३३
" १. ३.	८१५६	" १.	७५११९	कर्वेट ३.	४३३३
कर्णपूरक १.	३३३४०	कर्पराल १.	३३३४६	कर्प १. ३.	५१३४९
" १.	३३३१००	कर्परी २.	३३३४३	कर्पक १.	२१३३२
कर्णभूषण ३.	४२३३४	" २.	४४१००	" १.	३१७१७
" ३.	४३३३३	कर्पूर १.	३१८१०५	" १. २. ३.	३१८८
कर्णमोटी २.	१११६४	कलुर ३.	३२२२०	कर्पफल १.	३३३३७६
कर्णलतिका २.	४४१९३	" १.	५३३२४	कर्पफला २.	३३३३७७
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२१५५	कर्पसु १.	३१८३५
		" १. २. ३.	५४४७३	कर्पू १. २.	४२३२९
कर्णवेष्टन ३.	३१७८७	कर्मकार १. २. ३.		" १. २.	६५११८
कर्णशकुली २.	४४१९३	कर्मसम १. २. ३.	५४४७३	कल १. २. ३.	२१३१३
कर्णाक १.	४३३३४	कर्मसम १. २. ३.	५४४७२	" १.	३१९१२१
कर्णिक ३.	३३३२१	कर्मठ १. २. ३.	५४४७२	" १. २. ३.	५४४१४
" ३.	४२१४६			कलकण्ठ १.	२३३२७

[ कलकल ]

कलकल १.	२४२७
कलकाण १.	८१२०
कलङ्क १.	७११७
कलत्र २.	४४३५
” २.	४४६४
” ३.	७३६
कलधौत २. २.	८५५
कलपाठक १.	३६२३
( कालपाठक )	
कलभ १.	३७६६
कलम १.	३८३४
” १.	७११८
कलम्ब १.	३७१७
” १. २. ३.	८१२६
कलम्बी २.	३३१४९
कलम्बू २.	३३१४९
कलरव १.	२३१४
कलल ३.	४३६२
” १. ३.	४४१८
” ३.	४४१०८
कलविङ्क १.	२३१८
” १.	२३१९
कलश १.	३५२६
” १.	३५३१
” १. २. ३.	४३५८
” १.	५१५५
” १. २. ३.	८१३७
कलशि २.	३३१३६
कलशी २.	४३५८
कलशीनक १.	३३२४
कलशीपुत्र १.	३६१५१
कलशीमुख १.	२११२४
कलशोदक १.	३३१८९
कलशोदधि १.	३१११
कलह १.	७११७
कलहंस १.	२३६
” १.	८१२०
कलहप्रिय १.	१३७
कला २.	२१५३
” २.	३२१२
” २.	३८५

वैजयन्तीकोषः

कला २.	३१९८
” २.	४३३८
” २.	४३५५
” २.	५१३६
” २.	५२३७
” २.	६२१०
कलाद १.	२११६
कलानिधि १.	२१२६
कलाप १.	७११५
कलापक १.	२३३९
” १.	३७८३
” १.	३८३४
” १.	३८७६
” १.	५३४१
कलापिन् १.	३३२८
कलापिनी २.	११३०
कलाय १.	३८४३
कलावती २.	३११९
कलाह १.	३७१०३
कलि १.	२२९२
” १.	३३१७५
” १.	३७२०४
” १.	३९६२
” १.	६११७
कलिका २.	३३१९
कलिकारक १.	३३६२
कलिङ्ग १.	२३२७
” १ ब.	३१४०
” १.	७५३३
कलिङ्गक १ ब.	३१२६
कलित १. २. ३.	७४९
कलिदुम १.	३३१७५
कलिल १. २. ३.	७५३१
कलुष १.	३४९
” १.	३५१४
” ३.	४२४
” १.	५३३४
” १.	५३३९
कलुषी २.	३८८८
कलेवर ३.	४४५२
कलेवरा २.	११४९

[ कविका ]

कलक १. ३.	६५१०
कलकत्व ३.	३९८५
कलिकन् १.	११३१
कल्प १.	२१९३
” १.	३३१६१
” १.	३६२८
” १.	३६१३३
” १.	६११६
कल्पन ३.	३२१०
” १.	४४४६
कल्पना २.	३७७०
” २.	७२४
कल्पवृक्ष १.	१३१४
कल्पाणि १.	३२१४
कल्पान्त १.	२११४
कल्पष ३.	३६१६८
कल्पमाष १.	५३२४
” १. २. ३.	७४१०
कल्प्य १. २. ३.	४४१४३
” १. २. ३.	६४३
कल्या २.	२४१८
” २.	३९४५
कल्याण ३.	३६६२
” १. २. ३.	५४१४२
” २. ३.	७५२१
कल्यापाल १.	२९४४
कल्लोल १.	४२१४
कल्ह १. २. ३.	२४१५
कल्हार ३.	४२३५
कव १.	२४१
कवक १.	३३१५२
कवच १. ३.	३७१५२
कवचित १. २. ३.	
	३७१४२
कवट १.	३५२४
कवाट ३.	४३३३
” १. ३. ३.	४३३६
कवि १.	२१३४
” १.	३६१५३
” १.	६११२
कविका २.	३७११३

कविय ]

कविय १. ३.	३७११३
कवी २.	३७११३
कवोष्ण ३.	५३९
कव्यवाहन १.	१२२२
कश १.	२५२०
” १.	४१२७
कशप १.	४१५०
कशा २.	३७११४
कशिपु २.	५११६
” १. ३.	७५२०
कशेरु ३.	४२४७
” २. ३.	४४११५
कश्मल ३.	३६२००
कश्य ३.	३७११०
” ३.	३९४५
” ३.	६५१२
कष १.	३९१९
कषाय १.	३३२१७
” १.	४४१४१
” १. ३.	५३२७
” १. ३.	७५२२
कषायक १.	५३४७
कषायतिकलवण १.	
	५३३६
कषायिका २.	२३४६
कषिका २.	७२४
कष्ट १. २. ३.	१२३९
” १. २. ३.	६४३
कस्तम्भिन् १. ३.	
	३७१३१
कस्तीर ३.	३२३२
कस्तूरिका २.	३८१०४
कस्तूरी २.	३४३५
” २.	३४३६
कहाला २.	३९१२६
कह्ल १.	३३१०
कांस्य ३.	३२२८
कांस्यताली २.	३९१२४
कांस्यपात्रक ३.	४३६१
काक १.	२३१५

शब्दानुक्रमिका

काककङ्कु २.	३८५९
काकचिञ्जा २.	३३१८०
काकजङ्गा २.	३३१११
” २.	३३१८०
काकजम्बू २.	३३१९३
काकणी २.	७२६
काकतित्ता २.	३३१८०
काकतिन्दुक १.	३३१११
काकतुण्ड १.	३८१०८
काकतुण्डिका २.	३३१८७
काकदत्ता २.	३३१८०
काकनखी २.	३३१८०
काकनासा २.	३३११२
” २.	३३१९३
काकपत्त १.	४४१०२
काकपीथी २.	३३१८०
काकपीलु १.	३३१५१
” २.	३३१८०
काकपुष्ट १.	२३२६
काकमर्दक १.	३३१८०
काकमाची २.	३३११२
काकमाली २.	३३१८४
काकर्द १.	३३१५०
काकली २.	३९११४
काकशीर्ष १.	३३१९३
काकाङ्गी २.	३३११२
काकाणती २.	३३१८०
काकाणन्ती २.	३३१८०
काकाण्ड १.	३८४७
काकादनी २.	३३१८०
काकारि १.	२३२२
काकी २.	३९११२
काकु २.	२४७
काकुद ३.	४४८९
काकुन्दी २.	४३९
काकेन्दु १.	३३१५१
काकोदर १.	४११२
काकोदुम्बरिका २.	
	३३१११
काकोल १.	२३१७
” १.	४११२४

[ कानना ]

काकोली २.	३३११२
” २.	३९१५०
काकोलूकिका २.	८१७
काकी २.	३२१६
काकीव १.	३३१६
काङ्गा २.	३६१७९
काच १.	३९७
” १.	५३२२
” १.	६११५
काचमालिका २.	३९४६
काचर १.	५३२२
काचस्थाली २.	३३९०
काचित १. २. ३.	
	५४११६
काचिम ३.	४२४
काञ्चन ३.	३३१९
काञ्चनार १.	३३१४८
काञ्चना १.	३३३७
काञ्चनी २.	३२२७
” २.	३३२११
काञ्चिक ३.	४३८१
काञ्ची २.	४३१४६
काञ्चीपद ३.	४४६४
काटिका २.	३३११
काण १. २. ३.	५४१३
काणमारिष १.	३३१५१
काणा २.	३९१७
काण्ड १. ३.	३८६३
” ३.	४१३१
” १. २. ३.	६५११
काण्डपट १.	४३१२४
काण्डपृष्ठ १. २. ३.	
	३७१४३
” १. २. ३.	८५६
काण्डवीणा २.	२९१२८
काण्डी २.	३८७८
काण्डीर १. २. ३.	
	३७१४४
” १.	३८७८
कण्ठेनु १.	३३१०१
कातना २ ब.	२११९



## कातर ]

कातर १. २. ३.	५४११८
” १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३३८५
कात्यायन १.	३६१५८
कात्यायनी २.	१११६२
” २.	४४११४
कादम्ब १.	३३३८
” १.	७१११९
कादम्बरी २.	३११४६
कादम्बिनी २.	२१२२
कान ३.	२४३२
कानन ३.	३३३१
कानीन १.	४४४४३
कान्त १.	३३३८२
” १.	३३३८५
” ३.	३३३१२३
” १. २. ३.	५४४७०
कान्तनाला २.	३३३१८७
कान्ता २.	४४४५
कान्तार १.	३३३२२६
” १. ३.	७५३२२
कान्तारवासिनी २.	१११६६
कान्ति २.	६१२१८
कान्दविक १. २. ३.	४३१९२
कान्दिशीक १. २. ३.	३३३१७
कापटिक १.	३३३२७
” १. २. ३.	५४३२३
कापथ १.	३३३५०
कापिशायन ३.	३३३४४
कापिशेय १.	१३३४
कापोत १.	३३३१२५
” ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३३३४२
काम १.	१११२७
” १.	३३३५४
” १.	३३३१७९
” १.	६१११७
कामकेलि २.	४३३१७०

## वैजयन्तीकोषः

कामध्वज १.	२१११३७
” १.	४३३१६९
कामन १. २. ३.	५४३३४
कामपद ३.	४४३६१
कामपाल १.	१११२४
कामम् ४.	४३३१०४
कामयित् १. २. ३.	५१३३५
कामरूप १ ब.	३३३२९
कामरूपिणी २.	३३३२३
कामरूपिन् १.	३३३५
कामल १. २. ३.	४४३३२
कामचक्रियार.	४३३१६९
कामाङ्ग १.	३३३२५
कामारि १.	१११४१
कामिक १.	३३३३२
” १.	३३३१९८
कामिकान्त ३.	३३३४८
कामिन् १.	३३३३६
कामिनी २.	४४३५
कामुक १. २. ३.	५४३३५
कामुका २.	४३३१५
कामुकी २.	४३३११
कामोत्सव १.	४४३१६७
काम्बल १. २. ३.	३३३१२९
काम्बविक १.	२१११७
काम्बोज १.	३३३१५
काम्बोजी २.	३३३१०७
काम्य ३.	३३३२५
काम्यदान ३.	३३३१२०
काम्रा २.	३३३११४
काय १.	४४३५३
” १. २. ३.	६१११७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३३३२३
कायाङ्ग ३.	३३३२०४
कथिका २.	३३३५
कारक ३.	७३३७
कारकुत्सीय १ ब.	३३३३८

## [ कार्पासी

कारण ३.	३३३१६
” ३.	७३३७
कारणा २.	११३३९
कारणिक १. २. ३.	५४३३०
कारणव १.	२३३११
कारम्भा २.	३३३३६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३३३८५
” २.	३३३१०२
” २.	३३३३२२
” २.	३३३१२९
कारवेत्त १.	३३३१६३
कारा २. १.	६५३०
कारावर १.	३३३४२
” १.	३३३४३
कारि २.	८३३५
कारिका २.	१३३३२
” २.	३३३६
” २.	७३३५
कारिष ३.	५३३३३
कारु १.	१३३४
” १.	३३३५८
” १.	३३३७
” १.	६३३५
कारुज १.	७३३१८
कारुण १. २. ३.	५४३३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३३८
कारुण्य ३.	३३३१९२
कारुविन्द १.	३३३७
कारोत्तर १.	३३३५२
कार्तस्वर ३.	३३३१८
कार्तान्तिक १.	३३३२५
कार्तिक १.	२३३६६
कार्तिकिक १.	२३३६६
कार्तिकी २.	२३३७७
कार्तिकेय १.	१३३५६
कार्पास १.	३३३१०६
” १. २. ३.	४३३११७
कार्पासतूल १.	३३३१९
कार्पासी २.	३३३१९

## कर्म ]

कर्म १. २. ३.	५४४०२
कर्मण ३.	३३३११७
कर्मुक ३.	३३३१७२
” ३.	७३३६
कार्य ४.	३३३२३६
कार्यट ३.	४३३३
कार्यटिक ३.	४३३३
कार्यापण १.	५३३३९
” १.	५३३४०
कार्यिक १.	५३३३८
” १.	५३३३९
” १.	५३३३९
कार्ण ३.	३३३९०
( कार्ष )	
कार्मरी २.	३३३५७
कार्मर्य १.	३३३५७
कार्म्य १.	३३३३८
काल १.	१३३३५
” १.	२३३५२
” ३.	३३३३३
” १.	५३३११
” १.	६३३१५
कालक १.	४३३९७
कालकण्डक १.	३३३३६
कालका २.	३३३२०
( कालिका )	
कालकिञ्च १.	३३३५८
कालकुण्डक १.	३३३२९
कालकुन्ध १.	१३३१४
” १.	१३३३५
कालकूट १.	४३३२२
” १.	४३३२३
” १.	८३३३१
कालकूणिका २.	३३३१७८
कालखण्ड ३.	४३३११३
कालधर्म १.	३३३२०१
कालनिर्यास १.	३३३५३
कालपर्णी २.	३३३१२२
कालपुच्छ १.	३३३२९
कालपूर १.	३३३३३
कालपूरक १.	३३३३३

## शब्दानुक्रमणिका

कालभाग १.	३३३७८
कालमालक १.	३३३१२२
कालमेषिका २.	३३३१८१
कालमेषी २.	३३३१०८
कालरात्री २.	१३३६१
कालवृन्ती २.	३३३१७९
कालशीनक १.	३३३२५
कालशेय ३.	३३३१४८
कालस्कन्ध १.	३३३५१
” १.	३३३८७
काला २.	३३३१२
” २.	३३३३८
” २.	३३३१८५
कालाग्रह ३.	३३३१०८
कालाची २.	३३३२०९
कालानुसार्य ३.	३३३१९६
” ३.	४३३१५४
कालायस ३.	३३३३४
कालावलोक १. २. ३.	३३३३५
कालिक १.	३३३२२
कालिका २.	२३३१६
” २.	३३३४९
” २.	३३३१११
” २.	३३३५
” २.	३३३८४
” २.	३३३८१
कालिङ्ग १.	३३३६२
” १.	३३३१६९
कालिङ्गी २.	३३३१६९
कालिनी २.	२३३४०
” २.	४३३१९
कालिन्दी २.	४३३२५
कालिन्दीकर्षण १.	१३३२३
काली २.	१३३४९
” २.	१३३३०
” २.	२३३१७
” २.	३३३१७
” २.	३३३१०४
” २.	३३३१२७
” २.	३३३७७

## [ काष्ठीला

काली २.	३३३१९१
कालीची २.	१३३३६
कालेय २.	३३३१७६
” २.	३३३२१३
” ३.	४३३१५४
कालोचिन् १.	२३३८९
कालोदक १.	३३३१५
कालिक १.	३३३७३
काल्य ३.	२३३६९
काल्यक १.	३३३११७
कावचिक ३.	५३३११
कावाट १.	३३३१९९
कावातायनिका २.	४३३३८
कावेर ३.	३३३८०
कावेरी २.	४३३२८
काव्य ३.	२३३४२
काश १. ३.	३३३२२७
काशशाकट १. २. ३.	३३३२०
काशशाकिन् १. २. ३.	३३३२०
काशि १ ब.	३३३४०
” १.	३३३२२७
काशिका ३.	४३३७
काश्मीर १ ब.	३३३२७
” ३.	३३३८८
काश्मीरज ३.	३३३११७
काश्मीरी २.	३३३१९८
काश्यप ३.	४३३१०६
काश्यपसुत १.	१३३३७
काश्यपी २.	३३३१४
काष्ठ ३.	३३३१३
काष्ठतलू १.	३३३३४
काष्ठा २.	२३३३३
” २.	६३३८
काष्ठाशुवाहिनी २.	४३३१५
काष्ठी २.	३३३१७५
काष्ठीला २.	३३३१९१
” २.	३३३१७३

काष्ठेन्धन ]

काष्ठेन्धन ३.	३१६१७
काष्मरी २.	३३१५७
कासनुद् १.	३१८१२७
कासमर्दक १.	३३१५४
कासर १.	३१४१९
कासार १.	४१२६
कासू २.	३१७१६६
" २.	६१२८
काहला २.	३१९१२६
किंवदन्ती २.	२१४३९
किशारू १.	७१११९
किशुक १.	३३३२९
" १.	३३३७८
" १.	४१११४
किक्कीदिवि १.	२३३२९
किक्कीसाद् १.	४१११५
किखि २.	३१४३९
किङ्कर १.	३१९३
किङ्किणी २.	४३१४५
किङ्किराट १.	३३३१८९
किङ्किरात १.	३३३१८९
किङ्किर १.	२१९१२९
" १.	७१३२२
किञ्चन ४.	८१८१२
किञ्चित् ३. ४.	३१६१६
" ३.	५१४१३६
" ४.	८१८१२
किञ्चलुक १.	४११५९
किञ्चोल १.	४१२४६
किञ्ज १ ब.	३११२८
किञ्जलक १.	४१२४५
" १. ३.	७१५३१
किट १.	३१५२१
किटि १.	३१४६
किट्ट १. ३.	४१४१२०
किट्टिभ ३.	४१२३
किण १.	३१६२२१
" १.	३१७२१७
किणिही २.	३३११५५
" २.	३३१३३३
किण्व ३.	३१९५०

वैजयन्तीकोषः

किण्व ३.	६३१५
कितव १.	३३३७६
" १.	३१९५८
किदिर १.	३३३७०
किनाटक ३.	३३३१४
किन्नर १.	१३३३
किन्नरी २.	३१९१२८
किन्नरेश्वर १.	१३३५५
किम् १. २. ३.	८१४१६
" ४.	८१७३
" ४.	८१८१२
किमिला २.	४१४२०
किमु ४.	८१८१२
किमुत ४.	८१८१४
किम्पचान १. २. ३.	
किम्पाक १.	५१४५९
किम्पुरुष १.	३३३८०
" १.	१३३३
" १.	३११६
कियदेतिका २.	३१६१६६
( कियदेहिका )	
कियाह १.	३१७१०१
किरण १.	२१११६
किरात १.	३१५४६
" १. २. ३.	५१४५
किरातज ३.	३१८११४
किरि १.	३१४६
" २.	३१७१७८
किरिभ १. २. ३.	५१४९
किरीट ३.	४३११३५
किरीटिन् १.	३१७७२
किर्माँर १.	५३३२३
किल ४.	८१७१९
किलास १. २. ३.	
किलासध्न १.	५१४१४४
किलासिन् १. २. ३.	३३३१६४
किलासिन् १. २. ३.	४१४१४६
किलिकिञ्चित ३.	३१९१९४
किलिञ्ज १.	४३३१६६
किलिबष ३.	८१४१६

[ कुकर ]

किह्ली २.	३१७८०
किशालिन् १.	११२५७
किशोर १.	३१७१०७
किष्कु १.	३११५४
" १.	३११५६
" १. २.	६१५१९
किसल १.	३३३१७
किसलय ३.	३३३१७
किसिट्टक १.	३१७१०९
कीकट १ ब.	३११३१
कीकस १.	४११३९
" ३.	४११०८
कीचक १ ब.	३३३२१५
कीट १.	४११३९
कीन ३.	४११०७
कीनाश १.	११२३५
" १.	५३३२१
" १. २. ३.	७१५२३
कीर १.	३३३२५
" १ ब.	३११२७
कीर्ण १.	४१२३७
कीर्णजल १.	४१२८
कीर्ण २.	६१२६
कीर्ति २.	२१४३६
" २.	६१२६
कीर्शा २.	२३३२४
कील १. २.	११२२९
" १.	३१७८५
" १. ३.	३१७१३१
" १. २. ३.	
कीलक १.	४१४१२३
कीला २.	११२२९
कीलाल ३.	७३३७
कीलित १. २. ३.	५१४६७
कीलिनी २.	३११४
कीलुष १.	३१५१४
कीश १.	३१४३९
कु २.	३१११
" ४.	८१७३
कुकर १. २. ३.	५१४१४

कुकुण्ड ]

कुकुण्ड १.	३३१५२
कुकुन्दर ३.	४१४६५
कुक्कूल १. ३.	७५२४
कुक्कुट १.	२३३३३
" १.	२३३४०
" १.	३३३१४९
" १.	३१५२३
" १.	३१५९५
" १.	३१५९६
" १.	३१५९६
" १.	४१४१३४
कुक्कुटध्वज १.	११२५७
कुक्कुटाब् १.	३३३१६८
कुक्कुटि २.	३३३१९६
कुक्कुर १.	३१४६९
" ३.	३१८९२
कुक्किक १.	४१४६७
कुक्किकृजित ३.	२१४८
कुक्किभरि १. २. ३.	
कुक्कियगि १.	११२२१
कुक्कण १.	३१५४३
कुक्कम ३.	३१८११६
कुक्कुणी २.	२१९१२८
कुक्कु १.	४१४६८
कुक्कुन्दन ३.	३१८११४
" ३.	३१८११५
कुक्कुर १. २. ३.	५१४४८
कुक्कारु १.	३१४७२
कुक्कु १.	२११३१
" १ ब.	३११२९
" १.	३१३५
कुक्किका २.	४३३४९
कुक्कित १. २. ३.	५१४१२३
कुक्कु १.	३१२१०
" १. ३.	६१५२३
कुक्कुना २.	२१४२७
कुक्कुर १.	३१७६१
कुक्कुल ३.	४३३८२
कुक्किका २.	३१९१३५

शब्दानुक्रमणिका

कुट १.	३१५१३
" ३.	३१८११९
" १.	४३३१०८
कुटच १.	३३३७३
कुटज १.	३३३७३
कुटजट १.	३३३६८
" ३.	३३३२०१
कुटपुरि १.	२३३३२
कुटर १.	३१४२
कुटि २.	३३३३४
" १. २. ३.	६१५२४
" १. २. ३.	८१९२६
कुटिल १. २. ३.	५१४१२१
" १. २. ३.	८१९२४
कु. टीर	४३३२७
" २.	८१९२६
कुटीर १.	४३३२७
" १.	७११२०
कुटुम्ब ३.	४१४११
कुटुम्बध्यापृत १. २. ३.	
कुटुम्बिका २.	३३३१८७
कुटुम्बिनी २.	४१४२१
कुटुम्बन्ती २.	३१७१६४
कुटुम्बित ३.	३१९९५
कुटुम्ब १.	३३२११
कुटुम्बिनी २.	४१४२५
कुटुम्बि १. २.	४३३३२
कुटुम्बि १.	३३२११
कुटुम्बल १. ३.	३३३१९
" ३.	३३३२१५
कुट १.	३३३१५
कुठरुणा २.	३३३१३८
कुठार १.	३१९३२
" १. २. ३.	३१९३६
कुठेरक १.	३३३११८
कुड १.	११२५८
कुडङ्ग १. ३.	३३२१०
कुडप १.	५११५३
कुडुम्बिनी २.	४१४२१
कुड्य १. ३.	४३३३७

[ कुदर ]

कुड्यमगस्या २.	४११३१
कुण १.	३३३१५
कुणप १.	३१७२१६
" ३.	४१४११८
कुणि १.	३३३८५
" १. २. ३.	५१४१४
कुण्ट १. २. ३.	५१४७४
कुण्ड १.	३१५६०
" ३.	३३३२०९
" ३.	४३३८१
" ३.	६३३५
कुण्डगोलक १.	३१५६१
कुण्डधान्य १.	३३३४१
कुण्डनी २.	४३३२५
कुण्डल १.	३१७१६३
" ३.	४३३१३५
कुण्डलिन् १.	४११५
" १. २. ३.	७१५२५
कुण्डली २.	३३३३३१
कुण्डिका २.	३३३१२४
कुण्डिन् १.	३१७९०
कुण्डणाची २.	३३३२६
" २.	४११३१
कुतनु १.	११२५५
कुतप १.	३१९१४०
" १.	७१५२९
कुतपविन्यास १.	
कुतुप १.	३३३३०
कुतु २.	४३३६०
कुतुहल ३.	३३३१८७
कुत्रफला २.	३१८६०
कुत्स १.	३११५५
कुत्सना २.	२१४३३
कुत्सा २.	३३३१९३
कुत्सित १. २. ३.	५१४७५
कुत्सिता २.	३३३५०
कुथ १.	३३३२२७
" १.	३१५२३
" १. २. ३.	४३३१६६
कुदर १.	३१७११



[ कृवर ]

कृवर १.	३७१३२
कृर ३.	४३१७५
कृरदूषक १.	३८८५४
कृर्च १.	४४१५७
” १. ३.	६५१२०
कृर्केसर १.	३३३२२०
कृर्चाल १.	३६११२
कृर्चिका २.	३८११४८
” २.	७२१५
कृर्ची २.	३९११३
कृर्पर १.	४४१७२
कृर्पास १.	४३१२८
कृर्म १.	३७१७६
” १.	३७१७९
” १.	४११५०
” १.	८६११३
कृल ३.	४२१३२
” ३.	६३१५
कृलङ्गषा २.	४३१२३
कृलमण्डक १	४११४८
( स्थूलमण्डक )	
कृली २.	३३१८७
कृरमाण्डक १.	१११५१
” १.	३३१७०
कृरण १.	२३१३६
कृरणपत्रिका २.	३३१२३०
कृकर १.	२३१३६
कृकलास १.	४११२८
कृकवाकु १.	२३११३
” १.	३३१७९
कृकाटिका २.	४४१८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१२१३९
” १. ३.	३६१३६
कृच्छ्रक ३.	३६१३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३६१३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३६१३६
कृत ३.	२११९१
” ३.	३६१९८

वैजयन्तीकोषः

कृत ३.	३९१६२
” १. २. ३.	६५१२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५४१९९
कृतकोटिकवि १.	३६१७९
कृतज्ञ १.	३४१७०
कृतपुङ्क १. २. ३.	३७१४९
कृतभी २.	४११४८
कृतमाल १.	३३१४८
” १.	३४१२८
कृतमालक १.	२३१२३
” १.	४४१०६
कृतमुख १. २. ३.	५४१९९
कृतवेधन १.	३३१५९
” १.	३३१६०
कृतहस्त १. २. ३.	३७१४८
कृताकृत ३.	३६१९७
कृतान्त १.	१२१३५
” १.	७१११६
कृतारु १.	३४१२७
कृतालक १.	१११५७
कृतास्त्र १. २. ३.	३७१४९
कृति २.	४४१३६
कृतिन् १.	३३१२९
” १. २. ३.	५४१९९
कृतोद्वाह १.	३६१८
कृत्त १. २. ३.	५४१०२
कृत्ति २.	३६१२१
” २.	४३१६०
” २.	४४१०३
कृत्तिका २ ब.	२११४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३६१९८
कृत्तिवासस् १.	१११४२
कृत्य ३.	३६१२३
” १. २. ३.	६५१२०
” २. ३.	८९१३३

[ कृष्णधूमल ]

कृत्रिम ३.	३२१२८
” १.	३८११०
” १.	३८१११
” १.	३८१२४
कृत्रिमाचारी २.	२११७६
कृस्न १. २. ३.	५४१८६
कृपण १. २. ३.	५४१५९
कृपा २.	३६१९२
कृपाण १.	३७१५९
कृपाणी २.	३९१३७
कृपीट ३.	७२१८
कृपीटयोनि १.	१२११६
कृमि १.	३५१३३
” १.	४३१३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४३११८
कृमिज ३.	३८१०७
कृवी १.	३९१२६
कृश १ ब.	२११३७
” १.	५३१७
” १. २. ३.	५४१५
कृशानु १.	१२११७
कृशानुरेतम् १.	१११४५
कृशारिवन् १.	२९१६३
कृपक १.	३८१२८
” १. २. ३.	७५१३१
कृपि २.	२८१३
कृपीबल १.	३७१२७
” १. २. ३.	३८१७
कृष्टक १. २. ३.	३८१२२
कृष्टि २.	६५१२४
कृष्ण १.	११११५
” १.	१११२५
” १.	३३१८३
” १.	५३१११
” १.	६५१५४
कृष्णकाक १.	२३११७
कृष्णकोहल १.	३९१५८
कृष्णद्वैपायन १.	१११३२
कृष्णधूमल १.	५३११३
” १.	५३१२२

[ कृष्णनवाम्बुद ]

कृष्णनवाम्बुद १.	२२१२२
कृष्णपाक १.	३३१८३
कृष्णपाकफल १.	३३१८३
कृष्णपिङ्गल १.	५३१२४
कृष्णपीत १.	५३१२२
कृष्णफल १.	३३१८३
कृष्णफला २.	३३१९०८
कृष्णभगिनी २.	१११६२
कृष्णभूम १. २. ३.	३९१४५
कृष्णभेदी २.	३८१८६
कृष्णरक्तसित १.	५३१२५
कृष्णला २.	३३११७९
कृष्णलोहित १.	५२११
कृष्णवर्ण १.	३८१४३
कृष्णवर्णा २.	४२१२९
कृष्णवर्मन् १.	१२११४
कृष्णविषाणा २.	३६१९०९
कृष्णवृन्त १.	३८१४७
कृष्णवृन्ता २.	३३१९०
” २.	८२११५
कृष्णवृन्तिका २.	३३१५७
कृष्णशालि १.	३८१३३
कृष्णशिम्ब २.	३८१४७
कृष्णशृङ्गक १.	३४१९
कृष्णसर्प १.	४१११२
” १.	४१११३
कृष्णसार १.	३४११२
कृष्णस्वसृ २.	१११६२
कृष्णाजिन ३.	३६१२१
कृष्णायस ३.	३२१३३
कृष्णिका २.	३३१९८१
कृसर १.	३३१७८
” ३.	४२१४७
” १. २. ३.	४३१७९
केकर १. २. ३.	५४११३
केका २.	२३१३९
केकालि १.	२३१३८
केकिन् १.	२३१३७
केगिका २.	४३१२५

शब्दानुक्रमणिका

केण्डुक १.	४११४७
केतक १. २. ३.	३३१२२३
केतन ३.	३७१७६
” ३.	४३१९९
” ३.	७३१२२
केतर २.	४३१९९
केतु १ ब.	१३१३७
” १.	६१११६
” १.	८११६०
” १.	३११७
केतुमाल ३.	३११७
केदर १.	३८११७
केदार १.	३८११७
केनिपात १.	४२११६
केयूर ३.	४३११४३
केरल १ ब	३११३४
केलक १.	३९१६४
केलि १. ३.	३९१८८
केलिकिल १.	१११५१
” १.	३७११७
” १.	३९१६७
केकिकुञ्जिका २.	४४१२८
केलिसहायक १.	३७११७
केवल १. २. ३.	७५१२६
केवलिन १.	१११३५
केश १.	४४१९७
” १.	८६१११
केशकार १.	३७११७
केशकूट १.	४४१००
केशघ्न ३.	४४१२६
केशपञ्च १.	५१११८
केशपद्धति २.	४४१००
केशपाश १.	५१११८
केशपाशी २.	४४१०२
केशव १.	११११४
” १. २. ३.	५४१८
केशवप्रिय १.	३२१५
केणवायुध ३.	३७१३४
केशहस्त १.	५१११८
केशिक १. २. ३.	५४१८
केशिका २.	३३१३७
केशिन् १. २. ३.	५४१८

[ कोकिल ]

केशिनी २.	३३११६
केशी २.	४४१०२
केसर १.	३२१५
” १.	३३१२६
” १.	४२१४५
” १.	४३१३२
” १. ३.	७५१३०
केसरा २.	३३१९९
केसरिन् १.	३३३३३
” १.	७११२१
केकसेय १.	१२१४१
केटभारि १.	११११५
केटभी २.	१११६२
केडर्य १.	३३१५०
” १.	३३१५८
केडर्यद्वेषिन् १.	३३१७५
केतव १.	७३१८
केदारक ३.	५१११२
केदारिक ३.	५१११२
केदार्य ३.	५१११२
केरव ३.	४२१४१
केराती २.	३७१९२
केलास १.	३२१५
केलासनाथ १.	१२१५६
केवर्त १.	३५१३२
” १.	३५१९१
” १.	३९१४२
केवर्तीमुस्तक १.	३३१९९
केवल्य ३.	३६१२८
कैशिक ३.	५१११२
कैशिकी २.	३९१०१
कैश्य ३.	५१११२
कोक १.	२३१९
” १.	३३१८
कोकनद ३.	४२१४०
” ३.	४२१४२
कोकहित १.	२११५६
कोकाह १.	३७१९९
कोकिल १.	२३१२६
” १.	७११२०

कोकिलाच ]

कोकिलाच १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३१०२
कोकुराह १.	३३१०५
कोटर १. ३.	३३११४
कोटि २.	४३१५२
” २.	५११२९
” २.	५११३१
” २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४ ३१९
कोटिश १.	३३१२९
कोटी २.	३३१७७
कोटीर १.	४३१३५
कोट्टी २.	४४११०
कोठ १.	४४१२४
कोण १.	२११३५
” १. २. ३.	२११२९
” १. २. ३.	२११३६
” १.	४३१५२
” १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणपिशाचक १.	४११४८
कोण्ट १.	२३१२२
कोतना २ व.	२११९९
कोदण्ड ३.	३३१७२
” ३.	३३१७३
” ३.	७३११२
कोदङ्ग १.	३३१३४
कोदङ्ग १.	४३१३२
कोद्व १.	३३१५४
कोप १.	३३१७३
कोपन १. २. ३.	५४१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२३१२
कोरदूषक १. ३.	३३१५४
कोराङ्गी २.	३३१८८
कोल १.	२११३६
” ३.	३३१८०

वैजयन्तीकोषः

कोल ३.	५११४८
” १.	५३१३४
” १.	५३१०५
” १. २. ३.	५४११४
” १. २. ३.	६१५१६
” १.	६१५१७
कोलक ३.	३३१०५
” १.	४१११८
कोलदल ३.	३३१०१
कोलम्बक १.	२१११२०
कोलवल्ली २.	३३१७८
कोला २.	३३१८१
” २.	६१५१७
कोलाक १. २. ३.	२४१२३
कोलाङ्गक १.	३४१३३
कोलाहल १.	२४१२७
कोलि २.	३३१८७
” १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३४१६६
कोविद १.	३४१२३४
कोविदार १.	३३१३७
कोश १.	२३१५०
” १.	३३१७३
” १.	३३१४४
” १.	३३१७८
” १. ३.	३३१७४
” १.	४४१६१
” १. ३.	४४१६३
” १. २. २.	६१५१५
कोशफल ३.	२३१०५
” १.	३३१०५
कोशफला २.	३३११५८
” २.	३३११६१
” २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
” २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ठ १. ३.	३१५२२
कोष्ठकारी २.	२३१४७

[ कौलटिनेय

कोष्ण ३.	५३१९
कोसल १ व.	३११३७
” १ व.	३११४०
” ३.	३३१७४
” १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३११२७
” १.	३१५१८
कोहली २.	३३१४९
कोङ्कट ३.	३३११९२
” १. २. ३.	५४१२४
कौक्कुटिक १. २. ३.	३३११७
” १. २. ३.	८४१६
कौन्तेलेयक १.	३३१५९
कौट १.	३३१८०
कौटतत्त १.	३११३४
कौटिक १.	३११३७
कौटिल्य १.	३३१५९
कौतुक ३.	६३१८७
” ३.	७३११०
कौतूल १.	४४१३८
कौतूहल ३.	३३११८७
कौद्वीण १. २. ३.	३३११९
कौन्तिक १. २. ३.	५४१२२
कौन्तिक १. २. ३.	३३११४४
कौन्ती २.	३३११५
कौपीन ३.	४३१२९
” ३.	७३१३३
कौबेरी २.	२११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३३११३८
कौरक्रव्या २.	२४१२८
कौलकुस्य ३.	४३१११५
कौलटिनेय १.	४४१४४

कौलटेय ]

कौलटेय १.	४४१४४
” १.	४४१४४
कौलटेर १.	४४१४४
कौलीन ३.	७३११३
कौलेयक १.	३४१७०
” १. २. २.	५४१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४४११०
( कौशिक )	
” १.	७१११७
कौशिकी २.	८१११४
कौशेय १. २. ३.	४३११८
कौपीतकी २.	३३१५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	१११२१
कौसीघ ३.	३३१७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३३१८२
क्रकच १.	३११५६
” १. ३.	३११३६
क्रकचिक १.	३११५३
क्रतु १.	५४११४
क्रतुभुज् १.	१११३
क्रत्वन्नि १.	११२२३
क्रथन ३.	४४१२७
क्रन्दन ३.	२४११०
” ३.	७३१६
क्रन्दित ३.	३११८७
क्रपुक. १.	३३१६९
क्रम १.	३३११३
” १.	३३११३
” १.	४११३१
क्रमण १.	३३१९१
” ३.	४४१५६
क्रमुक १.	११२३२
” १.	३३१२१७
क्रमेलक १.	३३१६७
” १.	३१५४५
क्रय १.	३३१६९
क्रयविक्रयिक १.	३३१७२

शब्दानुक्रमणिका

क्रयिक १. २. ३.	३३१६८
क्रय्य १. २. ३.	३३१६८
क्रव्य ३.	४४१०६
क्रव्याद् ५.	११२२२
” १.	११२४०
क्रव्याद् १.	११२४०
क्राकचिक १.	३११५६
क्राथ १.	४४१२७
क्रान्ति २.	५१११६
क्रामणक १.	३३१३०
क्रायिक १. २. ३.	३३१८८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमिघ्न १.	३३१९७
क्रिमिज ३.	४३११७
क्रिमिपर्वत १.	३११४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३४१२६
क्रिया २.	३११२३
” २.	५११२९
” २.	६११२९
क्रियावत् १. २. ३.	५४१७४
क्रीडा २.	३११८७
” २.	२११८८
क्रुञ्च १.	२३१३४
क्रुध् २.	३३११८३
क्रुधा २.	३३११८३
क्रुष्ट ३.	२११८७
क्रूर १.	३३१२१७
” ३.	४४१०८
” ३.	५३१५
” ३.	५३१७
” १. २. ३.	५४१२४
” १. २. ३.	५४१६०
” १. २. ३.	६४१४
क्रुरा २.	३३१८७
क्रेणी २.	३३१६९
क्रेतव्य १. २. ३.	३३१६८
क्रेतृ १. २. ३.	३३१६८
क्रेय १. २. ३.	३३१६८
क्रोड १.	२११३५

[ क्राथन

क्रोड ३.	५११४९
” १. २. ३.	६११२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३३११८३
” १.	३११७६
क्रोधन १.	३३१६९
” १. २. ३.	५४१३२
क्रोधविवशा २.	३३१४७
क्रोश १.	२४१३
” १.	३११६२
क्रोष्टु १.	३३१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
” १.	२३१३४
क्रौञ्चारि १.	१११५७
कलम १.	५११२८
कलमथ १.	५११२८
कलान्ति २.	५११२८
विलम्ब १. २. ३.	५४११३
विलष्ट १. २. ३.	५४११३
वलीतक ३.	३३११०
वलीतकी २.	३३१११०
वलीव १. २. ३.	३३११४७
” १.	४४१३
वलेदन् १.	६१११६
वलेदु १.	२११२६
वलेश १.	३३११९३
वलेशित १. २. ३.	५४१११३
वलोमन् ३.	४४१११२
क्वण १.	२४१११
क्वणक १.	४४११३५
क्वणन ३.	२४१११
क्वणित ३.	२४१११
क्वथन ३.	५११३१
क्वथित २.	५४१११५
क्वण १.	२४१११
क्वथ १.	४४११४१
क्वथन ३.	३३१२५
” ३.	५११४१

काथसम्भव ३.	३२२३३	कथ १.	५२३२
काथि १.	३३१५२	” १.	५४१४
कण १.	२११५४	कथि १.	२३१९
” १.	३३६६२	करि २.	३१११
” ३.	४४१२७	करिन् १.	२११८८
” १.	५२३७	कव १.	४४१२१
” ३.	५४१११	कवथु १.	७११८
कणदा २.	२११५६	कानिन् १.	३३६२२
कणन ३.	३३७२१४	कानिनी २.	२११५
कणा २.	४३२६	( कानिनी )	
( कणा )		कान्णी २.	२११२७
कणांशु २.	२२२४	कान्त १. २. ३.	५४२१५
कणिका २.	२२२४	कान्ति २.	३१११
कणितु १.	३३७२१७	काम १.	१२२१
कत ३.	३३७२१७	” १. २. ३.	५४८४
कतज ३.	४४१८५	कार १.	३३८२७
कतव्रत १. २. ३.		” १.	३३८२९
	३३६१३	” १.	५३३०
कत्त १.	३३८५	” १.	५४१३
” १.	३३५११६	कारक १.	७११६
” १.	३३७२४	कारण ३.	२४३३
” १.	३३७१३७	कारपत्रक १.	३३१५४
कत्त्र १.	३३७१	कारमृत्तिका २.	३३८२५
कत्त्रकुण्ड १.	३३५६२	कालन २.	३३६५७
कत्त्रिय १.	२५२	कालि २.	६२३८
” १.	३३७१	कालिसम्भवा २.	३३४४२
कत्त्रियगोलक १.	३३५६२	कल्पण १.	७१२१
कत्त्रिया २.	४४२३	कल्पणु १.	७१२१
कत्त्रियाणी २.	४४२३	कल्पा २.	५२३३
कत्त्रियाणी २.	४४२२	कल्प १. २. ३.	५४६७
कल्पण १. २. ३.	५४१५	” १. २. ३.	५४९७
कल्पा २.	२११५६	कल्पु १. २. ३.	५४४०
कल्प १. २. ३.	६४३	कल्पि १.	२३१९
कल्पा २.	१११४७	” ३.	४४१०८
” २.	३१११	” १. २. ३.	५४१२४
” २.	३३१८४	कल्पि २.	५४८४
कल्पितु १. २. ३.	५४३३	कल्पि १. २. ३.	५४३७
कल्पिन् १. २. ३.	५४३३	कल्पि २.	३३८५
कल्प १.	३३७७५	” ३.	६३३४
” १.	४३१९	कल्पिक १.	४१२०
” १.	४४१२४	कल्पिज ३.	३३८२९

कीरबीज १.	४२३८
कीरविदारी २.	३३१९६
कीरशर १.	३३६९८
” १.	३३८१४७
कीरशुक्ल १.	४२३८
कीरशुक्ला २.	३३१९६
कीराविधि १.	३१११
कीराश १.	२३३७
कीराहार १. २. ३.	
	३३६३४
कीरिका २.	३३७८०
कीराद १.	३१११
कीरोदसुता २.	११३६
कृष्ण १. २. ३.	५४४९
कृष्णक ३.	३३१३९
कृत् २.	४४१२१
कृत् १.	४४१२१
कृत् १.	३३५२६
कृत् १.	४१३९
” १. २. ३.	५४१०९
” १. २. ३.	६५१३
कृत्क ३.	३३१२२
” ३.	३३१३४
कृत्घण्टा २.	४३१४५
कृत्नासिक १. २. ३.	
	५४१११
कृत्नीवृत् १ ब.	३११४१
कृत्पत्तिन् १.	२३३४१
” १.	२३३४८
कृत्हंस १.	२३३९
कृत्पण्ड १.	४११४५
कृत्प्राय १.	३३७१२
कृत् २.	३३६८२
कृत् २.	३३६४२
कृत्वाभिजनन १.	३३६४२
कृत्घित १. २. ३.	५४३६
कृत् १.	३३३६
” १.	३३६३
कृत्मा २.	३३४५
कृत् १.	३३३०१
” १.	३३३४१

छुर १.	३३१२६
छुरक १.	३३१०१
छुरकर्मन् ३.	३३६४
छुरप्र १.	३३७१८२
छुरमर्दिन् १.	३३१२६
छुरसमुद्र ३.	४३१०८
छुरिका २.	३३७१६३
छुल्लक १. २. ३.	७४१९
छुल्लतात १.	३३१०८
” १.	४४३२
छुव १.	४४१९९
छेत्र ३.	३३८१७
” ३.	४४३५
” ३.	४२५२
” ३.	६३३६
छेत्रज्ञ १.	३३६१६१
” १. २. ३.	७५३२
छेत्रपल्ली २.	४३२७
छेत्राजीव १. २. ३.	३३८४
छेत्रिक १.	३३८११०
छेत्रिय १. २. ३.	७५११०
छेत्रिया २.	३३६०
छेत्र्य ३.	३३८१२३
छेष १.	५२१२
छेषण १.	४४५८
” ३.	५२३३
” ३.	५२४०
छेषणी २.	४२१७
छेषणीय १.	३३७१६६
छेष १.	६५२२
छेषङ्कर १. २. ३.	५४५५
छेत्र ३.	५११२
छेत्री २.	४३३७
छोड १.	३३१६२
छोणी २.	३१११
” २.	३३६१७
छोद १.	६११३
छोभ्य ३.	३२३१
छोद्र ३.	३३१३५
छोम १. २.	४३३३
” १. २. ३.	४३११७

छौम ३.	४३१२२
छौरकार १.	३३७११७
छणुत १. २. ३.	३३७१९७
छणू २.	३३८२९
छमा २.	३१११
छमाभृत् १.	३२३१
छिवङ्क १.	३३४३१
छवेड १.	२४३१
” १. २. ३.	६५२१
” १. ३.	८१३१
छवेल १.	४१२२
” १.	४१२२
ख	
ख ३.	२१११
” ३.	८३१९
” ३.	८६४
खग १.	२११४
” १.	२३३३
” १.	२३३२
” १.	३३७१७८
” १.	६१११८
खगच्छाय ३.	८११९
खचित १. २. ३.	५४७७
खजक १.	३१३१
खजाका २.	४३१६३
खज १.	३३२०८
” १.	३३५६
” १. २. ३.	५४१४
खजन १.	२३२३
खजरीट १.	२३२३
खजरीटी २.	२३३४
खट १.	५३३४
खटी २.	३२१६
खट्टास १.	३३३५
खट्टासिका २.	३३३५
खट्टा १.	४३१६४
खट्टाङ्ग १.	१११५९
खट्टाङ्गिन् १.	१११६
खट्टिका २.	४३३२
खट्टा १.	३३४७
” १.	३३७५८

खड्गनामान् १.	४११५१
खड्गपत्र १.	३३४२२६
खड्गपुच्छ १.	४११५१
खड्गाङ्ग १.	१२३१
खड्गाभु ३.	३३७१६१
खड्गिन् १.	३३४७
खण्ड ३.	३३७१९
” १. ३.	३३७३४
” १. ३.	४४५६
” १. २. ३.	५४८६
” १. २. ३.	६५२५
खण्डना २.	३३५३
खण्डपरशु १.	१११४३
खण्डपर्कट ३.	४३१०६
खण्डल १. ३.	४३१३०
खण्डशर्करा २.	३३७३३
खण्डिक १.	३३७३
खण्डिका २.	३३३३
खण्डित १. २. ३.	
	२४२०
खण्डिता २.	२११६०
खण्डिन् १.	३३७३८
खण्डीर १.	३३७३६
खण्डिल १.	१२१४
खदरी २.	३३१४८
( खदरी )	
खदिका २.	४३३७
खदिर १.	१२३६
” १.	३३३३
खद्योत १.	२३३७
खनक १.	३५४०
” १.	४१३१
” १. २. ३.	७५३३
खनि २.	३२३८
खनित्र ३.	३३३३
खनित्री २.	३३३३
खपुट १. २. ३.	३३३३
खपुर १.	३३३१
” १.	३३३२
” १.	७१२२
खर १.	३३३९

[ खर ]

खर ३.	३१३२१८
" १.	३१३२२८
" १.	३१४६५
" १.	५३३३
" १.	५३३५
" १.	५३३७
" १.	५३३८
" ३.	८६६६
खरक १.	२१४१०
खरकुटी २.	४३३२५
खरकोमल १.	२११८४
खरकाण १.	२३३३५
खरच्छुद्ध १.	३१४२२९
खरट १.	५३३४
खरटी २.	३१३२६
खरणस् १. २. ३.	५३३१२
खरणस १. २. ३.	५३३१२
खरमञ्जरी २.	३३३११५
खरमुख ३.	३१२१२५
खरम्भर १ व.	३१३२३
खरागरी २.	३३३८६
( खरा, गरी )	
खरारि १.	११३२१
खराशवा २.	३१८१०२
खर १. २. ३.	३१६१२
" १.	६१११८
खरञ्जक १. ३.	३१५१०
खरहा २.	३३३१३२
खरुल १.	४३३७६
खर्जनी २.	३१६१०९
खर्जू २.	४३३१२४
खर्जूर ३.	३३२१३
" ३.	३३२१४
" १.	३३३२२२
" १.	४३१३३
खर्जूरिका २.	३३३२२२
खर्व ३.	५३१२८
" १. २. ३.	५३३८१

वैजयन्तीकोषः

खल १.	३१८३१
" १. २. ३.	३१८१४२
" १.	५३३२५
खलकुल ३.	३१८३७
खलति १. २. ३.	४३३१४७
खलधान ३.	३१८३१
खलपू १. २. ३.	३१८६७
खला २.	६१५२५
खलि २.	३१२२७
" २.	४३३८१
खलिनी २.	५३११२
खलीन १. ३.	३१७११३
खलु ४.	८१७२०
खलुकी २.	३३३१८
खलुष १.	५३३३४
खलुरिका २.	३१७१९४
खलेपाली २.	३१८३१
खलया २.	५३११२
खल्व १.	३१८३६
" ३.	४३३६०
खलवाट १. २. ३.	४३३१४७
खलुक १.	५३३५३
खष १.	३१५३४
" १.	३१५५६
" १.	५३३५२
खस १.	४३३१२३
खस्यम ३.	३१७३७
खाङ्क १.	२१११४
खाटि १.	३१७२१६
खाङ्गिक १. २. ३.	४३३१४६
खाण्डवप्रस्थ १. ३.	३१७१४४
खातक ३.	४३३१
खादन ३.	४३३१०४
" १.	४३३८८
खादित १. २. ३.	५३३१०७
खाद्य ३.	४३३११

( ४६ )

[ खोड ]

खाध्वनीन १.	२१११४
खारी २.	५३१५७
" २.	५३१५७
" २.	५३१६३
खारीक १. २. ३.	३१८२२
खाषेय १.	१३३१
खिल ३.	३१६३३
" १. २. ३.	३१८१८
खिलखिल १.	२३३४०
खुडार १.	३१८४४
खुडुक १.	३३३२२१
( खुडुक )	
खुर १.	३३३७४
" १.	३१८१०१
खुरणस् १. २. ३.	५३३११
खुरणस १. २. ३.	५३३११
खुरुराह १.	३१७१०५
खेचर १.	१३३३
" १.	७३३२२
खेट १. ३.	४३३१
" १. २. ३.	५३३७५
" १. २. ३.	६३३२४
खेटक ३.	३१७१९७
" ३.	४३३१३
" १.	४३३८०
" १.	४३३१३१
खेटन ३.	३१९४०
खेटिन् १. २. ३.	४३३१४६
खेद १.	५३३३२
खेय ३.	४३३१३
खेल १.	३३३२१५
खेला २.	३१९८७
खेलि १.	३१८४४
खेल्लाह १.	३१७१०३
खोङ्गाह १.	३१७१९
खोड १.	२१३३५
" १. २. ३.	५३३१४

[ खोरण ]

खोरण १.	५३३३
खोलक १.	७३३२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	३१६११
ख्याति २.	२३३३६
" २.	३१६१६३
ग	
गगन ३.	२१११
गङ्गा २.	४३३२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेशि २.	४३१५७
गच्छ १.	५३३३७
गज १.	३१७६०
गजचिह्निका ३३३१७२	
गजच्छाया २.	२१३३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजता २.	५३१९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३३३२२
गज्ज १. २. ३.	६३३२६
गज्जम ३.	२३३२
गज्जाः २.	३२११०
गड्ड १.	४३३१३३
" १. २. ३.	६३३२९
गड्डल १. २. ३.	५३३११
गड्डची २.	३१८३५
गड्डोल १.	४३३१०१
गण १.	३१७५८
" १.	५३११
" १.	६३११९
" १	८६३१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	५३११९
गणन ३.	५३३३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	५३११९
गणरात्र ३.	२११५९

शब्दानुक्रमणिका

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३१६८२
गणिका २.	३१७३३
" २.	४३३२४
" २.	७३३७
गणिकागण १.	५३१८
गणिकारी २.	३३३८६
गणोत्साह १.	३३३८
गण्ड १.	३१७७५
" १.	४३३९०
" १.	४३३१२३
" १.	५३३३७
" १.	६३३२०
गण्डक १.	३३३७
" १.	३१७११६
" १.	४३३१५
गण्डकली २.	३३३१४८
गण्डफली २.	८३३५
गण्डमाल १	४३३१२९
गण्डमालहन् १.	३३३७७
गण्डरी २.	३३३९८
गण्डशैल १.	३३३१९
गण्डरी २.	३१८७८
गण्डुक १.	४३३१६२
गण्डूपद १.	४३३१५९
गण्डूष १.	४३३७८
" १. २.	७३३३४
गण्डूषक १.	३१७७०
गण्डोर १.	४३३१०१
गण्डोली २.	२३३४६
गति २.	३३३२३६
" २.	४३३१३३
" २.	५३३१०
" २.	६३३११
" २.	८३३१५
गद १. २.	६३३२९
गदाग्रज १.	१३३२५
गदापाणि १.	१३३३३
गद्वद १. २. ३.	२३३१५
गद्वदस्वर १.	३३३८
गद्यपद्यमयी २.	२३३४२

( ४७ )

[ गमन ]

गन्त्री २.	३१७१२७
" २.	४३३१०८
गन्ध १.	५३३२
" १.	५३३५४
" १.	६३३२२
गन्धक १.	३३३१४
( गन्धिक )	
गन्धकुटी २.	३१८१८
गन्धचैलिका २.	३३३३६
गन्धन ३.	७३३१३
गन्धनाकुला २.	३१८१७
गन्धमुण्डक १.	३३३५९
गन्धमृग १.	३३३३५
गन्धरस १.	३३३१५
गन्धर्व १.	१३३३८
" १.	१३३२
" १.	३३३३२
" १.	७३३२४
गन्धर्वगण १.	१३३११
गन्धर्वहस्त १.	३३३६५
गन्धर्वह १.	१३३३७
" १. २.	८३३७
गन्धवाह १.	१३३३७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	५३३३९
गन्धसोम ३.	४३३४१
गन्धाखु २.	४३३३२
गन्धाशमन् १.	३३३१४
गन्धाहिक १.	४३३१८
गन्धिक १.	५३३५१
" १.	५३३५४
गन्धिघना २. १. ३.	
" १.	२१३३९
गन्धिनी २.	३१८१८
गभस्ति १.	२३३१३
" १.	२३३१६
" १. २.	८३३२५
गभीरक १. २. ३.	४३३१९
गम १.	५३३१०
गमन ३.	५३३१९
" ३	५३३१०

गमि ]

गमि १.	३१६२०१
( निमि १ )	
गम्भारी २.	३३१५८
गम्भीर १. २. ३.	४१२२०
" ३	८३११७
गर १.	४११२२
" १.	४१४८३
गरल १.	३३३५०
" १.	४११२२
गरवायु १.	११२५३
गरह ३.	३३६१७
गरी २.	३३३८६
गरुड १.	१११३७
गरुडध्वज १.	११११४
गरुडा २.	४१४१०१
गरुत् १.	२३३४८
गरुत्मत् १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	४२१४७
गरोलिका २.	४२१४८
गर्गर १.	३५३३४
गर्गरी २.	३५३३२
" २.	४३३२७
गर्ज १.	२४३३
" १.	३३७६०
गर्जन ३.	२४३३
" ३.	३३३२०६
गर्जना २.	२४३३
गर्जा २.	२४३३
गर्जित २.	२१२५
" १.	७५३३४
गर्त २.	४३३३
गर्तकुण्ड १.	२३३२१
गर्तिका २.	४३३२२
गर्वनक १.	३३४६६
गर्वभ १.	३३४६५
गर्वभाण्ड १.	३३३५९
गर्वभाह्वय ३.	४२१४१
गर्वध १. २. ३.	५४३३५
गर्वधना २.	३३३१८०
गर्वम १.	३३८१४१

वैजयन्तीकोषः

गर्भ १	४१४४०
" १.	४११२१
गर्भक ३.	२११५८
( गर्भित )	
" ३.	४३१५५
गर्भपाकिन्	३३८३४
गर्भसम्पुट १.	४१११३
गर्भागार १.	४३१५१
गर्भाजि १.	३३३१५७
गर्भाधान ३.	३३६१२
गर्भाशय १.	४१४१८
गर्भिणी २.	४१४१६
गर्भोपघातिनी २.	३३४४७
गर्भुट १.	३३५३०
गर्भुटिका २.	३३८५९
गर्भुत् २.	३३८५९
" २.	६१११८
गर्भ १.	३३६१६९
गर्भवहारिका २.	२४३२८
गर्वि २.	३३६१६९
गर्वित १. २. ३.	५४३२०
गर्हण ३.	२४३३३
गर्हणा २.	३३६१९३
गर्हा २.	३३६१९३
गर्ह्य १. २. ३.	५४३७५
गर्ह्यवादिन् १. २. ३.	
" ५४३४७	
गल १. २. ३.	४१४८३
गलकम्बल १.	३३३६०
गलगण्ड १.	४१४१२९
गलन्ती २.	४३३५७
गलस्तनी २.	३३४६२
गलाङ्कुर १.	४१४१२९
गलित १. २. ३.	
" ५४३१०२	
गलेवाल १.	४१४४२
गल्या २.	५१११४
गल्ल १.	४१४९०
गल्वर्त १.	३३५५३
गवय १.	३३४३३
गवल १.	३३४११

[ गान्धर्व ]

गवल ३.	३३८११८
गवसी २.	३३३१२३
गवाक्ष १.	४३३५४
गवाक्षक ३.	४३३५३
गवाक्षी २.	३३३१३४
" २.	३३३१७३
" २.	३३३१८३
गवादिनी २.	३३२१४९
गवीधुका २.	३३८५९
गवेधु २.	३३८६१
गवेधुका २.	३३८६१
गवेधुणा २.	३३६१२१
गवेधित १. २. ३.	५४३९८
गव्य ३.	३३८१४५
गव्या २.	३३१६२
" २.	५१११३
" २. ३.	६१५२६
गव्यूत ३.	३३१६२
गव्यूति २.	३३१६२
गहन ३.	३३३१
" ३.	८३३१७
गह्वर ३.	७३३१५
" ३.	८३३१७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७५३३५
गाङ्गेरुकी २.	३३८६१
गाङ् १. २. ३.	५४३१३२
गाढास्य ३.	३३८१४१
गाणिक्य ३.	५११८
गाण्डिव १. ३.	३३७१७४
" १. ३.	७५३३५
गाण्डिव १.	७५३३५
गातु १.	२४३२
गात्र ३.	३३७७५
" ३.	४१४५२
" ३.	४१४५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३३४७२
गान ३.	२४३२
" ३.	३३९१०९
गान्धर्व १.	१३३२

धर्व ]

गान्धर्व ३.	३३६१२९
" ३.	३३९११०
गान्धार १ ब.	३३१२४
" १.	३३९१३२
गायत्र १.	३३६१८
" ३.	३३६३४
गायत्री २.	३३६३४
गारुड ३.	३३२१९
गारुत्मत् ३.	३३२३८
गामिण ३.	३३६३३
" ३.	५११८
गार्हपत्य १.	११२२४
गालव १.	३३३४९
" १.	३३३५२
गालि २.	२४३३३
गिरि २.	१११९
गिरि १.	३३२११
" ३.	३३८१६
" १.	४३३१६१
गिरिकर्णिका २.	३३१११
गिरिकर्णी २.	३३३१३४
गिरिका २.	४१३३२
गिरिकोलि २.	३३३१७८
गिरिजा २.	४३२२२
गिरिप्रिया २.	३३३१०५
गिरिमल्लिका २.	३३३७३
गिरिलक्ष्मण १.	३३३२८
गिरिश १.	११३३९
गिरिसार १.	३३२३४
गिरिस्तनी २.	३३१३३
गिरीयक १.	४३३१६२
गिरीश १.	११३३९
गिल १.	३३५१५
गीत ३.	३३९१०९
गीतिशासन ३.	३३६१२९
गीत्युपक्रम १.	३३९१४०
गीर्ण १. २. ३.	५४३१०६
गीर्वाण १.	११३१२
गीष्पति १.	२१३३३
गुग्गुलु १.	३३३५३
गुच १.	२३८६३

शब्दानुक्रमणिका

गुच्छ १.	३३३२०
" १.	४३३१४०
गुच्छा २.	३३८३५
" २.	३३८६०
गुच्छार्ध १.	४३३१४०
गुञ्ज १.	३३३२०६
गुञ्ज ३.	२४३२
गुञ्जा २.	३३३१७९
" २.	५१३४४
" २.	६२१११
गुड १.	३३३२७
" १.	४३३१०१
" १.	४३३१६१
" १.	४४३६२
" १.	४४३१३३
" १. २.	६५३२७
" ३. २.	८१३३२
गुडक १.	४३३४७
गुडजूष १.	४३३९६
गुडपुष्प १.	३३३४४
गुडफल १.	३३३४५
गुडा २.	६५३२७
" २.	८१३३३
गुडाका २.	३३६१९७
गुडूची २.	३३३१३१
गुडेरक १.	४३३१०१
गुण १.	३३६१६२
" १.	३३९३०
" १. २. ३.	४३३१३
" १.	५३३१
" १.	५४३६४
" १.	६१३२०
गुणग्राम १.	५१३३७
गुणलयनी २.	४३३१२५
गुणवृक्ष १.	८३३२०
गुणवृक्षक १.	४३३१७
गुणसामान्य ३.	३३६१६२
गुणावली २.	३३३३६
( गुणापणी )	
गुणित १. २. ३.	२४३२२
गुणोत्कर्ष १.	५३३३

[ गुहाशय ]

गुण्डा २.	३३३१५
गुण्डित १. २. ३.	५४३१३
गुद ३.	४४३६०
गुदग्रह १.	४४३१३
गुदानिल १.	३३३२०५
गुध १.	३३८१३३
गुन्दिल १.	२४३१०
गुन्द्र १.	३३३२२८
गुन्द्रा २.	३३३६६
" २.	३३३१९९
" २.	३३८६०
गुप्त १. २. ३.	५४३१००
गुप्तराग १.	३३३२२५
गुप्ति २.	६२१११
गुम्फ १.	५३३३९
गुरण ३.	५३३३४
गुरु १.	११३३४
" ३.	३३३२८
" १.	३३३२२
" १.	३३८५३
" ३.	३३८१३९
" १. २. ३.	६५३२७
गुरुपत्र ३.	[ ३३३३२ ]
गुरुस्वभृत् १. २. ३.	
" ५४३२५	
गुलिन् १.	५३३२५
गुलुच्छ १.	३३३२०
गुल्फ १.	४४३५७
गुल्फशीर्ष १.	४४३५७
गुल्म १.	३३३७
" १.	* ५३३५८
" १.	४४३१३३
" १.	५४३१३०
" १.	६१३१९
गुल्मिनी २.	३३३७
गुवाक १.	३३३२१७
गुह १.	११३५५
गुहा २.	३३३३६
" २.	३३३३३६
गुहाख्य १.	३३३८०
गुहाशय १.	४१३५०



[ गुहाशय ]

गुहाशय १.	८११२१
गुहव ३.	४१४६२
” १. २. ३.	५१४१२०
” १. २. ३.	५१४१२०
गुहवक १.	११३३
” १.	८११५६
गुहवकेश्वर १.	११३५७
गुहवधारा २.	४१४६३
गुहवबन्ध १.	४१३१३१
गुहवमध्य १.	४१४६२
गू १. २.	८१५३८
गूढकोश १.	११२६०
गूढपद ३.	३१६१७३
गूढपाद् १.	४११६
गूढपुरुष १.	३१७२६
गूढवृत्त १.	३१३५५
गूध १.	४१४११९
गून १. २. ३.	५१४११३
गृञ्जन १.	३१३५७
” १.	३१३२०४
” १.	३१३२०६
” १.	३१३२०७
गृण्डिव २.	३१३३९
गृधु १. २. ३.	५१४३५
गृध्र १.	२१३३०
गृष्टि २.	३१३५८
” २.	३१४४८
गृह ३.	४१३१९
” १ व.	४१४३५
गृहकाण्ड १.	३१८७८
गृहकारिका २.	२१३४६
गृहगोधिका २.	४१३३०
गृहगौलिका २.	४१३३०
गृहजालक १. २. ३.	३१९८६
गृहद्रुम १.	३१३५४
गृहपति १.	११२२४
” १.	३१७२७
गृहमणि १. २.	४१३१६१
गृहमृग १.	३१४६९
गृहमेधिन् १.	३१६१०

वैजयन्तीकोषः

गृहयालु १. २. ३.	५१४३८
गृहश्रेणी २.	४१३४६
गृहस्थ १.	३१६४०
गृहस्थूण ३.	४१३३९
” ३.	८१२२२
गृहान्तर ३.	३११५२
गृहावग्रहणी २.	४१३४४
गृहिणी २.	२१३४६
” २.	४१४२१
” २.	७२२७
गृहिन् १.	३१६४०
गृहीति २.	३१६१६५
गृहैडिका २.	४१३३६
गृहेशूर १.	५१४७०
गृहोच्छिष्ट १.	३१३२०४
गृहोदक ३.	४१३८१
गृह्य १.	२१३५
” १. २. ३.	६१४५
गृह्यक १.	५१४२८
गैय ३.	११११०९
गैह १. ३.	४१३१९
गैहेनदिन् १. २. ३.	५१४७०
गैरिक ३.	३१२११
” ३.	३१२२०
गैरुष १.	३१५३३
गैरेय ३.	३१२१६
गैरेयक ३.	३१३२१९
गौ १.	१११२
” २.	१११९
” २.	३१३४१
” १.	३१४५२
” २.	३१४५२
” १. २.	८१५३७
गोकण्टक १.	३१३१४१
गोकरीषेन्धन ३.	३१६९७
गोकर्ण १.	३१४१५
” १.	५११८०
गोकर्णी २.	३१३११४
गोकुल ३.	३१४६१
गोकृच्छ्र ३.	३१६१३९

[ गोनस ]

गोक्षुर १.	३१३१४१
गोगण १.	११११३
गोग्रन्थि १.	३१४६०
गोगन्धन १.	१२१५४
गोचर १.	५३२२
गोजिह्वा २.	३१३११६
” २.	३१८६०
गोडुम्या १.	३१३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४१३१३०
” २.	५११५६
” २.	५११६३
गोतम ३.	३१७१७४
गोत्र १.	३२१११
” ३. २.	६१५२८
गोत्रभिद् १.	१२३३
गोत्रा २.	५१११३
” २.	६१५२८
गोदर्भ ३.	३१३२०१
(गोनर्द)	
गोदा २.	४२२२८
गोदारण ३.	३१८२७
” ३.	३१८२९
गोदावरी २.	४२२२८
गोदुहू १.	१३३१२
” १.	३१९२८
गोध १.	३१५१
” २. ३.	३१७१५५
गोधन ३.	३१४६१
गोधा १.	३१५१
” २.	३१७१५५
” २.	४१३२६
गोधामाली २.	४१११८४
गोधासन ३.	३१६२२०
गोधि २.	४१४९६
गोधूम १.	३१८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४३६८
गोनर्द १.	२३३३३
गोनर्दीय १.	३१६१५७
गोनस १.	४१११३
” १.	४१११४

[ गोनस ]

गोनास १.	४१११४
गोनिषदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३१७२२
” १.	३१९२८
गोपघोष्ठा २.	३३३८८
गोपति १.	३१४५३
” १.	७१२२४
गोपभद्रा २.	३३३५७
गोपा २.	३३३३३९
गोपानसी २.	४३३३९
गोपायित १. २. ३.	५१४१००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३१६५६
गोपुच्छ १.	४३३१४१
गोपुर ३.	३३३२०१
” ३.	४३३१५
गोप्य १.	३१९३
” १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३३३६२
गोमतल्लिका २.	३१४४६
गोमती २.	४२२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
” १. ३.	७१५३६
गोरक्षजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
” १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३१६६२
गोर्गल १.	३३३२३३
(होर्गल)	
गोर्द ३.	४१४११२
गोल १.	३२११५
” ३.	४३३८२
गोलक १.	३१५६०
” १.	३१५६२
” १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

” १.	३१५६३
” १.	७१२२३
गोलका २.	७२१७
गोलत्तिका २.	२३३२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३२११७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३१६२०७
गोलोमी २.	३३३१९७
” २.	३३३२३३
गोवन्दिनी २.	३३३६६
गोवाहिन् १.	३१३३३
गोविन्द १.	११११५
” १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२१४४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३१६१४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४३३२२
गोशीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ठ १.	३१९३१
गोष्ठवातिङ्गन १.	३३३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५१४२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद् १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसन्ध ३.	४३३११३
गोस्तन १.	४३३१४१
गोस्तनी २.	३३३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	३१४५९
” ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३३३३०
गौतम १.	११३३५
” १.	३१६१५६
” ३.	४१४१०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४१३२६
गौधेय १.	४१३२७

[ ग्रहराज ]

गौधेर १.	४१३२६
गौर १.	३३३९४
” ३.	३३३२३२
” ३.	५३३१०
” ३.	५३३२०
” १. २. ३.	६१४५
गौरव ३.	३१८११६
” ३.	५३३२०
गौरशाक १.	३३३४४
गौरसर्ज १.	३३३३९
गौरसर्षप १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४१३२३
गौरावस्कन्दिन् १.	१३३१७
गौरी २.	१३३४६
” २.	३३३१२१
” २.	३३३२११
” २.	८१६३
गौरैय १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१४११०
ग्रन्थ १.	६१३२१
ग्रन्थन ३.	५३३३९
ग्रन्थि १.	३३३११
” १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८१९१
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८९२
ग्रन्थिल १.	३३३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१४१०८
ग्रह १.	१३३३८
” १.	२१३३०
” १.	२११५०
” १.	३१६६३
” १.	३१९५७
” १.	६१३२०
ग्रहकल्लोल १.	२१३३६
ग्रहण ३.	७३३१४
ग्रहणी २.	४१४२९
ग्रहभोजन १.	३१७९१
ग्रहराज १.	८१३२१

ग्रहि ]

ग्रहि १.	८१११०
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८८९
" १. २. ३.	५४३८
ग्राम १.	३११११०
" १.	४३२
ग्रामणी १. २. ३.	५४६६
" १. २. ३.	७५३६
ग्रामणीकुल ३.	३१२०
ग्रामतक्ष १.	३९३३
ग्रामता २.	५११९
ग्रामधान्य ३.	४३१३
ग्रामप्रैष्य १.	३५६२
ग्रामसीमा २.	४३११
ग्रामसूकर १.	३४४७
ग्रामार्थ १.	४३१५
ग्रामीण १. २. ३.	४३१३
ग्रामीणा २.	३३११०
ग्रामेयक १. २. ३.	४३१२
ग्राम्य १.	२३३१
" १. २. ३.	४३१३
ग्राम्यधर्म १.	४३१७०
ग्राम्या २.	३३१६०
ग्रावन् १.	३६१०२
" १.	६११९
" १.	८६१४
ग्रास १.	३६१५
" १.	४३१०१
ग्रासग्रह ३.	३६१५०
ग्राह १.	४११५२
" १.	६११९
ग्राहिन् १.	३३३२
ग्रीषा २.	४४८३
ग्रीष्म १.	२११८८
ग्रीष्ममुन्दर १.	३३१५७
ग्रीषेयक ३.	४३१३७
ग्रीष्मिका २.	३३१८६
ग्लवथु १.	४४१२२
ग्लस्त १. २. ३.	५४१०८
ग्लह १.	३१६०
ग्लान १. २. ३.	४४१३५
ग्लानि २.	४४१३२

वैजयन्तीकोषः

ग्लास्नु १. २. ३.	४४१४५
ग्लौ १.	२११२५
घ	
घङ्गोर १.	३६१६९
घट १.	४३१५८
" १.	५११५५
घटना २.	५२३४
घटा २.	३७७०
" २.	३८१४
" २.	५२३४
घटिक १. ३.	५११६०
घटिका २.	२११५४
" २.	७२१८
घटिकालवण ३.	३८१२४
घटी २.	४३१५९
घटीयन्त्र ३.	४२२१
घट्ट १.	४२२०
घण्टा २.	३३१५८
" २.	४४८०
घण्टाताड १.	४३३०
घण्टापथ १.	४३१६
घण्टारवा २.	३३१९८
घण्टाला २.	४२१५८
घण्टास्वन ३.	३२२९
घन १.	२२११
" ३.	३२३२
" १.	३६१५
" १.	३६१०२
" १.	३७१७१
" ३.	३९११५
" ३.	३९११६
" ३.	३९१२३
" ३.	४४१८६
" १.	५३१५५
" १. २. ३.	५४१२६
" १. २. ३.	६५३०
घनगोलक १. ३.	३२२३
घनधातु १.	४४१०४
घनपद ३.	४२२
घनरस १.	४२३
घनवासक १.	३३१६९

[ घृणा

घनश्रेणी २.	३१११
घनसागर १.	३८१०५
घनाघन १.	८११२२
घनागम १.	२११८९
घनात्यय १.	२११८९
घनामला २.	४३१७८
घनोपल १.	२२१७
घरिन् १.	३८१३५
घर्घर १.	३५११८
" १.	३५३०
" ३.	३६१९४
" १. ३.	४३१५०
घर्घरक १.	२३२२
घर्घरिका २.	३९१३१
" २.	८२१५
घर्घरी २.	३९१३१
घर्म १.	३९१८१
" १.	८११५७
घस्मर १. २. ३.	५४१५०
घस्र १.	२११५५
घाटा २.	४४१८५
घाण्टिक १.	३५३७
" १.	३७३०
घात १.	३७२११
घातुक १. २. ३.	५४१४२
घारि २.	२११५७
घास १.	३४१७४
घासहार १.	३५६३
घासि १.	१२१४
घासिक १.	३७११७
घिमिण १.	३५२१
घुटिक १.	३७८६
" १.	४४१५७
घुण १.	४१३६
" १.	५३१४९
घुणाभीष्टा २.	३३१९८
घुल्लुङ्ग १.	३८१५९
घुसृण ३.	३८११६
घूर्णन ३.	५२११०
घूर्णि २.	५२११०
घृणा २.	३६१९२

घृणा ]

घृणा २.	३६१९९
( मृणा )	
" २.	६२१२२
घृणि १.	२११५५
" १.	६१२२
" १.	८१२५
घृत् ३.	३८१३८
" ३.	६२३६
" १.	८१२८
घृतपूर १.	४३१७४
घृतभुज् १. २. ३.	
" ३.	३६१३५
घृतलेखनी २.	३६१०१
घृताञ्जन ३.	३६१९२
घृताशिन् १. २. ३.	
" ३.	३६१३५
घृतिन् १.	३६१३५
( वृतिन् )	
घृषि १.	३९१९
घृष्टि १.	२१११६
" १.	३४३६
" १.	८१२५
घृष्व १.	३९१९
घोटक १.	३७९१
घोण १.	३४१५४
घोणस १.	४११४४
घोणा २.	२३१४६
" २.	४४१९१
" २.	६२१२
घोणिन् १.	३४१५
घोण्टा २.	३३२१७
घोर १.	३४३८
" ३.	३८११७
" १. २. ३.	३९१७९
घोरवाशिन ३.	२४१४
घोरित ३.	२४१५
घोल १.	३५२१
" ३.	३८१४८
" १.	३८१४९
" ३.	३८१५०
" १.	४३१५९

शब्दानुक्रमणिका

घोष १.	२४१२
" १.	३३१५८
" १.	३९१३२
घोषवती २.	३९११६
घोषित १. २. ३.	२४१२२
घोष १.	४१२५
घ्राण ३.	४४१९१
" १. २. ३.	६५२९
च	
च ४.	८७४
" ४.	८७११
चकित १. २. ३.	५४१८
चकीर १.	२३३५
चक्र ३.	३३२१८
चक्रण ३.	३३२१८
चक्र १.	२३१९
" ३.	३७५५
" ३.	३७१३४
" ३.	४२३०
" ३.	४४१२५
" ३.	६३३७
चक्रकारक ३.	३८१९९
चक्रचर १.	३६१४२
चक्रधारण ३.	३७१३१
चक्रपक्ष १.	२३१५
चक्रपाणि १.	११११०
चक्रपाद १.	८१२२
चक्रप्रान्त १.	३७१३५
चक्रभृत् १.	८१५०
चक्रमर्दन १.	३३१५८
चक्रलक्षणा २.	३३१३२
चक्रवर्तिन् १.	३७२
चक्रवर्तिनी २.	३८१८९
चक्रवाक १.	२३१९
चक्रवाल ३.	२११६
" ३.	३२३
" ३.	५१३
चक्रवृत्ति २.	४८६
चक्रसंज्ञ ३.	३२१५
चक्राङ्का २.	३३१४३
चक्राङ्का २.	३८१८६

[ चण्डातक

चक्रावर्त १.	५२११०
चक्राह्वयाह्वय १.	२३१९
चक्रिन् १.	१११२२
" १.	३६४०
" १.	४११६
" १.	६१२३
चक्रीवत् १.	३४६५
चक्रोष्ठी २.	३३२१०
चक्रस् १.	२१३३
चक्रुष्य १.	३८३७
" १.	४३७०
" १. २. ३.	५४७०
" १. २. ३.	५४११७
चक्रुष्या २.	३२४४
" २.	३३१२४
चक्रुस् ३.	४४९४
चक्रूर १.	७१२५
चक्रुटक १.	३३१५२
चक्रुरीक १.	२३३३
चक्रल १.	२३२४
" १. २. ३.	५४७८
चक्रल २.	२२३
चक्रुत् २.	२३१५०
" १.	३३३५
चटक १.	२३१४
( पण्डक )	
" १.	२३१८
चटिका २.	३८१९१
चटिकाशिर १	३८१९१
चट्ट १.	६१२३
चट्टल १. २. ३.	५४७९
चढक १.	२२३
चण १.	३८३३
चण्ड १.	५३१९
" १. २. ३.	५४३२
चण्डकोलाहला २.	
चण्डमुण्डा २.	१११६३
चण्डांशु १.	२११५
चण्डात १.	३३१९२
चण्डातक ३.	४३१२२

चण्डाल ]

वैजयन्तीकोषः

[ चरणाग्रक

चरम ]

शब्दानुक्रमणिका

[ चिञ्चा

चण्डाल १.	३१५२२
" १.	३१५८३
" १.	३१५१०७
" १.	३१५५४
चण्डालवहलकी २.	३१५१२७
चण्डिल १.	३१५२६
चण्डी २.	१११६२
चतुर ३.	३१५९२
" ३.	४३२११
" १. २. ३.	५४४५४
" ४.	५४४१३७
" १. २. ३.	७४४११
चतुरङ्गक ३.	३१७५९
चतुरङ्गल १. २. ३.	३१५५२
" १.	३३३४८
चतुरा २.	३४४१९
चतुरूषण ३.	३१८८१
चतुर्गति १.	४११५०
चतुर्थ १. २. ३.	५११२१
चतुर्थक १. २. ३.	५११५१
चतुर्थकालिक १. २. ३.	३१६१२६
चतुर्द्व १.	१२११२
चतुर्दशी २.	२१७७०
" २.	३१५११७
चतुर्धा ४.	८१८२०
चतुर्भद्र १.	३१६२३६
चतुर्मुख १.	१११७
चतुर्वर्ग १.	३१६२३५
चतुर्विधाज्ञ ३.	४३१९१
चतुर्हस्त १.	३१५५७
चतुश्शाख ३.	४४४५२
चतुश्शाल ३.	४३२२६
चतुष्क ३.	५११५५
चतुष्की २.	४३१९२४
चतुष्कृतवः(स्) ४.	८१८६

चतुष्पञ्च १. २. ३.	५११२६
चतुष्पथ १.	३१५५१
चतुष्पाद् १.	१२१४३
" १.	३१५५२
चतुष्प्रस्थ १.	५११५४
चतुष्टोम १.	३१६१८६
चतुस्स्नेह ३.	४३१९९
चत्वर १.	७५३२८
चत्वरी २.	३१६१६६
" २.	७२१८
चत्वारिंशत् २.	५११२६
चन ४.	८१८१२
चनका २.	३१४२३
चन्दन १. ३.	३१८११२
" ३.	३१८११३
चन्दनद्रवभाजन ३.	४३१८९
चन्द्र १.	२११२४
" ३.	३२११९
" १.	३३१९५
" १.	३१८१०५
" ३.	४२१४१
चन्द्रकान्त १.	३२१३७
चन्द्रकिन् १.	२३३३८
" १.	३१४३
चन्द्रगोलिका २.	२११२८
चन्द्रपाद १.	२११२८
चन्द्रवाला २.	३१८८७
चन्द्रभासा २.	४२१२७
चन्द्रभीरु ३.	३२१२३
चन्द्रमणि १.	३२१३७
चन्द्रमसू १.	२११२४
चन्द्रमानृ २.	२११७२
चन्द्रमौलि १.	१११३९
चन्द्रव्रत ३.	३१६१३६
चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	३१६१२७
चन्द्रशाला २.	४३३३४
चन्द्रहास १.	१२१४३
" १.	३१७१६०

चन्द्रा २ व.	२११२०
चन्द्रातप १.	४३१९२३
चन्द्रिक १.	५३१५१
चन्द्रिका २.	२११२८
" २.	४२१२७
चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५
चन्द्रिमा २.	२११२८
चन्द्रोदय १.	४३१९२३
चप १.	३३३२१५
चपल १.	३१४३३
" १.	३१८११०
" १. २. ३.	५४४७८
" १. २. ३.	५४४९२५
" १. २. ३.	७५३९९
चपला २.	२२२३
चपेट १.	४४४७६
चलुक ३.	४४४८७
चमक ३.	३३३२०२
चमर १.	३१४२९
चमरिक १.	३३३४७
चमरी २.	३१४२९
चमस १. ३.	३१६१०१
चमू २.	३१६१०२
" २.	३१७५५
" २.	३१७५८
चमूपाणि १.	३१७५९
चमूरु १.	३१४२३
" १.	३१४२४
चम्पक १.	३३३८१
चम्पकद्वीप ३.	३१११७
चम्पा २.	२२२४
चम्पुक १.	२३३४
चम्पू २.	२१४४२
चम्पोपलक्षण १ व.	३१३३१
चय १.	५१११
चर १. २. ३.	५४६१
चरण ३.	३१६११५
" १. ३.	४४५६
" १. ३.	७५३३७
चरणाग्रक ३.	४४५७

चरम १. २. ३.	५४४७७
" ४.	५४४१४०
चराचर १. २. ३.	५४६२
चराशा २.	२११४
चरि १.	३१४७२
चरित्र ३.	३१६११५
चरी २.	४४४८
चरु १.	६११२२
चक्ति २.	४३१९४७
चर्च १.	१२१६१
चर्चरी २.	२४२७
चर्चा २.	१११६३
" २.	४३१९४७
" २.	४४४१०
" २.	६२१९२
चर्चिक्य ३.	४३१९४७
चर्पट १.	४४४७७
चर्भटि २.	२४२७
चर्मकार १.	३१५४०
" १.	३१५४०
" १.	३१५४२
" १.	३१५४३
चर्मकोश ३.	४३३६२
चर्मन् ३.	३१६२१
" ३.	३१७१९७
चर्मपर्णी २.	३३१९४४
चर्मप्रसेदिनी २.	३१५४३
चर्मप्रसेविका २.	३१५१७
चर्ममय ३.	३१७१९७
चर्मिक १.	३३३४५
चर्मिन् १.	१११५२
" १.	३३३४५
" १. २. ३.	३१७१४४
चर्या २.	३१६११६
चवर्ण ३.	४३१५१
चवर्णा २.	२३३४५
चल १.	१२१४९
" ३.	३१७२०७
" १.	३१८११०
" १. २. ३.	५४६८

चल १. २. ३.	५४४७८
चलच्चञ्च १.	२३३३५
चलदल १.	३३३२७
चलन ३.	७३१५५
चला २.	२२२६
" २.	४४४१०
चलाचल १. २. ३.	५४४७८
चलित ३.	३१७२०१
" १. २. ३.	५४४९५
चविक ३.	३१८८१
चव्य ३.	३१८८१
" ३.	३१८८१
चषक १. ३.	३१५५३
चषाल १. ३.	३१६१०५
चाक्रगिर ३.	३१११५
चाक्रिक १.	३१५२३
" १.	३१५७८
" १.	३१५२७
" १.	७११२५
चाङ्गेरी २.	३३३१६३
चाट १.	५३३१४
चाटस १.	५३३२९
चाट्ट १.	६११२३
चाट्टकार १.	४३३१४२
चाणक्यमूलक ३.	३३३१५५
चाण्डाल १.	३१५५४
चाण्डालिका २.	३१५१२७
चातक १.	२३३३२
चातिक १.	३१७३०
चातुर १. २. ३.	७५३३८
चातुरीक १. २. ३.	४३३१०९
चातुर्जात ३.	४३३१५१
चातुर्मास्य १.	३१६१४५
चात्वाल १. ३.	३१६१११
चान्द्रमसायनि १.	२११३२
चान्द्रायण ३.	३१६१३६
चान्द्रायणरत १. २. ३.	३१६१२७

चान्द्री २.	२११२८
" २.	२११७२
चाप १. ३.	३१७१७२
चामर ३.	३३३२०२
" ३.	४३३१५९
चामरपुष्प १.	८११५१
चामीकर ३.	३२११८
चामुण्डा २.	१११६३
चाम्पेय १.	३३३८१
" १.	३३३८२
चार १.	३१७२६
" ३.	४३३३६
चारटी २.	३१८८९
चारण १.	३१५६४
चारणी २.	३३३१३४
चारित्र ३.	३१६११५
चारी २.	३१६६७
चारु १.	२११३३
" १. २. ३.	५४४३५
" १. २. ३.	६४४६
चारुक १.	३४३३०
चारुनाल ३.	४२१४०
चार्वी २.	३१६११५
चाल १.	३१५६९
चालन ३. २.	८१५३२
चालनी २.	४३३६५
चाष १.	२३३२९
चिकित्सक १. २. ३.	४४४१४३
चिकित्सा २.	४४४३३९
चिकिर १.	७११२५
चिकिल १.	३१८२६
( चिकिच्छल )	
चिकुर १. २. ३.	५४४७९
" १. २. ३.	७५३३९
चिकण ३.	३३३२१८
" १.	५३३४
चिकस १.	४३३६८
चिकण ३.	३१८५५
चिक्रोड १.	४११२७
चिञ्चा २.	३३३८१

चिञ्चलिक ]

चिञ्चलिक १.	११२५१
चिञ्चोटिका २.	४२१४८
चित् २.	३१६१६४
" ४.	८८११२
चितकावेर ३.	३१८११६
चिता २.	३१७२१६
चिति २.	३१६१६४
" २.	३१७२१६
चिक्कृत ३.	२४१९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्ताभोग १.	३१६१७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१९१७८
" १.	४११४३
" ३.	४११४८
" ३.	६१५३०
चित्रक १.	३१८१८२
" १.	४१११५
" १.	५१३२३
चित्रकूट १.	३२१२
चित्रकृत १.	३१३४६
" १.	३१९१२
चित्रगुप्त १.	११२३६
चित्रतण्डुला २.	३१८१७७
चित्रदण्ड १.	३१३२०८
चित्रपक्ष १.	२१३२०
चित्रपट १.	४१३११९
चित्रपत्रक १.	२१३३७
चित्रपर्णिका २.	३१३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२१३३७
चित्रपुङ्ख १.	३१७१८०
चित्रफलान् ४११४३	
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	१२१५
चित्रल १.	३१३१६८
चित्रला २.	३१३२९
चित्रशाला २.	४१३२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
" २.	३१३११३
" २.	३१३१३८
" २.	३१३१७३
" २.	४११११७
" २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४४
चित्राङ्घ्रि २.	३१३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३१६३५
चित्रोपपत्ता २.	२११६०
चिद्रिट १.	३१३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५१४२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४१३६८
" १. २. ३.	५१४८३
चिबुक ३.	४१४८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५१४७२
चिरजीविन् १.	१११७
" १.	२१३१५
चिरण्टी २.	४१४९
चिरन्तन १. २. ३.	५१४८७
चिरम् ४.	८८११
चिरमेहिन् १.	३१४६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८८११
चिरसूता २.	३१४४८
चिराल् ४.	८८११
चिरि १.	१२११८
चिरिबिल्वक १.	३१३६२
चिरेण ४.	८८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८२११२
चिल्ल १.	६१४५
चिल्लाक १.	२३३४

[ चूचुक

चिह्निक १.	२१३२८
चिह्नव १.	३१३५२
चिह्न १.	५१३५७
चिह्न ३.	२१३२९
" ३.	६३३८
चीन १ ब.	३११२३
" ३.	३२२३३
" १.	३३१५०
" १.	३४२२१
" १.	३८२३७
" १.	३८५९
चीनक १.	३४१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३२२३०
चीनसी २.	३४२२१
चीना २.	३१६१५०
चीर ३.	४३१३०
चीरिणी २.	४१४८
चीरी २.	२३३४८
चीवर ३.	४३१२८
चुक्र ३.	३८१३२
" १.	३८१३३
चुक्रिका २.	३३१६३
चुचुन्दरी २.	४१३२
चुण्डिन् १.	४२१७
चुन्दी २.	४४२५
चुप १.	५३३७
चुबुक ३.	४४८७
चुम्बक १.	३२३८
चुम्बन ३.	४३१७१
चुम्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४४७८
चुलक १.	३३३
" १.	४४७८
चुलम्पा २.	३४३३
चुल्ल १.	६४५
चुल्लि २.	४३५४
चूचु १.	३१५५१
" १.	३१५९३
चूचुक १.	३१५७४
" १.	३१५८१

चूचुक ]

चूचुक ३.	४४६८
चूडक १.	३८४५
चूडा २.	४४१०२
" २.	८२११५
चूडाकरण ३.	३६४४
चूडामणि २.	३३१७७
" १. २.	४३१३६
चूत १.	३३२२५
चूतक १.	४२१७
चूर्ण ३.	४३१५७
चूर्णपूप ३.	४३७२
चूर्णि २.	४११५८
" २.	६२१२२
चूलि २.	६२१२३
चूलिक १.	२३१३३
" १.	३८३९
चूलिका २.	३६२२२
" २.	३७७३
चूषण ३.	४३१०३
चूषा २.	३७८४
चूष्य ३.	४३९१
चेटक १.	३९१२
चेटा २.	४४२६
चेटिका २.	४४२६
चेत् ४.	८८११४
चेतकी २.	३३१७८
चेतना २.	३६१६३
चेतसू ३.	३६१७२
चेदि १ ब.	३१३३६
चेन्नाल १.	३६१६९
चेल ३.	४३११७
" १. २. ३.	५४७५
" १. २. ३.	६१५३१
चेवलाण १.	३३१६८
चेत्य ३.	३६९०
" ३.	४३२८
" ३.	६३३८
चेत्यवृत्त १.	८६२०
चेन्न १.	२११८३
चेन्नरथ ३.	१२१५९
चेन्निक १.	२११८३

शब्दानुक्रमिका

चैत्री २.	२११७५
चैत्र १ ब.	३११३६
चोक्ष १. २. ३.	६१५३१
चोच ३.	३३११४
" ३.	३८१०४
चोचु १.	४४१००
चोट १.	४४१०३
चोटलिङ्गक १.	३७१८५
चोदनिका २.	३८१४७
चोदनी २.	३३१६७
चोद्य १. २. ३.	६१४६
चोर १.	३१५५५
" १. ३.	४३७६
चोरपुष्पी २.	३३११६
चोरिक १.	३७२०
चोल १ ब.	२३३३
" १.	३३३३
" १. ३.	४३३७
" १.	४३१२८
चोलक १. ३.	३३१३३
चोलान्त १.	४३३७
चोली २.	४३१२७
चौह १. २. ३.	५४१३५
चौण्ड १.	४२१७
चौरिक १.	३१५५९
चौरिका ३.	३१५५८
चौर्य २.	३१५५८
चौल २.	३६४४
च्यवन १.	३६१५७
च्युति २.	४४६०
" २.	४४६१
च्युप १.	६११२३

छत्रा २.	३३१२४
" २.	३३२३४
" २.	३८४९
छत्राक १.	३३१५३
छत्राकी २.	३८१२४
छत्रिन् १.	३७२८
छद १.	२११६२
" १.	२३१४९
" १.	३३११६
छदन ३.	२३१४९
" ३.	३३११६
छदावलि ३.	३७१८५
छदिसू ३.	३६९१
" २. ३.	४३३७
" २.	४४१०३
छदिस्तुण ३.	३८६७
छदमन् ३.	३६१९५
" ३.	६३३८
छदमप्रधारवत् १.	३७२८
छन्द १.	६१२४
छन्दना २.	३६१९५
छन्दसू ३.	३६२७
" ३.	३६२८
" ३.	६३३९
छन्दोभेद १.	३६३४
छन्न १. २. ३.	५४१२०
छन्नपथ ३.	३७५४
छन्ना २.	३३१३३
( छिन्ना )	
छर्दन १.	३३५०
" १.	३३७५
" १.	४४१३५
छर्दनी २.	३३१७१
छर्दि २.	६२१३
छल ३.	३६१९५
छलवाच् २.	२४१९
छल्ली २.	३३१३
छवि २.	४३१५०
छाग १.	३३३५
( भाग )	
" १.	३४६२

द्वारागण ]

द्वारागण १.	२११२०
द्वारागणक १	२१५२७
द्वारागण १. २. ३.	५४११०२
द्वारागण १.	३१६२५
" १.	३१७२७
" ३.	३१८१३६
द्वारादिषेय १. २. ३.	३१८१३६
द्वाराद्वन्दस १.	३१६८१
द्वाराया २.	२११२३
" २.	६१२१३
द्वारायाकर १. २. ३.	३१७१४५
द्वारायापुत्र १.	२११३५
द्वारायुक्त १. २. ३.	५४११०२
द्वारायुद्ध ३.	३१८१३६
" ३.	४११२
" ३.	५४११४४
" ३.	६१३१९
द्वारायुद्धित १. २. ३.	५४११११
द्वारायुद्धित ३.	३१८१३६
" १. २. ३.	५४११०२
द्वारायुद्धितपुच्छक १. २. ३.	३१४५९
द्वारायुद्धितरुहा २.	३१३१३१
द्वारायुद्धितक १.	२१३१५
" १. २. ३.	५४१२०
" १. २. ३.	६१५३२
द्वारायुद्धितिका २.	३१६२२९
( चोटिका )	
ज	
जचा २.	४१३१०४
जचित १. २. ३.	५४११०८
जगत् १.	११२१४८
" १. २. ३.	५४१६१
जगती २.	७१२१९
जगत्तन्त्र १.	२११९४
जगत्प्राण १.	११२१४७
जगल १.	३१९१५१

वैजयन्तीकोषः

जगल १	५४१२७
जग्ध १. २. ३.	५४११०७
जगिध २.	४३११०२
जघन १.	४४१६४
" ३.	७३११५
जघनपिण्डिका २.	३१७७८
जघनभाग १.	३१७७६
जघनेफल १.	३३१७४
जघनेफला २.	३३११११
जघन्य ३.	३१८११५
" १. २. ३.	५४१७६
" १. २. ३.	५४१७७
" १. २. ३.	७४१११
जघन्यज १.	३१९११
" १. २. ३.	५४१४४
जङ्गम १. २. ३.	५४१६१
जङ्गित १.	३१५३३
जङ्गा २.	४४१५८
जङ्गात्राण ३.	३१७१५४
जङ्गापद १.	३११५२
जङ्गल १. २. ३.	३१७१५०
जटा २.	३३११२
" २.	३३१२०२
" २.	३१८१००
" २.	४४११०१
" २.	५४१३३
जटाश्लोक १.	१११४४
जटाश्री १.	१११४४
जटायु १.	३३१५४
जटिन् १.	३३१२८
जटिल ३.	३३१२०२
" १. २. ३.	५४१९
जटिला २.	३३११९७
" २.	३३११००
जटी २.	३३१२०३
" २.	५४१५८
जटुल १.	४४१९७
जटुर ३.	४४१६७
जटरोत्सव १.	३३१६२
जड १.	५३१६

[ जपा

जड १. २. ३.	५४११४
" १. २. ३.	६४१६
जडा २.	३३१४९
जटु ३.	४३११५३
जतुक ३.	३१८१३१
जतुका २.	३३१४४
जतुकाहला २.	३१९१२६
जतुकृत् २.	३१८१८९
जतुका २.	३१८१८९
जत्रु ३.	४४१६९
जन १.	३३१२०२
जनक १.	४४१२९
जनङ्गम १.	३१९५४
जनता २.	५४१९
जनन ३.	४४११८
" ३.	४४१४९
जननी २.	४४१२६
" २.	७२१८
जनपद १.	३११२१
" १.	८११२३
जनयितृ १.	४४१२९
जनयित्री २.	४४१२६
जनवाद १.	२४१३४
जनश्रुति २.	२४१३९
जनस् १. ४.	३३१२०७
जनार्दन १.	११११०
जनाश्रय १.	४३१२८
जनि २.	३१११८
" २.	६२११४
जनिमन् ३.	७११२७
जनी २.	३३११२८
" २.	४४१३६
जनुस् ३.	४४११८
जन्तु १.	४४११
जन्तुधर १.	३४१३४
जन्तुफला २.	३१८६१
जन्मन् ३.	४४११८
जन्य १. २. ३.	६१५३२
जन्या २.	३१८८९
जन्त्यु १.	४४११
जपा २.	३३११९५

जपापुष्प ]

जपापुष्प ३.	३१८१६७
जम्पति १ द्वि.	४४१४८
जम्बाल १.	३१८२६
" १.	७११२६
जम्बीर १.	३३३३५
" १.	३३३१२०
जम्बु ३.	३३३२२
जम्बुक १.	७११२६
जम्बुल १.	३३३२३
जम्बू २.	३३३२२
" २.	३३३१२
जम्बूगर्त १.	३१७१६१
जम्बूट १.	३३३१४
जम्बूद्वीप १.	३१११०
जम्बूलमालिका २.	३३३५०
जम्भ १.	४४१८९
जम्भक १.	३३३३५
" १.	३५१८५
जम्भरिपु १.	११२१४
जम्भल १.	३३३३५
जम्भीर १.	३३३३५
जय १.	११२१६
" १.	११२१८
" १.	३३३१८५
" १.	३३३२०९
" १.	३१८३६
" १.	८१९१२
जयदत्त १.	११२१८
जयन्त १.	११२१८
" १.	२११२६
जयन्ती २.	११२१९
" २.	२११७८
" २.	३३३१९६
जयन्तीपुर ३.	४३३१८
जयवाहिनी ३.	११२११
जया २.	३३३१८९
" २.	३३३१९७
" २.	३१८८३
जयिन् १. २. ३.	३३३१४७
जयोदाहरण ३.	२४३३६
( जनोदाहरण )	

शब्दानुक्रमणिका

जय्य १. २. ३.	३१७१४८
जरठ १. २. ३.	७४११२
जरत् १. २. ३.	५४१३
जरत्कार १.	३३३१५६
जरद्गाव १.	३३३५५
जरन्त १.	३३३९
जरा २.	४४१५४
जराभीरु १.	१११२९
जरायु. १.	४४१९८
" १. ३.	७५३९
जरायुज १. २. ३.	४४१२
जरुदद १.	३३३९७
जर्जर १.	३३३२९
" १.	५३३४१
जर्ण १.	२११२७
" १.	३३३५
जर्तिल १.	३३३३९
जल ३.	४३३२
" १. २. ३.	५४१४४
जलक १.	३३३३३
जलकण्टक १.	४३३४८
जलकरिन् १.	४३३६०
जलकाक १.	२३३११
जलकोलि २.	३३३८९
जलचर १.	२३३४१
जलजन्तु १.	४३३४०
जलजम्बुका २.	३३३१०३
जलजा २.	३३३५८
जलतस्कर १.	२१११२
जलद १.	२३३१
जलदा २.	२३३४
जलद्रोणि २.	४३३६१
जलनर १.	४३३६०
जलनिधि १.	४३३११
जलनीली २.	४३३४९
जलपालिका २.	२३३४
जलपिप्पिक १.	४३३४१
जलप्रिय १.	३३३५
जलवृंहण ३.	४३३३०
जलभूषण १.	१३३४६
जलमार्जसि १.	४३३५४

[ जागर

जलमुच १.	२३३१
जलमुस्त ३.	३३३२०१
जलरङ्ग १.	२३३११
जलराशि १.	४३३१०
जललम्बिका २.	३३३१९८
जलवालक १.	३३३३
जलव्याल १.	४३३१९
जलशीनक १.	५४३८
जलशूर १.	४३३४९
जलसम्भवा २.	३३३४३
जलाचार १. २. ३.	३३३१३१
जलात्मन् १.	३३३८
जलाधार १.	४३३५
जलालोका २.	४३३५८
जलाशय १.	३३३३३१
" १.	४३३५
जलाश्व १.	४३३६०
जलाहार १. २. ३.	३३३१३५
जलक १. २. ३.	८३३२६
जलका २.	४३३५८
जलेशय १.	८३३५८
जलोच्छ्वास १.	४३३३१
जलोद्गम १.	४३३८
जलोलक १.	५३३४१
जलौकस् १ ब.	४३३५८
जलपाक १. २. ३.	५४३४६
जल १.	३३३५४
जव १.	१३३५५
" १. २. ३.	३३३१५०
" १.	५३३३१
जवन १. २. ३.	३३३१५०
" ३.	५३३३१
जविन् १.	३३३१६
" १. २. ३.	३३३१५०
जसु १.	५३३१
जसुरि १.	७३३२५
जागर १. २. ३.	३३३१९६

जागर ]

जागर १.	३७७१५३
जागरण ३.	३६१९६
जागरित ३.	३६१९६
जागरित् १. २. ३.	५४४४
जागरुक १. २. ३.	५४४४
जागर्या २.	३६१९६
जागृवि १.	१२११८
जाघनी २.	४४५५८
जाङ्गल १. २. ३.	२४२०
" १ ब.	३१४४०
" १. २. ३.	३१४४५
" ३.	३८१०७
जाङ्गलिक १.	४१२५
जाटलि २.	८१२६
जाड्य १.	३८१४४
जात ३.	५११३
जातरूप ३.	३२११८
जातवेदस् १.	१२१४४
जातारणि १.	३६१७२
जाति २.	३३३२३
" २	३३३१८२
" २	३५११११
" २	६२११४
जातिकोश ३.	३८१०६
जानु ४.	८१८७
जातोक्ष १.	३४४५४
जात्य १. २. ३.	५४४६१
" १. २. ३.	५४४६४
" १.	६४४७
जानकीकान्त १.	१११२०
जानु १. २.	४४४५९
जानुक १. २. ३.	३६११३३
जानुदहन १. २. ३.	४४४८२
जानुद्वयस १. २. ३.	४४४८२
जानुनिकुञ्चन ३.	३६१२२२

वैजयन्तीकोषः

जानुभङ्गिनी २.	३७७५२
जानुमात्र १. २. ३.	४४४८२
जानुमात्री २.	३७७५२
जावाल १. ३.	३१२९
जामदग्न्य १.	१११२०
जामात् १.	४४३८
" १.	७१२६
जामि २.	६२१०
जामेय १.	४४४४१
जाम्बव ३.	३३३२२
जाम्बूनद ३.	३२२२०
जाया २.	४४३४
जायाजीव १.	३१६२
जायापति १ द्वि.	४४४४८
जायु १.	४४४४४
जार ३.	४२४२
" १.	४४३८
जारण ३.	३८१२६
जारद्रव ३.	२१४४९
जारद्रवी २.	२१४४७
जारवायु १.	१२५४
जारी २.	११५९
" २.	३६४८
जाल ३.	३११३
" ३.	३३१९
" १.	३५३३
" ३.	३१४३
" ३.	६३१९
जालक ३.	३३१९
" १.	३८३९
" ३.	५१३
जालकिनी २.	३४६५
जालन १.	५३३९
जालन्धर १ ब.	३१२६
जालपाद १.	२३१२
जालपादक १.	२३३६
जालभूषण १.	३५३६
जालिक १.	३१३८
" १.	३१३४
" १. २. ३.	५४३३

[ जीर्णक

जालिका २.	३७७५३
जालिन् १.	३१४२
जालिनी २.	३८७७
" २.	४३२३
" २.	४४१०१
जाली २.	३३१५९
जाल्म १. २. ३.	६४६
जावक ३.	४३१५४
जाहक १.	३४७२
जाह्वी २.	४२२४
जिघत्सा २.	३६१८२
जिघत्सु १. २. ३.	५४३६
जिघांसु १.	३७४१
जिङ्गी २.	३३१२५
" २.	३३१६०
जित १. २. ३.	३७१४८
जितकाशिन् १. २. ३.	३७२१८
जितरण १. २. ३.	३७२१८
जित्तरण १. २. ३.	३७१४७
जिन १.	११३३
" १.	११३५
जिष्णु १.	१२४
" १. २. ३.	३७१४७
जिह्व १.	४१५
" १. २. ३.	६५३२
जिह्वा २.	१२२९
" २.	४४२०
" २.	६२१५
जिह्वापान १.	३४७०
जिह्वास्वाद १.	४३१०३
जीन १. २. ३.	५४३
जीमूत १.	७१२६
जीरक १.	३८८३
जीरण १.	३८८३
जीर्ण १. २. ३.	५४३
" १.	६५३४
जीर्णक ३.	३३२०५

जीर्णि ]

जीर्णि २.	४४५४
जील ३.	६३१०
जीव १.	३६१६१
" १. २. ३.	३७२०
" १.	३७२०
" १.	४४१
" १. २. ३.	६५३३
जीवक १. २. ३.	५४१६
" १. २. ३.	७५४०
जीवजीव १.	२३४०
जीवत् १. २. ३.	३७२०
जीवतोका २.	४४१९
जीवथ १.	४१५०
जीवधन ३.	३४६१
जीवन ३.	३८१
" ३.	४२२
" ३.	४३७५
जीवनी २.	१११६
" २.	३३१४३
जीवनीय ३.	३८१४६
" ३.	४२२
जीवनीया २.	३३११२
" २.	३३१४३
जीवन्ती २.	३३८४
" २.	३३१३२
" २.	३३१४०
" २.	३३१४३
जीवपति २.	४४१४
जीवबोधिनी २.	३३१४५
जीवलोक १.	३६२०६
जीववृत्ति २.	३८४
जीवशाक १.	३३१५०
जीवसू २.	४४१९
जीवा २.	३३१४३
" २.	३७१८८
जीवातु १.	३७२२१
जीवान्तक १.	३१३७
जीविका २.	३८१
जीवित ३.	३७२२०
जीवितकाल १.	३७२२१
जीवितागद १.	३७२२१

शब्दानुक्रमणिका

जीवितेश १. २. ३.	८१५८
जुगुप्सन ३.	३११७६
जुगुप्सा २.	२४३३
" २.	३६१९३
" २.	७२८
" २.	८१५४
जुहुराण १.	१२१९
जुहू २.	३६१००
जृति २.	५२३१
जूर्णा २.	३३२३०
जूर्णाह्वय १.	३८५७
जूर्णि २.	६१२४
जृम्भ १. २. ३.	८१३८
जृम्भण १. २. ३.	३१८८
जृम्भा २.	३१८८
" २.	८१३८
जृम्भिका २.	३१८८
जृम्भित १. २. ३.	७५४०
जृत् १. २. ३.	३७१४८
जेमन ३.	४३१०२
जेय १. २. ३.	३७१४८
जैत्र १. २. ३.	३७१२८
" १. २. ३.	३७१४८
जैत्री २.	३३१३३
जैन १. २. ३.	५४१६
जैवातृक १. २. ३.	८१५९
जोङ्क ३.	३७१०७
जोटिङ्ग १.	१११४५
जोड ३.	३३२१८
जोणाल १.	५३१९
जोनल १.	३८५६
जोन्नला २.	३८५७
जोषम् ४.	८७२०
ज १. २. ३.	८५३९
" १.	८१५४७
ज्ञपित १. २. ३.	५४११३
ज्ञप्त १. २. ३.	५४११३
ज्ञप्ति २.	३६१६४
" २.	३६१६४
ज्ञात १. २. ३.	५४१०१

[ ज्योतिष्मती

ज्ञाति २.	४४५०
ज्ञान ३.	१११४७
" ३.	३६१६४
ज्ञानिन् १.	३७५०
ज्या २.	३७१७८
" २.	८२१७
ज्यानि २.	४४५४
ज्यानिवारण ३.	३७१५५
ज्यायस् १. २. ३.	५४४
" १. २. ३.	६४७
ज्येष्ठ १.	२३३६
" ३.	३२२८
" ३.	३२३१
" ३.	३३२०२
" ३.	३८१४५
" १.	४४३१
" १. २. ३.	६४७
ज्येष्ठानी २.	२११४१
ज्येष्ठतात १.	४४३२
ज्येष्ठश्वश्रू २.	४४२८
ज्येष्ठा २.	१११४९
" २.	१२४२
" २.	१३४१
" २.	४१३०
" २.	४४२७
" २.	४४७४
" २.	६२१५
ज्येष्ठामूलीय १.	२११८४
ज्येष्ठाम्बु ३.	४३३७
ज्येष्ठ १.	२११८४
ज्येष्ठी २.	२११७५
ज्योक ४.	८८६
ज्योतिरात्रय ३.	३६८७
ज्योतिरिङ्गण १.	२३४७
ज्योतिश्शास्त्र ३.	२११५०
ज्योतिषामयन ३.	२११५०
" ३.	३६३३
ज्योतिषाम्पति १.	८१५३
ज्योतिष्मती २.	३११३९
" २.	३८६०

ज्योतिषोम १.	३१६०६	झिल्लिका २.	४११९६
ज्योतिष ३.	६३११०	झिल्ली २.	४३१७७
ज्योत्स्ना २.	२११२८	झीरिका २.	२३१४८
ज्योत्स्नी २.	३३११६०	ट	
ज्योतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७५१४१
ज्योतिषिक १.	३१७२५	टङ्क १.	३१८१३१
ज्योत्स्नी २.	२११५८	" १.	३१९२२
ज्वल १.	५३१७	" १.	६११२४
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०
ज्वाल १.	११२१९	टट्टर १.	२११११
ज्वाला २.	११२१९	टट्टरी २.	३१९१३५
झ		टर्क १ ब.	३११२७
झञ्झानिल १.	११२५२	टिट्टिभ १.	२३३३४
झटप्प १.	५२१९	टिट्टिभासन ३.	३१६१२५
झटा २.	३३३१७७	ड	
झटिति ४.	८१८१	डक्कन ३.	२१४८
झण्डाली २.	३३३१५९	डङ्क १.	३१४५३
झम्प १.	५२१९	डमर १.	३३१९९०
झम्पटि २.	४११९९	डमरु १.	३१९१३५
झर १.	३२१७	डयन ३.	२३१५०
झरसी २.	३३३१५७	डहु १.	३३३७५
झरा २.	३३३१५७	डिण्डिक १.	३१५१५
झरुका २.	३१८२५	डिण्डिम १.	३१९१३५
झर्झर १.	३१९१३५	डिण्डीर १.	४२११३
झर्झरक १.	२११९२	डिण्डीश १.	१११४५
झलका २.	११२२९	डिम १.	३१९१००
झल्लरी २.	४११९९	डिम्ब १.	२३१५०
" २.	७२१९	" १.	३३३१९०
झष १.	४११४१	" १.	४१११३
" १.	४११५१	" १.	६११२४
" १. २.	६५३३४	डिम्भ १. २. ३.	५१४२
झषा २.	३१८६१	" १. २. ३.	६१४७
झषापर १.	३५११४	डुण्डुभ १.	३१९१९
झाट १.	३३३१८९	डुण्डुर १.	४३३३२
झाण्ड १.	१११४६	डोम्ब १.	२५१४९
झिङ्गिल्ल १.	३१९१२४	ड	
झिणिका २.	४११२७	डक्का २.	२१९१३४
झिण्टी २.	३३३१९०	डक्कारी २.	३१९१२८
झिण्टीकान्त १.	१११४४	डङ्क ३.	२३३६९
झिल्लिका २.	२३३४८	डण्डुक १. २. ३.	५१४२३

डारिका २.	४११३३
डौण्डुक १. २. ३.	५१४२३
त	
तक्कोल ३.	३१८१०५
तक्र ३.	३१८१४९
तक्रज ३.	३१८१३६
तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४
तक्रवासन १.	३३३३६
तच्चक १.	७११२८
तच्चन् १.	३५३९९
" १.	३५३८६
" १.	३९३३४
" १	८१९१२
तच्चशिला २.	४३३९
तगर १.	३३३१९४
तङ्क १. ३.	३३३१८५
तट १.	३२३६
" १. २. ३.	४२३२२
" १. २. ३.	८१९३८
तटाक १. ३.	४२३६
तटित् २.	२२३४
तटित्पति १.	२२३२
तटित्त्वत् १.	२२३१
तटिनी २.	४२३३
तटी २.	८१९३८
तण्डुल १.	३१८१७
" १.	४३३६६
तण्डुला २.	३१८१७
तण्डुलीयक १.	३३३१५०
तत ३.	३१९११५
" १. २. ३.	५१४१०
तति २.	८१९५
तत्क्रिय १. २. ३.	५१४७३
तत्त्व ३.	३१९१२३
" ३	५२३१
तत्त्वधी २.	३३३१६५
तत्र ४.	३३३२१
तत्रभवत् १. २. ३.	८१९४६
तथा ४.	८१७२१
" ४.	८१८२०

तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६२११६	तमोनुद् १.	७११२८
तथार्थवाच् १.	५३३३	तन्दन ३.	२१४५	तमोनुद् १.	८११२३
तथ्य ३.	५३३३	तन्दू २.	६२११६	तमोपह १.	८११२३
तद् १. २. ३.	५१४२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
" ४.	८१७११	तन्द्रा २.	३३३१७८	तम्पा २.	३१४४२
तदा ४.	८१८५	" २.	३३३१९७	तम्बा २.	२१४४२
तदानीम् ४.	८१८५	" २.	६२११५	तम्बिकी २.	३१९१३
तनय १.	४३३३९	तन्मात्र ३.	३३३२०५	तरच्छु १.	३३४४
तनु १.	३३३८५	तन्वी २.	३१८७७	तरङ्ग १.	३३३१६२
" २.	४१४५२	तपन १.	२११११	" १.	४२११४
" २.	४१४१०३	" १.	३३३१५१	तरङ्गिणी २.	३३३२१२
" १. २. ३.	५१४५	" १.	७१२२९	" २.	४२३३
" १. २. ३.	५१४१२५	तपनीय ३.	३३३१८	तरण ३.	५२३१२
" १. २. ३.	६५३३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४३३८०
तनुकृवर ३.	३३३१३२	" १.	२११८२	तरणि १. २.	७१५४२
तनुन्न ३.	३३३१५२	" ३.	३३३३३६	तरणी २.	४२३१५
तनुस् ३.	६३३१२	" ३.	३३३२०७	तरण्डक १.	४२३१६
तनुकृत १. २. ३.	५१४१११	" ३.	३३३१०९	तरत् १.	८१९११
तनूनपात् १.	१२३१४	तपस १.	२११२६	तरत्सम १.	१२३२१
तनूरुह ३.	२३३१४९	तपस्य १.	२११८३	तरपण्य ३.	४२३१८
" ३.	४१४९७	तपस्विन् १. २. ३.	३३३१२६	तरल ३.	४३३६२
तन्तु १.	३३३१८७	" १. २. ३.	८१५२८	" १.	४३३१३३
" १.	३३३१११	तपस्विनी २.	३१८१००	" १.	५३३१५
" १.	४१११३	तपिनी २.	४२३२७	" १.	७१५४४
तन्तुक १.	४११५२	तप्त १.	५३३८	तरलित १. २. ३.	५१४१०३
तन्तुनाग १.	४११५२	" १. २. ३.	५१४९८	तरवारि २.	३३३१६२
तन्तुनाभ १.	४११३४	तप्तकृच्छ्र ३.	३३३१३९	तरस् ३.	१२३१५
तन्तुवाय १.	३३३१९७	तमङ्कक १.	४३३३२	" ३.	३३३२१०
" १.	३३३१८	तमत १.	४३३६३	" ३.	६३३१३
" १.	४११३४	तमरक ३.	३३३३२	तरस ३.	४१४१०६
तन्तुसन्तत १. २. ३.	५१४११२	तमस् ३.	२११६२	तरि १.	१२३२८
तन्त्र ३.	३३३११४	" ३.	३३३१६२	" २.	४२३१५
" १.	४११५२	" ३.	३३३१६२	" २.	४३३६३
" ३.	४११४१	" १. २.	६५३३५	तरीष १.	३३३१६७
" ३.	६३३११	तमस्विनी २.	२११५७	तरु १.	३३३१५
तन्त्रक १. २. ३.	४३३१२०	तमाल १. ३.	३३३८७	तरुण १.	३३३६५
तन्त्रशाला २.	४३३१२२	तमालपत्र ३.	४३३१४८	" १. २. ३.	५१४३
तन्त्री २.	३३३३०	तमिच्चा २.	२११५७	तरुणी २.	३३३१८८
		" २.	७१५४३	तर्क १. ३.	३३३१७६
		तमी २.	२११५७	" १.	६१३२५

तर्कविद्या ]

तर्कविद्या २.	३१६३२
तर्कारी २.	३१६१६
( त्कारी )	
तर्कु १.	३१६१९
तर्जनी २.	४१४७३
तर्ह २.	४३१६३
तर्णक १.	३१४५१
तर्पण १.	४३१३३
” ३.	४३१६९
” ३.	७३११६
तर्मन् ३.	३१६५२
तर्ष १.	८१२२०
तर्षित १. २. ३.	५४३३७
तर्षु १.	२१११३
तर्हि ४.	८७२०
” ४	८८५
तल १.	३३३२१६
” १. २. ३.	३७१५५
” १.	३१९१२२
” ३.	४१११
” १.	४१४७३
” १.	४१४७७
” ३.	५११५०
” ३.	५११६३
” १.	५३१६
” १. ३.	६५३२५
तलपोट १.	३३३१०६
तलप्रोह १.	३७७७८
तलयन्त्र ३.	३७७५१
तलसारक ३.	३७१११४
तला २.	३७११५५
तलिका २.	३७१११४
तलिन १. २. ३.	५४११२५
” १. २. ३.	७४११२
तलनी २.	४३३३३
तलिन ३.	७३११६
तलुनी २.	४४१८
तलेक्षण १.	३४१५
तल्प ३.	६३१२२
तल्पगृह ३.	४३१२०

वैजयन्तीकोषः

तल्लज १.	८१९४२
तल्लिष १.	७५४४२
तल्ल १. २. ३.	६१११११
तल्लकर १.	३१९५६
” १.	८६१७
तल्लिथवस् १. २. ३.	५४१६२
तालिक १.	३३११५२
तालङ्क १.	४३११३४
तालडन ३.	५११३६
ताली २.	३३१२२४
ताण्डव १. ३.	३१९७३
तात १.	४४१२९
तातगु १. २. ३.	७५४३३
तातल १. २. ३.	७५४४४
तान १. ३.	३१९१११
तानित ३.	७३११६
तान्त १.	२११८०
तापस १. २.	३३११२४
” १. २. ३.	३३११२६
तापिल्लु १.	३३१८७
तापी २.	४३१२७
तामरस ३.	४३१३९
तामसी २.	२११६०
” २.	३३११९७
तामिस्र ३.	२११६२
ताम्बूल ३.	४३११०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	३७३८
ताम्बूलवह्निका २.	८५२८
ताम्बूली २.	८५२८
ताम्र ३.	३३२२४
” १. २. ३.	६५३७
ताम्रकर्ष १.	५११५२
ताम्रकुट्टक १.	३१९१५
ताम्रचूड १.	२३१३३
ताम्रजीव १.	३५३९
ताम्रधारण ३.	५११५९
ताम्रपर्णी २.	२११९
” २.	४३२२९
ताम्रपाकिन् १.	३३१५९

[ तालपत्रिका

ताम्रमूला २.	३३१२२५
ताम्रवृत्त १.	३८१४७
ताम्रसार ३.	३८११३३
ताम्रा २.	३३११७९
ताम्राक्ष १.	२३३२६
तार १. २. ३.	२४१३३
” १.	३३३२३३
” १.	५३३२३
” १. २. ३.	६५३३६
तारक ३.	३३३२३३
” १. २. ३.	४४१९४
” १. २. ३.	७५४४४
तारकारि १.	१११५४
तारजीवन ३.	३३२१९
तारण १.	२११८०
तारणी २.	३८११४
तारा २.	२११३८
तारावट १.	३३११९४
तारावल्मन् ३.	२११२
तारुण्य ३.	४४१५३
तारुण्य १.	१३११९
” १.	१११३७
” १.	३७९१
” ३.	३८१२५
तारुण्यशैल ३.	३३२४१
तारुण्यसन ३.	३३३२२८
तार्ण १.	१३२२१
” ३.	३११२०
तार्णसौम ३.	३११२०
ताल १.	३३२१४
” ३.	३३३२१६
” १.	३७१८५
” १.	३१९१२३
” १.	४४१७७
” १.	४४१८०
” १.	४४१८७
” ३.	४३१४९
” ३.	४३१३४
” १.	५३३८
तालपत्र ३.	४३१३४
तालपत्रिका २.	३१९२४

तालपर्णी ]

तालपर्णी २.	३८१९८
तालमूली २.	३३३२०३
तालवृन्त ३.	४३११५९
तालाङ्क १.	१११२३
” १ व.	१३११३
ताली २.	३३३२०३
” २.	३३३२२४
” २.	३१९१२४
” २.	४३३४९
तालु २.	३३११७१
” ३.	४४१८९
तालुजिह्व १.	४११५३
तावत् ४.	८७२८
तावत्थि १. २. ३.	५११२०
तावत्कृति २.	५११३६
तावत्कृत्वः(-स) ४.	५११३६
ताविष १. २.	७५४४२
तिक्त १.	३३३५३
” १.	३३३१२८
” १.	३३३१६६
” १.	५३३२६
” १.	५३३४७
तिक्तक १.	५३३५५
तिक्तकाषाय १.	५३३३१
तिक्तच्छदन १.	३३३१६३
तिक्तपटुस्वादुकषाय १.	५३३४०
तिक्तपटोलिका २.	३३३१६१
तिक्तवल्का २.	३३३११४
तिक्तशाक १.	३३३४१
तिक्तसार १.	३३३६३
तिक्तिक १.	५३३३०
तिग्म १.	५३३७
” १.	६५३७
तितउ १. ३.	४३३६५
तितित्ता २.	३३३१८४
तितित्तु १. २. ३.	५४३३३
तितित्तिरि १.	२३३३५
” १.	३११५१

शब्दानुक्रमणिका

तिक्तीक १.	३३३७७
तिथि १. २.	२११६९
तिन्तुडीक १.	३३३८१
तिन्तुणी २.	३३३८१
तिन्तुणीक ३.	३८१३३२
तिन्त्रिडीक ३.	८३३६
तिन्दुक १.	३३३५१
तिमि १.	४११४१
तिमित १. २. ३.	५४१०७
तिमिर ३.	२११६४
तिमिङ्गिल १.	४११५१
तिमिला २.	३१९१३५
तिमिश १.	३३३४६
तिमिशत्रु १.	४११५१
तिरश्चीन १. २. ३.	५४१९१
तिरस् ४.	८७२१
तिरस्करिणी २.	४३३१२४
तिरस्कार १.	३३३१७१
तिरित १. २. ३.	३८१११
तिरीट १.	३३३५२
तिरीटिका २.	३३३८७
तिरोधान ३.	२११६४
तिर्यग्गामिन् १.	२११३४
तिर्यच् ४.	५४१९१
तिल १.	३८३३९
तिलक १.	३३३६१
” १.	३३३६९
” ३.	३८१२५
” १. ३.	४३३१४८
” १.	४४१९७
” ३.	४४११२
” १. ३.	८१३३०
तिलककण्टक १.	२३३१८
तिलकालक १.	४४१९७
तिलखल १ व.	३१३३९
तिलपर्णी २.	३८१११५
तिलपिञ्ज १.	३८३३९
तिलपुष्प ३.	३८३४०
तिलपेज १.	३८३३९

[ तुङ्गता

तिलाट १.	३८१४८
( किलाट )	
तिलिस्स १.	४१११४
तिलिस्सक १.	३४१४
तिल्य १. २. ३.	३८३२०
तिष्य १.	३३३१७५
” १.	६११२५
तिष्या २.	३३३१७७
तीचण ३.	३३३३४
” १.	३३३११९
” १.	३३३१२१
” १. २. ३.	३७३२८
” १.	५३३९
” १.	५३३२६
” १. २. ३.	६५३३७
तीचणगन्ध १.	३३३५६
” १.	३३३११९
तीचणच १.	५३३२९
तीचणतण्डुला २.	३८७७
तीचणधूसा २.	३३३९१
तीचणरस १.	३८१२७
तीचणा २.	३३३१९७
तीचणाग्र ३.	३८३६५
तीचणार्जक १.	३८१२१
तीर ३.	४३३३२
तीरतरङ्गिका २.	३१९११
तीरशुक्ति २.	३१३३०
तीरित १. २. ३.	२४११९
तीरी २.	३७१८३
तीर्थ १. ३.	४३३२०
” ३.	४४१७५
” ३.	६३३३३
तीर्थवाह १.	४४१९८
तीवर १.	३५३१२
तीव्र १. २. ३.	५४१३२
तीव्रकोपा २.	४४११०
तु ४.	८७३
” ४.	८७३१
तुक १.	३५३७५
तुङ्ग १. २. ३.	५४३८१
तुङ्गता २.	५३३२४



[ तुङ्गभद्रा ]

तुङ्गभद्रा २.	४२१२८
तुच्छ १. २. ३.	५४१८७
” १. २. ३.	६५२३६
तुटि २.	२११५२
” २	६२११६
तुण्ड ३.	४४१८६
तुण्डि १. २. ३.	५४१६
तुण्डिकेरी २.	३३१९९
” २.	३३१९७
तुण्डिन् १.	२३१४
तुण्डिभ १. २. ३.	
” १.	४४१९४६
तुण्डिल १. २. ३.	
” १.	४४१९४६
” २.	३२१४३
” ३.	३३१९१०
” २.	३२१८७
तुत्थाङ्गन ३.	३२१४२
तुन्द ३.	४४१६७
तुन्दपरिमृज १. २. ३.	
” १.	५४१५५
तुन्दिक १. २. ३.	५४१७
तुन्दिन् १. २. ३.	५४१७
तुन्दिल १. २. ३.	५४१७
तुन्न १. २. ३.	५४१९५
तुन्नवाय १.	३२१९१
तुमुल १. २. ३.	२४१९२
” १. २. ३.	३२७२१७
तुमुलाक्षक १.	३३१९७६
तुम्बा २.	३२७२३५
तुम्बिका २.	४३१३२२
तुम्बी २.	३३१९६७
तुम्बुक १. २. ३.	२४१९६
तुम्बुका २.	३३१९६८
तुरग १.	३२७२०
तुरङ्ग १.	३२७२०
तुरङ्गम १.	३२७२०
तुरायण ३.	३३१९४४
तुराषाह् १.	१२१७
तुरीय १. २. ३.	५४१२१
तुरुष्क १ ब.	३१२२७

वैजयन्तीकोषः

तुरुष्क १.	३२८१११
तुर्य १. २. ३.	५४१२१
तुर्यकालभुज् १.	३३१९२५
तुलसी २.	३३१९१९
तुला २.	५४१६०
” २.	६२११७
” २.	८६११४
तुलाकोटि १.	४३१९४५
तुलापुरुष १.	३३१९४३
” १.	३३१९४३
तुलिका २.	३२१६
तुल्य १. २. ३.	५४१२१
तुल्यविक्रम १.	३३१९
तुवर १.	३३१९५२
” १.	५३१२७
” १.	५३१४२
तुवरी २.	३२११७
” २.	३२१४८
तुष १.	३३१९७६
” १.	४३१६६
तुषानल १.	१२१२०
तुषाम्बु ३.	४३१८३
तुषार १.	२२१९
” १.	५३१७
तुषित १ ब.	१३१८
तुष्ट १.	३३१८५
तुष्टि २.	३३१९६६
तुहिन ३.	२२१९
तूण १.	३२७२७८
” २. (आण)	३२८११०
तूणी २.	३२७२७८
तूणीर १.	३२७२७८
तूपर ३.	३३१९०५
” १. २. ३.	७४१९२
तूबर १.	३३१७३
तूर १.	३२९१३७
तूर्ण १. २. ३.	५४१९२४
तूर्य १. २.	३२९१३६
तूल १. २.	३२९१
तूलपुष्प १.	३३१९९३
(स्थूलपुष्प)	

[ त्स ]

तूलफला २.	३३१९१
तूलिका २.	३३१२३५
” २.	३२९१३
तूलिनी २.	३३१९१
तूली २.	६२११७
तूष्णीकाम् ४.	८८११५
तूष्णीम् ४.	८८११५
तूड्घी २.	३३१९१२
तूण ३.	३३१९८४
” ३.	३३१२२५
” २.	३३१२३३
” २.	३३१२३५
तूणकोल १.	३२८१५
तूणजलायुका २.	
” १.	४११५९
तूणता २.	७२११०
तूणद्रुम १.	३३१२२४
तूणधान्यक ३.	३२८१५८
तूणध्वज १.	३३१२१४
तूणपञ्चिका २.	३२८६४
तूणराज १.	३३१२१६
” १.	३३१२२०
तूणशय्य १. २. ३.	
” १.	३३१९३१
तूणशून्यक ३.	३३१९८३
तूणशोणक १.	५३१५०
तूणसंवर १.	३३१९२
तूणसञ्चय १.	३२८६५
तूणसिंह १.	३२५२
तूणस्तम्ब १.	३३१२३५
तूणाटवी २.	३३१२
तूणेन्धन ३.	३३१९६
तूण्या २.	५४१९४
तूतीय १. २. ३.	५४१२१
तूतीयाकृत १. २. ३.	
” १.	३२८२२
तूतीयाप्रकृति १.	४४१३
तूपत् १.	२११२७
तूपि १.	२११२७
तूप् १. २. ३.	४३१९०५
” १. २. ३.	५४१९९

[ त्सि ]

त्सि २.	३३१९८८
” २.	४३१९०५
त्सप्रक १.	३३१९९
त्सृ २.	८२१९९
त्सृषि २.	३३१९७९
त्सृषित १. २. ३.	५४३३७
त्सृणज् १. २. ३.	५४३३५
त्सृणा १.	८२१९९
त्से १. २. ३.	८५३३९
त्सेजन १.	३३१२१५
” २. ३.	३२७१९१
त्सेजनक १.	३३१२२८
त्सेजनी २.	३३१९१४
त्सेजस् ३.	१२१९९
” ३.	६३११४
त्सेजस्विन् १.	४४१९१०
त्सेजित १. २. ३.	३२७१९७
त्सेम १.	५२१२९
त्सेमन ३.	४३१८५
” ३.	७३११७
त्सेर १.	३३१४२
” ३.	४४१८६
त्सेतुल १ ब.	३३१२६
त्सेल ३.	३२८१३७
त्सेलपणिक ३.	२८१९१४
त्सेलपर्णी २.	८२१६
त्सेलपायिका २.	२३१४४
त्सेलित्स १.	५३३३२
त्सेलिन् १.	३२९२७
त्सेलिशाला २.	४३१२४
त्सेलीन १. २. ३.	३२८२०
त्सेष १.	२११८२
त्सेतोक ३.	४४१४१
त्सेकम १.	६५३३८
त्सेक्षार १ ब.	३११२५
त्सेटक १.	३२८४१
त्सेट्टभी २.	३२९१२६
त्सेड ३.	३३१५
त्सेत्त्र ३.	३२७८२
” ३.	३२८२९
त्सेद्वन ३.	७३११७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३२७१६६
तोय ३.	४२११
तोयपर्णिका २.	३२८५३
तोयपिप्पली २.	३३१९९७
तोयप्रवाह १.	३२१७
तोयप्रसादन १.	३३१४२
तोरण १. ३.	४३१४२
तोरणस्तम्भ १.	३३१५८
तोषणी २.	३३१२१२
तौर्यत्रिक ३.	३२९७१
त्यक्त १. २. ३.	५४१९०१
त्यक्तभर्तृका २.	३३१४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	
” १.	३३१९३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	
” १.	३३१९३
त्याग १.	३३१९१८
” १.	५२१४०
त्रपा २.	३३१९९७
त्रपु ३.	३२१३०
” ३.	३२१३१
” ३.	६३१३३
त्रपुष १. २. ३.	३३१९७१
त्रय ३.	५४११६
त्रयी २.	३३१२६
त्रयीतनु १.	२११९३
त्रयीपुष १.	३३१९
त्रयोदशी २.	३२९११८
त्रस १. २. ३.	५४१६१
त्रसर १.	३२९९
” १.	४३१३२२
त्रसरेणु २.	२११२३
” १. २.	५४१४२
त्रस्त ३.	३३१९६८
” १. २. ३.	५४१९८
त्रस्तु १. २. ३.	५४१९८
त्राण १. २. ३.	५४१९००
त्रात १. २. ३.	५४१९००
त्रापुष ३.	३२१२३
त्रायन्ती २.	३३१९०९
त्रायमाणा २.	३३१९०९

[ त्रिधात्मन् ]

त्रास १.	६११२५
त्रिंशत् २.	५११२६
त्रिः(-स्) ४.	८८१३
त्रिक ३.	४४१६६
” १. २.	८९१२७
त्रिककुद् १.	११११०
” १.	३२१२
त्रिकट्ट ३.	३२८८०
त्रिकण्टक १.	३३१९८
” १	३३१९४१
” १.	३३१९६५
” १.	४२१४७
त्रिकल १.	३२१३
त्रिकालदर्शिन १.	
” १.	३३१९५०
त्रिकालदृश् १.	१११३५
त्रिकुट ३.	३२८१९९
त्रिकूट १.	३२१२
” ३.	३३१९१०
” ३.	३२८१९९
त्रिकेतु १.	२३१२५
त्रिकोणक १.	४३१३३६
त्रिखट्व १. २.	८९१३६
त्रिखर १.	५३३३४
त्रिगन्ध ३.	४३१९५०
त्रिगर्त १ ब.	३३१२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	
” १.	३२८२२
त्रिचतुर १. २. ३.	
” १.	५४१२५
त्रिजातक ३.	४३१९५०
” १. २. ३.	८९१३९
त्रितच २. ३.	८९१३६
त्रितय ३.	५४१९६
त्रिदश १.	१११४
त्रिदिव १.	१११२
” १.	७३१२९
त्रिदिवा २.	३२८८७
त्रिधा ४.	८८१२०
त्रिधात्मन् १.	१२१९५
” १.	७३१२९

## त्रिपक्षी ]

त्रिपक्षी २.	३१६६
त्रिपदी २.	३१७८३
त्रिपर्णक १.	३१३२९
” ३.	८३१९
त्रिपात्र ३.	८१९८
त्रिपाद १.	३११५२
त्रिपुट १.	३१८४४
त्रिपुटा २.	३३१३७
” २.	३१८८७
त्रिपुटी २.	३३१३७
त्रिपुर १.	३३३७७
त्रिपुरारि १.	१११४३
त्रिफला २.	३१८८२
त्रिमार्गगा २.	४२२२४
त्रिमार्गा २.	४२२२५
त्रियामा २.	२११५६
त्रियुग ३.	२११९२
” ३.	८१९८
त्रियूह १.	३१७१००
त्रिरसा २.	४३३७९
त्रिरेख १.	४११५६
त्रिलोकी १.	८१९८
त्रिलोचन १.	१११४२
त्रिवर्ग १.	३१६२३५
” १.	७१२८
त्रिवलीक ३.	४१४६०
त्रिविक्रम १.	११११९
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८
त्रिविष्टप ३.	१११११
त्रिवीथिका २.	२११४५
त्रिवृत् २.	३३१३७
” १. २. ३.	३१९१०
त्रिवृत् १. २. ३.	३१९१०
त्रिशङ्कु १.	७१२९
त्रिशिरस् १.	१२१४४
” १.	१२१५६
त्रिकृष्ट १. २. ३.	३१८२३
त्रिष्टुभ १.	३१८४१
त्रिष्टुभा २.	३१८४२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७

## वैजयन्तीकोषः

त्रिसर १. २. ३.	८१९२५
त्रिसरा २.	४३३७९
त्रिसारा २.	३३३२२
त्रिसीत्य १. २. ३.	३१८२२
त्रिसुगन्ध ३.	४३३१५०
त्रिस्नेह ३.	४३३२९
त्रिस्रोतस २.	४३३२४
त्रिहल्य १. २. ३.	३१८२२
त्रुटि २.	२११५२
” २.	३१८८७
” २.	६२१७७
त्रेता २.	२११९१
” २.	३१९६२
” २.	६२१७७
त्रेधा ४.	८१८२०
त्रैधस् ४.	८१८२०
त्रैपुर १ ब.	३११३६
त्रैवृत् ३.	४३३९९
त्रैष्टुभ ३.	८१९१६
त्रैहोत्र ३.	३१६९१
त्रोटि २.	२३१५०
त्र्यश्रा २.	३३३३७
त्र्युषण ३.	३१८८०
त्वक्क्षीरा २.	३१८९०
त्वक्त्र ३.	३१७१५२
त्वक्पत्र ३.	३१८१०४
त्वक्सार १.	३३३२२५
त्वग्गन्ध १.	३३३३६
त्वग्ज ३.	४३३११७
त्वग्बल ब १.	३१७१८३
त्वच् २.	३३३१३
” २.	४४१०३
” २.	८२२२०
” २.	८१६१२
त्वच १. २.	३३३१३
” ३.	३१८१०४
त्वचिसार १.	३३३२१५
त्वरा १.	३१९१८९
त्वरित १. २. ३.	५४१२४

## [ दक्षिणाशारत

त्वरी २.	३१९८९
त्वष्ट १. २. ३.	५४१११
त्वष्टृ १.	१३३७
” १.	३१९३४
” १.	६११२५
त्वाष्ट्र १.	३१६१०८
त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्वाष्ट्री २.	२११२३
त्विष् २.	४३३१५०
” २.	८२११८
त्विष्पति १.	२१११२
त्सर १.	३१७१६८
द	
दंश १.	२३३४५
” १.	४४१९०
दंशन ३.	३१७१५२
दंशबन्धन ३.	४४१३९
दंशालिक १.	३१४१०
दंशित १. २. ३.	३१७१४२
दंशी २.	२३३४५
दंष्ट्रा २.	४४१८९
दंष्ट्रिन् १.	६१५४०
दक ३.	४२२
दक्ष १.	२३३१३
” १. २. ३.	५४११९
” १. २. ३.	५४१५४
” १. २. ३.	५४१३७
दक्षकन्या २.	८२२७
दक्षवाच् १. २. ३.	५४१४५
दक्षा २.	३१११
दक्षाध्वराराति १.	१११४१
दक्षिण १. २. ३.	५४२०
” १. २. ३.	७५४५
दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
दक्षिणाधिप १.	१२३५
दक्षिणानल १.	१२३३
दक्षिणापथ १.	३१३२
दक्षिणायन ३.	२११८९
दक्षिणाशारत १.	३१६१५२

## दक्षिणोर्मन् ]

दक्षिणोर्मन् १.	३१९४०
दक्षिणस्थ १.	११७१३८
दग्धान्न ३.	४३३७६
दण्ड १.	३१६१८
” १.	३१७४६
” १.	६१५२८
दण्डक ३.	२४४४२
” १ ब.	३११३३
दण्डधर १.	१२३३३
दण्डनीति २.	३३३३०
दण्डपद्मासन १.	३१६२२८
दण्डपाल १.	३१७२१
दण्डपाशिक १.	३१७२०
दण्डवत् १. २. ३.	५४१११८
दण्डाजिन ३.	३१६१९५
दण्डासन ३.	३१६२२६
” १.	३१७१८१
दण्डाहत ३.	३१८१४८
दण्डिक १.	३१७१८१
” १. २. ३.	५४१११८
दण्डिका २.	३१९१२९
दण्डिन् १.	२३३२५
” १. २. ३.	५४१११८
” १.	६११२६
दण्डोत्पल १.	३३३१०६
दत्तात्रेय १.	११३३१
दद्व २.	४४१२२५
ददुष्ट १.	३३३१५८
ददुज ३.	३१८१३५
ददुण १. २. ३.	४४१४५
ददुनाशिनी २.	३३३१०३
ददुमत् १.	४४१४५
दधि ३.	३१८१०९
” ३.	३१८१३९
दधिक्षीर ३.	३१६१९९
दधित्थ १.	३३३३२
दधिफल १.	३३३३२
दधिबुस ३.	३१८१४२

## शब्दानुक्रमिका

दधिमण्डक ३.	३१८१४४
दधिसुख १.	३१४४०
दधिसक्तु १.	४३३७१
दध्यस्र १.	४३३९७
दध्याज्य ३.	३३३९९
दध्याली २.	३३३१४३
दन्त १.	४४१८८
” १.	६११२६
दन्तच्छद १.	४४१८७
” १.	८१९१३
दन्तधावन १.	३३३३३
दन्तबीज १.	४२२४७
दन्तभाग १.	३१७८१
दन्तवस्त्र ३.	४४१८८
दन्तवेष्ट १.	३१७११०
दन्तशठ १.	३३३३२
” १.	३३३३५
” १.	३३३३७
” १. २. ३.	८१९१९
दन्तशठा २.	३३३१६३
दन्ताली २.	३१७११२
दन्तावल १.	३१७६१
दन्तिका २.	४३३५३
दन्तिन् १.	३१७६०
दन्तुर १. २. ३.	५४१९
दन्तोलखलक १. २. ३.	३३३३२
दन्त्य १. २. ३.	५४११७
दन्दशूक १.	४११४
” १.	४११४०
दध्र १. २. ३.	५४१३६
दम १.	३१७४६
” १.	५२२७
दमण्डक १.	३५९
दमथ १.	५२२७
दमनक ३.	३३३२३
दमयन्तिका २.	३३३१८
दमित १. २. ३.	५४११४
दमुनस् १.	१२३१८
दम्पति १ द्वि.	४४१४८

## [ दलकूर्चिका

दम्भ १.	३३३९५
दम्भोलि १.	१२३३३
दम्य १.	३३३५४
दया २.	३३३९२
दयालु १. २. ३.	५४३९
दयित १. २. ३.	५४३०
दर १. ३.	६१३९
” १. २. ३.	८१९३७
दरण १.	२३३२५
दरथ १.	७१३३१
दरद्व २.	६२२९८
दरिणि १. २.	३१८२४
दरित १. २. ३.	५४११८
दरिद्र १. २. ३.	५४१५९
दरी २.	३२३६
” २.	८१९३४
ददर १.	३१७७४
” १.	३१९१२४
ददुरीक १.	८१३२४
दर्पक १.	११३२७
दर्पण १.	४३३६२
दर्भ १.	३३३२७
” १.	३३३२७
” १.	३३३२९
दर्व १.	१३३३
दर्वि १.	२३३१०
” २.	४३३६३
दर्वितुण्ड १.	२३३१०
दर्विदा २.	२३३१०
दर्वी २.	३३३९०१
दर्वीकर १.	४११७
” १.	४११८
” १.	४११९०
” १.	४११९१
दर्श १.	२११७०
दर्शक १.	३३३२४
दर्शन ३.	३३३१७
दर्शनी २.	४३३१६
दल ३.	३३३१६
” १.	६१३९
दलकूर्चिका २.	३३३२०८

दलत् १.	४११४६	दाक्षिणात्य १.	३३३२२०	दारु ३.	३३३७१
दली २.	८१९१७	दाक्षी २.	३३३४३	दारुक १.	१११२६
दव १.	११२२१	दाक्षीपुत्र १.	३३३५४	दारुकण्टक ३.	२२२२७
" १.	६१२२७	दाडिम १. २. ३.	३३३७२	दारुण १. २. ३.	३३३७९
दवथु १.	४४१२२	" १. २. ३.	८१२३८	" ३.	५३३५
दश १. २. ३. ४.	४३३१३१	दाण्डपाता २.	२११७५	दारुतक्षणी २.	३३३३६
दशन १.	४४३८८	" २.	८१२६	दारुफला २.	३३३१८१
दशनोच्छिष्ट १.	८११५२	दाण्डाजिनिक १. २. ३.		दारुहरिद्रा २.	३३३२१२
दशपुर ३.	३३३२०१			दारुहस्तक १.	४३३१६३
दशबल १.	१११३३	दात १. २. ३.	५४१०२	दार्वर ३.	३१११६
दशवाहु १.	१११४७	दात्यूह १.	२३३१२	दार्वण्ड १.	२३३३८
दशम १. २. ३.	५११२०	" १.	२३३३६	दारवाघाट १.	२३३३३
दशमिन् १. २. ३.	५४१४	दात्र ३.	३३३३०	दार्विका २.	३३३४३
दशमीस्थ १. २. ३.		दाधिक १. २. ३.	४३३९५	" २.	३३३११६
	८४१७	दान ३.	३३३६३	दार्वी २.	३३३२१२
दशरथात्मज	१११२२	" ३.	३३३११८	दाल ३.	३३३१३५
दशा १ ब.	४३३१६१	" ३.	६३३१५	दास्मि १.	११२६
" २.	४४१५३	दानव १.	१३३९	दाव १.	६११२७
" २.	५१२२	दानवाङ्गन ३.	३३३१२२	दाश १.	३३३१३२
दशाङ्गुल १. २. ३.		दान्त ३.	३३३१२३	दाशरथि १.	१११२०
	३३३५३	" १. २. ३.	५४११४	दाशार्ह १.	१११२५
दशानाह १.	३३३६१	दान्ति २.	५१२२७	दाशेरक १.	३३३६७
दशार्ण १ ब.	३३३३७	दामन् २. ३.	३३३२९	दास १.	३३३२
दशान्यय १.	१११४७	" २. ३.	८१३३२	दासमोचित १.	३३३४
दशारव १.	१२१४२	दामनी २.	३३३२९	दाससूनु १.	३३३३
दशास्य १.	१२१४२	दामा २.	३३३२९	दासी २.	३३३१११
दशोरक १ ब.	३३३३८	दामाञ्जन ३.	३३३११२	" २.	३३३१९०
दस्यु १.	३३३११२	दामोदर १.	१११२५	" २.	४४३२६
" १.	३३३२१५	दाय १.	६३३२६	दासीसभ ३.	८१२२०
" १.	३३३४०	दायाद १.	७३३३०	दासेय १.	४४३४३
" १.	३३३५६	दार ३.	४३३३९	दासेर १.	४४३४३
दस्युजाति २.	३३३२०८	" १ ब.	४४३३५	दिक्करी २.	४४३८
दत्त १ द्वि.	१३३६	दारक १. २. ३.	५४३२	दिगन्त १.	२१३६
दहन १.	१२११५	दारद १ ब.	३३३२७	दिगम्बर १. २. ३.	
" १.	५३३८	" १.	३३३४४		५४३१५
दहर १. २. ३.	५४३३६	दारपत्र १.	४३३७१	दिग्गज १.	२१३८
दह १. २. ३.	५४३३६	दारसङ्ग्रह १.	३३३५४	दिग्ध १.	६३३४१
दा २.	३३३५२	दारित १. २. ३.		दिग्भव १. २. ३.	
दाक्षायण ३.	३३३१९				४४३११६
दाक्षायणी २.	८३३६	दारिपत् १.	३३३२६	दिग्युग्म ३.	२१३७
दाक्षाय्य १.	३३३३०	दारु ३.	३३३१३	दिग्वासस् १.	११३४६

दिङ्मण्डल ३.	२१३६	दिष्टि २.	३३३५३	दीर्घपत्री २.	३३३१९६
दिङ्मध्य ३.	२१३७	" २.	६३३१९	दीर्घपर्णी २.	३३३१७४
दिङ्मार्ग १.	४३३१७	दिष्ट्या ४.	८१७२१	दीर्घपाद १.	२३३३१
दिधिषु १. २.	७५५४७	" ४.	८१८१७	दीर्घपृष्ठ १.	४३३६
दिधिषूपति १.	३३३४३	दिहण्ड १ ब.	३३३२४	दीर्घफला २.	३३३१६०
दिन ३.	२१३५६	दीक्षणीयेष्टि २.	३३३८७	दीर्घरोमक ३.	३३३२०२
दिनत्रयिन् १.	३३३४१	दीक्षा १.	३३३८७	दीर्घरोमन् १.	३३३४७
दिनप्रणी १.	२१३१०	दीदिवि १.	२१३३४	दीर्घवल्ली २.	३३३३३३
दिनम्मन्या २.	२१३५८	" १. २.	४३३७६	दीर्घवाच् १.	२३३३३
दिनादि १.	२१३६४	दीधिति २.	२१३२२	दीर्घवृन्त १.	३३३६८
दिव् २.	११३१	दीन १.	३३३७०	" १.	३३३२१८
" २.	८३३१७	" १.	३३३२२३	दीर्घशूक १.	३३३६१
दिवस १. ३.	२१३५५	" १. २. ३.	५४३६०	दीर्घसूत्र १. २. ३.	
दिवस्पति १.	१३३१	दीनवादिन् १. २. ३.			५४३७२
दिवा ४.	८३३७		५४३४७	दीधिका २.	४३३६
दिवाकर १.	२१३१०	दीनार १.	५१३४१	दीर्णाङ्ग १.	२१३२०
दिवाकीर्ति १.	८१३२४	दीप १.	४३३१६१	दीर्णा २.	२१३२
दिवाचर १.	२१३१०	दीपक १.	३३३४१	दुःख १. २. ३.	१३३३९
दिवाटन १.	२३३१५	" १. २. ३.	७५३४७	" ३.	३३३१८७
दिवाभीत १.	८१३२४	दीपन १.	३३३६०	" १. २. ३.	५४३१४४
दिविषद् १.	११३३	दीपवल्ली २.	४३३१६०	दुःखदोहा २.	३३३४९
दिवौकस् १.	१३३३	दीपवृत्त १.	४३३१६१	दुःकूल ३.	४३३१२२
" १.	७३३३०	" १.	८३३२०	" ३.	७३३१८
दिव्य ३.	२१३१	दीपिका २.	४३३१६०	दुग्ध ३.	३३३१४५
" ३.	३३३२०४	दीस १. २. ३.	८३३१४	दुग्धतालीय ३.	८३३१४
" ३.	३३३१२	दीसा २.	२३३४	दुद्रुम १.	३३३२०५
" ३.	३३३११०	दीसि २.	२१३२२	दुध १.	१३३२१
" ३.	८३३१८	दीप्य १.	३३३८३	दुन्दु १.	१३३२६
दिव्यकालिनी २.	४३३१७	दीप्यकार. २.	३३३१०२	दुन्दुभ ३.	३३३२००
दिव्येलक १.	४३३१५	दीर्घ १. २. ३.	५४३८१	दुन्दुभि १.	१३३४५
दिव्योल्क १.	४३३१७	दीर्घकोशिका २.	४३३५८	" १.	३३३१३३
दिश २.	२३३२	दीर्घदण्ड १.	३३३५९	" १. २.	७५३४८
" २.	४३३१५	( दिव्यदण्ड )		दुर् ४.	८३३४
दिशा २.	२३३२	दीर्घदर्शिन १.	३३३२३५	दुर्ध्व १.	३३३१५०
दिशान १.	३३३२२	दीर्घदृष्टि १. २. ३.		दुराचार १. २. ३.	
दिश्य १. २. ३.	५४३११६		५४३५३		३३३१२
दिष्ट १.	२३३५२	दीर्घनादिन् १.	३३३६९	दुरालभा २.	३३३१२५
" ३.	२३३२५	( रतिकील )		दुरासद् १.	१३३१६
" ३.	३३३१८९	दीर्घनिद्रा २.	३३३२०१	दुरित ३.	३३३१६८
" ३.	४३३११५	दीर्घनिर्वशा १.	३३३१६३	दुरोदर १.	८३३१०
दिष्टान्त १.	३३३२०१	दीर्घपत्र ३.	३३३२०६	दुर्गा ३.	३३३१६

[ दुर्ग ]

दुर्ग ३.	३।७।४९
" १. २. ३.	६।५।४१
दुर्गत १. २. ३.	५।४।६०
दुर्गति २.	१।२।३७
" २.	७।२।१०
दुर्गन्ध ३.	३।८।१२५
" १.	५।३।५५
दुर्गम १.	३।२।१
दुर्गा २.	१।१।६२
दुर्जन १.	५।४।२५
दुर्दर्शा २.	३।६।४९
दुर्विन ३.	२।२।८
दुर्नामन् २.	४।१।५८
" ३.	४।४।१३१
दुर्बल १. २. ३.	५।४।५
दुर्बाल १. २. ३.	५।४।५५
दुर्भंग १. २. ३.	५।४।६९
दुर्भनस् १. २. ३.	५।४।३४
दुर्मुख १. २. ३.	५।४।४६
दुर्योधनासन ३.	३।६।२२७
दुर्वर्ण १. २. ३.	७।५।४५
दुर्वासस् १.	३।६।१५६
दुर्विध १. २. ३.	५।४।६०
" १. १. ३.	७।४।१३
दुर्विनीतक १. २. ३.	३।७।१०७
दुर्हृद् १.	३।७।४३
दुल १.	५।३।५३
दुली २.	४।१।५१
दुश्चर्मन् १. २. ३.	५।४।१५
दुश्च्यवन १.	१।२।१
दुष्कृत ३.	३।३।१६८
दुष्टसाक्षिन् १. २. ३.	३।८।९
दुष्टु ४.	८।८।१३
( दुष्टु )	
दुष्प्रधर्षिणी २.	३।३।१०२
दुष्पम ४.	८।८।१३
दुस्पर्श १.	३।३।१२६
दुस्पर्शा २.	३।३।१०६

वैजयन्तीकोषः

दुहितृ २.	४।४।४०
दूत १.	२।१।३४
" १.	३।७।२९
दूती २.	४।४।२४
दून १. २. ३.	५।४।९८
दूर ३.	५।४।१४२
दूरदर्शिन् १.	२।३।३०
" १.	३।६।२३५
दूर्वा २.	३।३।२३२
दूषक १.	३।७।४१
दूषणारि १.	१।१।२१
दूषिका २.	३।६।४७
" २.	४।४।९५
दूष्य ३.	४।३।१२५
" ३.	४।४।११८
दूष्याङ्गी २.	३।३।३४
दृक्छद् १.	४।४।९५
दृक्श्रवस् १.	४।१।६
दृगध्यक्ष १.	२।१।१३
दृगायुध १.	१।१।४३
दृग्लोमन् ३.	४।४।९५
दृढ ३.	३।२।३३
" ३.	३।३।२३२
" १.	५।३।५
" १. २. ३.	५।४।८४
" १. २. ३.	५।४।१३२
" १. २. ३.	५।४।१३७
" १. २. ३.	६।४।८
दृढच्युत् १.	३।६।१५७
दृढदला २.	३।३।२२४
" २.	३।३।२३०
दृढा २.	३।३।१७७
दृति १.	४।३।५९
दृब्ध १. २. ३.	५।४।११०
दृश् २.	४।४।९४
" २.	८।५।३७
" २.	८।९।२
दृशान १.	२।१।१४
दृशीकु १.	३।६।८१
दृश्य १. २. ३.	६।५।४२
दृषत्पुत्र १.	४।३।१६३

[ देवभिन्न ]

दृषद् २.	३।२।८
" २.	४।३।१६३
दृष्ट ३.	३।७।१४
दृष्टान्त १.	७।१।३२
दृष्टि २.	४।४।९४
" २.	६।२।१८
दृष्टिवन्ध १.	४।४।९२
देव १.	१।१।२
" १.	३।७।१५८
" १.	३।९।१०३
" १. २. ३.	८।९।४६
देवकुसुम ३.	३।८।१०३
देवखात ३.	४।२।५
देवगिरि १.	१।३।१२
देवच्छन्द १.	४।३।१३८
देवजग्ध ३.	३।३।२३४
देवजन १.	१।३।३
देवतरु १.	१।३।१४
देवता २.	१।१।५
देवतागण १.	१।३।८
देवताड १.	३।३।८६
देवतायतन ३.	४।३।२८
देवतार्चनतूर्य १. ३.	३।९।१३८
देवदारु ३.	३।३।७१
देवदाली २.	३।३।१६२
देवदण्ड १.	३।७।१७१
देवदुन्दुभि १.	१।२।७
" १	३।३।१२१
" २.	३।३।१९८
देवद्रीचीन १. २. ३.	५।४।९३
देवद्रव्यच् (ञ्) १. २. ३.	५।४।९३
देवधान्य ३.	३।८।५७
देवधूप १.	३।३।५३
देवन् १.	४।४।३३
देवन १.	३।९।६०
देवनन्दिन् १.	१।२।९
देवप्रेष्य १.	३।५।६२
देवभिन्न १.	४।१।१४

देवभूय ]

देवभूय ३.	३।६।२३७
देवमणि १. ३.	३।७।११०
देवमातृक १. २. ३.	३।१।४६
देवमारिष १.	३।३।१५१
देवमाली २.	३।३।१८४
देवयज्ञ १.	३।६।६३
देवयान १.	२।१।४५
देवयु १.	३।६।७८
देवयोनि १.	१।३।५
देवर १.	४।४।३३
देवरथ १.	३।७।१२६
" १.	३।९।६६
देवल १. २. ३.	३।६।११
देवधू २.	२।१।२
देववैद्य १ द्वि.	१।३।६
देवसभा २.	१।३।११
देवसिन्धु २.	४।२।२४
देवा २.	३।३।१०६
देवाग्नि १.	१।२।२२
देवाज १.	१।१।५३
देवाजीव १. २. ३.	३।६।११
देवार्ह ३.	३।२।२२
देवानाम्प्रिय १. २. ३.	५।४।२२
देविका २.	३।३।३४
देवी २.	३।३।११४
" २.	३।३।१३२
" २.	३।७।३१
" २.	३।९।४५
" २.	३।९।१०४
देवीकोट्ट १.	४।३।९
देष्ट १.	४।४।३३
देश १.	३।१।२१
देशान्तिक ३.	४।३।११५
देशरूप ३.	३।७।४८
( देशरूप )	
देशिक १.	३।८।१३
देश १. ३.	४।४।५२
देशमर्दन १.	४।४।१३८

शब्दानुक्रमणिका

देहलक्षण ३.	४।४।५४
देहलि १.	५।३।५६
देहली २.	४।३।४४
देहवारि ३.	४।४।१२०
दैतेय १.	१।३।९
दैत्य १.	१।३।९
" १.	३।३।१७६
" ३.	३।३।२३२
दैत्यक्षय १.	४।१।१
दैत्यदेव १.	१।२।१८
दैत्यमर्दन १.	३।३।२०८
दैत्या २.	३।८।९८
दैत्यारि १.	१।१।१०
दैत्य ३.	३।६।१८३
दैर्घ्य ३.	५।२।५
दैव ३.	३।६।१८९
दैवज्ञ १.	३।७।२५
दैवज्ञा २.	४।१।३०
" २.	४।४।११
दैवत ३.	१।१।५
दैवपर १. २. ३.	५।४।३०
दैविक ३.	३।८।१२
दैष्ट ३.	३।६।८९
( नैष्ट )	
दोलक ३.	४।२।३९
दोला २.	३।७।३३६
" २.	३।७।३३७
दोलिका २.	३।७।३३७
दोशिखर १.	४।४।७१
दोष १.	३।६।१९३
दोषग्रह १.	३।३।४२
दोषज्ञ १. २. ३.	४।४।१४४
" १.	७।१।३२
दोषदर्शिन् १. २. ३.	५।४।३४
दोषप्रणालिका २.	५।४।११६
दोषा ४.	८।८।७
दोस् १. ३.	४।४।७१
" १. ३.	८।९।३१
दोहल ३.	३।४।६१

[ द्रविण ]

दोहल ३.	३।६।१८०
दोन्दुभि २.	३।६।१९५
दोन्दुभी २.	३।६।५६
दोर्मत्य ३.	५।२।४
दोवारिक १.	३।७।२४
दोष्यन्त १.	३।५।६७
" १.	३।५।७२
दोहित्र १.	४।४।४५
दोहद ३.	३।६।१८०
द्यावापृथिवी २.	३।१।५
द्यु १.	२।१।५६
" १.	८।१।६०
द्युचर १.	१।३।४
द्युमणि १.	२।१।११
द्युमत् १.	२।१।१२
द्युमयी २.	२।१।२३
द्युमन ३.	३।८।७३
" ३.	८।३।१५
द्युवन् १.	६।१।२७
द्युवर्धकि १.	१।३।६
द्युत १. ३.	३।९।५९
द्युतकारक १.	३।९।५९
द्युतकृत् १.	३।१।५८
द्यो २.	१।१।१
" २.	८।२।१७
द्योत १.	१।२।३१
द्योतन ३.	७।३।१८
द्योता २.	३।६।५१
द्रक्षण ३.	५।१।४८
द्रङ्ग ३.	४।३।४
द्रप्स १.	२।२।८
" ३.	३।८।१४२
द्रमिड १.	३।५।५६
द्रमिल १.	३।५।१०२
( द्रविड )	
द्रव १.	३।६।१२६
द्रवक्षेप १.	५।२।४०
द्रवण ३.	५।३।१
द्रवन्ती २.	३।३।११३
द्रविण ३.	३।८।७३
" ३.	८।३।१५

द्रव्य ]

द्रव्य ३.	६३११५
द्रव्यपद १.	५३११
द्राक् ४.	८८८१
द्राक्षा २.	३३११८१
द्राक्षाफल १.	३३३२७
द्रागभृत् ३.	४२१४
द्रावण १.	३३३४२
” १.	३३८१२४
द्राविडक १.	३३३१६७
द्राविल १.	३३६१५९
द्रु १.	३३३४
द्रुकिलिम ३.	३३३७१
द्रुघण १.	११११९
” १.	३३७१७१
” १.	७१३३०
द्रुण ३.	३३७१७२
द्रुणा २.	३३७७८
द्रुणी २.	४११५१
द्रुत ३.	३३११२३
” १. २. ३.	४३३५५
” १. २. ३.	५४१२४
” १. २. ३.	६४४८
द्रुति २.	५३११
द्रुम १.	३३३४
” १.	३३३८५
द्रुमश १.	४३३४७
द्रुमामय १.	४३३१५३
द्रुवय ३.	५११६४
द्रुह १.	३३५२६
द्रुहिण १.	१११७
” १.	७१३३२
द्रुण १	४१३३२
द्रुक्काण १.	२११५१
द्रुण १.	२३३१७
” १. ३.	५११५५
” १.	५११६३
” १. ३.	६१५४०
द्रुणक्षीरा २.	३३४५०
द्रुणदुग्धा २.	३३४५०
द्रुणपुष्पिका २.	३३३१२४
द्रुणमुख ३.	४३३३

वैजयन्तीकोषः

द्रौणिका २.	३३३१२४
द्रौणी २.	४२११५
” २.	६१२१८
द्रोह १.	३३५९
द्रौणिक १. २. ३.	३३८२१
द्रुन्द ३.	५११५५
” ३.	६३३१६
द्रुय ३.	५१११५
द्रादश १. २. ३.	५११२१
द्रादशात्मन् १.	२१११०
द्रादशाह १.	३३६१४४
द्रापार १.	२११९२
” ३.	३३९६२
” १.	७१३३०
द्वार २.	४३३४२
” २.	८२११६
द्वार ३.	४३३४२
द्वारका २.	४३३६
द्वारपटल ३.	४३३५०
द्वारपाल १.	३३७२४
द्वारबन्ध १.	४३३४३
द्वारयन्त्र ३.	४४४७९
द्वारवती २.	४३३६
द्वारवतीपद ३.	३३११९
द्वारस्थ १.	३३७२४
द्विः(-स्) ४.	८८८६
द्विक १.	२३३१५
” ३.	३३७१०
द्विकालिक १. २. ३.	
द्विखण्डक १.	४३३१२७
द्विगुणाकृत १. २. ३.	
द्विज १.	३३३३
” १.	४३४७८
द्विजकुत्सित १.	३३३५५
द्विजन्मन् ३.	३३५५७
(विजन्मन्)	
” १.	७१३३१
द्विजपोत १.	३३११
द्विजाति १.	७१३३१

[ द्वैगुणिक

द्विजायनी २.	३३६२०
द्विजालय ३.	४३४८६
द्विजिह्व १. २. ३.	७५४४५
द्वितय ३.	५१११५
द्वितीय १. २. ३.	५११२०
द्वितीया २.	२११७०
” २.	४३३३४
द्वितीयाकृत १. २. ३.	
द्वित्र १. २. ३.	५१३२५
द्विधा ४.	८८८२०
द्विधागति १.	४११४७
द्विनग्ननक १. २. ३.	
द्विप १.	३३७६०
” १.	८६१५५
द्विपद १.	११११९
द्विपाद् १.	३३५१
द्विसुखी २.	४११२०
द्विसुष्टिक १.	५११५२
द्विरद १.	३३७६०
द्विरसन १.	४११४
द्विरेफ १.	२३३४२
द्विवेदिनी २.	२११७६
द्विष् १.	३३७४१
द्विषत् १.	३३७४०
द्विषन्तप १. २. ३.	
द्विकृष्ट १. २. ३.	३३८२३
द्विसीत्य १. २. ३.	
द्विहृत् १. २. ३.	३३८२३
द्विहायनी २.	३३४४५
द्वीप १. ३.	४२३३३
द्वीपवत् १. २.	८५२९
द्वीपिन् १.	३३४३
द्वेधा ४.	८८८२०
द्वेषण १.	३३७४१
द्वेषिन् १.	३३७४१
द्वेष्य १. २. ३.	५३३६९
द्वैगुणिक १. २. ३.	३३८८

द्वत ]

द्वत ३.	५१११५
द्वध ३.	३३७६
द्वधम ४.	५१८२०
द्वप १. २. ३.	३३७१२८
द्वपायन १.	१११३२
द्वमातुर १.	१११५४
द्वयाचित ३.	५११६२
द्वयाढक १. ३.	५११५५
द्वयायोग ३.	२११९२
ध	
धटिक १. ३.	५११६०
धटिनी २.	३३६१८
धन ३.	३३८७३
धनञ्जय १.	८११२४
धनद १.	११२५६
धनवत् १. २. ३.	५३४५७
धनाध्यत् १.	११२५६
धनाया २.	३३६१८०
धनिन् १.	११२५६
” १. २. ३.	५३४५७
धनिष्ठा २ ब.	२११४१
धनीयिका २.	३३८४९
धनु (धनुःपट) १.	३३३५७
” १. २.	३३७१७२
” २.	६२१९
धनुर्ग्रह १.	३३१५३
धनुर्दण्ड १.	३३१५७
धनुर्धर १. २. ३.	
धनुर्वेद १.	३३६३०
धनुश्श्रेणी २.	३३३११४
धनुष्पाणि १.	१११२२
धनुष्मत् १. २. ३.	
धनुस् ३.	३३१५५
” ३.	३३१५७
” १. ३.	३३७१७२
” १.	८६१५५
धनोत्पत्ति २.	३३७४४
धन्य १. २. ३.	५३३५६
धन्या २.	३३३१०४

शब्दानुक्रमणिका

धन्या २.	३३८४९
धन्याक ३.	३३८५०
धन्येय ३.	३३८५०
धन्वन् १.	३३२४२
” ३.	३३७१७२
धन्वन्तर ३.	३३१५७
धन्वन्तरसहस्र ३.	३३१६२
धन्वन्तरि १.	८१३२५
धन्वयास १.	३३३१२६
धन्ववन १.	३३५३३
धन्विन् १. २. ३.	
धमन १.	३३३२२८
” १.	४३४९१
धमनी २.	३३८१०१
” २.	४३४११६
धम्मिल्ल १.	४३४१००
धयन ३.	४३३१०४
धर १.	३३९९
धरण ३.	५११४४
धरणी २.	३३१२
धरणीधर १.	११११३
धरा २.	३३१२
” २.	३३३१३१
धरासुत १.	२१३३१
धरित्री २.	३३१२
धरीक १.	४११२८
धरुण १.	७१३३२
” ३.	८३३१८
धर्म १. ३.	३३६१६८
” १.	३३७१५८
” १.	५२११
” १. २. ३.	६१५४२
धर्मद्वी २.	४२२५
धर्मपत्तन ३.	३३८७९
धर्मपाल १.	३३७१५८
धर्मभ्रातृ १.	३३६२४
धर्ममाणव १.	३३६२३
धर्मराज १.	११३३३
” १.	१२३३५
धर्षण ३. २.	७१५४८

[ धारण

धर्षणी २.	३३६४६
” २.	७१५४८
धव १.	३३३१७
” १.	४३४३७
” १.	६१३२७
धवल ३.	५३३१०
” १. २. ३.	७१५४९
धवला २.	३३४४३
धवित्र ३.	४३३१५९
धातकि २.	३३३९७
धातु १.	४३४१११
” १.	६१३२८
धातृ १.	१११६
” १.	८६११
धातृपुष्पिका २	३३३९७
धात्री २.	३३१२
” २.	३३२१७७
” २.	६१११९
धानका २.	५११४०
धाना २.	३३८४९
” १ ब.	४३३७१
” २.	६२११९
धानी २.	३३६६०
धानुष्क १. २. ३.	
धान्य ३.	३३७१४३
” ३.	३३८३१
” ३.	३३८५१
धान्यकोष्ठ १.	४३३६४
धान्यमञ्जरी २.	३३८६४
धान्यराशि १.	३३८६५
धान्यवृद्धि २.	३३८५
धान्या २.	३३८४९
धान्याम्ब ३.	४३३८३
धान्योत्क्षेपण ३.	५२१६१
धामन ३.	४३३१७
” ३.	६३३१६
धामार्गव १.	३३३११५
” १.	३३३१६२
धारकदाह ३.	४३३४०
धारका २.	४३३६३
धारण ३.	५११५९

[ धारणा ]

धारणा २.	३१६२३१
" २.	३१६१५५
" २.	४३१४०
धारणी २.	३३३१७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३१७११८
" २.	३१७१८६
" २.	४२१३०
" २.	६२१२०
धाराग्र ३.	७३११८
धाराट १.	७११३३
धाराधर १.	२१२११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३१७१४६
धार्तराष्ट्र १.	२३१७
धार्मिक १.	३१६२३
" १.	३१७२०
धावन २. ३.	७५१४९
धावनी २.	३३३१३६
धिक् ४.	८१७५
धिवकृत १. २. ३.	५४१७१
" १. २. ३.	५४१११०
धिविक्रया २.	५२१२१
धिग्वन १.	३१५१७
धिग्वनक १.	३१५६
( धिश्चनक )	
धिषण १. २.	७५५५०
धिष्ण्य ३.	२११३८
" १. ३.	६५१४३
धी २.	३१६१६३
धीकर १.	३१९१६
( अधीङ्कर )	
धीकर्मिक १.	३१७२०
धीता २.	६२१२०
धीति २.	४३११०४
धीमक ३.	३२१३३
धीमत् १.	३१६२३४
धीमती २.	४४१२१
धीर १. २. ३.	३१७१५०
" १. २. ३.	५४१२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५४१५२
" १. २. ३.	६५१४४
धीरा २.	३३३१३१
धीवर ३.	३२१३३
" १.	३५१२६
" १.	३५१८२
" १.	३९१४२
धुत्तिम ३.	३१८१४५
धुत १. २. ३.	५४१९५
धुत्तर १.	३३३७६
धुनी २.	४२१२३
धुर् २.	३१७१३०
" २.	८२११७
धुरण १.	५११४३
धुरन्वर १.	३३३९४
" १. २. ३.	३४१६७
धुरीण १. २. ३.	३४१६७
धुर्धर १.	३३३७७
धुर्य १. २. ३.	३४१६७
धुर्यावर्तिक १. २. ३.	३३३१३३
धुर्वी २.	३१७१३०
धुस्तर १.	३३३७६
( धुत्तर )	
धुङ्क्षणा २.	२३३१८
धूत १. २. ३.	५४११०१
" १. २. ३.	६४१८
धूप १.	१२१२८
धूपायित १. २. ३.	५४१९८
धूपित १. २. ३.	५४१९८
धूम १.	१२१२८
" १.	८११५
धूमक १. २. ३.	२२११०
धूमकेतु १.	१२११६
" १.	८११२५
धूमज १ ब.	२११३७
धूमयोनि १.	२२११
धूमल १. ३.	३१९१३८
" १.	५४१२१
धूमवर्णा २.	१२१३०

[ धैवत ]

धूमिका २.	२२११०
धूमोर्णा २.	१२१३६
धूम्या २.	५१११४
धूम्र १.	५३१८
" १.	५३१२१
धूम्रकर्ण १.	३४१६६
धूम्राट १.	२३१२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३२१३६
" १.	३३३६०
" १.	३३३६१
" १.	३३३७६
" ३.	३१८११५
" १.	३१९५८
" १. २. ३.	५४१२४
धूर्तार १.	३३३६०
धूलि २.	३१८२५
" २.	८६११७
" १. २.	८९१२६
धूलिजङ्घ १.	२३३१६
धूलिध्वज १.	१२१४९
धूलिभक्त ३.	३३३५६
धूलिलुटित ३.	३१७१११
धूलीकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३९१२७
" १.	५३११४
धृति २.	१११४७
" २.	३३३१६६
" २.	३१७२०८
" २.	६२१२०
धृष्ट १. २. ३.	५४११७
धृष्टा २.	३३३५०
धृष्णु १. २. ३.	५४११७
" १. २. ३.	६४१९
धेनु २.	३३३५०
" २.	३१७७०
धेनुप्या २.	३३३५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३१७२०८
धैवत १.	३१९१३२

धारण ]

धारण १.	२३३६
" ३.	३१७१२३
धौरी २.	३३३५७
धौत १. २. ३.	३१७१९७
धौतकौशेय ३.	४३३११८
धौतयुग्म ३.	४३३१२०
धौरण १. २. ३.	३१७१२१
धौरित १. २. ३.	३१७१२१
धौरितक १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	३१७१२१
धौरैय १. २. ३.	३३३५७
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१
ध्यान ३.	३३३२३२
ध्यामक ३.	३३३२३४
ध्रुव १.	३१७१३१
" १. २. ३.	६५१४४
ध्रुवा २.	३३३१९६
" २.	३३३१००
" २.	३३३१००
ध्रुणा २.	२३३२
ध्रुवज १. ३.	३१७१३३
" १. ३.	६५१४३
" १. ३.	८६१५
ध्रुवजप्रहरण ३.	१२१४८
ध्रुवजिन् १.	३१९४४
ध्रुवजिनी २.	३१७५५
ध्रुवनि १.	२३३१
ध्रुवस्त १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	५४११०२
ध्रुवाङ्क १.	२३३१७
" १.	६११२७
ध्रुवाङ्गी २.	२३३१
ध्रुवान १.	२३३१
ध्रुवानका २.	५११४९
ध्रुवान्त ३.	२११६४
ध्रुवान्तमणि १.	२३३४७
न	
न ४.	८१७५
नःक्षुद्र १. २. ३.	५४१११

शब्दानुक्रमणिका

नकुटक ३.	४४१९१
नकुल १.	४४१२७
नक्तक १.	२३३२३
" १.	५३३१३०
नक्तञ्चर १.	२३३२२
नक्तम् ४.	८१८१७
नक्तमाल १.	३३३६२
नक्र १.	४११५३
नक्षत्र ३.	२१३३८
नक्षत्रकालिक १. २. ३.	३३३१२७
नक्षत्रनेमि १. २. ८५२२६	
नक्षत्रमाला २.	३१७१८७
" २.	४३३१४२
नख ३.	३१८१०१
" १. ३.	४४१७५
नखर १. ३.	४४१७५
नखरायुध १.	४४१७२
नखशास्त्र १.	८६३२३
नखायुध १.	४४१७२
नखारुस ३.	४४१११७
नगा १.	३३३५
" १.	३१८१०४
" १.	८११५८
नगर ३.	४३३११
नगरद्वारकुट्टक १.	४३३१५
नगरी २.	४३३११
नगाधारा २.	३३३३
नगन १.	३३३७३
" १. २. ३.	५४११५
" १.	६१३३१
नगनहू १.	३१९५०
नगना २.	४४११०
नगनाट १. २. ३.	५४११५
नचक्र १.	३३३१९९
नट १.	३३३६९
" १.	३१५५५
" १.	३१५१०३
" १.	३१५६२
नटन ३.	३१९७८

[ नन्दिकेश्वर ]

नटभूषण ३.	३२११३
नटिति २.	३१९७८
नटी २.	३१८१००
नटोत्साहन ३.	३१९१३९
नट्या २.	५१११४
नडवत् १. २. ३.	३११४४
नडवल १. २. ३.	३११४४
नण्ड १.	३१९६३
नत १. २. ३.	५४१८३
" १. २. ३.	५४१२३
" १. २. ३.	६४१९
नतजानु २.	३३३४७
नतनास १. २. ३.	
नद १.	४२१२९
नदनु १.	२२१२
नदी २.	२२१२२
" २.	८१९३
नदीभव ३.	३१८१२०
नदीमातृक १. २. ३.	
नद्व १. २. ३.	३११४७
नद्ध १. २. ३.	५४१९७
नद्धी २.	३१९४४
ननन्द २.	४४१२७
ननान्द २.	४४१२७
ननु ४.	८१७२२
" ४.	८१८२
नन्दक १.	११११७
नन्दथु १.	३३३१८८
नन्दन ३.	१२११०
" १.	३३३१०२
" १.	४४३२९
" १.	८१९१४
नन्दनीनन्दन १.	३३३१५८
नन्दयन्ती २.	१११६०
नन्दा २.	१११६०
" २.	३३३१७७
नन्दि २.	३३३१८८
नन्दिक १.	३३३५८
नन्दिका २.	१२१११
नन्दिकेश्वर १.	१११५१

नन्दिन् ]

नन्दिन् १.	१११५१
" १.	३१०३५
नन्दिनी २.	१११६०
" २.	३३१७८
" २.	३१०८८
" २.	४३१११
" २.	४४४२७
नन्दिवर्धन १.	१११४४
" १.	२११७३
नन्दिस्वरस् ३.	२११११
नन्दीचारी २.	३१११४२
नन्दीमुखी २.	३६१२००
नन्द्यावर्त १.	३३११९४
" १.	४३३३०
नपुंसक ३.	४४४३
नप्तृ १.	४४४४५
नप्र १.	३११६३
नभःप्राण १.	१२१४८
नभस् ३.	२१११
" ३.	२११८४
नभस १.	७११३३
नभसङ्गम १.	२३३२
नभस्य १.	२११८५
नभस्वत् १.	१२१५०
नभोज्ञण १.	३३११९४
नभोजात १.	१२१५०
नभ्राज् १.	२२११
नमः (-स्) ४.	८८११४
नमत ३.	४३११६६
" १.	७११३५
नमसित १. २. ३.	५४११०५
नमस्कार १.	३६३३९
नमस्कारी २.	३३३१४८
नमस्या २.	३६३३९
" २.	३६३३९
नमस्थित १. २. ३.	५४११०५
नम्र १. २. ३.	५४१८३
नय १.	५२३३२
नयन ३.	४४४९४

वैजयन्तीकोषः

नयनोदक ३.	३११८७
नर १.	३१५१
" १.	६१२२९
नरक १.	१२३३७
नरकाराति १.	१११२५
नरकीलक १. २. ३.	३६३१२
नरकोलि २.	३३३८९
नरदेव १.	३१७२
नरनारायण १.	१११३०
नरवाहन १.	१२१५७
नरेन्द्र १.	३१७२
" १.	७१३३७
नर्तक १.	३११६३
नर्तन ३.	३११७३
नर्तनप्रिय १.	२३३३८
नर्मदा २.	४२३२६
नर्मन् ३.	३११८८
नल १.	३३३२२८
नलक ३.	४३३१२५
" ३.	४४४११६
नलकूबर १.	१२१५९
नलतीर ३.	४४४५९
नलद ३.	३३३२३१
नलमीन १.	४११४५
नलान्तर १.	३११६१
नलिक ३.	४३३१२५
नलिन ३.	४२३३८
नलिनी २.	४२३४३
" २.	७२३१०
नलिवाह १.	३१७११७
नली २.	३१०१००
नल्व १.	३११६०
नल्वल ३.	५११५६
नल्विक १.	३११६०
नव १. २. ३.	५४१८८
नवति २.	५११२७
नवनीत ३.	३१०१३८
नवम १. २. ३.	५११२०
नवमालिका २.	३३३१८६
नवश्री १. २. ३.	४३३११९

[ नागवारिक ]

नवांशुक ३.	४३३१२०
नवीन १. २. ३.	५४१८८
नव्य १. २. ३.	५४१८८
नसिक १.	४४३३८
नश्यत्प्रसूति ४.	४४३२०
नश्वर १. २. ३.	२३११९
नष्टा २.	३६३४८
नस २.	३१५२३
नस्त ३.	४४११४०
नस्तित १. २. ३.	३३४५७
नस्य ३.	४४११४०
नस्योत १. २. ३.	३३४५७
नहुष १.	३१५१
नाक १.	११११
" १.	६१२२९
नाकु १.	३११४८
नाकुल ३.	३६३२१८
नाकुली २.	३१८१८
नाकुसुदमन् १.	४११६
नाग ३.	३२३३०
" ३.	३२३३२
" १.	४११४
" १.	६१३३०
नागकेसर १.	३३३८२
नागजिह्वा २.	३२३१२
" २.	३३३१३९
नागजीवन ३.	३२३३१
नागदन्त १.	४३३५३
नागदन्तक ३.	३६३२१४
नागदन्ती २.	३३३१०९
नागपाश १.	३१७१९६
नागबला २.	३१८६१
नागमातृ २.	३२३१२
नागर १.	३३३६१
" १. २. ३.	७५५५०
नागरङ्ग १.	३३३३६
नागराज १.	४१३३
नागरी २.	३३३१३७
नागलोक १.	४१११
नागवल्ली २.	३३३१४०
नागवारिक १.	८११५३

नागवीथिका ]

नागवीथिका २.	२११४६
नागवृन्तिका २.	३३३१२६
नागाङ्क ३.	४३३८
नागी २.	२११६
नागोदरी २.	३१७१५४
नागोद्भव ३.	३१८११८
नाटक ३.	३१९१००
नाटकी २.	३१९७३
नाटिका २.	३१९१००
नाट्य ३.	३२३२८
" ३.	३१९११
" ३.	६३३१७
नाट्यधर्मिका २.	३१९७२
नाटयोक्त ३.	३१९७२
नाडिजङ्घ १.	२३३१६
नाडिन्धम १.	३१९१६
नाडी २.	२११५४
नाडीम्रण १.	३१८१३३
नाथ १. २.	६१५७५
नाद १.	२३३१
नादेय ३.	३१८१२८
नादेयी २.	३३३९६
" २.	३३३१९९
नाना ४.	८१७२२
" ४.	८१८४
नानीकर १. २. ३.	५४४४८
नानीकवाच १. २. ३.	५४४४८
नानीपात १.	४११२०
नान्दी २.	३१९६९
" २.	३१९१३३
नापित १.	३१९२६
नापितकोलिका २.	४४४९६
नाभि २.	४४४६६
" १.	६१३३०
नाभिका २.	३१७१३५
नाभिज १.	१११९
नाभिनाला २.	४४४९
नाभी २.	४४४६६

शब्दानुक्रमणिका

नाभीद ३.	३११५
नाभील ३.	७३३१९
नाम ४.	८१७२३
नामकर्मन् ३.	३६३३
नामधेय ३.	३१३३१
नामन् ३.	३१३३१
नामवर्जित १. २. ३.	५४२२१
नामशास्त्र ३.	३६३३१
नाय १.	३२३३२
नायक १.	४३३१४३
" १. २. ३.	५४४५७
नार ३.	३१११३
नारक १.	१२३३७
" १.	१२३३८
नारकी २.	२१३६
नारङ्ग १.	३३३३६
नारद १.	३३३७
नारसिंही २.	११३६४
नाराच १.	३१७१८०
नाराची २.	३१९१९
नारायण १.	११११०
" १. २.	८५११०
नारी २.	३३३८१
" २.	४४४४
नार्यङ्ग १.	३३३३६
नाल १. २. ३.	३१८१८
" १. २. ३.	३१८६३
" १. २. ३.	४२३४२
" ३.	६३३१७
" १, २. ३.	८१९३८
नालक ३.	४३३१२५
नाला २.	४२३४२
नालिका २.	३११५८
" २.	३११५८
" २.	३६३९५
" २.	३१७११०
" २.	३१७११७
" २.	३१९१७२
" २.	७२३११
नालिकेर १.	३३३२२०

[ निकाय्य ]

नाली २.	३१८६३
" २.	४४४११६
" २.	८१९३८
नालीकर १. २. ३.	५४४४८
नालीकवाच् १. २. ३.	५४४४८
नावन ३.	४४४१४०
नावारोह १. २. ३.	४२३१९
नाविक १.	३१५३८
" १.	३१५३००
" १. २. ३.	४२३१९
नाव्य १. २. ३.	४२३२०
नाश १.	३१७२१०
" १.	६३३३१
नासत्य १ द्वि.	१३३५
नासत्यद्वय १ द्वि.	१३३५
नासा २.	४३३४०
" २.	४३३४५
" २.	४४४९१
नासाग्र ३.	४४४९२
नासारज्जु २.	३१७११२
नासिका २.	४४४९१
नासिकापुट १.	४४४९१
नासिकामल १.	४४४९२
नासिक्य १ द्वि.	१३३६
नासिर १. ३.	३१७२०३
नासू २.	३१९१३३
नास्तिक १. २. ३.	५४३३८
नि ४.	८१७५
निंसन ३.	४३३१७१
निकट ३.	५४४१४०
निकर १.	५१३२
निकर्षण ३.	४३३३१
निकष १.	३१९१९
निकषा ४.	८१८१५
निकामम् ४.	४३३१०४
निकाय १.	५११४
निकाय्य १.	४३३१८

## [ निकार ]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३७१२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४११२२
निकुञ्चिन् ३.	३६५११
निकुञ्ज १. ३.	३२१२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४३११७
निक्रण १.	२४१११
निक्राण १.	२४१११
निक्रप १.	३८११२
निखर्व ३.	५११२८
” ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३६१९५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४४१८३
निगल १.	३७१८३
निगाल १.	३७१९०
निगूढक १.	३८१३८
निगूढचरण ३.	३६१२१२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३९११८
निघण्टु १.	३६१३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३९१२०
निघृष्टा २.	३६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निचित १. २. ३.	५४११५
नितुल १.	३३१६७
निचोट १.	३७१८४
निचोल १.	३३१४१
” १.	४३१२६
” १.	४३१२८
निज १. २. ३.	३७१४३
” ३.	५२११

## वैजयन्तीकोपः

निज १. २. ३.	६४१९
नितम्ब १.	३२१८
” १.	४४१६४
” १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४४१४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
” १. २. ३.	५४१३०
नित्यशङ्किन् १.	३४११२
नित्यहोम १.	३६१७०
निदाघ १.	३९१८१
” १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानञ्च १.	४४१४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४१०८
निदिग्धिका २.	३३११०५
” २.	३३११०६
निदेश १.	३७१४७
” १.	७११३४
निदेशक १.	३११५९
निद्रा २.	३६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्रालु १.	३३११५०
” १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७१५५१
निधान ३.	१२१६०
” ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
( विधुवन )	
” १.	४३१७०
निन्दा २.	३११३३
” २.	६२१२१
निप १.	४६१५८
निपञ्चति २.	२११७०
निपात १.	३६१२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३८१२७

## [ निरञ्जना

निबर्हण ३.	३७१२१२
निबड १. २. ३.	५४१२६
निबिरीस १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३६१९५
” १. २. ३.	३९१२१
” १. २. ३.	५४१२२
निभृत् १. २. ३.	५४१३२
निमय १.	३८१७१
निमित्त ३.	७३११८
” १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३७१९०
निमिष ३.	३९१९०
निमीलन ३.	३३१२०१
” १.	३९१९०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३३१३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३३११७८
निम्ब १.	३३१७५
नियति २.	७२११२
नियन्तृ १.	२७१३८
नियम १.	३६११४
” १.	३६१२०९
” १.	५२१३७
” १.	७११४०
नियमोज्झति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३३१२३२
” ३.	५११२८
” ३.	५११३०
” ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३७१२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३९१२
निर् ( निस् ) ४.	८७१५
निरञ्जन १.	३३११२
निरञ्जना २.	११११६
” २.	२११७२

## [ निरन्तर ]

निरन्तर १. २. ३.	५४१२६
निरय १.	१२१३७
निरर्थक ३.	५२१६
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७
निरसन ३.	३४१२१३
निरस्त १. २. ३.	७४११३
निराकरिष्णु १. २. ३.	५४१४०
निराकार १.	५२१२३
निराकृति २.	३६१९
निरामय १. २. ३.	४४१४३
निरायस १.	३४१६३
निरास १.	५२१२३
निरिणा २.	३६१४६
निरीष १.	३८१२८
निरुक्त ३.	३६१२८
” ३.	३६१३१
निरूपण १. २. ३.	८५१२
निरोध १.	७११३३
निर्भृति २.	१२१४२
निर्गमन ३.	५२११३
निर्गात ३.	३९१११०
निर्गण्डी २.	३३१११८
” २.	३३११८६
निर्ग्रन्थ १. २. ३.	५४११६
” १. २. ३.	७४११३
निर्ग्रन्थन ३.	३७१२३
निर्घात १.	२२१६
निर्ज १.	१११३
निर्झर १.	३२१७
निर्णय १.	३६११७६
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६
निर्णोक्त १.	३५१४५
निर्दय १. २. ३.	७४११५
निर्देश १.	३७१४७
निर्वन्ध १.	५२११४

## शब्दानुक्रमणिका

निर्भर १. २. ३.	५४१३१
निर्भर्त्सन ३.	८३१८
निर्मद १.	३७१६८
निर्माल्य ३.	४३१५६
निर्मुक्त १.	४११२०
निर्मोक १.	४११२१
निर्याण ३.	५२११३
” ३.	७३११९
निर्यातन ३.	८३१७
निर्याम १.	४२११९
निर्यास १.	३३१११
निर्यूह १.	४३१३१
” १.	४४१४३
” १.	७११३८
निर्लज्जा २.	३६१४६
निर्लिङ्ग ३.	८७११
निर्लेप ३.	४२१३८
निर्वपण ३.	३६११८
निर्वहण ३.	३९१०९
निर्वाण ३.	७३१२०
निर्वाद १.	२४१३३
निर्वापण ३.	३७१२३
निर्वार्य १. २. ३.	५४१७३
निर्वासन ३.	३७१२१
निर्विष १.	४११११
निर्विषा २.	४१११७
निर्वीरा २.	४३१२८
निर्वृति २.	७२११०
निर्वृत्त १. २. ३.	५४१११
निर्वेद १.	३६११६७
” १.	५२१३४
निर्वेदा १.	७११३९
निर्व्यथन ३.	४११२
निर्हरण २.	३७१९२
निर्हार १.	५२११७
निर्हाद १.	२४११
निलय १.	४३११८
निलम्प १.	१११२
निलम्पिका २.	३४१४२
निलवयनी २.	४११२१
निवर्तन ३.	३११६०

## [ निरशलाक

निवर्तना २.	५२११७
निवसथ १.	४३१२
निवसन ३.	४३११८
” ३.	४३११६
निवह १.	५११२
” १.	७११३४
निवहा २.	३३११८६
निवात १. २. ३.	७४११४
निवाप १.	३३१६४
निवीत ३.	३३१२१
” १. २. ३.	४३१२२०
निवृत्त १. २. ३.	५४१०८
निवृत्ति २.	७२१११
निवेश १.	५२११४
” १.	७११३३
निशरण ३.	३७१२१२
निशा २.	२११५७
निशाकर १.	२११२४
निशाकेतु १.	२११२५
निशाचर १. २.	८५११२
निशात १. २. ३.	३७१९७
निशादशिन् १.	२३१२२
निशानाथ १.	२११२४
निशान्त १. २. ३.	७५१५१
निशामणि १.	२३१४७
निशार १.	४३११२७
निशित १. २. ३.	३७१९७
निशीथ १.	२११६६
तिशिथिनी २.	२११५८
निशित्या २.	२११५८
निशुम्भन ३.	३७१२२
निश्रय १.	३६११७६
निश्रारक १. २. ३.	८५१११
निश्रेणि २.	४३१५१
निश्वास १.	३६१२०४
निशलाक १. २. ३.	५४११२०



निशेष ]	वैजयन्तीकोषः	[ नीलवृष
निशेष १. २. ३.	निष्ठा २. ६।२।२१	निस्स्पृहा २. ३।६।५०
५।४।८६	निष्ठान ३. ४।३।८५	निस्स्त्राव १. ४।३।७९
निशोध्य १. २. ३.	" ३. ४।३।११०	निस्स्वाध्याय १. २. ३.
५।४।६६	निष्ठीव १. ३. ५।२।३६	३।६।९
निश्रेयस ३.	निष्ठीवन ३. ५।२।३६	निहत १. २. ३. ३।६।३७
८।३।८	निष्ठुर १. २. ३. २।४।२१	" १. २. ३. ७।४।१३
निश्वास १. ३।६।२०४	" ३. ३।२।२७	निहनन ३. ३।७।२१२
निषङ्ग १. ३।७।१७८	" १. ५।३।५	निहित १. २. ३.
" १. ७।१।३४	निष्ठेवन ३. ५।२।३६	५।४।१०४
निषङ्गिन् १. २. ३.	निष्ठया २. २।१।४०	निह्व १. ७।१।३९
३।७।१४३	निष्ठयूत १. २. ३.	नीच १. २. ३. ३।६।३७
निषद्या २. ४।३।३४	७।४।१४	" १. २. ३. ५।४।२२
निषद्वर १. ३।८।२६	निष्ठचूति २. ५।२।३६	" १. २. ३. ५।४।६०
" १. २. ८।५।११	निष्णात १. २. ३.	" १. २. ३. ५।४।८१
निषध ७।१।३८	५।४।१९	" १. २. ३. ६।४।२०
निषाद् १. ३।५।४	निष्पक्क १. २. ३.	नीचुदार १. ३।३।५४
" १. ३।५।६९	५।४।११५	नीचैः (-स्) ४. ८।८।१९
" १. ३।५।७०	निष्पतिसुता २. ४।४।२०	नीड १. ३. २।३।४९
" १. ३।५।७२	निष्पत्राकृति २. ५।२।३८	" १. ३. ८।५।३६
" १. ३।५।८४	निष्पन्न १. २. ३.	नीडज १. २।३।४
३।५।१३२	५।४।४६	नीडिन् १. २।३।२
निषादिन् १. ३।७।८७	निष्पाव १. ४।२।४६	नीडोद्भव १. २।३।२
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	" १. ४।२।४६	नीप १. ३।३।६०
३।६।१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	नीर ३. ४।२।१
निषूदन ३. ३।७।२१२	४।३।१२०	नील १. १।२।६१
निष्क १. ५।१।४१	निष्प्रभ ४. ८।८।१३	" १. ३।४।१७
" १. ३. ५।१।४६	निसर्ग १. ५।२।१	" १. ५।३।११
" १. ३. ६।५।२०	" १. ८।५।३५	नीलक १. १।२।२९
निष्कला २. ४।४।१६	निसृष्ट १. २. ३.	नीलकण्ठ १. ३।३।१५५
निष्कासित १. २. ३.	५।४।११६	" १. ८।६।२२
५।४।७१	निस्तरुहण ३. ५।१।२१२	नीलकेशी २. ३।३।११०
निष्कुट १. ३।३।३	निस्तल १. २. ३.	नीलग्रीव १. १।१।४२
" १. ३।३।१४	५।४।८२	" १. ८।६।२२
निष्कुटी २. ३।८।८७	निष्पिंश १. ३।७।१६०	नीलजम्बूर १. ३।३।१४४
निष्कोटित १. ३.	" १. २. ३. ७।५।५१	नीलदंष्ट्र १. १।१।६७
३।५।१२२	निस्वन १. २।४।१	नीलपीतल १. ५।३।२१
निष्कोश १. ३।७।७७	निस्वान १. २।४।१	नीलपुष्प १. ३।८।५८
निष्क्रम १. ७।१।३६	निस्सङ्ग १. २. ३.	नीललोहित १. १।१।४०
निष्कृ १. ३।३।६२	३।४।२०	" १. ५।३।१९
निष्कृ १. ३।५।४६	निस्सङ्गजा २. ३।३।१८७	नीलवासस् २।१।३६
निष्कृ १. ३।५।४६	निस्सारण ३. ३।५।४१	नीलवृष १. ३।६।१२३
निष्कृ १. ३।३।१३५		
निष्ठा २. ३।५।१०९		

नीलशीर्ष ]	शब्दानुक्रमणिका	[ पक्षक
नीलशीर्ष १. ३।४।४१	नृपति १. ३।७।१	नौ २. ४।२।१५
नीलसितश्याम १. ५।३।१३	नृपलक्ष्मन् ३. ३।७।१६	" २. ८।२।१७
नीला १. २।३।५	नृपात्मजा १. ३।३।१७०	नौजीविन् १. ३।५।४२
नीलाङ्गा २. ४।१।३९	नृपात्मजा २. ३।३।१६७	नौतार्य १. २. ३. ४।२।२०
नीलाब्ज ३. ४।२।३५	नृपार्हक ३. ३।८।१५६	नौशिरस् ३. ४।२।१७
नीलाम्बर १. १।१।२४	नृलिङ्गक १. ३।५।११२	नौस १. २. ३. ३।६।१२७
नीलिक १. ३।५।१९	नृशंस १. २. ३. ५।४।२४	न्यक्ष १. २. ३. ६।४।९
नीलिका २. ३।३।१८६	नृसिंह १. १।१।१८	न्यग्रोध १. ३।३।२७
नीलिङ्गी २. ३।१।४२	नृसेन २. ३. ८।५।३४	" १. ४।४।८२
नीलिनी २. ३।३।११०	" २. ३. ८।५।३५	न्यग्रोधी २. ३।३।११३
नीली २. ३।३।११०	नेतृ १. ३।३।३७	न्यङ्कु १. ३।४।१५
नीलीराग १. २. ३.	" १. २. ३. ५।४।५७	" १. ६।१।३३
४।२।३४	नेत्र ३. ६।३।१७	न्यच् १. २. ३. ५।४।८५
नीलोपल ३. ४।२।३४	नेत्रपिण्ड १. ४।४।९५	" १. २. ३. ५।४।९३
नीवलक १. ३।५।२४	नेत्ररुज् २. ४।४।३३	न्यर्तुद ३. ५।१।२८
नीवाक १. ३।८।६६	नेम १. २. ३. ५।४।६६	न्यस्त १. २. ३.
नीवार १. ३।८।५७	" १. २. ३. ६।५।४७	५।४।१०४
नीवि २. ४।३।१३०	नेमि १. ३।४।६६	न्यस्तक १. ३. ३।८।१२
नीवी २. ३।८।७०	" २. ३।७।१३५	न्याद १. ४।३।१०२
नीघृत् १. ३।१।२१	" २. ४।२।८	न्याय १. ३।७।४८
नीघ्र ३. ४।३।३७	" २. ६।२।२१	" १. ३।८।१५
नीहार १. २।२।९	नेनिन् १. ३।३।४७	न्यायगण १. ३।३।२९
नु ४. ८।७।६	नेमीय १. ३।३।४७	न्याय्य १. २. ३.
नुत १. २. ३. ५।४।१०६	नेरिन् १. १।२।५२	५।४।१०३
नुति २. ३।१।३५	नैकृत १. २. ३. ५।४।२२	न्यास १. ३।८।१२
नुत्त १. २. ३. ५।४।९७	नैकृतिक १. २. ३.	न्युङ्क् १. २. ३. ५।४।३५
नुन्न १. २. ३. ५।४।९७	५।४।२२	न्युञ्ज १. ३।३।३७
नूतन १. २. ३. ५।३।८६	नैगम २. ३।८।७२	" १. २. ३. ५।४।११
नूतना २ ब. २।१।१८	" १. ७।१।३७	" १. २. ३. ५।४।९०
नून १. २. ३. ५।४।८६	नैगमेय १. १।१।५७	" १. २. ३. ६।५।४६
नूनम् ४. ८।७।२२	नैचिकी २. ३।४।४६	प
नूपुर १. ३. ४।३।१४५	" २. ३।४।६०	पक्ति २. ६।२।२२
नृ १. ३।५।१	नैपथ्य ३. ४।३।१३२	पक्तिका २. ३।८।४२
" १. ४।४।३	नैपाली २. ३।२।१७	पक्ष ३. ३।८।१४३
नृगालिक १ ब. ३।१।२८	नैयग्रोध १. ३।३।२२	" १. २. ३. ४।३।९३
नृङ्ग ३. ४।३।३	नैर्द्धत १. १।२।४०	" १. २. ३. ४।३।९५
" ३. ४।३।४	नैर्द्धती २. २।१।४	पक्षण १. ३. ३।५।३२
नृतु १. ३।५।६३	नैल ३. ३।१।८	पक्ष १. ३।१।७९
नृत ३. ३।५।७३	नैषध ३. ३।१।६	" १. २।३।४९
नृप १. ३।७।१	नैषिक १. ३।७।२१	" १. ६।१।३५
	नैषिक १. ३।७।२१	पक्षक १. ४।३।२४

पञ्चक ]

पञ्चक ३.	४३१४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२११३
पञ्चद्वार ३.	४३१४२
षष्ठभाग १.	३१७८१
पञ्चरचना २.	३१७८६
पञ्चशाला २.	४३१२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२३११
पञ्चिपोत १.	२३१४
पञ्चिबन्धन ३.	३११४२
पञ्चिल १.	३१११५९
पञ्चिशाला २.	४३१२१
पञ्चमन् ३.	४३१४५
” ३.	४३१५५
” ३.	६३११९
पञ्च १.	३१८२६
” १.	६१५४८
पञ्चक्रीडनक १.	३११४६
पञ्चज ३.	४३१२७
” ३.	८११४०
पञ्चरस १.	३११४७
पञ्चिल १. २. ३.	३११४३
पञ्चरेह ३.	४३१३९
पञ्चि २.	५११२४
” २.	५११२६
” ३.	५११३३
” २.	६३१२२
पञ्चु १. २. ३.	५११४४
पञ्चुल १.	३१७१०४
पञ्चन ३.	३१२२७
” ३.	५१२३२
पञ्चपञ्च १.	३३१८२
पञ्चपञ्चा २.	३३१२१३
पञ्चा २.	५१२३२
” २.	८११४

वैजयन्तीकोषः

पचि २.	११२१८
” २.	२३११८२
पज १.	३१११
पञ्चक ३.	३१७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८१६
पञ्चकोल ३.	३१८१३
पञ्चखार १. २. ३.	८११५४
पञ्चगृह १.	४११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६१५
पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२
पञ्चजन १.	३१५११
पञ्चजनीन १.	३१७२३
( पञ्चजनिनः )	
पञ्चत्व ३.	३१६२०२
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३१७१३
पञ्चम १.	३१११३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३१४३८
पञ्चलोह ३.	३१२२८
पञ्चवक्त्र ३.	८१६२२
पञ्चवायु १. २. ३.	३१६२०३
पञ्चशाख १.	४३१७३
पञ्चष १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४३११५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३१७२१३
पञ्चाङ्गुल १.	३३१६५
पञ्चामृत ३.	४३१९१
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३१४११
पञ्चिका २.	३११५९
पञ्चेषु १.	१११२८
पञ्चोषण ३.	३१८१९
पञ्जर ३.	२३१४९
पञ्जिका २.	११२३६
पट १.	३३१५७
” १. ३.	४३१११६
” १. २. ३.	८११३७

[ पणव

पटकुटी २.	४३११२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३११५७
” ३.	४३११२७
पटचोर १.	३११५७
पटल ४.	४३१३७
” १.	७५५२२
पटली २. ३.	५११६
पटवासक १.	४३११५७
पटह १. ३.	३१११३४
” १.	३१११३८
पटी २.	८१२३७
पटु १.	३३११६५
” १. २. ३.	३१७१४७
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१२३
” १. २. ३.	४३११४३
” १. २. ३.	५३१२६
” १. २. ३.	५३१५४
पटुच्छद १.	३३११६४
पटुञ्जिका २.	३३११४९
पटोलक १.	३३११६५
पटोली २.	३३११५९
पट्ट १.	३१७१५४
” १.	४३११४०
” १.	६११३४
पट्टन ३.	४३१३
” ३.	४३१३
पटबन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३१७१६४
पठि १.	३३१२३
पट्वीश १.	३१७८६
पण १.	३१८६९
” १.	३११६०
” १.	५११३८
” १.	५११३८
” १.	५११३९
” १.	५११४५
” १.	६११३४
पणव १.	३१११३४
” १.	७११५२

पणिक ]

पणिक ३.	३३१८८
” १.	४३१३४
पणित १. २. ३.	५३१०६
पणितव्य १. २. ३.	३१८६९
पणायित १. २. ३.	५३१०६
पण्ड १. २. ३.	३३१५९
” १.	४३१३
पण्डा २.	३३११६४
” २.	३३११६५
पण्डित १.	३३११३४
पण्य १. २. ३.	३१८६९
पण्यभू २.	४३१३५
पण्यवीथी २.	४३१३५
पण्यस्त्री २.	४३१२४
पण्याजीव १.	३१८७२
पतग १.	२३११
पतङ्ग १.	२३११
” १.	२३१४३
” १.	४११४०
” १.	७११४०
पतङ्गना २.	३१८४९
पतङ्गी २.	२३१४८
पतञ्जलि १.	३३११५७
पतत् १.	२३११
पतत्र ३.	२३१४९
” ३.	३३११७
” ३.	७३१२२
पतत्रि १.	२३११
पतत्रिन् १.	२३११
पतद्ग्रह १.	४३११६०
पतन ३.	३३११६
” ३.	३३११६
पतयालु १. २. ३.	५३१३८
पताक १.	४३१७९
पताका २.	३१७१३३
” २.	३१७१९३
पताकिन् १. २. ३.	३१७१४५

शब्दानुक्रमणिका

पताकिनी २.	३१७५५
पति १.	४३१३७
” १.	५३१५८
पतिवरा २.	४३१७
पतिघ्नी २.	३३१५३
पतित १. २. ३.	३१७२१९
पतितोत्पन्ना २.	३३१४९
पतिवर्नी २.	४३११४
पतिव्रता २.	४३१७
पतेर १.	४३१३
पत्तन ३.	४३१४
पत्ति २.	३१७५७
” १.	३१७१३९
” २.	४३११४९
पत्तिच्छेद १.	४३११४८
पत्तर १.	३३११५६
पत्नी २.	४३१२५
पत्नीसन्नहन ३.	३३१८९
पत्र १.	३३११६
” १.	६३१२०
” १. २. ३.	८११३२
पत्रक ३.	३१८१२८
” ३.	४३११४९
पत्रकूट १.	३१८१८४
पत्रणा २.	३१७१८६
पत्रताली २.	३३१२२४
पत्रपरशु १.	३११३५
पत्रपाश्या २.	४३११३६
पत्रफला २.	३१७१६४
पत्रमध्यसिरा २.	३३१३३
पत्ररथ १.	२३११
पत्ररेखा २.	४३११४९
पत्रल ३.	३१८१४३
पत्रला २.	३३१२२४
पत्रसारक १.	३१८१२८
पत्राङ्गुलि २.	३१८११५
पत्राङ्गुलि २.	४३११४९
पत्रिणी २.	४३१२८
पत्रिन् १.	२३११
” १.	३१७१७९
” १.	६११३२

[ पञ्चाख

पत्री २.	८११३२
पत्रोर्ण १.	३३१६८
” १.	४३१११८
पथिकृत् १.	११२२५
पथिन् १.	३११४९
पथ्या २.	३३११७८
पद् १.	४३१५६
पद् ३.	२११७
” ३.	४३१५६
” ३.	६३११८
पदपणिका २.	३३११३६
पदभञ्जना २.	३३६३१
पदवल्मीक १.	४३१३३३
पदवी २.	३३१४९
पदाजि १.	३१७१३९
” १.	७११५४
पदाति १.	३१७१३९
पदातिक १.	३१७१३९
पदिक १.	३११५१
पद्म १.	३१७१४०
पद्धति २.	५११२४
” २.	७२११५
पद्म १.	११२६०
” १. ३.	३३११९५
” ३.	३१७८२
” १. ३.	४३१३६
” ३.	५११३२
” ३.	५३११२
” १. २. ३.	६१५४८
” १.	८१६१२
पद्मकर्कटी २.	४३१४६
पद्मकासनिन् १.	३३६१११
पद्मचारिणी १.	३१८१८९
पद्मनाभ १.	११११५
पद्मपत्र ३.	३१८१८८
पद्मबन्धु १.	२११११
” १.	२११५६
पद्मा २.	३३११००
” २.	३१८११
” २.	३१८१९
पद्माक्ष ३.	४३१४६

पञ्चालया ]		वैजयन्तीकोषः		[ परिचित्त	
पञ्चालया २.	१२३६	परजात १	३१२२	पराचल १.	३२३
पञ्चामन ३.	१११७	" १. १. ३.	५४४९	पराचीन १. २. ३.	
" ३.	३६२०५	परतन्त्रक १. २. ३.		५४४९१	
पद्मासनिन् १. २. ३.			५४४२८	पराजक १.	३१५६
	३६१३४	परन्तप १. २. ३.	५३६९	पराजित १. २. ३.	३१७२१९
पद्मिन् १.	४२३३	परपिण्डाद् १. २. ३.	५४४९	पराजन १.	५३३४४
पद्मोत्तर ३.	३८१९१	परभाग १.	५२३	पराधीन १. २. ३.	
पद्य १. २. ३.	३११४७	परभृत् १.	२३१६	पराधन १. २. ३.	५४४२८
" १.	३१५१	परमन्यु १.	१२५	परान्न १. २. ३.	५४४९
पद्यमात्रिका २.	२४४४२	परमम् ४.	८८१७	पराभव १.	८१२६
पद्या २.	३११४९	परमात्मन् १.	३६१६१	पराभूत १. २. ३.	
पनस १.	३३३७४	परमान्न ३.	४३३७		३१७२९९
पनायित १. २. ३.		परमेश्वर १.	१११४१	परायण ३.	३६१४५
	५४१०६	परमेष्ठिन् १.	१११८	" ३.	८५१३
पनित १. २. ३.		परमेष्ठिनी १.	१११६०	परारि ४.	८८१०
	५४१०६	परम्पर १.	३४१५	परारिका २.	३३२०७
पन्न १. २. ३.	५४१०२	" १.	४४४६	पराधीन २.	३१३७
" १. २. ३.	५४११५	" १.	४४४६	पराधर्म १. २. ३.	५४१२९
पन्नग १.	४१६	परम्परा २.	५२३९	पराधीन २.	४३४४
पन्नगारि १.	११३८	परम्पराक २.	३६१९४	परावसु ३.	३६१४५
पपा २.	४४१३६	परम्परावाहन ३.		पराविद्ध १.	१२५७
पय १.	३११२४		३१७३७	" १.	३५१८
पयस् ३.	३८१४५	परवत् १. २. ३.	५४२८	" १.	४३३६
" ३.	४२२	परशु १.	३८१३१	पराशक १.	३३२३०
" ३.	६३२०	" १.	३१३५	पराशर १.	३६१५५
पयस्या २.	३६१९८	परशुभृत् १.	१११५४	परास ३.	३२३१
पयस्विनी २.	४२२२	परश्वः (-स्) ४.	८८१९	परासन ३.	३१७२१४
पयोगर्भ १.	२२२	परश्वध १.	३१३५	परासु १. २. ३.	३१७२२०
पयोण्ड १.	३३३७४	परस्पर १. २. ३.		परास्कन्दिन् १.	३१५६
पयोधर १.	८१२७		५४१२३	परि ४.	८१७२५
पयोवहा २.	४२२०	परस्वत् १.	३१११	परिकर १.	८१३३
पयोव्रत ३.	३६१४७	परा २.	३३१३४	परिकर्मन् ३.	४३११२
पर १.	३६१६१	" २.	३३२२१	परिकर्मिन् १.	३१३
" १.	३१७४१	" ४.	८१७२६	परिकर्ष १.	३१७७२
" ३.	३८१०५	पराक १.	३६१४४	परिकल्पना २.	३६१९६
" ३.	५१२९	पराकार १.	५२२१	परिक्रम १.	५२२८
" १. २. ३.	५४१४२	पराक्रम १.	३१७२०९	परिक्रूरा २.	३३१०५
" १. २. ३.	६५४९	" १.	८११५०	परिक्रोणा २.	३३२२१
परकुल १.	४११५४	पराग १.	७१४२	परिचित्त १. २. ३.	५४१०८
परच्छन्द १. २. ३.		पराच् ४.	५४१९१		

परिचेष ]		शब्दानुक्रमणिका		[ परेत	
परिचेष १.	८१३०	परिपेलव ३.	३३२०१	परिव्याण ३.	३६१०५
परिखा २.	४३१३	परिप्लव १.	२३१२	परिव्याध १.	३३३३०
परिगत १. २. ३.	८४३७	" १. २. ३.	५४७६	" १.	३३३७२
परिग्रह १.	२१३०	परिप्लविन् १.	२३३६	परिवाज् १.	३६१६०
" १.	४४५१	परिवर्ह १.	४३१५८	परिशाय १.	४३१६८
" १.	८१३०	" १.	८१२८	परिशुष्क ३.	४३३८८
परिघ १.	३१७३७	परिवृढ १. २. ३.	५४५८	परिषद् २.	३८१३
" १.	७१४१	परिभव १.	३६१७१	परिष्कार १.	४३१३३
परिघातन १.	३१७३७	परिभाषण ३.	८३१५	परिष्वङ्ग १.	४३१६९
परिचय १.	३१७९५	परिभोक्तृ १. २. ३.		परिसर १.	४३१२
" १.	५२३१		५४२५	परिसर्प १.	५२२८
परिचर १. २. ३.		परिमण्डल १.	३१७९९	परिसर्पा २.	५२२८
	३१७९९	" १. २. ३.	५४८२	परिस्कन्द १.	३१२
परिचर्या २.	३६३८	परिमल १.	५३५२	परिस्कन्ध ३.	४३१५८
परिचारक २.	३१२	" १.	८१२८	परिस्तोम ३.	४३१६६
परिचारिका २.	३१७३६	परिमोचिन् १.	३१५५	परिस्पन्द १.	४४५१
परिच्छद १.	३५८	परियष्ट १.	३६७४	परिस्नावी २.	४४१३१
" १.	४३१५८	परिरम्भ १.	४३१९४	परिस्नुत् २.	३१४५
परिजन १.	४४५१	परिवत्सर १.	२१९०	परिस्नुता २.	३१४५
परिजम् १.	२१२४	परिवर्जन ३.	३१७१४	परिहार १.	५२१७
परिणत १.	३१७७८	परिवर्त १.	३८७१	परिहक १. २. ३.	५४३०
परिणय १.	३६५४	" १.	८१२९	परिच्छा १.	३६१२२
परिणाम १.	५२२४	परिवसथ १.	४३२	परितत् १. ३.	४४११३
परिणाय १.	३१६१	परिवसित १. २. ३.		" १. ३.	८१३१
परिणाह १.	५२५		५४१०५	परिवाप १.	८१२९
परितः (-स्) ४.	८७३२	परिवाच् २.	२४३५	परिवार १.	३१७६८
" ४.	८८३	परिवाद १.	४२३२	परिवाह १.	४२३१
परिताप १.	४४१२२	" १.	३१२१	परिष्ट १.	३६७४
चरित्राण ३.	४३१०५	परिवादिनी २.	३१११७	परीष्टि २.	७२१५
चरित्राणी २.	३३१०९	परिवापण ३.	३६४	परीसार १.	५२२८
चरित्रेवन् ३.	२४२९	परिवार १.	४४५१	परीहास १.	३१८८
परिधान ३.	४३१२१	" १.	८१२८	परु १.	३४२९
परिधि १.	३४१९	परिवारक १.	४३६८	परुका २.	३३१०३
" १.	७१४१	परिवित्त १.	३६४३	परुत् ४.	८८१०
परिधिस्थ १. २. ३.		चरिवित्ति १.	३६४३	परुल १.	३१७९१
	३१७३१	परिवी २.	३१६०	परुष १. २. ३.	२४२१
परिपण ३.	३८७०	परिवृक्ति २.	३१३१	" १.	३३२२२
परिपत् १.	३८२६	परिवेत् १.	३१४२	" १.	५३३
परिपत्र ३.	४३१०३	परिवेष १.	३१५९	" १. २. ३.	७४२०
परिपन्थिन् १.	३१७४२	परिवेषक १.	२१३१	परुसू १.	३३११
परिपाटी २.	३६११४	परिवेषण ३.	४३१००	परेत १.	१२३३

परेत ]

परेत १. २. ३.	६।५।५२
परेतराज १.	१।२।३४
परेद्यवि ४.	८।८।९
परेष्टुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परौक्ष १. २. ३.	५।४।१३
परोवण्ट १.	३।७।१९८
परोष्णी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२१७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जन २.	३।३।२१२
पर्जन्य १.	७।१।४२
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।६।१२
पर्णक्ष १. २. ३.	३।६।१३१
पर्णशवर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णास १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्दन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परार २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।६।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्यनुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।७
पर्यन्तशू २.	४।३।१२
पर्यव १.	३।६।११४

वजयन्तीकोषः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थात् १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।६।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधात् १.	३।६।७४
पर्यास ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्यासम् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।६।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।६।७४
पर्युद्वञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।६।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।६।६२
" ३.	६।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पर्शु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्कष १.	३।८।११२
पलङ्कषार २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पलल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पलशत ३.	५।३।६०
पलशीनक १.	५।३।५०
पलाण्डु १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डुक १.	३।३।१५३
पलान्यन ३.	३।७।२१०
पलाल १. ३.	३।८।६४

[ पवित्र ]

पलाश ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन् १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पलुष १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	६।२।२३
पव १.	३।८।४६
( पल )	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	६।१।३३
" ३.	३।३।२२
" ३.	३।६।२०
" १.	३।८।५३

पवित्र ]

पवित्र ३.	४।२।४०
" १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।५।५८
पशु १.	३।४।३०
" १.	३।४।६२
" १.	३।४।७२
" १.	३।६।८४
" १.	३।६।११२
" ४.	८।८।२१
पशुगोयुग १.	५।१।१८
पशुपति १.	१।१।३८
" १.	८।१।२६
पशुबन्ध १.	३।६।८४
पशुसंस्कार १.	३।६।९३
पश्चात्ताप १.	३।६।१८५
पश्चात्सुन्दर १.	३।३।१५७
पश्चिम १. २. ३.	५।४।७७
पश्चिमाङ्ग ३.	४।४।६९
पर्यतोहर १.	३।९।५७
पष्टौही २.	३।४।४७
पांसु १.	३।८।२५
पांसुचन्दन १.	१।१।३८
पांसुज ३.	३।८।१२३
पांसुलवण ३.	३।८।१२२
पांसुला २.	४।४।१०
पाक १.	३।३।८३
" १.	३।८।४५
" ३.	५।२।४१
" १.	६।१।३३
" १.	८।९।१४
पाककृष्ण १.	३।३।८३
पाककृष्णफलः १.	३।३।८३
पाकपुटी २.	४।३।२३
पाकफल १.	३।३।८३
पाकफलकृष्ण १.	३।३।८३
पाकमण्डल ३.	३।९।२७
पाकयज्ञ १.	३।६।८३
पाकयज्ञिक १.	१।२।२७
पाकल १.	३।७।९१
" ३.	३।८।९९
पाकवर्तन ३.	५।२।४१

शब्दानुक्रमणिका

पाकशासन १.	१।२।३
पाकशुक्ला २.	३।२।१३
पाकु २.	८।९।३
पाक्य ३.	३।८।१२२
" ३.	३।८।१२४
पागल १.	३।५।१५
पाचन १.	५।३।२६
पाज १.	४।३।७६
पाञ्चजन्य १.	१।१।१७
पाञ्चमिक १.	५।१।५९
पाञ्चालिका २.	३।९।१४
पाट ४.	८।८।२
पाटल १.	५।३।१७
" १. २. ३.	७।५।५६
पाटला १. २. ३.	३।३।२३
पाटलि १. २.	३।३।९०
पाटलिङ्गिका २.	३।८।१९
पाटली २.	३।६।६२
पाटव ३.	४।४।१४२
पाटूर १.	२।१।७०
पाठक १.	३।३।२३
पाठा २.	३।३।१३१
पाठीन १.	४।१।४२
पाणि १.	४।४।७३
" १.	५।१।४९
" १.	८।६।९
पाणिक १.	५।१।३८
पाणिगृहीती २.	४।४।३५
पाणिग्रह १.	३।६।५५
पाणिघ १.	३।७।१
पाणिनि १.	३।६।१५४
पाणिन्युपज्ञ ३.	३।९।२१
पाणिपात्र १. २. ३.	३।६।१३२
पाणिमुक्त ३.	३।७।१९५
पाणिमूल ३.	४।४।७३
पाणिरूह १.	८।५।७६
पाणिवाद १.	३।९।७१
पाणिश १.	३।५।२०
पाण्डर १.	५।३।१०
" १.	५।३।१२

[ पाद ]

पाण्डिय १ ब.	२।१।३३
पाण्डु १.	३।३।२२२
" १.	५।३।१२
पाण्डुक १.	३।५।२७
पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३।७।१२९
पाण्डुभूम १. २. ३.	३।१।४५
पाण्डुल १.	५।३।१४
षाण्डुवर्णक १.	४।४।१३७
पाण्डुसोपाक १.	३।५।४३
" १.	३।५।१०६
पाण्ड्य १ ब.	३।१।३३
पात २.	४।४।५४
पातक ३.	३।६।१६८
पातन ३.	३।७।१७४
पाताल ३.	४।१।१
" ३.	७।४।२२
" ३.	८।३।१८
पातालमूलिक १. २. ३.	३।६।१२९
पाताली २.	७।२।१७
पातिक १.	३।७।१४०
पातुक १. २. ३.	५।४।३८
पात्म १.	२।१।८८
पात्र ३.	२।३।२६
" ३.	३।६।१४६
" ३.	३।९।६८
" ३.	४।२।३२
" ३.	५।१।५५
" ३.	६।३।२१
" १. २. ३.	८।९।३८
पाथस ३.	४।२।२१
" ३.	६।३।२०
पाथि १.	२।१।१३
पाथिस ३.	६।३।२१
पाथेय ३.	३।९।७
पाथोवक्रा २.	३।३।२१९
पाद १.	२।१।१६
" १.	३।२।७
" १.	४।४।५६

पाद ]	वैजयन्तीकोषः	[ शालम
पाद १.	५२१७	पारि २.
पाददण्ड १.	३१७१८३	पारिकर्मिक १. २. ३.
पादप १.	७११४५	३१७१९
पादपच्छाय १. २. ३.	८१९३४	पारिकाङ्क्षिक १. २. ३.
पादपान १.	३१७११२	३१६१२६
पादपुटी २.	३१७११५	पारिजातक १.
पादप्रसार १.	३१६२१७	१३११४
पादफली २.	३१७११५	" १.
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पारितथ्या २.
पादरक्षिणी २.	४३११६२	४३११३६
पादवाहिक १.	४१११८	पारिन् १.
पादस्फोट १.	४११२२	४११५४
( पादः, स्फोटः )		पारिपन्थिक १.
पादात १.	३१७१३९	३१९५६
" ३.	५११११	पारिपार्श्विक १.
पादायुध १.	२३११४	३१९६७
पादावर्त १.	४२२२१	पारिप्लव १. २. ३.
पादिक ३.	३१७१४०	५११७९
" १.	५११३८	पारिभद्र १.
" ३.	५११५२	" १.
पादिका २.	४३३३९	३१६७१
( पालिका )		पारिभाव्य ३.
पादिकाशीर्ष ३.	४३३४०	३१८९९
( पालिकाशीर्ष )		पारियाणिक १. २. ३.
पादुका २.	३१७५०	३१७१२८
" २.	४३३१६२	पारियात्रक १.
पादू २.	६२२२४	३२२३
पादूकृत १.	३१९४३	पारिषद १.
पादोपवेश १.	३१६२१२	१११५१
पान १.	३१६२०४	परिहार्य ३.
" ३.	४३३१०	४१११४४
पानगोष्ठिका २.	३१९५०	पारिहाय्य १.
पानीय ३.	४२२२	५३३५०
पानीयशालिकार.	४३३२३	पारी २.
पानीयसम्भव ३.	८५११५	४३३५९
	३१८१२२	पारीन्द्र १.
पाप १.	३३३१७७	३३३१
" १.	३३३१६८	पारे ४.
" १. २. ३.	६५५५०	८१८२१
पापचेली २.	३३३१३०	पार्थिव १.
		३१७१
		पार्थिवेन्द्र १.
		१११२२
		पार्वण ३.
		३१६८३
		पार्वत १.
		३३३७५
		पार्वती २.
		१११५८
		" २.
		३२२१६
		" ३.
		५१११४
		" १. ३.
		६५५५१
		पार्श्वस्थ १.
		३१९६९
		पार्श्वोदरप्रिय १.
		४११४६
		पार्णि १.
		३१७७९
		" १. २.
		६५५४०
		पार्णिग्राह १.
		३१७४०
		" १. २. ३.
		३१७१४१
		पालम १.
		३३३२३४
		( बालम )

पालन ]	शब्दानुक्रमणिका	[ पितृव्य
पालन १.	४११४६	पिङ्गल १.
पालाश १.	५३३२२	" १.
पालि १.	३३६५०	४३३१०१
" २.	३१८२६	" १.
" २.	४११२३	६१३३१
" २.	६२२२२	पिण्डक १.
पालिकाष्ठ ३.	४३३१०	" १.
पाली २.	३३६४९	३१८११०
" २.	३१९१२६	" १.
पालुखञ्जन १.	३१५१०	४३३४५
पालुषी २.	४१३३५	पिण्डफला २.
पालक १.	३१९५५	३३३१६७
पाल्लवा २.	८१९६	पिण्डा २.
पावक १.	१२२१५	३३३१११
" १.	३३३८६	पिण्डारक १.
" १.	३३६९२	" १.
पावन १.	३१८१११	३३३४
पावनक १.	३१८१३०	पिण्डि १.
पावनी २.	३३६१५	" १.
पाश ३.	३१९३०	६१३३४
" १.	६१३३७	पिण्डिका २.
पाशाक १.	३१९६०	" २.
पाशाबन्धन २.	३३३६१	७२११४
( पादबन्धन )		पिण्डित १. २. ३.
पाशिन् १.	१२२४५	७३११७
पाशुपत १.	३३३१९४	पिण्डीक १.
पाशुपाक्य ३.	३१७४	३३३७८
पाशुबन्धिक १.	१२२२५	पिण्डीतक १.
पाश्चात्य १ ब.	३१३३	३३३४९
" १. २. ३.	५१३७६	पिण्डीशूर १. २. ३.
पाश्या २.	५१११४	५१३७०
पाषण्ड १.	३३३२३८	पिण्डूष १.
" १.	३३३३९	४३३९२
पाषाण १.	३२१८	पिण्या २.
पाषाणदारक १.	३१९२२	३३३१४०
पाषाणपुष्प १.	३१८९६	पिण्याक १.
पासि १.	२१११४	" १.
पिक १.	२३३२६	७१३४६
पिङ्ग १.	४१११४	पितामह १.
" १.	५३३१८	" १.
पिङ्गल ३.	३३३२०२	८१२२८
		पितृ १.
		" १.
		" १ ब.
		पितृकार्य ३.
		३३३६६
		पितृज्येष्ठ १.
		४३३३२
		पितृदान ३.
		३३३६४
		पितृनस्व १.
		३३३५९
		पितृपति १.
		१२३३३
		पितृपितृ १.
		४३३२९
		पितृप्रपा २.
		३३३६७
		पितृप्रसू २.
		२१३६९
		पितृभोजन ३.
		३३३६४
		पितृयाण १.
		२१३४६
		पितृवन ३.
		३३३४८
		पितृव्य १.
		४३३३१

[ पितृष्वस्त्रीय ]

पितृष्वस्त्रीय १.	४४४४२	पीठर ३.	३३३२००
पित्त ३.	४४४१२१	पीठीव ३.	४४४६०
पित्तल ३.	३३३२२६	पीडन ३.	३३३२०७
पित्या २.	२११७२	पीडा २.	३३३१८७
पित्सत् १.	२३३१	" २.	३३३२२५
पिधान ३.	२११६४	पीडित १. २. ३.	५४४११५
" ३.	४३३५५	पीत १.	३३३११४
पिनद्ध १. २. ३.	३३३१४२	" १.	५३३१११
पिनाक १.	१११५०	पीतकङ्कु २	३३३१५६
" १. ३.	७५५५७	पीतघोषा २.	३३३१६२
पिनाकिन् १.	१११३९	पीतचन्दन ३.	३३३११३
पिपतिपत् १.	२३३१	पीततण्डुला २.	३३३१५५
पिपासा २.	३३३१८१	पीतदारु ३.	३३३३०१
पिपासित १. २. ३.	५४३३७	" १.	३३३२१२
पिपासु १. २. ३.	५४३३७	" ३.	३३३११४
पिपीलिका २.	४१३३६	पीतधातु १.	३३३१११
पिप्पल ३.	३३३२०	पीतधूमल १.	५३३२०
" १.	३३३२७	पीतन ३.	३३३११४
" ३.	४४३६८	" १.	३३३३३१
पिप्पलक १.	३३३१२	" ३.	३३३११७
पिप्पली २.	३३३७३	पीतपुष्प १.	३३३१७०
" "	३३३७६	पीतमुण्ड १.	२३३१९
पिप्पलीमूल ३.	३३३९१	पीतरक्त १.	५३३१७
पिप्पिका २.	२३३२४	पीतरसा १.	३३३१३९
पिप्लु १.	४४३९७	पीतल ३.	५३३११
पिलाट १.	३३३७३	पीतलिका २.	३३३७३
पिल्ल १.	६३३५	पीतलोह ३.	३३३२५
पिशङ्ग १.	५३३१८	पीतलोहित १.	५३३२०
पिशाच १.	१३३४	पीतरयामल १.	५३३२०
" १.	७३३५७	पीतसागर १.	३३३१५१
पिशित ३.	४४३१०७	पीतशाल १.	३३३३९
पिथुन १. २. ३.	५४३२५	पीतसितासित १.	५३३१२
पिष्ट १.	५१३५५	पीतहरित १.	५३३२१
पिष्टक १.	४३३७२	पीता २.	३३३२११
पिष्टपचन ३.	४३३५७	पीताम्बर ३.	११३११
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२	पीताम्लान १.	३३३१८८
पिष्टात १.	४३३१५७	पीति १.	३३३७९
पीठ ३.	४४३१६४	" १. २.	६३३५१
पीठबन्धन १.	४४३८०	पीतु १.	२३३३
पीठमर्द १.	३३३७०	पीथ १.	१३३१९

वैजयन्तीकोषः

[ पुञ्जील ]

पीथ ३.	३३३१३८	पीन १. २. ३.	५४३६
" ३.	३३३१४५	पीनकोशी २.	३३३६५
" ३.	६३३२२	पीनस १.	४३३१४
पीन १. २. ३.	५४३६	" १.	४४३१२१
पीनकोशी २.	३३३६५	पीनस्कन्ध १.	३३३५
पीनस १.	४३३१४	पीनस्तनी २.	३३३४९
" १.	४४३१२१	पीनाह १.	४३३२८
पीनस्कन्ध १.	३३३५	पीनोष्नी २.	३३३४९
पीनस्तनी २.	३३३४९	पीयु १.	६३३३२
पीनाह १.	४३३२८	पीयूष ३.	३३३१४६
पीनोष्नी २.	३३३४९	" ३.	७३३२३
पीयु १.	६३३३२	पीलु १.	३३३४५
पीयूष ३.	३३३१४६	" १.	६३३३२
" ३.	७३३२३	पीलुक १.	२३३४
पीलु १.	३३३४५	पीलुकुण १.	८३३१४
" १.	६३३३२	पीलुनी २.	३३३११४
पीलुक १.	२३३४	पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पीलुकुण १.	८३३१४	पीलुपर्णी २.	३३३१४७
पीलुनी २.	३३३११४	पीवन् १. २. ३.	५४३६
पीलुपर्णिका २.	३३३११४	पीवर १.	३३३३९
पीलुपर्णी २.	३३३१४७	" १.	५४३६
पीवन् १. २. ३.	५४३६	पीवरी २	३३३१४२
पीवर १.	३३३३९	पुञ्जली २.	४४३९
" १.	५४३६	पुंस् १.	४४३२
पीवरी २	३३३१४२	" १.	८३३६१
पुञ्जली २.	४४३९	पुंसवन ३.	३३३३
पुंस् १.	४४३२	" ३.	३३३१४५
" १.	८३३६१	पुंहल १.	४४३१२५
पुंसवन ३.	३३३३	पुङ्ग १.	३३३१८५
" ३.	३३३१४५	" १.	६३३३३
पुंहल १.	४४३१२५	पुङ्गर्भः १.	४४३३९
पुङ्ग १.	३३३१८५	पुङ्गव १.	७३३५७
" १.	६३३३३	पुङ्गाह १.	३३३१००
पुङ्गर्भः १.	४४३३९	पुच्छ १. ३.	३३३७४
पुङ्गव १.	७३३५७	पुच्छभाग १.	३३३८१
पुङ्गाह १.	३३३१००	पुञ्ज १.	५३३३
पुच्छ १. ३.	३३३७४	पुञ्जिका २.	२३३७
पुच्छभाग १.	३३३८१	पुञ्जील १.	३३३२३
पुञ्ज १.	५३३३		

[ पुट ]

पुट २.	३५२८	पुटकिनी २.	४३३४४
पुट १. २. ३.	३५३३	पुटभेद १.	४३३३०
" १.	४३३१	पुटभेदन ३.	४३३३
" १.	४३३१४	पुटानिल १.	१३३५३
" १. २. ३.	८३३३७	पुटी २.	३३३३३
पुटकिनी २.	४३३४४	" २.	८३३३७
पुटभेद १.	४३३३०	पुण्ट १.	६३३३२
पुटभेदन ३.	४३३३	पुण्टक १.	५३३१०
पुटानिल १.	१३३५३	पुण्डरीक १.	२३३१८
पुटी २.	३३३३३	" ३.	३३३१२३
" २.	८३३३७	" १.	४३३१५
पुण्ट १.	६३३३२	" १.	४३३१९
पुण्टक १.	५३३१०	" ३.	४३३२६
पुण्डरीक १.	२३३१८	" ३.	४३३१२
" ३.	३३३१२३	" १.	८३३१६
" १.	४३३१५	पुण्डरीकाक्ष १.	१३३१०
" १.	४३३१९	पुण्ड्र १ व.	३३३३०
" ३.	४३३२६	" १.	३३३२२६
" ३.	४३३१२	पुण्ड्रक्षण २.	३३३३०
" ३.	४३३१४	पुण्ड्रा २.	३३३५३
" १.	८३३१६	पुण्य ३.	३३३१६८
पुण्डरीकाक्ष १.	१३३१०	" १. २. ३.	६३३५०
पुण्ड्र १ व.	३३३३०	पुण्यगन्धिक ३.	४३३४०
" १.	३३३२२६	पुण्यजन १.	८३३२६
पुण्ड्रक्षण २.	३३३३०	पुण्यजनेश्वर	१३३५८
पुण्ड्रा २.	३३३५३	पुण्याह ३.	२३३६७
पुण्य ३.	३३३१६८	" ३.	८३३२२
" १. २. ३.	६३३५०	पुत्तिका २.	२३३४८
पुण्यगन्धिक ३.	४३३४०	पुत्र १.	४४३३९
पुण्यजन १.	८३३२६	" १.	४४३४८
पुण्यजनेश्वर	१३३५८	" १.	८३३४३
पुण्याह ३.	२३३६७	पुत्रजीव १.	३३३७९
" ३.	८३३२२	पुत्रल १.	८३३४३
पुत्तिका २.	२३३४८	पुनःपुनः ( र् ) ४.	८३३११
पुत्र १.	४४३३९	पुनर् ४.	८३३२४
" १.	४४३४८		
" १.	८३३४३		

शब्दानुक्रमणिका

पुनरूढा २.	३३३४५	पुरा ४.	८३३२३
पुनरुव १.	४४३७६	पुराज १.	१३३८
पुननवा २.	३३३१४६	पुराण ३.	३३३३८
पुनर्भव १.	४४३७६	" ३.	३३३२९
पुनर्भू २.	३३३४५	" १. २. ३.	५४३८७
पुनर्भूज १.	४४३४५	पुराणान्त १.	१३३३५
पुनर्युवन् १.	२३३२५	पुरातन १. २. ३.	५४३८७
पुनर्वसु १.	२३३३९	पुरावृत्त ३.	२३३३८
" १.	३३३१५८	पुरी २.	४३३१७
पुत्राग १.	३३३७०	" २.	४३३११
पुत्रिका २.	४४३६३	पुरीष ३.	३३३२४
पुर् २.	३३३१६३		
" २.	४३३१		
" २.	८३३१६		
पुर १.	३३३५४		
" ३.	३३३२३४		
" १.	३३३२७		
" ३. २.	४३३१		
पुरः(-स्) ४.	८३३११		
पुरञ्जक १ व.	३३३३०		
पुरतः(-स्) ४.	८३३११		
पुरद्वार ३.	४३३१५		
पुरन्दर १.	१३३२		
पुरन्धी २.	४४३२१		
पुरमद् १.	३३३१०८		
पुररत्निन् १.	३३३१८		
पुरस्कृत १. २. ३.	८३३१९		
पुरस्तात् ४.	८३३३३		
पुरस्सर १. २. ३.	३३३१४५		

[ पुस्कस ]

पुरीष ३.	४४३११८	पुरोवाचस् ३.	२३३४१
पुरु १. २. ३.	५४३८५	पुरोवात १.	१३३५४
पुरुप १.	१३३१८	पुरोहित १.	३३३२४
" १.	४४३२	पुरोहिन् १.	३३३३४
" १.	७३३४६	पुलक १.	३३३४१
पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०	" १.	३३३१६३
पुरुषाद् १.	१३३४१	" १.	७३३४७
पुरुषोत्तम १.	१३३१२	पुलकिन् १.	३३३३०
पुरुह १. २. ३.	५४३८५	पुलाक १.	७३३४७
प्ररूढत १.	१३३२	पुलाकिन् १.	३३३१५
पुरोग १. २. ३.	३३३१४५	पुलिन ३.	४३३३३
पुरोगम १. २. ३.	३३३१४६	पुलिन्द १.	३३३४७
		" १.	३३३४७
		" १.	३३३४३
		पुलिन्दक १.	४३३१६
		पुलोमजा २.	१३३११
		पुलोमशत्रु १.	१३३३
		पुस्कस १.	३३३४८
		" १.	३३३४२
		" १.	३३३५५
		" १.	३३३४८

पुष्कस ]

पुष्कस १.	३१५८९
" १.	३१५९१
पुष्प १.	४४६१
पुष्पित १. २. ३.	५४१११४
पुष्कर १.	३१८८८
" ३.	७३२२४
पुष्करसार १.	४१११६
पुष्कराह्वय १.	२३३३३
पुष्करिणी २.	४२१५
पुष्कल १.	३६१५
" ३.	३६१६
" १.	४३१२
" १. २. ३.	७४१९
पुष्ट १. २. ३.	५४११४
पुष्टि २.	११११६
पुष्टिवर्धन १.	२३२२८
पुष्प १.	३३११८
" ३.	४४११६
" ३.	८१११५
पुष्पक १. ३.	३१५५४
" १.	४१११८
पुष्पकाल १.	२११८८
पुष्पकेतु १.	३२३३३
पुष्पदन्त १.	२११८
पुष्पधन्वन् १.	१११२८
पुष्पफल १.	३३३३२
पुष्पफलिन् १.	३३३३६
पुष्परजस् ३.	३१८११७
पुष्पलोलुप १.	२३३३२
पुष्पव १.	३१५५४
" १.	३१५१०१
पुष्पवत् १.	२११२९
पुष्पवती २.	४४११५
पुष्पवाटी २.	३३३३४
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८
(पुष्पी, वीर्या)	
पुष्पसारण १.	२११८७
पुष्पाढ्य १. २. ३.	३६११२८
पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११

वैजयन्तीकोषः

पुष्पाभिकीर्णक १.	४१११६
पुष्पिका २.	३१५१२७
पुष्पित १. २. ३.	३३३३८
पुष्प्य १.	२११३९
" १.	२११९१
पुष्पफल १.	३३३१७०
पुष्परथ १.	३७१२६
पुष्पल १.	३१७८५
पुस्त ३.	३१५१६
पुस्तक ३.	४३११०९
पू २.	३६११६३
पूग १.	३३३२१७
" १.	५११११
पूगतिथ १. २. ३.	
पूगपट्ट १.	५१११९
पूगपुष्पिका २.	३३३२२२
पूगावपनी २.	४३११०८
पूजा २.	३६३२९
पूजित १. २. ३.	
पूज्य १. २. ३.	५४११३३
पूज्यपाद १. २. ३.	
पूत १. २. ३.	३१८६७
" १. २. ३.	५४१६५
पूतना २.	२१११८
पूति १. २.	३१५३५
" १.	५३१५७
पूतिक १.	३३३६२
पूतिकरज १.	३३३६२
पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१
पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४
पूतिपुष्पी २.	३३३३४
पूतिफली २.	३३३१०८
पूत्यण्ड १.	२३३४८
पूप १.	४३३७२
पूय ३.	४४१११८
पूर १.	४२३३०
पूरक १.	३३३३३
" १.	३१८४४

[ पृतना

पूरक १.	३१५६४
पूरणा २.	३३३१४५
पूरणी २.	३३३१०
" २.	३३३१४७
पूरित १. २. ३.	५४१८६
पूरी २.	३३३१४५
" २.	३१८१२५
पूरुष १.	४४३३
पूरुण ३.	३७११९१
" १. २. ३.	५४१८६
" १. २. ३.	५४१८६
पूरुणकलश १. ३.	३६१५८
पूरुणकुम्भ १.	४३३६१
पूरुणकूट १.	२१३३२
पूरुणकूटक १.	२१३३२
पूरुणपात्र ३.	३६३६१
पूरुणपात्रक ३.	३६३१७
पूरुणमासी २.	२११७२
पूरुणा २.	२११७२
पूरुणानिक ३.	३६३६१
पूरुणि २.	४२११३
पूरुणिका २.	२११७२
पूरुणिमा ३.	२११७२
पूरुत ३.	३६३११५
पूरुव १. २. ३.	५४११४०
" १. २. ३.	६५४७
पूरुवगन्धिक १.	३११८
पूरुवज १.	४४३३१
" १. २. ३.	५४४४
पूरुवद्विपाल १.	१२१२
पूरुवदेव १.	१३३१०
पूरुवरङ्ग १.	३१५३३९
पूरुवाह १.	२११६४
पूरुवेद्युः (-स्) ४.	८१७३२
" ४.	८११८
पूल १. ३.	३१८६४
पूलक १.	४४१११५
पूषन् १.	२१११०
पूष्य ३.	३१८७३
पूच्छा २.	२३३३७
पृतना २.	३१७५५

पृतना ]

पृतना २.	३१७५८
पृतनासाह १.	१२१२
पृथक् ४.	८१८४
पृथक्क्रया २.	२३४४०
पृथक्पर्णी २.	३३३१३६
पृथग्जन १.	८११२६
पृथक् १ ब.	३११४०
पृथिवी २.	३१३३
पृथिवीपति १.	८११५३
पृथु १.	३३४४०
" २.	३१८८५
" २.	३१८१३२
" १. २. ३.	५४१८०
पृथुक १.	४३३६८
" १.	७११५८
पृथुचित्र १.	३६३४१
पृथुच्छद १.	३३३७६
पृथुरोमन् १.	४११४१
पृथुल १. २. ३.	५४१८०
पृथुशालिका २.	३१८८५
पृथुसूप्य १.	३१८४०
पृथुहस्त १.	३७१९१
पृथिवका २.	३१८८५
" २.	३१८१३२
पृथ्वी २.	३१३३
" २.	३१८८५
पृथ्वीका २.	३१८८७
पृदाकु १.	७११५८
पृश्नि १. २. ३.	४५५५
पृश्निपर्णी २.	३३३१३६
पृषत् २. ३.	२१२८
पृषत १.	२१२८
" १.	३३३१३
" १.	३६१९९
पृषता २.	३६३४७
पृषत्क १.	३७११७९
पृषदंशक १.	३४३७१
पृषदश्व १.	१२१५०
पृषदाज्य ३.	३६१९९
पृष्ट ३.	४४३६९
पृष्टग्रन्थि १.	४४३१३३

शब्दानुक्रमणिका

पृष्ठचक्रुस् १.	४११४६
पृष्ठमध्यास्थि ३.	४४१९१
पृष्ठमांसादन ३.	५२१८
पृष्ठवाह्य १. २. ३.	३३३५६
पृष्ठस्थ १. २. ३.	३७१४१
पृष्ठ्य १. २. ३.	३३३५६
" ३.	५१११४
पेचक १.	२३३२२
" १.	७१५३
पेचिका २.	२३३३१
पेट १. २. ३.	८१३३७
पेटक १.	४३३६३
" ३.	५१३३
पेटा २.	४३३६३
पेटी २.	८१३३७
पेत्व १.	३३३६४
पेय ३.	४३१९१
पेरा २.	३११४
पेराल १.	५३३२०
पेरु १.	२११३३
" १.	५३३१२
पेलव १.	३१५८५
" ३.	३१८७९
" १. २. ३.	५४१३३
पेशल १. २. ३.	५४१५४
" १. २. ३.	५४१३७
" १. २. ३.	७४१९९
पेशि २.	४३३८९
" २.	४४११२
पेशी १.	२३३५०
पैङ्गराज १.	४१११७
पैठर १. २. ३.	४३१९४
पैण्डूष १. ३.	४४१९३
पैतृष्वसेय १.	४४३४२
पैष्टिकी २.	३१५५०
पोगण्ड १. २. ३.	५४१११
पोटकी २.	४३३२४
पोटगल १.	४१११६
" १.	८११२७
पोटना २.	२३३२६
पोटरूप १.	३३३१५

[ पौष

पोटा २.	४४३३
पोत १.	३१७६६
" १.	४३३४०
" १.	४४३३५
" १.	६१३३३
पोतकी २.	२३३१९
पोतवणिज् १.	४२३१८
पोतवाह १.	४२३१८
पोताधान ३.	४१३४५
पोत्र ३.	६३३२२
पोत्रिन् १.	३३३६
" १.	३३३९
पोथ १.	४२३१५
पोलिक १.	४३३७१
पोलिन्द १.	४२३३६
पोषी २ ब.	२१११२
पोहित्य ३.	४२३१५
पौश्रलेय १.	४४३४३
पौसन ३.	३६३३
" १. २. ३.	५४११८
पौण्ड्र १.	३१५५०
पौतव १.	५१३६४
पौत्तिक ३.	३१८१३५
पौत्र १.	४४३४५
पौनर्भव १.	४३३४५
पौपिक १. २. ३.	४३३९२
पौर १.	११३२२
पौरस्थ १. २. ३.	५४३६
पौरुष १. २. ३.	४४३३
" ३.	४४३११
" ३.	७५५८
पौरुषेय १. २. ३.	८४३१०
पौरैन्द्र १.	२३३३२
पौरोगव १.	३७३२१
पौरोहित ३.	३६३२७
पौरुणमासी २.	२३३७२
पौरुवापर्य ३.	३६३१३३
पौलस्थ १.	१२३५६
" १.	७५५९
पौलोमी २.	१२३११
पौष १.	२११८२

पौषी ]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३६११९
पौष्पक ३.	३२१४३
पौष्यक ३.	३२१४१
सा २.	४४११०१
प्याट् ४.	८८१२
प्र ४.	८७१६
प्रकट १.	३१११३७
” १. २. ३.	५४११३४
प्रकरपन १.	१२१५०
प्रकर ३.	३८११०७
” १.	५१११
प्रकरण ३.	३१११००
प्रकाण्ड ३.	८११४२
प्रकाण्डकम् ३.	३३११२
प्रकामम् ४.	४३११०४
प्रकार १.	५२१२३
” १. २. ३.	५४११२२
” १.	७११५६
प्रकाश १.	१२१३१
” १. २. ३.	५३११३४
” १. २. ३.	७५१५४
प्रकीर्णक १.	३७१९०
” ३.	४३११५९
प्रकीर्य १.	३३१६२
प्रकुञ्ज ३.	५११५१
प्रकृति २.	३६११६१
” २.	३७१३
” २.	५२१२
” २.	७२११२
प्रकोटी २.	३३१११३
प्रकोष्ठ १.	४४१७२
” १.	७११५२
प्रक्रम १.	५२११५
प्रक्रम १.	३८१६९
प्रक्रिया २.	७२११४
प्रक्षण १.	२४११२
प्रकाण १.	२४११२
प्रचर १.	३७१११५
प्रचाराङ्गी २.	३४१४४
प्रचवेलन १.	३७११८०

बैजयन्तीकोषः

प्रखर १. ३.	३७१११५
प्रख्य १. २. ३.	५४११२२
प्रयणिका २.	४३१३३
( प्रगणिता )	
प्रगण्ड १.	४४१७२
प्रगतजानुक १. २. ३.	
	५४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७
प्रगाल १. २. ३.	७४१२०
प्रगुण १. २. ३.	५४११२४
प्रगो ४.	८८११०
प्रग्रह १.	२११४८
” १.	३११५७
” १.	७११४९
प्रग्राह १.	७११४९
प्रग्रीव १. ३.	७५१५६
प्रघण १.	४३१४५
” १.	७११५२
प्रघाण १.	३३११५
” १.	४३१४५
प्रघात १.	३७१२०५
प्रघार १.	५२१३४
प्रचक्र ३.	३७१२०१
प्रचक्षस् १.	२११३४
प्रचल १. २. ३.	५४१७८
प्रचालक १.	२३१३९
प्रचार १.	३७११५८
प्रचुर १. २. ३.	५४१८४
प्रचूडक १.	३८१४८
प्रचेतस् १.	१२१४६
” १.	७११५६
प्रच्छदपट १.	४३११६६
प्रच्छन्नद्वार ३.	४३११२६
प्रच्छूर्दिका २.	४३१४२
” २.	८११५
प्रजनन ३.	४४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	
	५४११४
प्रजल्पन ३.	२४१३९
प्रजा २.	४४१४१
” २.	६२१२३

[.प्रति

प्रजागम १.	३६१८६
प्रजागर १.	३७११५८
प्रजाता २.	४४१४२
प्रजानुक १.	४४१५३
प्रजापति १.	१११६
” १.	८११३४
प्रजापतिहस्तक १.	
	३११५५
प्रजावती २.	४४१३६
प्रज्ञा २.	४४१२१
” २.	६२१२३
प्रज्ञान ३.	७३१२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रज्वलित १. २. ३.	
	८४११४
प्रणय १.	३८१७०
” १.	७११४४
प्रणव १.	३६१२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३७१२१९
प्रणाद १.	२४१९
प्रणाम १.	५२१२४
प्रणाय्य १. २. ३.	
	७४११५
प्रणाल १. २. ३.	४२१२०
प्रणधि १.	७११५५
प्रणिपात १.	५२१४८
प्रणहित १. २. ३.	
	५४११०९
” १. २. ३.	८४१९
प्रणीत ३.	४३१९४
प्रणीति २.	४३१३८
प्रणेत्य १. २. ३.	५४१३२
प्रतति २.	७२११५
प्रतल १.	४४१७७
प्रतानिनी २.	३३१७
प्रताप १.	७११५४
प्रतापन ३.	५३१८
प्रतापस १.	३४११४
प्रतारण ३.	५२१३५
प्रतारिका २.	४४१६६
प्रति ४.	८७१२५

प्रतिकर्मन् ]

प्रतिकर्मन् ३.	४३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	
	५४१२७
प्रतिकृति २.	३११२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	
	५४१७५
प्रतिनिप्त १. २. ३.	८४१८
प्रतिख्याति २.	५२१२९
प्रतिग्रह १.	८११३९
प्रतिग्राह १.	४३११६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३७१२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२१२९
प्रतिज्ञा २.	५२१३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	
	५४११०६
प्रतितर्जन ३.	२४१३९
प्रतिताली २.	४३१४९
प्रतिदान ३.	८३१९
प्रतिध्वान १.	२४११२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	
	२४११४
प्रतिनष्ट १.	४४१४५
प्रतिनिधि १.	३११२१
प्रतिपक्ष १.	३७१४२
प्रतिपत्ति २.	८२१७
प्रतिपद् २.	२११६९
” २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३६१११८
प्रतिबन्ध १.	५२११३
प्रतिबिम्ब ३.	३११२१
प्रतिभ १.	३११६९
प्रतिभय १. २. ३.	
	३११७८
” १. २. ३.	८५११७
प्रतिभा २.	३६११७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	
	५४१४७

( प्रतिभासवाच् )

शब्दानुक्रमणिका

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	
	५४११७
प्रतिभास १.	३६११७६
प्रतिभू १. २. ३.	३८११०
प्रतिम १. २. ३.	५४११२१
प्रतिमा २.	३११२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	
	३७११४२
प्रतियत्न १.	८११३१
प्रतियातना २.	३११२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३११२१
प्रतिरोधक १.	३११५६
प्रतिरोधिन् १.	३११५६
प्रतिलम्भ १.	५२१२०
प्रतिलोम १.	३११११८
” १.	३११११९
” १. २. ३.	
	५४११२७
प्रतिलोमज १.	३११८९
” १.	३१११०९
प्रतिवसथ १.	४३१२
प्रतिवाक्य ३.	२४१३७
प्रतिविषा २.	३८१९०
प्रतिशासन ३.	५२१३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८४१८
प्रतिश्याय १.	४४११२१
प्रतिश्रय १.	८११३१
प्रतिश्रव १.	५२१२९
” १.	५२१३७
प्रतिश्रुत् २.	२४११२
प्रतिष्काश १. २. ३.	
	८५११४
प्रतिष्टम्भ १.	५२११३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चर १.	२११९५
प्रतिसर १.	३६१५९
” १. २. ३.	८५११४
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४४११४०
प्रतिसारा २.	४३११२४

[ प्रत्यादेश

प्रतिहत १. २. ३.	८४१८
प्रतिहारी २.	३७१३८
प्रतिहास १.	३३११९२
प्रतीक १.	४४१५५
” १. २. ३.	७५१५४
प्रतीकार १.	३७१२०९
प्रतीक्य १. २. ३.	७४११७
प्रतीच १.	३८१५७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	
	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३११००
प्रतीत १. २. ३.	७४११६
प्रतीप १. २. ३.	५४११२७
प्रतीपदर्शिनी २.	४४१५
प्रतीवाप १.	३८११४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद् १.	३८१२९
प्रतोली २.	४३११६
प्रतन १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्च्छेणी २.	३३१११३
” २.	३३११३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३१११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४११३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यग्दृष्टि २.	३६११७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ ब.	३११२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३७१४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८१९
( प्रत्ययिक )	
प्रत्यर्थिन् १.	३७१४२
प्रत्यवसान ३.	४३११०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	
	५४११०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३८११६
प्रत्याकार १.	३७११६८
प्रत्याख्यान ३.	५२१२३
प्रत्यादेश १.	५२१२३



प्रत्यालीढ ]

प्रत्यालीढ ३.	३।७।१८
प्रत्यासार १.	३।७।५९
प्रत्याहार १.	३।९।२३१
" १.	३।९।१४०
" १.	५।२।१८
प्रत्युत्क्रम १.	५।२।१५
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५।४।३१
प्रत्युष १.	२।१।६८
प्रत्युष ३.	२।१।६८
प्रत्युषडम्बर १.	२।१।१५
प्रत्युह १.	५।२।४
प्रथम ३.	३।७।२०४
" १.	३।८।३६
" ३.	५।२।३४
प्रथम १. २. ३.	५।१।२१
" १. २. ३.	५।४।७६
" १. २. ३.	५।४।१४०
" १. २. ३.	७।४।१७
प्रथा २.	५।२।३४
प्रथिक ३.	३।६।८८
प्रथिमन् १.	८।९।१४
प्रदर १.	४।२।९
" १.	७।१।५७
प्रदीप्त १. २. ३.	८।४।१४
प्रदेशन ३.	३।७।४६
( प्रदर्शन )	
प्रदेशिनी २.	४।४।७३
प्रदेश्ट १.	३।७।२३
प्रदोष १. ३.	२।१।६५
" १.	७।१।५५
प्रद्युम्न १.	१।१।२७
प्रद्योतन १. ३.	८।५।१७
प्रद्राव १.	३।७।२११
प्रधान १. ३.	५।४।६२
प्रधानधातु १.	४।४।१११
प्रधि १.	३।७।१३५
" १.	८।९।१३
प्रपञ्च १.	७।१।५६
प्रपतित १. २. ३.	५।४।११५

वैजयन्तीकोषः

प्रपद ३.	४।४।५७
प्रपदव्यापिन् १. २. ३.	४।३।१२१
प्रपा २.	४।३।२३
प्रपाठक १.	३।६।३२
प्रपात १.	३।२।६
" १.	४।२।३२
" १.	७।१।५३
प्रपातिन् १.	३।२।२
प्रपितामह १.	४।४।२९
प्रपुञ्जाट १.	३।३।१५८
प्रपौत्रक १.	४।४।४५
प्रफुल्ल १. २. ३.	३।३।९
प्रबर्ह १. २. ३.	५।४।६२
प्रबल १. २. ३.	३।७।१५१
" १. २. ३.	५।४।६
प्रबोधन ३.	४।३।१४७
प्रभ १. २. ३.	५।४।१२१
प्रभञ्जन १.	१।२।४९
प्रभव १.	७।१।५०
प्रभवन्ती २.	५।२।२
प्रभविष्णुता २.	५।२।२
प्रभा २.	२।१।२२
" २.	२।१।२३
" २.	६।२।२३
प्रभाकर १.	२।१।१४
प्रभात ३.	२।१।६९
प्रभाव १.	५।२।२
" १.	७।१।५६
प्रभावती २.	३।९।२०
प्रभास ३.	३।२।२८
प्रभिन्न १.	३।७।६८
प्रभु १. २. ३.	५।४।५७
" १. २. ३.	६।४।१०
प्रभुता २.	५।२।२
प्रभूत १. २. ३.	५।४।८४
प्रभ्रष्टक ३.	४।३।१५५
प्रमथ १.	१।१।५१
" १.	३।७।२११
प्रमथन ३.	३।७।२१३
प्रमथाधिपति १.	१।१।४१

[ प्रलम्बाण्ड ]

प्रमदा २.	४।४।५
प्रमदावन ३.	३।३।३
प्रमनस् १. २. ३.	५।४।३३
प्रमा २.	५।२।३३
प्रमाण ३.	७।३।२३
प्रमातामह १.	४।४।३०
प्रमाथ १.	३।७।१८९
प्रमाथित ३.	३।८।१४३
प्रमाद् १.	३।६।१७८
प्रमापण ३.	३।७।२१३
प्रमिति २.	५।२।३३
प्रमीत १. २. ३.	३।७।२२०
प्रमीला २.	३।६।१९७
प्रमुख १. २. ३.	५।४।६२
" १. २. ३.	५।४।७६
प्रमृत ३.	३।८।३
प्रमेह १.	४।४।१२८
प्रमेहनुद् १.	३।३।१०६
प्रमोद १.	३।६।१८८
प्रयत १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।४।१८
प्रयत्त १. २. ३.	५।४।९९
प्रयत्नवत् १. २. ३.	५।४।११४
प्रयम १.	३।६।१४
प्रयस्त १. २. ३.	४।३।९४
प्रयाण ३.	७।३।२१
प्रयाम १.	३।८।६६
प्रयुत ३.	५।१।२८
" ३.	५।१।२९
प्रयोक्तृ १. २. ३.	३।८।८
प्रयोग १.	५।२।१५
" १.	७।१।४४
प्रयोजन ३.	३।६।२३६
" ३.	८।३।८
प्ररूढ १.	३।८।५२
प्ररोचना २.	३।९।१४२
प्ररोह १.	३।३।११
प्ररोहक १.	३।७।११५
प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	५।४।८

प्रलम्बारि ]

प्रलम्बारि १.	१।१।२३
प्रलय १.	२।१।९५
" १.	३।९।८९
" १.	७।१।४३
प्रलाप १.	२।४।३०
प्रलोभिन् १.	३।३।१८९
प्रलोभ्य ३.	४।४।१०१
प्रवक १.	३।९।६४
प्रवण १. २. ३.	७।५।५३
प्रवयस् १. २. ३.	५।४।३
प्रवर १.	३।८।३४
" १.	३।८।३७
" ३.	३।८।११९
" १. २. ३.	५।४।६२
" १. २. ३.	८।९।५३
प्रवर्ग्य १.	१।२।२९
प्रवहिका २.	२।४।३९
प्रवह १.	७।१।४३
प्रवहण ३.	३।७।१२७
" ३.	४।२।१५
प्रवापण ३.	३।६।१२०
प्रवाल १. ३.	३।२।३९
" १.	३।३।१५
" १.	३।३।१५४
" १. ३.	७।५।५५
प्रवासन ३.	३।७।२१३
प्रवाह १.	४।२।३०
" १.	५।२।३९
" १.	७।१।४५
प्रवाहि १.	३।७।१२५
प्रवाहिक १.	१।२।४१
प्रवाहिका २.	४।४।१२९
प्रविदारण ३.	३।७।२०४
प्रविसर १.	२।१।६८
प्रविसारण ३.	३।७।२१५
प्रवीण १. २. ३.	५।४।१९
प्रवीरा २.	४।३।११
प्रवृत्ति २.	३।७।८२
" २.	३।८।४८
" २.	७।२।१६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७।४।१८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५।४।६३
प्रवेणी २.	७।२।१६
प्रवेल १.	३।८।३६
प्रवेश १.	५।२।१४
प्रवेष्ट १.	३।७।७२
" १.	४।४।७२
प्रव्याल १.	२।१।३२
प्रवजित १.	३।६।१६०
प्रशंसा २.	२।४।३५
प्रशासन ३.	३।७।२१४
प्रशास्तमृद् २.	३।८।२४
प्रशान्ताचिस् १.	१।२।३२
प्रशान्तिक ३.	३।६।१८२
प्रश्न १.	२।४।३७
" १.	८।९।१४
प्रश्नवादिनी २.	४।४।११
प्रश्रय १.	५।२।३८
प्रश्रित १. २. ३.	५।४।३२
प्रष्ट १. २. ३.	३।७।१४५
प्रष्टवाह १. २. ३.	३।४।५६
प्रसञ्चा २.	३।९।४५
प्रसम्भ १.	१।२।५५
" १. ३.	३।७।२०९
प्रसम्भा २.	३।६।४६
प्रसरणी २.	३।७।२०१
प्रसर्पक १.	३।६।८१
प्रसव १.	२।१।८७
" १.	३।३।२०
" १.	४।४।४०
" १.	७।१।४८
प्रसव्य १. २. ३.	५।४।२८
" १. २. ३.	७।४।१८
प्रसहनी २.	३।३।१०४
प्रसहा २.	३।३।१०४
प्रसह्य ४.	८।८।१८
प्रसाद् १.	७।१।५५
प्रसादन १.	३।३।३८
( प्रसाधन )	
" १.	४।३।२९
" ३.	४।३।७५
प्रसाधन १.	४।३।११२

[ प्रस्नाव ]

प्रसाधन ३.	४।३।११२
" ३.	४।३।१३२
प्रसित १. २. ३.	५।४।३०
प्रसिति २.	५।२।२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७।४।१९
प्रसू २.	६।२।२४
प्रसूता २.	४।४।१७
प्रसूतात १ द्वि.	४।४।४७
प्रसूति २.	४।४।४१
" २.	७।२।१६
प्रसूतिका २.	४।४।१७
प्रसूतिज ३.	१।२।३९
प्रसून ३.	३।३।१८
" ३.	७।३।२४
" १. २. ३.	७।५।५५
प्रसूत १.	४।४।७७
" १. ३.	५।१।५२
प्रसूता २.	४।४।५८
प्रसूत्वन् १. २.	८।५।२९
प्रसेवक १.	३।९।१२०
" १.	४।३।६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	३।७।२१९
प्रस्तर १.	३।२।८
" १.	३।६।९१
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५१
प्रस्तार १.	३।३।२
प्रस्ताव १.	२।४।४१
प्रस्तुता २.	३।४।४९
प्रस्थ १.	५।१।५३
" १.	५।१।६३
" १.	६।५।४६
प्रस्थान ३.	५।२।१०
प्रस्फोटन ३.	४।३।६५
" ३.	४।३।६६
प्रस्मरण ३.	३।६।१७७
प्रस्त्रवण १.	३।२।४
" ३.	३।२।७
प्रस्त्राव १.	४।३।७८

प्रस्ताव ]	वैजयन्तीकोषः	[ प्रासाद
प्रस्ताव १.	४११२०	प्रान्तर ३.
प्रहत १. २. ३.	३८११८	३.
" १. २. ३.	५४४७९	प्रापणिक १.
" १. २. ३.	७४११८	३.
प्रहर १.	२११६७	प्रापणिका २.
प्रहरण ३.	८३१८	३.
प्रहसन ३.	३१११००	प्राप्त १. २. ३.
प्रहसन्ती २.	३३११८७	३.
( प्रसहन्ती )		३.
प्रहस्त १.	१२१४४	प्राप्तरूप १. २. ३.
" १.	४४१७७	३.
प्रहार १.	५२११९	प्राप्तुं २.
प्रहासिन् १.	३११६९	३.
प्रहि १.	४२१७	प्राप्तिसि २.
" १.	८१११०	३.
प्रहित ३.	४३१८६	प्राप्तुत ३.
" १. २. ३.	५४१९७	प्राय १.
प्रहृष्ट १. २. ३.	८४११३	३.
प्रहेलिका २.	२४३३९	प्रायः (-स्) ४.
प्रांशु १. २. ३.	५४१८१	प्रायण ३.
प्राकार १.	४३११४	प्रायणीय १. २. ३.
प्राकारमूलिक १.	४३११३	३.
प्राक्तन १. २. ३.	५४१८७	प्रार्थित १. २. ३.
प्राक्पादरज्जु २.	३७११३	३.
प्राग्जालिक १ ब.	३११२९	" १. २. ३.
प्राग्योतिष १ ब.	३११२९	प्रालम्ब ३.
प्राग्भार १.	५२१३	३.
प्राग्र १. २. ३.	५४१६३	प्रालम्बिका २.
प्राग्रहर १. २. ३.	५४१६३	३.
प्रागाढ ३.	३८११४४	प्रालेय ३.
प्राग्वंश १.	३११५१	प्राचार १.
प्राच् १. २. ३.	५४१९१	३.
प्राचिका २.	२३१२०	मावृत १. २. ३.
प्राची २.	२११५	३.
प्राचीन १. २. ३.	५४१९१	प्रावृष् २.
प्राचीनतिलक १.	२११२७	३.
प्राचीनवर्हिष् १.	८११५४	" २.
प्राचीना २.	३३१३१	प्रावृषेण्य १.
प्राचीनाचीत ३.	३३१२१	३.
प्राचीर ३.	४३११४	प्रावेशनिक १.
प्राचेतस १.	३३११५३	३.
		प्राशिक १. २. ३.
		३.
		प्रास १.
		३.
		प्रासङ्ग १.
		३.
		प्रासङ्ग्य १. २. ३.
		३.
		प्रासाद १.
		३.

प्रास्थित ]	शब्दानुक्रमणिका	[ फलिनी
प्रास्थित १.	२३३६	प्लुन १. २. ३.
प्राहुण १.	३३३६८	३.
प्राह्व १.	२१३६४	प्लुषि १.
प्रिय १.	३३३३१	३.
" १. २. ३.	३३३४३	प्लसात १. २. ३.
" १.	४४३३७	३.
" १. २. ३.	५४३७०	फ
" १. २. ३.	५४३३५	फक्किका १.
प्रियंवद १. २. ३.	५४३४४	३.
प्रियक १.	३३३३९	( पत्तिका )
" १.	३३३३३	फण १. २.
" १.	३३३६६	३.
" १.	३३३१७	फणिन् १.
" १.	७१३३३	३.
प्रियङ्गु २.	३८३५५	फणिर्जक १.
" ३.	३८३१७	३.
प्रियङ्गुवाख्या २.	३३३६६	फरुण्ड १.
प्रियनादिका २.	३१३३८	३.
प्रियापत्य १.	२३३३१	" १.
प्रियाला २.	३३३१८१	३.
प्रियालु १.	३३३५७	" ३. २.
प्रियैलिका २.	३३३४६	३.
प्रीत १. २. ३.	५४३९९	फलक ३. २.
प्रीति २.	६२३२५	३.
प्रुव्व १.	५३३८	" १.
प्रुत्ता २.	६२३२५	" १. २.
प्रुङ्ग १.	३७३३६	३.
" १.	३१३३	" १. २.
" १.	४३३१६०	३.
प्रुङ्गित १. २. ३.	५४३९५	फलकिन् १.
" १. २. ३.	५४३०३	३.
प्रुङ्गोल ३.	३७३३६	फलकी २.
प्रुङ्गालन ३.	३७३३६	३.
प्रुङ्गोलि २.	८१३२७	फलकृष्ण १.
प्रुङ्गोलित १.	५४३०३	३.
प्रुञ्जन ३.	५२३३२	फलपाकान्ता २.
प्रुत १.	१२३३८	३.
" १.	१२३३८	फलस १.
" १. २. ३.	६५५५२	३.
प्रुतदाहामि १.	१२३२२	फला २.
प्रुतालय १.	३३३७७	३.
		फलाङ्कुरा २.
		३.
		फलाध्यक्ष १.
		३.
		फलाशन १.
		३.
		फलिक १.
		३.
		फलित १. २. ३.
		३.
		फलिन् १. २. ३.
		३.
		फलिनी २.
		३.

फलिनी २.	३३१५८	फेरुण्ड १.	३३३८	बन्धुता २.	५११९
" २.	३३१२०३	फेरुविज्ञा २.	३३१९३७	बन्धुर १. २. ३.	५३४८३
फली २.	३३१६६	फेला २.	३३१९०६	" १. २. ३.	७३४२१
" २.	३३११५८	फेलुक १.	३३१६३	बन्धुरा २.	३३७१३२
" २.	३३७१९८			बन्धुल १.	३३५४४
" २.	६५५३	ब		बन्धूक १.	३३१९८५
फलीकृत १.	३३१६६	बक १.	२३११०	बन्धु १.	११११०
फलीहस्त १.	३३७७१	" १.	३३११३	" १.	३३१२८
फलेग्राहि १. २. ३.	३३३८	" १. २. ३.	३३७११३	" १. २. ३.	३३१९७
फलेपाकिन् १.	३३१५९	बकपुष्प १.	३३११९३	" १.	५३११८
फलेरुह १.	३३१२१६	बकोट १.	२३११०	" १.	५३११८
फलेरुहा २.	३३१९०	वडबा २.	३३७१३७	बर्कर १.	३३१७३
फलोदय २.	११११	वडबागण १.	५११९	बर्बर १.	३३५५०
फल्गु २.	३३११११	वडबापति १.	३३१६६	" १.	३३१९८
" १. २. ३.	५३१७६	वडबामुख १.	८११५५	" १. २. ३.	५३१२२
फल्गुनाल १.	२११८३	वत ४.	८८१२६	बर्ह १.	२३३३९
फल्गुनी २.	२११४३	वदर १.	३३१९९	" ३.	३३११७
फाणित ३.	३३८१३४	वदरी १.	३३३८७	" ३.	६३३२२
फाण्ट १.	३३११४१	" २.	३३११४८	बर्हचन्द्रक १.	२३३३९
" ३.	५३१४	वद्ध ३.	५३१३०	बर्हिण १.	२३३३६
फारी ३.	३३८८५	" १. २. ३.	५३१६७	" ३.	३३११९
फाल १.	३३८२८	" १. २. ३.	५३१९७	बर्हिध्वजा २.	१११६०
" ३.	३३८१०६	बद्धदर्भ १.	३३६१२४	बर्हिन् १.	२३३३६
" १. २. ३.	३३१११७	बद्धभूमि २.	३३३३२	बर्हिपुष्प ३.	३३८२२
" १.	६३१३९	बद्धम्बु ३.	३३२९	बर्हिमुख १.	१११४
फालगलालेप १.	३३१६७	बन्दी २.	३३१५७	बर्हिष्ठ ३.	३३३२०२
फालाकली २.	३३७३२	बन्ध १.	३३८७०	बर्हिस् १.	६३५५३
फाल्गुन १.	२३१८२	" १.	३३१३१	बल १.	१११२४
फाल्गुनिक १.	२३१८२	" १.	३३१५३	" ३.	३३७३
फाल्गुनी २.	२३१७५	" १.	५३२२८	" ३.	३३७५५
फुल्ल १. २. ३.	३३३१९	बन्धकी २.	३३७३५	" ३.	३३७२१०
" १. २. ३.	३३१७८	" २.	३३११०	" १.	३३८५३
" १.	३३१११	" २.	७३२१७	" ३.	३३८११४
फुल्लक १.	३३१३९	बन्धन ३.	३३३२०	" ३.	३३१७९
फुल्लरीक १.	३३१५	" ३.	३३११२१	बलक १.	३३६१९९
फेन १.	३३११३	" ३.	५३२२८	" ३.	३३३९९
फेनक १.	३३१७४	बन्धनी २.	३३८३०	बलकाली २.	३३८८२
फेनिल १.	३३३३२	बन्धाकि १.	३३११२	बलदेव १.	१११२२
" १. २. ३.	७३५६०	बन्धु १.	१११२९	बलभद्र १.	१११२३
फेरव १.	३३३३८	" १.	३३१५१	बलभद्रिका २.	३३३१०९
फेरु १.	३३३३८	बन्धुजीव १.	३३३१८५	बलयु २.	३३३१११

बलरिपु १.	१३२२	बहिर्गात ३.	३३१११०	बाडब ३.	५३११९
बलवत् ४.	८८१४	बहिर्गार ३.	३३३४२	बाडवेय १.	३३५५३
बला २.	३३३६६	बहिर्गारप्रकोष्ठ १.		बाडव्य ३.	५३११७
" २.	३३३१२७			बाड १. २. ३.	५३१३२
" २.	३३८७६	बहिष्कर्ष १.	३३७७०	" १. २. ३.	६३५५५
" २.	३३८११४	" १.	३३७७८	बाडम् ४.	८३७२६
" २.	३३११०७	बहु १.	१३२२७	बाण १.	१११५२
बलाका २.	२३११०	" १. २. ३.	५३४८०	" १.	३३३३९
बलाङ्ग १.	३३८३६	" १. २. ३.	५३४८४	" १.	३३७१७७
बलात्कार १.	३३७२०९	" १. २. ३.	६३४१०	" १.	३३७१८३
बलारोहा २.	३३८८२	बहुकर १. २. ३.	३३८६७	बाणाभ्यास १.	३३७१९५
बलास १.	३३४१२१	बहुचीरा २.	३३४४५	बादर १.	३३३११७
बलि १.	३३७४५	बहुगहर्षवाच् १. २. ३.		बाधा ३.	६३२२५
" १. २.	३३११३८			बान्धकिनेय १.	३३४४४
" १.	६३३३९	बहुजाली २.	३३३१६१	बान्धव	३३५५१
बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५३११९	बाभ्रवी २.	१११५९
		बहुपाद् १.	३३३२७	बार्हत ३.	३३३२२
बलिकण्टक १.	११११९	बहुप्रज १.	३३४६	बाल ३.	३३३२०२
बलिन् १.	१११२२	बहुरूप १.	१११३७	" १.	३३७६६
" १.	१११२३	" १.	३३८१११	" १.	५३३७
" १.	३३३१६५	बहुल ३.	३३८१२४	" १. २. ३.	५३४२
" १.	३३३१८९	" १. २. ३.	५३४८०	" १. २. ३.	६३३११
" १.	३३३२२१	" १. २. ३.	५३४८४	" १. २. ३.	६३५५७
" १. २. ३.		" १. २. ३.	७३५६१	बालक १.	३३८३३
		बहुला २.	३३५४२	" ३.	३३८१४०
" १.		बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्भिणी २.	३३४४६
" १.				बालचूतक १.	५३३३५
बलिपुष्ट १.	२३३१६	बहुवक्र १.	३३८६७	बालजात ३.	३३८१४०
बलिभुज १.	२३३१८	बहुवार १.	३३३५५	बालतृण ३.	३३३२३५
बलिश ३.	३३३६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका २.	३३८६०
" ३.	३३१४२			बालपत्र १.	३३३६३
बलिसदमन् ३.	३३११	बहुसारक १.	३३८१२८	बालपुष्कल १.	३३७८०
बलीवर्द १.	३३३४३	बहुसुता २.	३३३१२४	बालभीरु १.	३३३३०
बल्वज १. २.	३३३२३०	बहुसूति २.	३३४५०	बालभूषिका २.	३३१३२
बल्वक्यणी २.	३३३४८	बहुसूतिका २.	३३४२०	बालवत्स १.	२३३२३
बस्त १.	३३३६२	बहुसूदन ३.	३३८१२४	बालशाकट १. २. ३.	
बहल १. २. ३.	५३४८४	बहुस्वन १.	२३३२२		३३८२१
" १. २. ३.	५३४८४	बहुदित ३.	२३३३९	बालशाकिन १. २. ३.	
" १. २. ३.	७३४२१	बहेटक १.	३३३१७६		३३८२१
बहिः-(स्) ४.	८८१४	बाडब १.	१३२२१	वालहस्त १.	३३४७४
बहिर्गार १.	३३५७	" १.	३३६१	बाला २.	३३३१८५

[ बाला ]

बाला २.	३३२१२
बालामल १.	५३३३५
बालिश्री १. २. ३.	७४२०
बालेय १.	३३४६५
बाल्य ३.	४३४५४
बाण्य १.	६११४०
बाष्पी १.	३१८१३२
बाह १. २. ३.	५३४२०
बाहा २.	४३४७१
बाहु १. २.	४३४७१
बाहुज १.	३१७१
बाहुदन्तेय १.	११२१७
बाहुद्वार २.	४३२२६
बाहुमूल ३.	४३४६९
बाहुयुद्ध ३.	३१७२०७
बाहुरक्षा २.	३१७१५५
बाहुल १.	२११८६
" ३.	३१७१५५
बाहुलेय १.	८११३५
बाह्यनृत्त ३.	३१७७३
बाह्यलिङ्गिन् १.	३३३२३८
बाह्यिक १ ब.	३११२७
बाह्यिक १ ब.	३११२७
" १.	३१७९५
" ३.	३१८११३
" ३.	७३२६
बिडाल १.	३३४७१
बिडालक १.	४३४९५
बिडौजस् १.	११२१४
बिन्दु १.	२१२८
" २.	४३४२०
" १.	८६१०
बिन्दुक १.	५११३८
" ३.	५११४९
बिन्दुभेद १.	३३३२२३
बिम्बोक १.	३१९९४
बिभेण १.	३१५४९
बिम्ब १.	४११२९
" १. ३.	६१५५५
बिम्बसारक ३.	३१७१७५

वैजयन्तीकोषः

बिम्बसारक १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.	३३३१८५ ( बिम्बसारक ) बिम्बोष्ठी २. ३३३१४७ बिल ३. ४११२ बिलेशय १. ८१५१८ बिलेशया २. ३३३२६ बिलौकस् १. ४११६ बिल्व १. ३३३३० " १. ५११५१ बिल्वक १. ४११४७ बिस ३. ४३२४३ बिसकण्टिका २. २३३१० बिसखण्ड ३. ४३२३९ बिसनाभिज ३. ४३२३८ बिसप्रसून ३. ४३२३८ बिसिनी २. ४३२४३ बिसिर ३. ३१८१२० बीज ३. २११८६ " ३. ४३४१११ " ३. ६३३२३ बीजकोश १. ४३२४५ बीजपुष्पिका २. ३१८१७ बीजपूर १. ३३३३३ बीजवर १. ३१८३५ बीजसू २. ३११४ बीजाकृत १. २. ३. ३१८२३ बीजिन् १. ४३४२९ बीज्य १. ४३४५० बीभत्स १. ३१९७५ " १. ३१९७७ " १. २. ३. ३१९७८ " १. २. ३. ७३२१ बुक्कन ३. २३४६ बुद्ध १. १११३१ " १. १११३२ " १. २. ३. ५३४१०१ बुद्धि २. ३३३१६३ बुद्धिमात् १. २३३२७ बुद्धुद १. ४३२१३ बुध १. २३३३२
---	--

[ बृहन्नाजु ]

बुध १.	३३३२३२
बुधा २.	३३३१२५
" २.	३३३१६३
" २.	३१८९४
बुधित १. २. ३. ५३४१०१	
बुधन १.	३३३१२
बुन्दिर ३.	४३३१८
बुभुत्ता २.	३३३१८२
बुभुत्तु १. २. ३. ५३४३६	
बुभिका २.	४३३७०
बुम्बी २.	४३३७०
बुरुल १.	३१५३०
बुलि २.	४३४६०
" २.	४३४६१
बुलकी २.	४३१५५
बुशाली २.	४३३२६
( बुशाली )	
बुषा २.	३१९१७
बुस १.	३१८६४
" ३.	३१८१४२
बुसा २.	३३३९७
" २.	३१९१०७
बुस्तक १. २. ३.	३३३१५५
बृंहित ३.	२३४७
बृन्द ३.	५११३
" ३.	५११२८
" ३.	५११३०
" ३.	५११३१
बृन्दाक १.	११११३
बृन्दारक १. २. ३.	८१५१८
बृहच्छद १.	३३३२०९
बृहत् १. २. ३. ५३४८०	
बृहत्तिका २.	४३३१२३
बृहती २.	३३३१०४
" २.	३१९११९
" २.	७३२१७
बृहत्कर्कोटक १.	३३३१६५
बृहद्गृह १ ब.	३३३३६
बृहन्नाजु १.	१३३१४

[ बृहस्पति ]

बृहस्पति १.	२११३३
बृहाणक १.	५११५४
बेन १.	३१५३४
बेर ३.	३१९२१
बोक्कण १.	३१७११५
बोध १. २. ३. ५३४१०१	
बोधकर १.	३१७३०
बोधन ३.	३३३१६४
बोधनीया २.	३१८९४
बोधान १.	३३३२२
बोधि १.	६१५५७
" २.	८११५
बोधिसत्त्व १.	१११३२
बोधी २.	५११३७
बोल १.	३३३१५
" १.	५३३१६
" १. २. ३. ६१५५६	
बोसर १.	५३३३४
ब्रसी २.	३३३१४९
ब्रह्मगर्भ ९.	१११५६
ब्रह्मघोष १.	४३१२३
ब्रह्मचर्य ३.	३३३१४
" ३.	३३३२०९
ब्रह्मचारिणी २.	८१५३०
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६
" १.	३३३१७
" १.	८१५३०
ब्रह्मजटा २.	३३३१२२
ब्रह्मदण्ड ३.	३१७१७५
ब्रह्मदण्डी २.	३३३१००
ब्रह्मदर्भा २.	३१८१०२
ब्रह्मधारा २.	४३३१०
ब्रह्मन् १.	१११६
" १.	३१५३
" ३.	३३३२७
" १.	३३३७९
" ३.	३३३१६१
" १.	३३३१६३
" १.	६१५१०३
" १.	८११३०
ब्रह्मनाभ १.	११११५

शब्दानुक्रमणिका

ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७
" १.	४३३२४
" १.	८१३३५
ब्रह्मबन्धु १. २. ३.	८३३१०
ब्रह्मविन्दु ३.	३३३२६
ब्रह्मभाव १.	३३३२३७
ब्रह्मभूय ३.	३३३२३७
ब्रह्ममेखल १.	३३३२२९
ब्रह्मरात्रिक १.	३३३१५५
ब्रह्मरीति २.	३३३२६
ब्रह्मलोक १.	३३३२०८
ब्रह्मवर्चस ३.	३३३११६
ब्रह्मवालुक ३.	४३३२३
ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.	१११५
ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९
" १.	८३३१९
ब्रह्मवेदि २.	३३३२३
ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०
ब्रह्मसू १.	११३२९
ब्रह्मसूत्र ३.	३३३२०
ब्रह्मस्थली २.	४३३१०
ब्रह्महत्या २.	८११७
ब्रह्माञ्जलि १.	३३३२६
ब्रह्मी २.	३३३१४४
ब्रह्मोद्य ३.	८१११६
ब्रह्मौदनाग्नि १.	१३३२६
ब्राह्म १.	२११६७
ब्राह्मण १.	३३३११
" १.	३३३३३
" १. २. ३. ७३३१६०	
ब्राह्मणब्रह्म १. २. ३.	३३३१०
ब्राह्मण्यष्टिका २.	३३३१००
ब्राह्मणी २.	३३३२७
" २.	४३३२९
" २.	४३३३६
ब्राह्मण्य ३.	७३३२५
ब्राह्मिक १.	३३३२२

[ भट ]

ब्राह्मी २.	१११९
" २.	१११६४
" २.	२११६
" २.	३३३१४४
भ	
भ ३.	२१३३८
भक्त ३.	४३३७५
" १. २. ३. ६१५६०	
भक्तमण्डक १. ३. ४३३७८	
भक्ति २.	३३३३६
" २.	६३३२६
भक्तक १. २. ३. ५३४५०	
भक्तकार १. २. ३.	४३३२२
भक्तन ३.	३३३१५२
" ३.	४३३१०४
भक्तणी ३.	३३३६०
भक्तित १. २. ३.	५३४१०८
भग ३.	४३३६१
" १. ३. ६१५५८	
भगनेत्रान्तक १. १११३३	
भगन्दर १.	४३३३०
भगवत् १. २. ३. ८१५३१	
" १. २. ३. ८१५३६	
भगिनी २.	४३३२६
भगिनीपति १.	४३३३८
भगिनीभ्रातृ १.	४३३४७
भग्न १. २. ३. ३३३१४८	
भग्नस्थिवन्ध १.	४३३३९
भङ्ग १.	४३३४४
भङ्गि २.	५३३३४
भङ्गुर १. २. ३. ७३३२१	
भङ्ग्य १. २. ३. ३३३२०	
भजमान १. २. ३.	३३३१०३
भङ्गना २.	२३३२६
भङ्गिका ३.	३३३१००
भट १.	३३३१९
( नट )	

( १०४ )

( १०५ )

[ भट ]

वैजयन्तीकोषः

[ भाण ]

भट १.	३।७।१३९	भन्दना २.	२।१।१९	भव १.	६।१।४१
भटित्र १. २. ३.	४।३।९४	भम्भराली २.	२।३।४४	भवत् १. २. ३.	८।९।४६
भटोद्योग १.	३।७।२०२	भम्भा २.	३।९।१३३	भवन १.	३।४।७०
भट्ट १. २. ३.	८।९।४६	भय ३.	३।६।१८५	" ३.	४।३।१७
भट्टरक १. २. ३.	८।९।४६	भयङ्कर १. २. ३.	३।९।७८	भविक १. २. ३.	५।४।१४२
भट्टारक १.	३।९।१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३।७।२१८	भवितव्यता २.	३।६।१८९
" १. २. ३.	८।९।४६	भयन ३.	३।६।१८५	भवित् १. २. ३.	५।४।४१
भट्टारिका २.	३।९।१०४	भयानक १.	३।९।७५	भविल १. २. ३.	७।५।६२
भट्टिनी २.	३।९।१०४	" १.	३।९।७७	भविव्यु १. २. ३.	५।४।४१
भण्डन ३.	७।३।२६	" १. २. ३.	३।९।७८	भव्य १.	३।३।३७
भण्डाकी ३.	३।३।१०२	भर १.	५।२।३	" १. २. ३.	५।४।१४२
भण्डिल १.	३।३।७२	" १.	६।१।४१	" १. २. ३.	६।४।११
भण्डिरी २.	३।३।१४५	" १.	६।१।४२	भषण ३.	२।४।६
भदन्त १.	३।९।१०७	भरण ३.	३।९।५	" १.	३।४।६८
भद्र १.	३।७।६२	भरणी २.	२।१।४१	भषित ३.	२।४।६
" १. २. ३.	५।४।८०	भरण्य ३.	३।९।५	भसत् १.	२।३।२
" १. २. ३.	५।४।१४३	भरत १.	१।२।२६	भसद् २.	६।२।२६
" ३.	८।९।२४	" १.	३।६।७८	भसल १.	२।३।४२
भद्रकाली २.	१।१।६१	भरथ १.	१।२।१९	भसित ३.	१।२।३३
भद्रकुम्भ १.	४।३।६१	भरद्वाज १.	२।३।१९	भस्त्रा २.	३।९।१७
भद्रदारु ३.	३।३।७१	भरित १. २. ३.	५।४।८६	भस्मगन्धिनी २.	३।८।९५
भद्रपदा १. २. ३.	२।१।४१	भरुज १.	३।४।३७	भस्मगर्भा २.	३।३।९२
भद्रपर्णिका २.	३।३।५८	भरुटा २.	४।३।८६	भस्मन् ३.	१।२।३३
भद्रमन्द १.	३।७।५४	भर्ग १.	१।१।४०	भा २.	२।१।२२
भद्रमन्दमृग १.	३।७।६४	भर्तृ १.	४।४।३७	भाग १.	४।४।५५
भद्रमुक्त १.	३।३।२२८	भर्तृदारक १.	३।९।१०५	" १.	५।२।७
भद्रमुस्तक १.	३।३।१९९	भर्तृवारिका २.	३।९।१०४	" १.	६।१।४१
भद्रमृग १.	३।७।६४	भर्त्सन ३.	२।४।३४	भागधेय १.	३।७।४५
भद्रयव १. ३.	३।३।७३	भर्मन् ३.	३।९।५	" १. २. ३.	८।५।१९
भद्रलक्षण ३.	३।७।६३	" ३.	६।३।२३	भागवत १.	३।६।१०५
भद्रवदन १.	१।१।२४	भर्मिन् १.	३।५।११	" १.	३।६।१०५
भद्रश्री १.	३।८।११२	भलुह १.	३।४।७०	भागिनेय १.	४।४।४१
भद्रसुत १.	३।७।१५९	भल्ल १.	३।७।१८२	मागीरथी २.	४।२।२४
भद्रा २.	३।३।१३९	भल्लाट १.	३।४।७	भाग्य ३.	३।६।१८९
भद्राकरण ३.	३।६।४	भल्लातक १. २. ३.	३।३।२४	" ३.	६।३।२४
भद्राङ्ग १.	१।१।२४	भल्लान्तक १. २. ३.	३।३।२४	भाङ्गीनी १. २. ३.	३।८।२०
भद्राश्व ३.	३।१।७	भल्लुक १.	३।४।४०	भाजन ३.	४।३।६२
भद्रासन ३.	३।७।१५	भल्लुक १.	३।३।६८	भाङ्गी २.	३।३।१००
भद्रेश्वर १.	१।१।३९	" १.	३।४।७	भाण १.	३।९।१००

( १०६ )

[ भाण्ड ]

शब्दानुक्रमणिका

[ भुवन ]

भाण्ड ३.	३।७।४४	भावज्ञा २.	३।३।६७	भिक्षकृत ३.	३।७।५६
" ३.	४।३।६२	भावना २.	४।३।१५८	भिया २.	३।६।१८५
" ३.	६।३।२३	" २.	८।९।४	भिल्ल १.	३।५।४६
भाण्डागारिक १.	३।७।२३	भावित १. २. ३.	५।४।९९	भिक्ष १. २. ३.	४।४।१४३
भाण्डी २.	३।३।१४५	" १. २. ३.	८।९।२२	भिस्सा २.	४।३।७६
भातु १.	२।१।१०	भावुक १. २. ३.	५।४।४१	भिस्सिता २.	४।३।७७
भानु १.	२।१।१०	भाषणी २.	२।४।३५	भी २.	३।६।१८५
" १.	२।१।५५	भाषा २.	१।१।९	भीत १. २. ३.	५।४।१८
" १.	६।१।४०	" २.	३।८।१६	भीति २.	३।६।१८५
भाद्र १.	२।१।८५	" २.	३।९।१०२	" २.	३।९।७६
भाद्रपद १.	२।१।८५	भास १.	२।३।३२	भीम १.	१।१।४३
भामिनी २.	४।४।५	भासन्त १.	७।१।५८	" १. २. ३.	३।९।७८
" २.	४।४।१०	भासुर १. २. ३.	५।४।१४२	भीमर १.	३।७।२६
भार १.	५।१।६१	भास्कर १.	२।१।१२	भीरु १.	३।३।७८
" १.	६।१।४१	" १.	७।१।५८	" २.	३।३।१६६
भारत ३.	३।१।५	भास्वत् १.	२।१।१२	" २.	४।४।५
भारती २.	१।१।९	" १. २. ३.	६।५।५९	" १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।३।११९	भास्वर १ व.	१।३।८	भीरुक १. २. ३.	५।४।१८
" २.	३।९।१०१	भिक्षा २.	३।३।१५	भीरुचेतस् १.	३।४।११
" २.	३।९।१०२	" २.	३।३।१२१	भीरुपर्णा २.	३।३।१४२
भारद्वाज ३.	४।४।१०९	" २.	६।२।२६	भीरुबाल १.	३।३।३०
भारद्वाजी २.	३।३।९९	भिक्षाचार १. २. ३.	३।३।१७	भीलुक १. २. ३.	५।४।१८
भारयष्टि २.	३।९।६	भिक्षु १. २. ३.	३।३।१२६	भीषण १. २. ३.	३।९।७९
भारवह १. २. ३.	३।७।२२२	" १.	३।३।१६०	भीष्म १. २. ३.	३।९।७८
भारवाह १.	३।९।६	" १.	३।४।२७	भुक्त १. २. ३.	५।४।१०८
भारसह १.	३।४।६६	भिक्षुकी २.	४।४।१०	भुम्भ १. २. ३.	५।४।१२४
भारिक १.	३।९।६	भिक्षुलोचक ३.	३।३।५	भुज १.	३।३।४५
भारित ३.	५।१।६२	भिक्षुसङ्घाटी २.	४।३।१२८	" १.	३।३।१९३
भारुष १.	३।५।५८	भिक्षुपाल १.	३।७।१६६	" १. २.	४।४।७१
" १.	३।६।१०३	भिक्ष ३.	४।४।५६	भुजग १.	४।१।५
भार्गाव १.	२।१।३४	भित्तिका २.	४।३।३७	भुजगाह्वय ३.	३।३।२९
भार्गावी २.	१।१।३६	" २.	७।२।१८	भुजङ्ग १.	४।१।५
" २.	३।३।२३३	भिदा २.	५।२।४१	" १.	४।४।३९
भार्गी २.	३।८।८१	भिदु १.	१।२।३३	भुजङ्गम १.	४।१।५
भार्या २.	४।४।३४	भिदुर १.	१।२।३३	भुजङ्गारि १.	२।३।३७
भालुक १.	३।४।३३	" १.	३।७।८३	भुजि १.	१।२।१८
भाव १.	३।६।१७४	भिष १.	४।२।२९	भुजिष्य १.	३।९।२
" १.	३।९।८०	भिष १. २. ३.	५।४।१११	" १.	३।९।४
" १.	३।९।९७	" १. २. ३.	६।४।११	" १. २. ३.	७।४।२२
" १.	६।१।४३	भिक्षुम्भ १.	३।९।४	भुरग्यु १.	७।१।५९
				भुवन ३.	३।६।२०६

( १०७ )

[ भुवन ]

भुवन ३.	४११२
" ३.	४२१२
भुवन्य १.	७११५९
भुवस् १. ४.	३११२०६
भुसुण्ठी १.	३१७१७०
( भुसुण्डी )	
भू २.	३११४
" २.	८१२१६
" २.	८१६४
भूघन १.	४१४५३
भूत १. ३.	११३१२
" ३.	३१६२०६
" ३.	४१४१
" १. २. ३.	५१४९९
" १. २. ३.	६१५५९
" १. ३.	८१९३०
भूतग्राम १.	५१११७
भूतग्री ३.	३१३१२१
भूतदमनी २.	१११४९
भूतधात्री २.	३११२
भूतपुष्प १.	३१३६९
भूतफल १.	३१३१६६
भूतलोद्भव ३.	३१२३०
भूतवास १.	३१३१७६
भूतसम्भव १.	२११९४
भूतसारी २.	३१८८२
भूतात्मन् १.	७११६०
भूतापुत्र १.	११३१२
भूति २.	११२३३
" २.	४१३८७
" २.	६१२२७
" २.	८१५३४
भूतिक ३.	७१३२६
भूतेश १.	१११४३
भूतेश्वर २.	२११७०
" २.	२११८०
भूदार १.	३१४६
भूदेष १.	३१६१
भूधर १.	३१२१
भूनामन् २.	३१२१७
भूप १.	३१७१

वैजयन्तीकोषः

भूपदी २.	३१३१८३
भूपरा १.	३१३२१९
भूपुञ्ज १.	३१७१
भूपुत्रसभ ३.	८१२२०
भूमि २.	३१११
" २.	६१२२७
भूमिकन्दर ३.	३१३१५३
( भूमिकन्दक )	
भूमिका २.	३१९६८
भूमिकागत १.	३१९६८
भूमिकूरमाण्ड १.	
" ३.	३१३१९५
भूमिमयी २.	२११२३
भूमिलाभ १.	३१३२०१
भूमिस्पृश १	३१८१
" १.	७११५९
भूमिष्ठ १. २. ३.	५१४८५
भूरद १.	३१३१३३
भूरि १. ३.	३१२२०
" १. २. ३.	५१४८५
भूरिमाय १.	३१४३८
भूरिलोह ३.	३१२२९
भूरिश्रवस् १.	११२५
भूरुह १.	३१३४
भूरुह १.	३१३४
भूर्ज १.	३१३४५
भूर्जषत्र १.	३१३४५
भूलता २.	४११५९
भूलवण २.	३१८१२२
भूवल्लर ३.	३१३१५३
भूशक्र १.	३१४१
भूश्वभ्र ३.	४११३
भूषण ३.	४३१३३
भूष्णु १. २. ३.	५१४४१
भूस्त्वण ३.	३१३२३४
भूरुपृश १.	६११४२
भूरुफोट ३.	३१३१५३
भूरुकुंस १.	३१९६७
भूरुकुटि २.	३१९९१
भूरुगु १.	३१२६
भूरुङ्ग १.	२१३२७

( १०८ )

[ भेल ]

भृङ्ग १.	२१३४२
" ३.	३१८१०४
" ३.	३१८१०७
भृङ्गराज ३.	३१३१०७
" १.	८११३६
भृङ्गरिडि १.	१११५२
भृङ्गा २.	३१८१५१
भृङ्गाण १.	२१३४२
भृङ्गार १.	४३११०८
भृङ्गारी २.	२१३४७
भृङ्गिन् १.	१११५२
भृङ्गिरिटि १.	१११५२
भृङ्गकण्ठ १.	३१५५३
" १.	३१५६६
भृङ्गकण्ठक १.	३१५१००
भृत्क १. २. ३.	३१९५
भृत्ति १.	३१९५
भृत्तिभुज् १. २. ३.	३१९५
भृत्त्य १.	३१९२
भृत्त्या २.	३१९६
भृत्थ १.	४११५०
भृश १. २. ३.	५१४१३१
भृशकोपन १. २. ३.	
भृशङ्गत १. २. ३.	५१४३२
भृष्ट १. २. ३.	३१७१४९
भृष्टयव १.	४३१७१
भेक १.	३१५२९
" १.	४११४७
" १. २. ३.	६१५५९
भेटक १.	३१८६९
भेद १.	३१७१३
" १.	६११४२
भेदितं १. २. ३.	५१४१११
भेन १.	६११४२
भेय १.	५१२१२
भेरी २.	३१९१३३
भेरीनाद् १.	२१४११
भेल १.	३१४३
" १.	४१२१६

भेल ]

भेल १. २. ३.	६१५५७
भेलन ३.	५१२१२
भेलुक १.	१११५२
भेषज ३.	४१४१४१
भैल ३.	३१८१२
" ३.	५१११३
भैमरथी २.	२११६१
भैरव १. २. ३.	३१९७९
" १.	८११६०
भैपज्य ३.	४१४१४१
भोः ( -स् ) ४.	८१८२
भोग १.	४११२१
" १.	६११४४
भोगभूमि २.	११११
भोगवती २.	४११४
" २.	४१२२५
भोगिन् १. २. ३.	७१५३१
भीगिनी २.	७१५३२
भोज १ ब.	३११३७
" १.	३१५६२
भोजन ३.	४३११०२
भोजनीय ३.	३१८११९
भोज्य ३.	३१३६२
भोल १.	३१२२१
भौम १.	११२३२
भौरिक १ ब.	३११३१
" १.	३१७२१
भ्रकुंस १.	३१९६७
भ्रकुञ्ज १.	३१५५५
भ्रकुटि २.	३१९९१
भ्रम १.	३१६१७७
" १.	३१९१८
" १.	४१२११
" १.	५१२१०
भ्रमन्त १.	५१२५१
( गृहकोल्हक )	
भ्रमर १.	२१३४२
" १. २. ३.	७१५६२
भ्रमरक १.	३१८१३५
" १.	४१४९९
भ्रमरालक १.	४१४९९

शब्दानुक्रमणिका

भ्रमरेष्ट १.	८११५९
भ्रमि २.	५१२१०
भ्रष १.	५१४१०२
भ्रष्ट १. २. ३.	५१४१०२
भ्राज् १.	११३११
भ्राणञ्जक	३१५२५
भ्रावृ १.	४१४३१
" १.	४१४४७
भ्रावृव्य १.	७११५९
भ्रात्र १.	३१८४१
भ्रात्रीय १.	४१४४२
भ्रान्ति २.	५१२१०
भ्रामकादि १.	३१२३८
भ्रामर ३.	३१८१३५
भ्रामरी २.	१११५९
भ्राष्ट्र १.	५१२५६
भ्रुकुंस १.	३१९६७
भ्रुकुट १.	३१९१६७
भ्रुकुटि २.	३१९९१
भ्रू २.	४१४९६
" २.	८१९१२
भ्रुकुंस १.	३१९६७
भ्रुकुटि २.	३१९९१
भ्रूण १.	६११४०
भ्रूणि २.	४१२२१
भ्रूण १.	३१५१५
भ्रूणक १.	३१५३१

म

मक १.	३१५२९
मकर १.	११२६०
" १.	४११५१
" १.	८१६१३
" १.	८१६१५
मकरध्वज १.	१११२७
मकरन्द १.	३१३१९
मकरवाहन १.	११२४५
मकरालय १.	४१२११
मकुट १. ३.	४३१३५
मक्षण १.	३१७६७
मक्षिका २.	२१३४४
मक्षुण ३.	५११४८

[ मञ्जूषा ]

मख १.	३१६१८२
मगध १ ब.	३११३१
मघवत् १.	११२१२
मघा १ ब.	२१३४३
मङ्क १.	४१४१२६
मङ्कश १.	३१५७०
मङ्कु ४.	८१८१
मङ्ग १. ३.	३१२१७
मङ्गल १.	२१३३१
" १.	५१३४८
मङ्गलध्वनि १.	३१६५७
मङ्गलमालिका २.	
" ३.	३१६५७
मङ्गलाह्निक ३.	३१६५८
मङ्गल्य १.	३१३३०
" ३.	३१८४०
" ३.	३१८१४९
" ३.	४३११४
मङ्गल्या २.	३३१९८
" ३.	३१८१०८
" २.	५३१५८
मङ्गिनी २.	४१२१५
मचर्चिका २.	८१९४२
मज्ज १.	४१४११०
मज्जा २.	३३११४
" २.	४१४११०
मज्जाकर ३.	४१४१०९
मञ्च १.	४३३३२
मञ्चक १.	४३१६४
मञ्चन ३.	३१५२४
मञ्जरि २.	३३३२०
मञ्जरी २.	३३३१९९
मञ्जरीक १.	३३३१२०
मञ्जिष्ठा २.	३३३१३५
मञ्जी २.	३३३२०
" २.	३३३६२
मञ्जीर १. ३.	४३३१४५
मञ्जू १. २. ३.	५१४१३४
मञ्जुल १. २. ३.	
मञ्जूषा २.	४३३६३

( १०९ )

मञ्जूषा ]

मञ्जूषा २.	७२११
मट १.	३१५१८
मटची २.	२१२७
मठ १.	४३३२७
" १. २. ३.	८१२३९
मठर १.	५३३३
मठी २.	८१२३९
महूषिका २.	३६५१
( मधूषिका, मटूषिका )	
मड्डु १.	३११३५
मड्डुकैरिक १.	३५३३१
मणि १. २.	३२३३६
" १. २.	४३३६२
" १. २.	४३३७३
" १. २.	६५६२
मणिक १.	४३३५६
मणिकण्ठ १.	२३३२९
मणिकार १.	३५६३
" १.	३११५
मणित ३.	२३३७
मणिवन्ध १.	४३३७३
मणिल १. २. ३.	५३३८
मणिसानु १.	१३३१२
मणिसोपान ३.	४३३१४२
मणीच ३.	७३३२७
मणीचक ३.	३३३१८
मण्टप १. ३.	४३३२८
मण्डजात ३.	३१८१४०
मण्ड १. ३.	४३३७७
" १.	५११४७
मण्डन ३.	४३३३३
" १. २. ३.	५३३४१
मण्डपीठिका २.	२११७
मण्डल १.	३३३६९
" ३.	३३७४९
" ३.	३३७१८७
" ३.	४३३१२४
" १. २. ३.	७५६५
मण्डलपत्रिका २.	३३३९२
मण्डलाग्र १.	३३३१६०
मण्डलिन् १.	३३३७२

वैजयन्तीकोषः

मण्डलिन् १.	४११७
" १.	४११८
" १.	४१११०
" १.	४१११३
" १.	७११६०
मण्डलेश्वर १.	३३७२
मण्डहारक १.	३५३४
मण्डिका २.	४३३७८
मण्डकी २.	३३७७९
मण्डक १.	३३७५१
" १.	४११४८
मण्डकपर्ण १.	३३३६८
मण्डकपर्णी २.	३३३१४४
मण्डूर ३.	३३३३६
मत ३.	३३६१७४
" ३.	३३८१०७
मतङ्ग १.	३३३६०
मतल्लिका २.	८११४२
मति २.	३३३२३३
" २.	६३३२७
मत्कुण ३.	३३७५५४
" १.	४१३३५
मत्त ३.	३३७६७
" १. २. ३.	५३३३७
मत्तकाशिनी २.	४३३१२
मत्तवारण ३.	४३३३१
" ३.	४३३१६४
मत्थ ३.	३३८३०
मत्सर १. २. ३.	७५६३
मत्स्य १.	११११८
" १.	४११४१
मत्स्यगु १.	३३६१५७
मत्स्यण्डी २.	३३८१३३
मत्स्यधानी २.	२११४२
मत्स्यनाशन १.	२३३३४
मत्स्यपित्ता २.	३३८६८
मत्स्यराज् १.	४११५१
मत्स्यवेधन ३.	३३१४२
मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३३३३३
मत्स्यसङ्घात १.	४११४५

[ मधु

मत्स्याक्षी २.	३३३१४४
" २.	३३३१५६
मथित ३.	३३८१००
मथिन् १.	३३३३१
मथुरा २.	४३३६
मद १.	३३३१८८
" १.	३३७८२
" १.	५३३३२
" १.	८५३३६
मदकल १.	३३७६८
मदकोहल १.	३३३५४
मदन १.	२३३३
" १.	३३३३९
" १.	३३३६१
" १.	३३८५५
" १.	३३८१३७
" १.	७११६१
मदनध्वजा २.	२११७५
मदना २.	३३१४६
मदनी २.	३३३३६
मदवृन्द १.	३३७६२
मदमत्तक १.	३३३७७
मदयन्ती २.	३३३१८३
मदस्थान ३.	३३१७३
मदिरा २.	३३१४५
मदिष्टा २.	३३१४६
मदुर १.	३३३३
मदोत्कट १.	२३३१४
" ३.	३३१४८
मदोदर्का २.	३३८८२
मद्गु १.	२३३११
" १.	३३५५२
" १.	३३५७१
" १.	३३५८४
" १.	३३५९३
महलध्वनि १.	२३३१०
मद्य ३.	३३१४४
मद्यबीज ३.	३३१५०
मद्यलालस १.	३३३२६
मद्यसन्धान ३.	३३१५१
मधु १.	२११८३

मधु ]

मधु १.	२११८७
" १.	३३३६१
" २.	३३३१४३
" १. ३.	३३८१३४
" ३.	३३८१४५
" १.	५३३३३
" १.	६५६१
मधुक १.	३३३३७
" १.	३३७३०
" ३.	३३८१३४
" १.	५३३३२
मधुकर १.	२३३४३
मधुका २.	३३८५६
मधुकुक्कुटी २.	३३३३४
मधुकुम १.	३३१५२
मधुकीर १.	३३३२२२
मधुच्छद १. २.	३३३३८
मधुतृण १.	३३३२२५
मधुप १.	२३३४२
मधुपर्क १.	३३६६२
मधुपर्णी २.	८३३८
मधुपुष्प १.	३३३४३
मधुबीज १.	३३३७४
मधुबोल १.	५३३३८
मधुमत्तिका २.	२३३४५
मधुमद्य ३.	३३१४८
मधुमालक १.	५३३३७
मधुयष्टिका २.	३३८१०३
मधुर ३.	३३८१०३
" ३.	३३११२
" १. २. ३.	४३३८२
" १.	५३३२५
" १.	५३३२७
" १. २. ३.	७३३२२
मधुरवाच् १. २. ३.	
मधुरस १.	३३३२१०
मधुरसा २.	८३३८
मधुरस्वन १.	४३१५५
मधुरा २.	३३१२५
" २.	४३३६

शब्दानुक्रमणिका

मधुराङ्गक १.	५३३२७
मधुराम्लक ३.	३३८१३६
मधुलिह् १.	२३३४२
मधुवाच् १.	२३३२७
मधुवार १.	३३१५२
मधुव्रत १.	२३३४३
मधुशिष्टु १.	३३३५६
मधुश्रेणि १.	३३५४४
मधुष्ठील १.	३३३४३
मधुसख १.	१११२८
मधुसारथि १.	१११२९
मधुसूदन १.	११११५
मधुस्रव १.	३३३४३
मधुस्रवा २.	३३३१८०
मधूक १.	३३३४३
मधूच्छिष्ट ३.	३३८१३७
मधूपद्मा २.	४३३६
मधूल ३.	३३८१३७
" १.	५३३३३
मधूलक १.	३३३४४
" १.	५३३२५
" १. २. ३.	८३३३३
मधूलिक १.	५३३३३
मधूषिका २.	४३३६
मध्य ३.	३३१२३
" १. ३.	४३३६७
" १. २. ३.	५३३२९
" १. २. ३.	६५६३
मध्यदन्त १.	४३३८९
मध्यदेश १.	३३१२२
मध्यन्दिन १.	२३१६५
मध्यम १.	३३११३२
" १.	४३३६७
" १. २. ३.	५३३७७
मध्यमा २.	४३३७४
मध्यमीय १. २. ३.	
" १.	५३३७७
मध्यमास्वात १.	३३३२३०
मध्यरात्र १.	२३३६६
मध्यस्थ १. २. ३.	३३८१९
मध्याह्न १.	२३३६५

[ मन्थर

मध्वालुक १.	३३३२१०
मध्वासव १.	३३१४९
मनश्शला २.	३३२११
" २.	३३३२११
मनस् ३.	३३३१७२
मनसिज १.	१११२७
मनस्कार १.	३३३१७४
मनाक ४.	८३३१२
मनाका २.	७३३१९
मनित १. २. ३.	५३३१०१
मनीषा २.	३३३१६३
मनीषिन् १.	३३३२३५
मनुज १.	३३५१
मनुज्येष्ट १.	३३७१५८
मनुष्य १.	३३५१
मनुष्यधर्मन् १.	१३३५६
मनोजव १.	३३५५
मनोजवा २.	१३३३०
मनोज्ञ १. २. ३.	
" १.	५३३३३
मनोज्वला २.	३३३१८२
मनोभिधा २.	३३२१२
मनोरथ २.	३३३१७९
मनोरम १. २. ३.	
" १.	५३३३५
मनोविकार १.	३३१८०
मनोहर १. २. ३.	
" १.	५३३३५
मनोहरी २.	३३८७७
मन्तु १.	३३७४७
मन्त्र १.	३३३३३
" १.	६३३४५
मन्त्रजिह्व १.	१३३१७
मन्त्रज्ञ १.	३३७२६
मन्त्रिन् १.	३३७१८
" १.	३३७१९
" १.	८३३४५
मन्थ १.	३३३३१
" १.	४३३७१
मन्थपात्र ३.	३३३३२
मन्थर १. २. ३.	३३७१५०

## [ मन्थर ]

मन्थर १. २. ३.	७५६४
मन्थविष्कम्भ १.	३१९३२
मन्थान १.	३१९३१
मन्थोदधि १.	३११११
मन्द १.	१२३३४
” १.	२१३३५
” ३.	३१८१४०
” १. २. ३.	५४१५५
” १. २. ३.	६५१६०
मन्दगामिन् १. २. ३.	
	३१७१५०
मन्दर १.	४३११४०
मन्दरमणि १.	११११४६
मन्दरवासिनी २.	
	१११६३
मन्दाकिनी २.	११११३
मन्दाक्ष ३.	३१६१९४
मन्दागा २ ब.	२११४१
मन्दार १.	१३११४
” १.	३३१४४
मन्दिर ३.	४३११८
” ३.	७३३२७
मन्दुपाल २.	३५३३१
मन्दुरा २.	४३३२१
मन्दोत्खात १.	३१६२३०
मन्दोष्ण ३.	५३३१९
मन्द्र १. २. ३.	२१४१३
” १.	३१७६२
मन्द्रभद्रमृग १.	३१७६५
मन्द्रलक्षण ३.	३१७६३
मन्मथ १.	१११२७
” १.	३३३३२
मन्मथसख १.	२११८३
मन्या	३१७८५
” २.	४१४११७
मन्यु १.	३१६१८३
” १.	६११४५
मन्वन्तर ३.	२११९३
मय १.	१३३७
” १.	३१४६७
मयष्टक १.	३१८३८

## वैजयन्तीकोषः

मयु १.	१३३३
मयूक १.	२३३३७
मयूख १.	२१११६
” १. २. ३.	८१९२५
मयूर १.	२३३१४
” १.	२३३३६
मयूरक ३.	३२३४२
” १.	३३३११५
” १.	३३३१२०
मरकत ३.	३२३३८
मरण ३.	३३३२०२
मरणालस ३.	३३३२१७
मरन्द १.	३३३१९९
मराल १.	२३३५
” १.	३३३१९२
” १. ३.	५३३१७
मरिच ३.	३१८७९
मरिष्टक १.	३२३३८
मरीच ३.	३१८७९
मरीचि १. २.	२१११६
मरीचिका २.	२११२२
” २.	५११४२
मरु १ ब.	३१३३८
” १.	३११४२
मरुक १.	३१४११
मरुजा २.	३१४२२
मरुत् १.	१११२
” १.	१२३३९
” २.	३३३११७
मरुत्वत् १.	१२३४
मरुद्गण १ ब.	१३३८
” १ ब.	१३३१०
मरुध्व १.	३३३६३
मरुन्माला २.	३३३११७
मरुल १.	३३३७३
” ३.	४२३१
मरुवक. ६.	३३३४९
मरुक १.	७११६२
मरुद्धव १.	३३३६४
मर्क १.	१२३४९
” १.	६११४७

## [ मलय ]

मर्कट १.	३१४३९
” ३.	४३१४८
मर्कटक १.	३१८६२
” १.	४१३३४
मर्कटास्य ३.	२२३२४
मर्कटी २.	४३३४८
मर्कस १.	३१५५१
मर्कोटपिपीलिका २.	
	४१३३७
मर्त १.	३३३२०६
मर्त्य १.	३५११
मर्त्यलोक १.	३३३२०६
मर्द १.	३३३१६७
मर्दन ३.	५२३३०
मर्दनी २.	३३७१५५
मर्दल १.	३३३१३४
मर्दलध्वनि १.	२३३१०
मर्मभेदन १.	३३७१७९
मर्मर २.	२३४८
” १.	५४१४४
मर्मरा २.	४३३७०
मर्मस्पृश १. २. ३.	
	५४११२
मर्यादा २.	३१९१५
” २.	४२३३३
” २.	४३३११
” २.	७२३१९
मर्ष १.	३३३१८४
मल ३.	३२३२९
” १.	३५२४
” १.	४१३३२
( अल )	
” १. ३.	४४११९
” १. ३.	४४१२०
” १.	५४१४४
” १. ३.	६५६५
मलद १ ब.	३१३३६
” १.	३१८३५
मलना २.	३३३१६०
मलय १.	३२३३
” १.	७५६३

## [ मलयज ]

मलयज १.	३१८११२
मलयद्वीप ३.	३१११४
” ३.	३१११६
मलयवासिनी २.	१११६३
मलयद्वाशस् २.	४४११५
मलवारिन् १. २. ३.	
	५४११६
मलयविष्टम्भ १.	४४१२८
मलच्छुति २.	४४१२८
मलहारक १.	३७८७
मलिन ३.	४२३१
” १. २. ३.	५४१६६
मलिना २.	४४११५
मलिनाम्बु ३.	३१२२५
मलिग्लुच १.	२३३४४
” १.	३३३७७
” १.	३१५५५
मलीमस १. २. ३.	
	५४१६६
मलुक १.	३३३७२
” १.	४३३६७
मलुक १.	२३३२
मल्ल १.	३५५५५
” १.	४३३६७
” १.	४४८८
मल्लक १.	२३३३१
मल्लनाग १.	३३३१५९
मल्लि २.	६२३२७
” १. २.	८१२३६
मल्लिका २.	३३३१८३
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	
	३३३३५
मल्लिकाक्ष १.	२३३७
” १.	३७९२
मल्ली २.	४३३५७
” २.	८१२३६
मशक १.	२३३४४
मशकहरी २.	४३३१२४
मशकिन् १.	३३३२८
मशन ३.	२३३२
मशाक १.	२३३३

## शब्दानुक्रमणिका

मषिघटी २.	३१२२५
मसुर १.	३१८४०
मसूरक १.	३१८४०
मसूरिका २.	३१८४०
मसूरी २.	४४१३७
मसृण १.	५३३४
मसृणत्व ३.	५३३१
मसृणी २.	३१८४५
मस्कर १.	३३३२१५
मस्करिन् १.	३३३१६०
मस्तक १. ३.	४४१८६
मस्तिक १.	४४१८५
मस्तिक १.	४४११२
मस्तु ३.	३१८१४४
मस्तुलङ्ग १. ३.	८५१९९
मस्तुलङ्गक १.	४४११२
मह १.	३३३६१
महः ३.	३३३२०७
महत् १.	३३३१६३
” ३.	३३३२०७
” १. २. ३.	६५६३३
” ३.	८३३१८
महती २.	३३३१३८
” २.	३१९११९
महत्तरी २.	३३३३७
महर् ३. ४.	३३३२०७
महत्त्विजू १.	३३३७९
महस् ३.	६३३२४
महाकदम्बक १.	३३३६०
महाकन्द ३.	३३३२०४
” ३.	३१८७६
महाकाय १.	३३३६१
महाकार १ ब.	३३३३९
महाकाल १.	८१३३७
महाकाली २.	११३६१
महाकीर्तन ३.	४३३१९
महाकोशातकी २.	
	३३३१५९
महागण १.	५१३३१
महागन्धा २.	११३६४
महाग्रहायणी २.	२१३७८

## [ महाबुस ]

महाग्राम १.	४३३२
महाग्रीव १.	३३३६७
महाघोण्टा २.	३३३७८
महाचण्डी २.	११३६४
महाचारी २.	३१९१४२
महाजम्बू २.	३३३९२
महाजाली २.	३३३१६२
” २.	३१८१२३
महाज्वाला २.	१२३२९
महाझष १.	४११५५
महाटवी २.	३३३२
महातेजस् १.	१११५५
महात्मन् १. २. ३.	
	५४१५६
महादंष्ट्र १.	३३३४
महादेव १.	११३४१
महादेवी २.	११३५८
” २.	३३३३१
महाधन १. २. ३.	
	४३३११८
महाधातु १.	४४१०४
महानट १.	११३४४
महानर्मन् १.	३५७१
महानस ३.	४३३५४
महानाद १.	३३३१
महानील ३.	३२३४०
महानेमि १.	२३३१५
महापत्त १.	२३३११
महापत्तिन् १.	२३३२३
महापत्र १.	३३३२१६
महापद्म १.	१२३६०
” १.	३३३२०९
” १.	४१३१२
” ३.	४२३४०
महाप्रलय १.	२३३१४
महाफला २.	३३३८८
” २.	३३३९२
” २.	३३३१७०
महाबल २.	१२३५०
” २.	३१८१३१
महाबुस २.	३१८३४



महाबुस ]

महाबुस २.	३१८५१
महाभूत ३.	३६१२०६
महामात्र १.	३१७८८
” १. २. ३.	५४५५६
महामुख १.	४११५३
महामुनि १.	३३१७९
महामूल्य १. २. ३.	४३१११८
महामृग १.	३१७६१
महामेरु १.	१३११२
महाम्बुज ३.	५११३२
महायज्ञ १.	३६६६३
महायव १.	३१८५२
महारजत ३.	३२११८
” ३.	३१८९१
महारण ३.	३१७२०६
महारस १.	३३१२२२
” १.	३३१२२५
महारसा २.	३३१११०
” २.	३३११२३
महाराज १.	३१९१०३
” १.	४४१७६
” १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ ब.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोभ्र १.	३३१५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३१८१२३
महाविष्णु १.	१११३३
महावीर १. २. ३.	८५१२०
महावृष १.	३१८३५
महावेग १.	३१५४०
महाव्यसनसप्तक ३.	३१७११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५४११६
महाशक्त १.	४११४४

वैजयन्तीकोषः

महाशक्का २.	३३३३४
महाशालि १.	३१८३२
महाशिला २.	३१७१६९
महाशूद्र १.	३१९२८
महाश्रावणिका २.	३१९१९४
महाश्वेता २.	३३३१३५
” २.	३३३१९६
महासना २.	३२१११
महासन्धा २.	३३३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३३३१०७
” २.	३३३१८८
” २.	८२११५
महासुसि २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४४१११७
महाहस १.	३१९८४
महित १.	३२११५
( महिक )	
महिमत १.	१२१२७
महिमन् १. ३.	८१९३१
महिला २.	४४१४
महिष १.	३३१८
” १.	३१५१३
महिषवाहन, १.	१२१३३
महिषाक्ष १.	३१८११२
महिषी २.	२११७४
” २.	३१७३१
” २.	७२११९
मही २.	३११३
महीपति १.	३३३३७
महेच्छ १. २. ३.	५४११६
महेन्द्र १.	१२१७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
” १.	३३३५३
महेश्वरी २.	३२२२६
महोत्त १.	३३१५५
महोत्पल ३.	४२३३७
महोदधि १.	४२११२
महोदय १.	४३३७

[ माणव्य

महोदया २.	४४१६
महोदरी २.	३३३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महौजस् १.	१११५६
महौषध १.	३३३२०६
” ३.	८३३१०
मा २.	१११३६
” २.	८७११०
” २.	८११२
मांस ३.	४४११०६
मांसकर ३.	४४११०५
मांसकील १.	४४११३३
मांसनिष्काथ १.	४३३८७
मांसल १. २. ३.	५४१६
मांसलता २.	४४१११२
मांसविक्रयिन् १.	३१९३७
मांसि १.	५३१५६
मांसिक १.	३१९३७
मांसी २.	३१८१००
माकन्द १.	३३३२५
माक्षिक ३.	३२११५
” ३.	३१८१३५
मागध १.	३१५१६
” १.	३१५७९
” १.	३१५८०
” १.	३१५८७
” १.	३१७३०
” १.	३१८८४
मागधी २.	३३३१६०
” २.	३१८७६
मागवी २.	३१८५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३३३१९१
माटङ्क १.	४३३३४
माठि २.	३१७१५३
माळि २.	३३३१८
माण १.	३३३२०९
माणव १.	४३३१४०
माणवक १. २. ३.	५४३
माणव्य ३.	५११७

माणिक्य ]

माणिक्य ३.	३२१४१
माणिक्या २.	४११३०
माणिचरि १.	१३३३
माणिमन्थ ३.	३१८१२०
मातङ्ग १.	३१७५४
मातङ्गी २.	८२११४
मातरपितर १ द्वि.	४४१४७
मातरिश्वन १.	१२१४७
मातलि १.	१२१९
मातापितृ १ द्वि.	४४१४७
मातामह १.	४४३०
” १ ब.	४४१४९
मातुल १.	४४३३
” १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३१८५१
मातुलानी २.	४४३३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४४३३६
मातुलुङ्ग १.	३३३३३
” १.	३३३३३
मातुलुङ्गी २.	३३३३४
मातृ २.	२११७४
” २.	४३३१६३
” २.	४४२२६
” २.	६२२२८
” २.	८६१८
” २.	८१९४४
मातृका २.	४४२२१
मातृमुख १. २. ३.	५४१४६
मातृशिष्ट १. २. ३.	५४२१
मातृष्वसेय १.	४४१४२
मातृष्वस्त्रीय १.	४४१४२
मात्र १. २. ३.	५४१३६
मात्रा २. ३.	६५१६२
” २. ३.	६५१६३
मात्सर्य ३.	३३३१८४
माथ १.	४४१३८

शब्दानुक्रमणिका

माथिक १.	३३३७५
माद १.	५२३२
माधव १. ३.	३१९४९
” १.	७११६१
माधवी २.	३३३१८७
” २.	३१९४५
माधुर १.	३३३१०८
” १.	५३३३२
माधवी २ ब.	२११२१
माध्वीक ३.	३१९४८
मानमन्दिर १.	१२१४२
( मानमन्दर )	
मानव १.	३५११
मानवी २.	३३३१८२
मानस ३.	३३३१७२
मानसौकस्य १.	२३३६
मानिन् १.	३३३१५०
मानी २.	५११५३
मानुष १.	३५११
मानुष्यक ३.	५११८
मान्दा २ ब.	२१११९
मान्द्य ३.	४४१३८
मान्धीर १.	२३३२८
मान्धीलव १.	२३३२८
माभीद १.	३३३७९
माया २.	११११६
” २.	३३३१३८
” २.	३३३१६१
” २.	३३३१२
मायाविन् १. २. ३.	५४२४
मायिक १. २. ३.	५४२४
मायिन् १. २. ३.	५४२४
मायु १.	४४१२१
मायूरी २.	३१९३३
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३३३२०२
( मरक )	
मारजित् १.	१११३३
मारण ३.	३३३१४४
मारि २.	३३३२०२

[ मार्षक

मारि २.	४४१३७
मारिष १.	३३३१५०
” १.	३३३१०६
मारुङ्ग १.	५३३१
मारुत १.	१२१५०
मारुती २.	२११५
मार्कव १.	३३३१०७
मार्ग १.	३३१४९
” १.	६११४६
मार्गण ३.	३३३१७४
” १. २. ३.	५४३६०
” १.	७५१६४
मार्गणा २.	३३३१२१
मार्गनिवेश १.	४३३५
मार्गर १.	३३३३२
” १.	३३३१००
” १.	३३३१४२
मार्गशीर्ष १.	२११८१
मार्गायणी २.	२११३८
मार्गित १. २. ३.	५४१९८
मार्ज १.	५३३१
मार्जन १.	३३३५२
” १.	५३३१
मार्जना २.	२४११०
” २.	३३३१३०
मार्जा ३.	४३३९९
मार्जारी १.	३३३१८
” १.	३३३१५६
” १.	३३३१७१
मार्जारकण्ठ १.	२३३३८
मार्जारकणिका २.	१११६३
मार्जारिका २.	३३३३६
मार्जारी २.	३३३३४
मार्जालीय १. २. ३.	८५१२०
मार्जिता २.	४३३९८
मार्तण्ड १.	२१११३
मार्तण्ड १.	२१११०
मार्दङ्गिक १.	३३३१७०
मार्षक १.	३३३१०६

माष्टि ]

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३१११२२
" १.	३१५२५
मालती २.	३१११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३१८१३०
मालव ३.	३१११६
" १ ब.	३११३७
" १.	३१६१०६
मालवक १.	३१५६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३१५३३
मालातृणक ३.	३३१२३४
मालिक १.	३१५३३
मालिका २.	३३११८६
" २.	४३३२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४३२०
" १.	३१५१९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३३३२१०
मालूर १.	३३३३०
मालोर्जर १.	३३३१२०
माल्य ३.	६३३२५
माल्यजीविन् १.	३१५३३
माल्यवत् १.	३३२४
माष १.	३१८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३३३१०७
माषाशिन १.	३१७९१
माषीण १. २. ३.	३१८२०
माष्य १. २. ३.	३१८२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३१५५१

वैजयन्तीकोषः

मासर १.	४३३७८
मासिक ३.	३१६६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	१२१६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाडुक १.	३१५४८
माहिष्मती २.	४३३९
माहिष्य १.	३१५१२
" १.	३१५६९
माहेन्द्री २.	३३३१७५
माहेयी २.	३१४४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५४१३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५४५५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३१७३९
" ३.	३१७४३
" ३.	३१८९२
" ३.	८१९४७
मिथस् ४.	८१७२७
मिथिला २.	४३३७
मिथुन ३.	४३३१००
" ३.	४४४४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८६११४
मिथुनत्व ३.	४३३१७१
मिथुनिन् १.	२३३२४
मिथ्या ४.	८१८१३
मिथ्याचर्या २.	३६१९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३६१९२
मिष १.	३१५१४
" ३.	३६१९५
मिषत् १. २. ३.	५४६१
मिहिका २.	२१२१९

[ मुखरा

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३१४६४
" १. २. ३.	५४११३
मीढा २.	३६१४६
मीन १.	४११४१
" १.	८६११४
मीना २.	३६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३६१२९
" २.	३६१७५
मीलिका २.	३२१२७
( नीलिका )	
मुक १.	५३१५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३३२०५
मुकुर १.	४३१६२
मुकुल १. ३.	३३३१९
मुक्तकञ्चुक १.	४११२०
मुक्तबन्धना २.	३३३१८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६२१२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३१७१९६
मुक्तावली २.	४३१३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३६१२३८
मुख ३.	३१८१२१
" ३.	४३११५
" ३.	४४४८६
" ३.	६३३२५
मुखज १.	३६११
मुखबन्धन ३.	३१८१४१
मुखभूषण ३.	३२१३१
" ३.	३३३१०६
मुखभेद १.	३१९८८
मुखमण्डन १.	३३३६९
मुखर १. २. ३.	५४४४६
मुखरज्जु २.	३१७११२
मुखरा २.	२३३२०

मुखावास ]

मुखावास १.	३१७४८
मुखवासन १.	५३३५३
मुखशाला २.	४३३२४
मुखशोभा २.	३६३२५
मुख्य १. २. ३.	५४४६३
मुख्योपाय १.	३१७१२
मुग्ध १. २. ३.	६४४१२
मुचिर १. २. ३.	७५४६६
मुचुटि १. २.	४४४७९
मुचुटी २.	३१७१९३
मुचुलिन्द १.	३३३३६
मुज १.	३३३२२८
" १.	३३३२२९
मुजकेशिन १.	११११३
मुजन ३.	२४३२
मुण्ड १. २. ३.	३६६
" १. ३.	४४४८६
मुण्डन ३.	३६६
मुण्डा २.	३३३१२५
" २.	४४४१०
मुण्डित १. २. ३.	३६६
मुण्डितिका २.	३३३१२५
मुण्डी २.	३३३१२५
मुण्डीर १.	२१११३
मुद् २.	३६१८८
मुदित १. २. ३.	५४३३३
" १. २. ३.	५४९९
मुदिर १.	२२२२
मुद्ग १.	३१८३६
मुद्गर १.	३६१०२
" १.	३१७१७१
मुद्गरक १ ब.	३११२९
मुद्रित १. २. ३.	५३३९७
" १. २. ३.	५४४१०
मुधा ४.	८११२
मुनय १. ३.	३६१६८
मुनि १.	१११३४
" १.	३३३१२३
" १.	३३३१५८
" १.	३३३२२७
" १.	३६११५०

शब्दानुक्रमणिका

मुनि १.	३६११५२
मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३६१३४
मुनिप्रिय १.	३१८५८
मुनिवृत्त १.	८६११९
मुतिव्रतित् १. २. ३.	३६१३३
मुनिसेवित १.	३१८५७
मुनीन्द्र १.	१११३४
मुर ३.	३१८९८
मुरज १.	३१९१२९
मुरजध्वनि १.	२४४१०
मुररिपु १.	११११३
मुरली २.	३१९१२५
" २.	३१९१२७
मुरुङ्गी २.	३३३५६
( मुरुङ्गी )	
मुरुण्ड १ ब.	३११२५
मुर्मुर् १.	१२१२०
" १.	५३३६
मुषित १. २. ३.	५४११६
मुष्क १. ३.	४४४६३
मुष्कर १. २. ३.	५४४८
मुष्टि १.	३१७१६८
" १. २.	४४४७९
" १. २.	५११५१
" १. २.	५११६३
मुष्टिक १.	३११५४
मुष्टिमान्द्य ३.	३१७१९२
मुष्ट्यष्टक ३.	३६११६
मुष्ट्यायोजन ३.	३१७१८९
मुसल १. ३.	४३३६५
मुसलयष्टिक १.	३१७१७१
मुसलिन् १.	१११२३
" १.	३१७९७
मुसली २.	३३३२०३
" २.	३१८५०
" २.	४११२६
" २.	४१३३०
मुसल्य १. २. ३.	५४४७१
मुसुटी २.	३१८५६

[ मूल

मुस्त १.	४११२५
" १. २. ३.	८१९३८
मुस्तक १. ३.	३३३२००
मुस्ता २.	३३३२००
" २.	८१९३८
मुस्तु १. २.	४४४७९
मुहुः ( - ) ४.	८१७२७
" ४.	८१८११
मुहुःप्रोक्त १. २. ३.	२४३२२
मुहूर्त १. ३.	२११५४
मूक १.	३१७१०८
" १. २. ३.	५४४१४
मूका २.	३१९१७
मूढ १. २. ३.	३१७२९९
" १. २. ३.	५४४२१
" १. २. ३.	६४४१२
मूत १.	६११४६
मूतक ३.	३१८१४४
मूत्र ३.	४४४१२०
मूत्रकृच्छ्र ३.	४४४१२८
मूत्राशय १.	४४४६६
मूत्रित १. २. ३.	५४४११३
मूर्ख १. २. ३.	५४४११
मूर्च्छन १. २. ३.	३१९१३१
मूर्च्छना २.	३६१२००
" २.	३१९११०
मूर्च्छा २.	३६१२००
मूर्च्छाल १. २. ३.	३१७२१९
मूर्च्छित १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	७४४२२
मूर्ति २.	६२१२८
मूर्धन् १.	४४४८५
मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	८१५२७
मूर्धावसिक्त १.	३१५६५
मूर्धावसिक्तक १.	३१५६
मूर्धा २.	३३३११४
मूल ३.	२११४०

मूल ३.	३१३१३	मृगया २.	३१९३८
३.	३१३१६	मृगयु १.	३१९३८
मूलक १. ३.	३१३१५५	मृगरिपु १.	३१४१२
मूलकर्मन् ३.	३१६११७	मृगरोमज १. २. ३.	३१३११८
मूलकशाकट १. २. ३.	३१८२१	मृगलक्ष्मन् १.	२११२५
मूलकशाकिन् १. २. ३.	३१८२१	मृगवीथी २.	२११४८
मूलकादिसुत १. २. ३.	३१८२१	मृगव्य ३.	३१९३८
	३१८२३	मृगशिरस् ३.	२११३८
मूलकारण ३.	३१६१६१	मृगशीर्ष ३.	२११३८
मूलकृच्छ्र ३.	३१६१४०	मृगसिंहक १.	३१४१२
मूलधातु १.	३१४१०४	मृगाजीव १.	३१४१४
मूलपुष्पिका २.	३१३१२४	मृगाद् १.	३१४३३
मूलवर्हणी २.	२११४०	मृगादन १.	३१४१४
मूलरस १.	५१३२८	मृगादी २.	३१३१७२
मूलसस्य ३.	३१३१०	मृगारि १.	३१४३३
मूलिक १. २. ३.	३१६१२९	मृगित १. २. ३.	५१४१८
	३१८१९	मृगेन्द्र १.	३१४११
मूल्य ३.	३१८७०	" १.	८१६१५
" ३.	६१३२५	मृड १.	१११४०
मृषिक १.	४११३१	मृणाल १. २. ३.	४१२४३
मृषिकपर्णी २.	३१३११३	" १. २. ३.	८१९३८
मृषिका २.	४११३३	मृणाली २.	४१२४३
मृग १.	३१४११	" २.	८१९३८
" १.	३१४३०	मृत १. २. ३.	३१७२२०
" १.	३१६१२१	" ३.	३१८१२
" १.	३१७६२	" ३.	५१२१६
" १.	३१७६४	मृतस्नान ३.	३१६६४
" १.	६११४७	मृतस्नन ३.	३१६१११
मृगणा २.	३१६१२१	मृत्तिका २.	३१८२४
मृगतृष्णा २.	२११२२	मृत्तिकाचूर्ण ३.	३१८२४
मृगदंशक १.	३१४६८	मृत्यु १. २.	३१६२०२
मृगधूर्त १.	३१४३८	मृत्युञ्जय १.	१११४०
मृगनाभि १.	३१८१०४	मृत्युपुष्प १.	३१३१२४
मृगपालिका २.	३१४३५	" १.	३१३१२५
मृगबन्धनी २.	३१९३९	मृत्युसंयमन १.	३१६२२३
मृगमत्तक १.	३१४३७	" ३.	३१६२२७
मृगमद १.	३१८१०४	मृत्सा २.	३१८२४
मृगमात्रिका २.	३१४२६	मृत्सना २.	३१८२४
		मृद् २.	३१८२४
		मृदङ्ग १.	३१३१५९

मृदङ्ग १.	३१३१६०	मृषासाक्षिन् १. २. ३.	२१४१७
" १.	३१९१२९	मृष्ट १. २. ३.	३१८११०
मृदाह्वया २.	३१२१७	मेकल १ ब.	३१३३७
मृदु १.	५१३१५	" १ ब.	३१३४०
" १. २. ३.	६१४१२	" १.	५१३३६
मृदुकण्टक १.	४११४३	मेखलकन्यका २.	४१२२६
मृदुत्वच् १.	३१३४५	मेखला २.	३१६१७
" १.	३१३२२९	" २.	४३१४६
मृदुरोमन् १.	३१४३१	" २.	४३११८
मृदुल ३.	३१८१०७	मेघ १.	२१२११
" १.	५१३१५	" १.	८१६३३
मृदुवात १.	११२५१	मेघज ३.	४१२११
मृदङ्ग ३.	३१२३१	मेघनाद १.	११२४४
मृद्वीका २.	३१३१८१	" १.	३१३१५१
मृध ३.	३१७२०३	मेघनादानुलासिन् १.	२१३३८
मृषा ४.	८१८१३	मेघपुष्प ३.	४१२११
मृषार्थक १. २. ३.	२१४१७	मेघमाला २.	२१२१२
		मेघवर्मन् ३.	२११२२
		मेघवह्नि १.	११२२०
		मेघवाहन १.	८११५४
		मेघवाहिन १.	११२२८

मेघाख्य ३.	३१२१५	मेघाण्ड १.	११२१६
मेघाभ १.	३१३१९	मेघी २ ब.	२१११९
मेघक १.	२१३३९	" २.	४१४६५
" ३.	४१४६८	मेहन ३.	४३१७७
" १.	५१३११	( मोहन )	
मेघटिक १.	५१३५७	" २.	४१४६१
मेघ १.	४३२२९	मेहल १.	५१३५७
मेढी २.	४३१४०	मेहिन १.	३१४३३
मेढ १.	४१४६१	मैत्र ३.	३१५५७
मेणक १.	३१५१९	" १.	३१६११
मेथि १. ३.	३१८३१	मैत्रक १.	३१५१०४
मेथिक १.	३१६१०६	मैत्रावरुणि १.	३१६१५२
मेद १.	३१५३५	मैत्री २.	८१९३५
" १.	३१५९२	मैत्रेय १.	३१५३३
" १.	३१५९३	मैत्रेयक १.	३१५९४
" १.	३१५११७	मैत्र्य ३.	८१९३५
मेदक १.	३१९५०	मैथिल १.	२१३६५
मेदस् ३.	४१४१०७	मैथुन ३.	७१३२७
मेदस्कर ३.	४१४१०७	मैथुनिन् १.	२१३३३
मेदस्तेजस् ३.	४१४१०९	मैन १.	३१११३
मेदिनी २.	३११३	मैनाक १.	३१२१४
मेदुर १. २. ३.	५१४३३	मैनाकभगिनी २.	१११६२
मेदोभव १.	४१४१०९	मैनाकस्वस् २.	१११६२
मेघजित् १.	३१६१५८	मैरेय ३.	३१९४९
मेघा २.	३१६१६५	मोक १.	३१२७२
मेघाविन् १.	२१३२५	" १.	३१६२५
" १.	३१६२३४	मोक्ष १.	३१६२३८
मेघ्य १.	३१३२२९	" १.	६११४७
" १. २. ३.	५१४६५	मोक्षण ३.	३१७१९२
मेघ्या २ ब.	२१११८	मोक्षावलम्बिन् १.	३१६२३८
" २ ब.	२११२०	मोघ १. २. ३.	५१४१२९
मेनात्मजा २.	१११५८	मोच १. २. ३.	६१५६४
मेरु १.	११३१२	मोचक १.	३१३१५६
मेरुगण्ड १ ब.	११३१३	मोचा २.	३१३१७५
मेलन ३.	५१२२७	मोष्टायित ३.	३१९१५
( मेलक )		मोद १.	३१६१८८
मेलामणि १. २.	३१९२५	मोदक १. २. ३.	८१५६६
मेलामन्द १.	३१९२५	मोरक ३.	३१८१४६
मेलाम्बु ३.	३१९२५	मोरट ३.	३१८१४६
मेघ १.	३१४६४	" १.	८१६१४
" १.	८१६१४		

मेघाख्य ३.	३१२१५	मोरट १.	३१८१४९
मेघाण्ड १.	११२१६	" १.	७१५६५
मेघी २ ब.	२१११९	मोरटा २.	३१३१२४
" २.	४१४६५	मोषक १.	३१९५६
मेहन ३.	४३१७७	मोह १.	३१३२०९
( मोहन )		" १.	३१६१८१
" २.	४१४६१	" १.	६११४५
मेहल १.	५१३५७	मोहकालिका २.	३१९३६
मेहिन १.	३१४३३	मोहनी २.	११११६
मैत्र ३.	३१५५७	मौकलि १.	३१३१५
" १.	३१६११	मौकल्य १.	३१५७९
मैत्रक १.	३१५१०४	मौकिक ३.	३१२४०
मैत्रावरुणि १.	३१६१५२	" ३.	४११५६
मैत्री २.	८१९३५	मौजी २.	३१६४२
मैत्रेय १.	३१५३३	मौडी २.	४३१७०
मैत्रेयक १.	३१५९४	मौढय ३.	३१६२००
मैत्र्य ३.	८१९३५	मौण्डिक २.	३१६४४
मैथिल १.	२१३६५	मौद्गीन १. २. ३.	३१८१९
मैथुन ३.	७१३२७	मौनिन् १.	३१६१५०
मैथुनिन् १.	२१३३३	मौरजिक १.	३१९१०
मैन १.	३१११३	मौर्विका २.	३१७१७८
मैनाक १.	३१२१४	मौर्वी २.	३१६१७
मैनाकभगिनी २.	१११६२	मौलि १. २.	४३१३३५
मैनाकस्वस् २.	१११६२	" १. २.	६१५६४
मैरेय ३.	३१९४९	मौलिक ३.	३१६१२
मोक १.	३१२७२	मौष्टिक १.	३१९१६
" १.	३१६२५	मौहनिक १.	२११८३
मोक्ष १.	३१६२३८	मौहूर्त १.	३१७१५
" १.	६११४७	मौहूर्तिक १.	३१७२५
मोक्षण ३.	३१७१९२	म्लान १.	४११४८
मोक्षावलम्बिन् १.	३१६२३८	म्लिष्ट १. २. ३.	६१४११
मोघ १. २. ३.	५१४१२९	म्लेच्छ ३.	३१२२५
मोच १. २. ३.	६१५६४	" १.	३१५११५
मोचक १.	३१३१५६	" १.	३१५११६
मोचा २.	३१३१७५	म्लेच्छभोज्य १.	३१८१३
मोष्टायित ३.	३१९१५	म्लेच्छास्य ३.	११२२५
मोद १.	३१६१८८		य
मोदक १. २. ३.	८१५६६	यकृत ३.	४१४११३
मोरक ३.	३१८१४६	यत् १.	११२५५
मोरट ३.	३१८१४६	" १.	११३११
" १.	८१६१४	" १.	३१४६९

यक्ष १.	८११५८	यति २.	६२२२९
यक्षकर्म १.	४३१५३	यतिन् १.	३१६१६०
यक्षधूप १.	३८८१११	यत्त १. २. ३.	५४३११४
यक्षराज १.	१२२५५	यत्न १.	३१६१६७
यक्षमन् १.	४१४१२४	यत्र ४.	८८८२१
यक्षमन् १.	४१४१२४	यथा ४.	८७२७
यज्ञ १.	३१६८३	" ४.	८८८२०
यज्ञत्र ३.	३१६९४	यथातथम् ४.	८८८१३
यज्ञन ३.	३१६९४	यथायथम् ४.	८८८१४
यज्ञमान १.	३१६७६	यथार्थम् ४.	८८८१३
यज्ञरादेष्टु १.	३१६७६	यथार्हवर्ण १.	३१७२६
यज्ञसू ३.	३१६२६	यथासुख १.	२११२६
यज्ञ १.	३१६६३	यथास्वम् ४.	८८८१४
" १.	३१६८२	यथेप्सित १. २. ३.	४३११०४
" १.	६११४७	यथोद्भूत १. २. ३.	५४३२१
यज्ञकर्माह १. २. ३.	५४३११७	यद् १. २. ३.	५४३२१
यज्ञक्रतु १.	३१६८६	" १. २. ३.	८७११
यज्ञजागर १.	३१३२२७	यदा ४.	८८८५
यज्ञत्यागिन् १.	३१६७७	यदि ४.	८८८१४
यज्ञपूरुष १.	११११२	यदृच्छा २.	५२६
यज्ञलिह १.	३१६७८	यद्गविष्य १. २. ३.	५४३३०
यज्ञवराह १.	३१११८	यद्गद् १. २. ३.	५४३३०
यज्ञवह १.	१३३६	यन्तु १.	३१७१३८
यज्ञाग्नि १.	१२२३	" १.	६११४७
यज्ञाङ्ग १.	३१४१२	यन्त्र ३.	३१७५०
यज्ञाढ्य १.	३१६१५५	यन्त्रक ३.	३१९१८
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४३२२४
" १.	३३३२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३१७१९५
" १. २. ३.	५४३११७	यम १.	१२२३३
यज्ञोपकरण ३.	३१६९४	" १.	३१६२०९
यज्ञोपवीत ३.	८३११७	" १.	३१७९७
यज्ञोपवीतक ३.	३१६२०	" १. २. ३.	३१७१२२
यज्वन् १.	३१६७६	" ३.	५१११५
यज्वर १.	७११६२	" १.	५२३३०
यत ३.	३१७८९	" १. २. ३.	६१५६५
" १. २. ३.	५४३३२	यमक ३.	४३१९९
" १. २. ३.	६१४१२	यमभगिनी २.	१११६२
यतः (-स्) ४.	८८८२१	यमरथ १.	३१४१०
यतस्तुच १.	३१६७८	यमराज १.	१२३३४
यति १.	३१६१६०	यमल ३.	५१११५

यमस्वस्तु २.	१११६२
" २.	४२२२५
यमी २.	४२२२५
यमुना ३.	४२२२५
यमुनाभ्रातृ १.	१२३३४
ययु १.	६११४८
" १. २. ३.	६१५६५
यर्हि ४.	८८८५
यव १.	३८८५१
" १.	५११४३
" १ ब.	८१५५६
यवक १.	३८८५३
यवक्य १. २. ३.	३८८१९
यवक्रीत १.	३६१५६
यवक्षार १.	३८८१२७
यवचूर्णक १.	४३३६८
यवद्वीप ३.	३१११४
" ३.	३१११५
यवन १ ब.	३११२४
" १.	३१५१२
" १.	३१५७२
" ३.	३८८१२३
यवनिका २.	४३३१२४
यवनेष्ट ३.	३२३३०
" १.	३३३२०७
यवपिष्टक १.	४३३७२
यवफल १.	३३३२१५
यवफलक १.	८११५५
यवमत्त १. २. ३.	५४३११९
यवस १.	४३३७४
यवागू २.	४३३८०
यवाग्र १.	५११४३
यवाग्रज १.	३८८१२८
यवानिका २.	३८८१०२
यवान्वित १. २. ३.	
यवास १.	५४३११९
यवास १.	३३३१२६
यविष्ट १.	१२३२६
यवीयस् १. २. ३.	५४३४
यवीयस ३.	३२३२३
यव्य १. २. ३.	३८८१९

यथाःपटह १.	३१९१३३	यान ३.	३१७१२३	युगमध्य ३.	३१७१३१
यथाःपटह ३.	२४३६६	" ३.	३३३२६	युगल ३.	५१११५
यष्टि १. २.	३१६१२३	यानमुख १.	३१७१३०	युगवर्तक १.	२११३५
" २.	३१७१६२	यापन १.	७३३२८	युगान्त १.	२११९४
" १. २.	८१९२५	याप्य १. २. ३.	५४३७५	युगालिक १ ब.	३११२५
यष्टिमधुका २.	३८८१०३	" १. २. ३.	६४३१३	युगावर्त १.	११११४
यष्ट १.	३१६७६	याप्ययान ३.	३१७१३६	युगासार ३.	२११९२
यस्त १. २. ३.	५४३११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३८८९४
याग १.	३१६८२	" १.	५२३३०	युगिन् १.	३६८८२
यागकण्टक १.	३१६८०	यामक १.	२११३९	युम ३.	५१११५
याचक १. २. ३.	५४३६०	यामिनी २.	२११५६	" १. २. ३.	५११२३
याचनक १. २. ३.	५४३६०	यामुन ३.	३२३४२	युग्य १.	१११५०
याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	" १. २. ३.	३१४५८
याचित ३.	३८८२	यायजूक १.	३१६७५	" ३.	३१७१२३
याच्ना २.	३३३१२०	यायावर १.	३१६४२	युग्याशनप्रसेव १.	३१७११५
याजक १.	३१६७८	" १.	३१६१५६	युज १. २. ३.	५११२३
याजन ३.	३१६६३	याव १.	४३३१५३	युजिन १.	१२३४८
" ३.	३८८७	यावक ४.	३८८५३	युजान १.	७१६३
याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावत् ४.	८७२८	युत १. २. ३.	६४३१३
याज्ञिक १.	३८८५२	यावतिथ १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
याज्य १.	८१९४४	यावनाल १.	३८८५६	" १. २. ३.	७५६७
याज्या २.	३१६११२	यावशादन १.	३१५८	युद्ध ३.	३१७२०३
याज्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३८८१२८	युद्धध्वान १.	२४३१०
यात ३.	३१७८९	याष्टीक १. २. ३.	५११२०	युध् २.	३१७५६
यातना २.	१२३३९	यास १.	३३३१२६	युधिष्ठिर १.	१२३५
यातयाम १. २. ३.	८११११	युक्त १. २. ३.	५४३१०३	युवति २.	४३८८
यातु ३.	१२३४०	" १. २. ३.	६४३१३	युवन् १. २. ३.	५४३३
यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	युष्मद् १. २. ३.	८१९४९
यातुधान १.	१२३४१	" ३.	३१७१३०	यू १.	४३३१००
यातुगति १.	१२३४३	" १.	५१११५	यूक १.	४३३३८
यातृ २.	४३३३७	" १. ३.	६१५६६	यूथ १. ३.	५११४
यात्य १.	१२३३८	युगकीलक ३.	३८८२८	यूथनाथ १.	३१७६७
यात्रा २.	५२३१०	युगच्छद १.	३३३४७	यूथिका २.	३३३१८२
" २.	६२३२९	युगद्वय ३.	२११२२	यूप १. ३.	३३३१०३
यादस् ३.	४३३४०	युगान्धर १ ब.	३१७७९	यूपमध्य ३.	३३३१०४
यादसाङ्गाथ १.	१२३४६	" १.	३१७३२२	यूपाम्र ३.	३३३१०४
यादसापति १.	८११५७	युगपत् ४.	८८८६	यूप १. ३.	४३३१००
यादस्पति १.	८११५८	युगपार्वर्ग १. २. ३.	३१७५६	योषत्र ३.	३८८२८
यान ३.	३१७६			योग १.	३३३२०८

[ योग ]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३१६१५०
योगवाही २.	३१८१२९
योगाञ्जि १.	३१६१५५
योगावाप १.	३१७१८८
योगिन् १.	३१३३६
" १.	३१८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३१६१५५
योगेष्ट ३.	३१२२९
योग्य १.	२११३९
" ३.	३१७१२४
" ३.	३१८१४५
" १. २. ३.	६१५६७
" १. २. ३.	३१५६७
योग्या २ ब.	२११४१
" २.	३१६१४६
" २.	३१७१९५
" २.	३१८१९४
" २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३१७१३०
योजन ३.	३११६३
" १.	३१३२१८
योजनगन्धा २.	८१२१२
योजनबल्ली २.	३१३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३१८१८
योधन ३.	२१४१०
योनि १. २.	४१४६१
" १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४४
योषित् २.	४१४४
यौतक ३.	३१६१५५
" १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३१६१५५
यौध १.	३१७१३९
यौधक १.	३१७१३९
यौधेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३१६१२
यौनिक १.	११२५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४५३
" ३.	५११८
य्वागुली २.	४१३७८
य्वागुल्या २.	४१४७८
र	
रंहस् ३.	११२५५
रक्त ३.	३१२२४
" १.	३१३४०
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८११६
" ३.	४१४१६
" ३.	४१४१०५
" १.	५१३११
" १. २. ३.	६१४१४
रक्तक १.	३१३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४१२४४
रक्तग्रह १.	११२४१
रक्तचन्दन ३.	८१६२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२१३१४
रक्तपाणिक ३.	४१२३५
रक्तपीतासितशयेत १.	
रक्तपुच्छिका २.	५१३१६
रक्तपुष्प १.	४११२९
" १.	३१३३९
रक्तफला २.	३१३१४७
रक्तभव ३.	४१४१०७
रक्तशालि १.	३१८३२
रक्तशीर्षक १.	३१८१०९
रक्ता २.	३१३१५३
रक्ताक्ष १.	७१२६३
रक्ताङ्ग १.	३१३१५५
रक्तिका २.	३१३१७९
रक्तस् ३.	११२४०
रक्तस्सभ ३.	८१९२०
रक्तित १. २. ३.	५१४१००
रक्तोघ्न १.	३१८१४१
" ३.	४१३८२

[ रट्टास ]

रङ्गटी २.	३१८१४४
रङ्ग ३.	३१२३०
" ३.	३१२३१
" १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३१९१२
" १.	३१९६३
रङ्गावतारिन् १.	३१९६३
" १.	३१९६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३१९६६
रचना २.	४१३१५८
" २.	५१२१४
" २.	५१२३९
रजःपुष्प १.	३१३२२३
रजःपूता २.	३१४४२
रजक १.	३१५३८
" १.	३१५४५
रजत ३.	३१२२३
" १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३१२१५
रजनी २.	२११५६
" २.	३१८१८९
" २.	७१२२०
रजस् ३.	३१२३२
" ३.	३१३१६२
" ३.	३१८२५
" ३.	६१२२८
" ३.	८१५३६
रजसानु १.	८११३७
रजस्वल १.	३१४१९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
" २.	३१९३०
" २.	८१२३
रज्जुदाल १.	३१३१५४
रज्जन ३.	३१८११५
" ३.	३१९६०
रज्जनवल्ली २.	३१३१६४
रज्जनी २.	३१२११
" २.	३१३११०
" २.	३१३२११
रट्टास १.	३१५१३

[ रण ]

रण ३.	३१७२०४
" १. ३.	६१५६८
रणरणक १.	३१६१७९
रणसङ्कुल ३.	३१७२१७
रण्डा २.	३१३११३
" २.	६१२३१
रत ३.	४१३१७०
रतद्विक ३.	८१३११
रतार्थिनी २.	४१४११
रति २.	३१३१७८
" २.	३१९७६
" २.	४१३१७०
रतिपति १.	१११२८
रतेमदा २.	११३११
रत्न ३.	३१२३६
" ३.	६१३२६
" ३.	८१३१७
रत्नगर्भ १.	११२१५८
रत्नगर्भा २.	३११४
रत्नवर ३.	३१२२०
रत्नसू २.	३११४
रत्नहस्त १.	११२१५८
रत्नाकर १.	४११११
रत्नि १.	३११५४
रथ १.	२१३१९
" १.	३१३३१
" १.	३१७१२४
रथकट्या २.	५१११३
रथकार १.	३१५४८
" १.	३१५७५
" १.	३१५७५
" १.	३१५९०
" १.	३१९३४
" १.	३१५३३
रथकारक १.	३१५३३
रथगरुत १.	३१६१०७
रथगर्भक १.	३१७१२७
रथगुप्ति २.	३१७१३२
रथनीड १.	३१८१३२
रथपद ३.	३१७१३४
रथरेणु १. २.	५११४२

शब्दानुक्रमणिका

रथवारक १.	३१५२५
( रथकारक )	
रथाङ्ग ३.	३१७१३४
" ३.	३१७१३५
रथायुधक १.	३१७१७४
रथाश्मन् १.	३१५२०
रथिक १. २. ३.	३१७१४०
रथिन् १. २. ३.	३१७१४०
रथिन १. २. ३.	३१७१४०
रथ्य १. २. ३.	६१४१४
रथ्या २.	४१३१६
" २.	५१११३
रथ्यावाद १.	२१४२७
रद १.	४१४७८
" १.	६११५०
रदन १.	४१४७८
रदिन् १.	३१७६०
रन्तिदेव १.	११११४
रन्धक १. २. ३.	४१३१०८
रन्धन ३.	५१२३२
रन्धित १. २. ३.	४१३१९३
रन्ध्र १.	३१५७
" ३.	४११२
" ३.	८१६१९
रभस १.	५१४१४४
" १.	७११६३
रभू १.	३१७२९
( रतु )	
रमणी २.	४१४६
रमति १.	८११६३
रमा २.	११३३६
रम्भण ३.	२१४५
रम्भा २.	२१४५
" २.	३१३१७३
" २.	३१३१७४
" २.	३१६१८
रम्भित ३.	२१४५
रम्यक ३.	३११८
रय १.	११२१५५
रयि १. २.	८१९२७
रखक १.	४१३१२९

[ रसगर्भक ]

रव १.	२१४४
रवण १.	२१४१
" ३.	३१२२९
" १.	३१३१६५
( द्रवण )	
" १.	३१४६७
" १. २. ३.	५१४४८
" १. २. ३.	७१५७०
रवा २.	३१३१९९
रवि १.	२११४०
रविग्रावन् १.	३१२३७
रविध्वज १.	२११५५
रशना २.	४१३१४६
रसिम १. २.	२१११६
" १. २.	६११५०
" १. २.	८१९२५
रश्मिकलाप १.	४१३१३९
रश्मिमालिन् १.	२१११३
रस १.	४१४२
" १.	३१२१५
" १.	३१२४४
" १.	३१३१४९
" १.	३१३१५१
" १.	३१३२०५
" १.	३१४३०
" १.	३१८१११
" १.	३१९७४
" १.	३१९७५
" १.	४१३१००
" १.	४१४१०४
" १.	४१४११४
" १.	५१३२
" १.	५१३४५
" १.	६१३४९
रसक १.	३१२३५
" १.	३१६१९८
" १.	३१८१२८
" १.	४१३१८७
रसकोप १.	५१३४०
रसक्रिया २.	४१४१४२
रसगर्भक ३.	३१२४१

## [ रसज्ञ ]

रसज्ञ १.	३२२३५
रसज्ञा २.	४४१९०
रसज्येष्ठ १.	५३२२५
रसतेजस् ३.	४४१०५
रसन ३.	७५६८
रसना २.	४४१९०
रसनेत्री २.	३२२११
रसयोनि १.	३२२१३०
रसवती २.	४३१५४
रसवर १.	३२२३५
रसविद्ध ३.	३२२२२
रसा २.	३२१२
" २.	३३१३३१
" २.	३३१३८१
" २.	४११२
रसागेह १.	१३११०
रसाम्र १.	४३१७७
रसाञ्जन ३.	३२२४१
रसाढ्य १.	३२२१२८
रसातल ३.	४१११
" १.	४३१११०
रसादान ३.	४३११०३
रसायन ३.	३२२१४८
रसाल १.	३३१४१
" १.	४३१९८
रसिक १.	३२२१४७
रसोद्भव ३.	४४११०५
रसोन १.	३३२२०४
रहस् ३.	५४१२०
" ३.	६३२२७
रहस्य १. २. ३.	५४१२०
राक १.	६११५१
राका २.	२११७३
" २.	४४१८
राक्षस १.	१२१४०
राक्षसघ्न १.	१११२१
राग १.	३२२१८१
" १.	३२२११४
" १.	६११५१
रागवत् १.	३३२१७

## वैजयन्तीकोषः

रागशालव १.	५३३३१
रागसूत्रक ३.	५११६४
राघव १.	१११२०
राङ्गव १. २. ३.	४३१११८
राज १.	३२७१
राजक ३.	५११८
राजकर्कटि २.	३३११६७
राजकोशातकी २.	३३११६१
राजजम्बू २.	२३१९३
राजदन्त १.	४४१८९
राजधानी २.	४३१४३
राजन् १.	३२७१
" १.	६११५०
" १.	८१११२
राजन्य १.	३२७१
राजन्यक ३.	५११८
राजन्वत् १. २. ३.	३११४६
राजपटोल १.	३३११६६
राजपुत्री २.	८२१८
राजफल १.	३३११६६
राजवीजिन् १.	४४१५०
राजभृङ्ग १.	२३२२७
राजमार्ग १.	४३११६
राजमाष १.	३२२१४६
राजमुद्ग १.	३२२३८
राजराज १.	१२१५७
राजरीति २.	३२२२६
राजवंश्य १.	४४१५०
राजवत् १. २. ३.	३११४६
राजवर्त १.	४३१११९
राजवल्ली २.	३३११६४
राजवाह्य १.	३२७३९
राजविहङ्गम १.	२३२२९
राजवृक्ष १.	८११२०
राजवेश्मन् ३.	४३३३०
राजसर्षप १.	३२२४२
" १.	५११४२
राजसी २.	२११६०

## [ राङ्गान्त ]

राजहंस १.	२३२७
राजादन १.	३३३४३
" १.	८५२२१
राजावर्त १.	४३१११९
राजि २.	४३११४८
" २.	४४१९०
" २.	६२३३०
राजिका २.	३२८४२
राजिमत् १.	४११७
" १.	४११९
राजिल १.	४११९
" १.	४१११५
" १.	४११२०
" १. २. ३.	५४१७
राजीफल १.	३३३१६६
राजील १.	४११९
" १.	४१११०
राजीव १.	३३४१३
" ३.	४२३३८
राजीवक १.	४११४६
राजीवत् १.	३३३१६५
राज्ञी २.	३२२२७
राज्यलौक्य ३.	३३३१८२
राज्याङ्ग ३.	३२७३
राठ १.	३३३५०
राढा २.	३१२२१
" २.	३१३३०
" २.	४३११५०
राण १. ३.	२४१७
रातप ३.	५३३३१
राता २.	३३३५२
रात्रि २.	२११५७
रात्रिचर १.	१२१४०
" १.	३२१५६
रात्रिज ३.	२११३८
रात्रिजागर १.	३३४७०
रात्रिश्चर १.	१२१४०
रात्रिद्विष् १.	२१११४
रात्र्याख्या २.	३३३२११
राथन्तरि १.	१२१२२
राङ्गान्त १.	३३३२५

## [ राध ]

राध १.	२११८३
राधा २.	२११४०
राम १.	१११२०
" १.	१११२०
" १.	१११२२
" १.	३३४३२
" १. २. ३.	६४११४
रामक १.	३२५७९
" १.	३२५८२
रामठ ३.	३२८१३१
रामदूती २.	३३३१०९
रामपूग १.	३३३२१८
रामभगिनी २.	१११६२
रामस्वस्तु २.	१११६२
रामा २.	४४१६
रामभ १.	३३३१८
रालि १.	८१११०
रावण १.	१२१४२
रावणसूदन १.	१११२०
राशि १.	२११५०
" १.	५११३
" १.	५२१५४
राष्ट्र ३.	३२७३
" ३.	३२७४८
" ३.	६५१६९
राष्ट्रिका २.	३३३१०६
राष्ट्रीय १.	३२११०५
रास १.	३२१७३
रासभ १.	३३३६५
" १.	८६१५
रासना २.	३२८१८
राहु ३.	२११३७
रिक्त १.	२११७९
रिक्तक १. २. ३.	५४१८७
रिक्थ ३.	३२८७३
रिङ्ग १.	३२७१३६
रिङ्गोल ३.	३२७१३६
रिङ्गोलन ३.	३२७१३६
रिपु १.	३२७४१
रिरी २.	३२२२५
रिष्ट ३.	६३३२७

## शब्दानुक्रमणिका

रिष्टि २.	३२७१५९
रीढा २.	३३३१७२
रीण १. २. ३.	५४१०९
रीति २.	३२२२५
" २.	५२२२
" २.	६२३३०
" २.	३२२४३
रीतिपुष्प ३.	३२२४३
रुक्म ३.	३२२१८
" ३.	६३२२७
" १.	८६११०
रुग्भेद १.	४४१३७
रुच् २.	२११२२
" २.	४३११५०
" २.	८२११९
रुचक १.	३३३३३
" ३.	३२८१२५
" १.	८११६४
रुचि २.	२११२२
" २.	३२८१३२
" २.	३२१८३
" २.	६२११४
रुचि १.	३३४१४
रुचित १. २. ३.	५४१९६
रुचिर १. २. ३.	५४१३४
रुचिष्य ३.	३२८१२५
रुचु १.	३३४२८
रुच्य १.	४४३३७
" १.	५१३३८
" १. २. ३.	५४१३४
रुज् २.	४३१३८
रुजा २.	३३३६५
" २.	४४१३८
" २.	६२२२९
रुह १.	३२७१०८
" १.	३२७२१६
रुहक १.	३२५२८
रुत ३.	२४१४
रुदित ३.	३२१८७
रुद्ध १. २. ३.	५४१९६
रुद्र १.	१११३९
" १ व.	१३३८

## [ रूप्य ]

रुद्रपुष्प ३.	३३३१९५
( ओढूपुष्प )	
रुद्रव्रतित् १. २. ३.	३३३१३१
रुद्रसख १.	१२१५८
रुद्रा २ व.	२१२२१
रुद्राक्ष १.	३३३७९
रुद्राणी २.	१११५८
रुधिर १.	२११३२
" ३.	४४१०५
रुमा २.	३२२१०
रुमाभव ३.	३२८१२१
रु १.	३३४१४
रुवथ १.	७११६४
रुवु १.	३३३६५
रुवुक १.	३३३६५
रुवती १. २. ३.	२४११८
रुष् २.	३३३१८३
रुपा २.	३३३१८३
रुक् ३.	३३३३४
" १.	३३३५
" ३.	३२८१४२
" १.	५३३३
" १.	५३३१६
" १. २. ३.	५४१४४
" १. २. ३.	६४१३३
रुक्णीय १.	३२१४७
रुक्णीया २.	३२८६१
रुक्वालुक ३.	३२८१३५
रुक्स्वर १.	३३३६६
रुठ १. २. ३.	३२७२१७
" १.	३२८५१
रूप ३.	३२११०१
" ३.	५२११
" ३.	५३३२
" ३.	६३३२८
रूपजीवना २.	४४३२४
रूप्य ३.	३३३२३
" ३.	३२८७४
" १. २. ३.	६५१६८
" ३.	८६१११

रूप्यमास ]

रूप्यमास १.	५११४४
रूप्यशतमान ३.	५११६०
रूप्य १.	५३१२९
रूपित १ र. ३.	५४११३
रेक १.	४११४६
रेखा २.	३१२४४
" २.	६२१३२
रेचक ३.	८१११५
रेचनी २.	३३१३८
रेचित १. २. ३.	३३११८
" १. २. ३.	३३१२२
" ३.	३११९२
रेटि २.	६२१३२
रेणु १.	३८१२५
" १. २.	५११४२
" १. २.	८११२६
रेणुका २.	३८१२५
रेतसू ३.	४११११
" ३.	६३१२७
रेफ १. २. ३.	५४१७५
रेभटि २.	३६१२६
रेभण ३.	२४१२
रेरिहाण १.	१११४४
रेवट १. ३.	७५१६९
रेवती २.	१११५९
" २.	३३१०९
" २.	३३११८२
" २.	७२१२०
रेवतीकान्त १.	१११२३
रेवा २.	४२१२६
रेशी २ व.	२११२०
रेषण ३.	२४१६
रेषा २.	२४१६
रै १. २.	८५१३८
रोक ३.	४११२
" १. ३.	६५१६७
रोक्य ३.	४४१०५
रोग १.	४४१३८
रोगहारिन् १.	४४१३३
रोगाख्य ३.	३८१९९
रोचक १.	४३१२९

वैजयन्तीकोषः

रोचन १.	३३१९१
" १. २. ३.	५४१४२
रोचना २.	७२१२०
रोचनी २.	३२१११
" २.	३३१९५
" २.	३३१३८
" २.	३३१२११
रोचिष्णु १. २. ३.	५४१४२
रोचिस् ३.	२१११६
रोदन ३.	३११८७
रोदनी २.	३३१२५
रोदस २ द्वि.	३११५
रोदसी २ द्वि.	३११५
रोध १.	३३१८०
रोधसू ३.	४२१३१
रोधोवक्त्रा २.	४२१२२
रोपण १.	३३१७९
रोमकर्ण १.	३४१३१
रोमज ३.	४३११७
रोमन् ३.	३४१७५
" ३.	४४१९७
रोमन्थ १.	३४१७५
रोमन्थन ३.	३४१७५
रोमश १.	३३१७५
" १.	३४१६४
" १. २. ३.	५४१८
रोमशपुच्छक १.	४११२७
रोमशी २.	४११२७
रोमहर्ष १.	३११८२
रोमहृत् ३.	३२११४
रोमाङ्क १.	३११८२
रोमाञ्ज १.	३११८२
रोमोद्गम १.	३११८२
रोष १.	३६१८३
" १.	५२१४
रोषाण १.	३११९९
" १. २. ३.	७५१७१
रोहणद्रुम १.	३८११२
रोहणी २.	४४१२९
रोहिणी २.	३४१४४
" २.	३८१८६

[ लक्षमणा

रोहिणी २.	७२१२१
रोहिणीकान्त १.	२११२४
रोहित् १.	३४११४
" १.	८११११
रोहित ३.	२२१३
" १.	३३१४०
" १.	३४११६
" १.	३६१५६
" १.	५३१११
रोहिताश्व १.	१२११५
रोहिन् १.	३३१४०
रौच्य १.	३६११६
रौद्र ३.	२११२२
" ३.	३११७५
" १. २. ३.	३११७९
रौद्री २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३६१९२
" २.	८२११४
रौमक ३.	३८१२१
रौरव १.	१२१३७
रौहिण्य १.	८११३७
रौहितक १.	३३१४०
रौहिष १.	३३१४०
" १.	३४११६
" १. ३.	७५१७१

ल

लकुच १.	३३१७५
लक्ष १.	३३१३५
" ३.	३३१९४
" ३.	५११३२
" १. २. ३.	६५१६९
लक्ष्मण ३.	२११२९
" ३.	३३१९४
" ३.	५२११
" ३.	७३१२८
लक्षा २.	५११३२
लक्ष्मण १. २. ३.	५४१५६
लक्ष्मणा २.	२३१३३

[ लक्ष्मन् ]

लक्ष्मन् ३.	२११२९
" ३.	६३१२९
लक्ष्मी २.	११११६
" २.	१११३६
" २.	३६१९१
" २.	३८१९३
" २.	३८१९९
" २.	८२११९
लक्ष्मीनिकेतन ३.	४३१११४
लक्ष्मीपति १.	८११३८
लक्ष्मीपुत्र १.	८११३८
लक्ष्मीवत् १.	३३१४२
" १. २. ३.	५४१५६
लक्ष्य ३.	३३१९४
लक्ष्यग्रह १.	३३१९०
लगणा २.	३३१३९
लगुड १.	३११२९
लगुडर्वशिका २.	३३१२१६
लग्न १.	३३१६८
लग्नक १. २. ३.	३८११०
लघु १.	३३१५३
" २.	३३११६
" ३.	३८११०७
" १. २. ३.	५४१७६
" १. २. ३.	५४१२४
" १. २. ३.	६४११५
लघुक १.	३३१२१९
लघुकाष्ठ १.	३३१९९
लघुग १.	१२१४८
लघुहस्त १. २. ३.	३३११४९
लघ्वचरक १.	२११५२
लङ्का २.	६२१३२
लङ्कायिका २.	३३११७
लङ्केश्वर १.	१२१४३
लङ्गन ३.	५२११२
लङ्गनी २.	४३१५३
लङ्गन ३.	३३१२३
" ३.	४४१३९

शब्दानुक्रमणिका

लङ्गन ३.	५२११२
लज्जा २.	३६१९४
लज्जालु २.	३३१४८
" २.	३३१४८
लज्जाशील १. २. ३.	५४१४०
लज्जित १. २. ३.	५४१५१
लट्व १.	४३१५६
लडह १. २. ३.	५४१३५
लण्ड १. ३.	४४११९
लता २.	३३१७
" २.	३३१६६
" २.	३३१०४
" २.	३३११७
" २.	३३१८७
" २.	८११३
लताकुश १.	३३१२८
लताकोलि २.	३३१७८
लताङ्कुर १.	३३१२९
लतापूग ३.	३३१२१८
लतामारिष १.	३३१५२
लतार्क १.	३३१२०५
" १.	३३१२०७
लतावृहती २.	३३१०४
लब्ध १. २. ३.	५४१६४
लब्धवर्ण ४.	३६१२५
लभ्य १. २. ३.	६४११५
लम्पट १. २. ३.	५४१३६
लम्पा २.	३३१४६
लम्पाक १ व.	३११२५
लम्बकर्ण १.	३४१६२
लम्बन ३.	४३१३७
लम्बा २.	३३१४६
लम्बोदर १.	१११५३
लम्भन ३.	५२१२०
लय १.	३६१२००
" १.	३३११९२
" १.	३१११२२
लयनालिक १.	४३१२८
लल ३.	६३१२९
ललना २.	४४१४

[ लस्तकग्रह

ललनाक्ष १.	३४३३४
ललन्तिका २.	४३१३३६
लकाट ३.	४४१९६
ललाटिका २.	४३१३३६
" २.	४३१३४९
ललाम १. २. ३.	७५१७२
ललामक ३.	४३१५५
ललामन् १. ३.	७५१७२
ललित ३.	३११९६
लल्लर १. २. ३.	२४११५
लव १.	२११५३
" १.	५२१२९
लवङ्ग ३.	३८११०३
लवण ३.	३८१२२६
" १. २. ३.	४३१९३
" १.	५३१२६
" १.	५३१२७
लवणक्रीटक १.	३५१८८
लवणलायिका २.	३३१११६
लवणाकर १.	३२११०
लवणापण १.	४३१३४
लवणोत्कट १. २. ३.	४३१९३
लवणोद् १.	३१११०
लवन १.	५२१२९
लवली २.	३३१२६
लवित्र ३.	३८१३०
लवेटिका २.	३८१३१
लश १.	३३१११
लशुन ३.	३३१२०४
" ३.	३३१२०६
लषित १. २. ३.	५४१९६
लस ३.	३८१११५
" १.	४४१३५
" १.	५३१५४
लसिका २.	४४१११८
लसीका २.	४४१११८
लस्तक १.	३३१७७
( लस्तुक )	
लस्तकग्रह १.	३३११८९

लहरी ]

लहरी २.	४२११४
लाक्षा २.	४३११५३
लाङ्गल ३.	३८१२७
लाङ्गलषद्धति २.	३८१३०
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०
लाङ्गली २.	३३११९७
लाङ्गूल ३.	३४१७४
" ३.	७३१२९
लाङ्गूली २.	३३११३६
लाज १ ब.	४३१६८
लाजमण्ड १.	४३१७९
लाजि २.	३१२२४
लान्छन ३.	२११२९
लाहीक १.	३११३
लातक १.	३३११८९
लाभ १.	३८१७०
लामज ३.	३३१२३१
लाल १.	३४१३६
" ३.	६३१२९
लालक १. २. ३.	२४११५
लालन १.	३८११११
लालस २. ३.	५४१३६
लालसा १. २. ३.	७५१७२
लाला २.	३३१२६
" २.	४४१२०
लालाटिक १. २. ३.	८४१११
लालिका २.	३७११२
लाव १.	२३१४०
लावण १.	३१११०
लावली २.	३३१२६
लास्य ३.	३११७३
लिकुच १.	३३१७५
लिच्छा २.	४४१४२
लिगु १.	३४१११
" १.	६५१५१
लिङ्ग ३.	५१११७
" ३.	६३१३०
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३६१६३
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३६१९
लिङ्गशोफ १.	४४१३२

वैजयन्तीकोषः

लिच्छिवि १.	३५१५४
लिपि	३११२४
लिपिकर १.	३११२३
लिपिसन्नाह १.	३७१५४
लिप्त १. २. ३.	६४११५
लिप्तिका २.	२११५३
लिप्सा २.	३६११८०
लिप्सु १. २. ३.	५४१३५
लिवि २.	३११२३
लिष्ट १. २. ३.	५४११५
लिह १.	१२१५१
लीला २.	३११८८
" २.	३११९२
" २.	३११९३
" २.	३११९७
" २.	६२१३३
लीसुष १.	५३१३८
लुङ्ग १.	३३१३३
लुञ्जना २.	२४१२६
लुठित १. २. ३.	३७१०७
लुण्ठित १. २. ३.	५४११६
लुब्ध १. २. ३.	५४१३५
लुब्धक १.	३११३८
लुम्बिका २.	३११३५
लुलाय १.	३४१९
लुलित १. २. ३.	५४११०३
लुष १.	३५१३१
( युष )	
लुस्त ३.	३७१७७
लुत्त १. २. ३.	५४१४४
लुता २.	४११३४
लुतात १.	४११३६
लुतापट्ट १.	४११३५
लुतिका २.	४११३४
लुन १. २. ३.	४११०२
लुनदोस् १.	१११५२
लुमन् ३.	३४१७४
लेख १.	१११३
" १.	३८११२

[ लोपामुद्रा ]

लेखक १.	३१२२३
लेखनी २.	३१११३
लेखा २.	३१२२४
" २.	४३११४९
" २.	५११२४
लेख्य ३.	३८११२
लेढ १.	१२१५१
लेप १.	४३११०२
" १.	६११५२
लेपकार १.	३१११४
लेप्य ३.	३१११३
लेलिहान १.	४२१५
लेहा १.	२११५४
लेष्टु १.	३८१२४
लेहन ३.	४३११०३
लेह्य ३.	४३१९१
लैङ्गिक १.	३६१६३
लैङ्गधूम १.	३६१८०
लोक १.	३६१२०६
" १.	६११५२
लोकजित् १.	१११३३
लोकपाल १.	२११४
" १.	८११३८
लोकान्ताद्रि १.	३२१३
लोकालोक १.	३२१३
लोचक १. २. ३.	३६११३४
" १. २. ३.	७५१७३
लोचन ३.	४४१९४
लोचना २.	२४१२८
लोचमस्तक १.	३८११०२
लोचमालक १.	३३११९९
लोटन ३.	५२१४२
लोटना २.	२४१२८
लोटभू २.	३७११२
लोट १.	३११८७
लोघ्न १.	२११८७
" १.	३३१५२
" १.	३३१५२
लोपा २.	२३१२५
लोपामुद्रा २.	३६११५३

लोपायिका ]

लोपायिका २.	२३१२५
लोपास १.	३४१३९
लोपत्र ३.	३११५८
लोभन ३.	३२११९
" १.	३८१३६
लोमन् ३.	४४१९७
" १. ३.	८११३१
लोमश १. २. ३.	५४१८
लोमशी २.	३८११००
लोल १.	३७१२०६
" १. २. ३.	५४१३६
" १. २. ३.	६४११६
लोलम्ब १.	२३१४२
लोलिका २.	३८१५८
लोलुप १. २. ३.	५४१३६
लोलुभ १. २. ३.	५४१३६
लोष्ट १. ३.	३८१२४
लोष्टभञ्जन १.	३८१२९
लोह ३.	३२१३३
" ३.	३२१३६
" १. ३.	६५१६९
लोहकारक १.	३१११६
लोहकार्पापण १.	५११३९
लोहज ३.	३२१२९
लोहदण्ड १.	३७१६७
लोहपृष्ठ १.	२३१३१
लोहमात्र १.	३८११५६
लोहमारक १.	३३११५६
लोहमालक १.	३५१३६
लोहल १. २. ३.	५४१४७
लोहशृङ्खल १.	३७१८५
लोहसंश्लेषक १.	३८१३०
लोहाख्य ३.	३८१८०
" १.	३८११०७
लोहाभिसार १.	३७१२००
लोहित १. २.	३८१२६
" १.	४११४३
" ३.	४४१०५
" १.	५३१११
लोहितक ३.	३२१३९

शब्दानुक्रमिका

लोहितचन्दन ३.	३८१११६
लोहिता २.	१२१३०
लोहिताक्ष १.	४१११५
लोहिताङ्ग १.	३११३१
लोहिताहि १.	४१११२
लोहितीक ३.	५११४७
लोह्य १.	३१११७
लोह्य ३.	३२१२६
( लोभ्य )	
लौह ३.	३२१३३
व	
व ४.	८१११५
वंश १.	३३१११
" १.	३३१२१४
" १.	३३१२२६
" १.	३११२५
" १.	४४१४९
" १.	४४१६६
" १.	६११५२
वंशक ३.	३८११०७
वंशज १.	४४१५०
वंशपत्र ३.	३२११४
वंशरोचना २.	३८१९०
वंशवर्ण १.	३८१४३
वंशिक १.	३११६१
" १.	३५१२३
" ३.	३८११०७
वंशिका २.	३११२५
वंश्या १-	४४१५०
वंश्या २.	३८१५०
वकुल १.	३३१२६
वक्तव्य १. २. ३.	८१११५
वक्तृ १. २. ३.	५४१४५
वक्त्र ३.	४४१८६
वक्त्रपट्ट १.	३७११४
वक्र १.	२११३६
" १.	४४१९१
" १. २. ३.	५४१२३
वक्रकील १.	३७१८५
वक्रदंष्ट्र १.	३४१५

[ वञ्चक ]

वक्रपद ३.	४३१११९
वक्राख्य ३.	३२१३१
वक्राङ्ग १.	२३१३६
वक्रोष्ठक १. २. ३.	३११८३
वक्त्रशृङ्खल १.	३७११५३
वक्त्रस् ३.	४४१६८
वक्त्रसिज १.	४४१६८
वङ्किक १.	४४११५५
वङ्कण १.	४४१५९
वङ्ग १ ब.	३११३१
" ३.	३२१३१
वङ्गजीवन २.	३२१२४
वङ्गसेनक १.	३३११५६
वचन ३.	२४१२१
" ३.	२४१३४
वचनेस्थित १. २. ३.	५४१४९
वचस् ३.	२४१२१
वचा २.	३३११९७
वचाच्छृङ्खल १.	३३११२१
वज्र १. ३.	१२११३
" १. ३.	२२१३६
" १. ३.	३२१३९
" ३.	३३१२०२
" १. ३.	३६११४६
" १. ३.	६५१६८
" १. ३.	८६१३
वज्रदक्षिण १.	१२१७
वज्रधारण ३.	३२१२२
वज्रनिष्पेष १.	२२१३६
वज्रपाणि १.	१२१५
वज्रपुष्प ३.	३८१४०
वज्रा २.	३३१९७
वज्रांशुक ३.	४३१११९
वज्राभिषवण ३.	३६११४७
वज्रासन ३.	३६१२१८
वज्रिन् १.	१२११
वज्री २.	३३१९८
वञ्चक १. २. ३.	५४१२४



## [ वक्षक ]

वक्षक १. २. ३.	७५१७४
वक्षति १.	११२१८
वक्षथ १.	७११६४
वक्षन ३.	५१२३५
वक्षुल १.	२३१११
" १.	२३१२६
" १.	३३३३१
" १.	३३३४०
" १.	३३३४६
वक्षुला २.	३३४४५
वट १.	३३३२७
" १.	३३५१७
" १. २. ३.	३३९३०
" १. २. ३.	८१९३७
वटक ३.	५११४८
वटाश्रय १.	११२१५६
वटी २.	३३९३०
" २.	८१९३७
वटु १. २. ३.	५४३३
वटुकृति २.	३३६९
वडवा २.	३३१७०७
" २.	४४३२६
" २.	७१२२२
वडबामुख ३.	४११११
" १.	८११५५
वणिग्गृह ३.	४३३३४
वणिज् १.	३३८७२
यणिजा २.	३३८३
वणिज्य ३. २.	८१९३२
वणिज्या २.	३३८३
वण्ट १.	५१२३७
वण्टक १.	३३८३०
वतंस १.	४३३१५४
" १.	८११५९
वत्स १.	२११९१
" १.	३३३३७
" १.	३३४५१
" १. २. ३.	५४३२
" १. २. ३.	६५७३
वत्सकामा २.	३३४३७
वत्सतर १.	३३४५४

## वैजयन्तीकोषः

वत्सनाभ १.	११४२४
वत्सर १.	२११९०
वत्सरान्ता ३.	२११७७
वत्सल १. २. ३.	५४३१८
वत्सला २.	३३४३७
वत्सादनी ३.	३३३१३२
वत्सीय १. २. ३.	३३९१२८
वद १. २. ३.	५४३४५
वदन ३.	४४३८६
वदान्य १. २. ३.	७४३२६
वदाल १.	४११४३
वदावद १. २. ३.	५४३४५
वध १.	३३७२११
" १. २. ३.	६५७७
वधरत १. २. ३.	३३६११
वधस्थान ३.	३३९३७
वघा २.	३३३१४९
वधिर. १. २. ३.	५४३३
वधू २.	४४३४
" २.	४४३७
" २.	४४३५
" २.	४४३६
" २.	४४३६
वधूटी २.	४४३९
वधोद्यत १. २. ३.	
वन ३.	३३३१
" ३.	४३२
" ३.	६३३३१
वनकोद्रव १.	३३८५५
वनगव १.	३३४३३
वनच्छाया १.	३३४६३
वनज १.	२३३४१
" ३.	४३३६
वनतक्तिका २.	३३३३०
वनद्रुम १.	३३८१०८
वनन १.	३३४३१
वनप्रिय १.	२३३२७
वनमाय १.	३३८१०८
वनमालिन् १.	१११२५
वनमुद्ग १.	३३८३८

## [ वमति ]

वनस्पति १.	३३३६
" १.	८११४२
वनायुज १.	३३७८५
वनालु १.	३३३१५०
वनाश १.	३३८५२
वनिता २.	४४३४
" २.	७३२५
वनी २.	३३३१
वनीपक १. २. ३.	
	५४३६०
वनेवासिन् १.	३३६१२४
वनोद्भवा २.	३३३१८४
वनौकस् १.	३३४३०
वन्दन ३.	३३६३९
वन्दनमाला २.	३३६५९
वन्दा २.	३३३८४
वन्दाक १.	३३३८४
वन्दारु १. २. ३.	५४३३
वन्दिन् १.	३३५७८
" १.	३३५८१
" १.	३३३३०
वन्दीक १.	१३३७
वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
वन्ध्या २.	३३४३७
वन्थ १.	३३३३३
" ३.	४३३६
वन्था २.	३३३१६१
" २.	५४३१४
वपन ३.	३३६४
" ३.	३३३२६
वपनी २.	४३३२५
वपा २.	४३३२
" २.	६३३३
वपुस् ३.	६३३३०
" ३.	८३३१७
वप्टु १.	४४३२९
वप्र १. ३.	३३२७
" १. ३.	३३८२६
" १. ३.	४३३३३
" १. ३.	६५७९
वमति १.	८१११०

## [ वमथु ]

वमथु १.	३३७८२
" १.	४४३२६
" १.	८११३३
वमि १.	१३३१८
" २.	४४३२६
वम्र १. २. ३.	४३३८
वयस् ३.	४४५३
" ३.	४४५३
" ३.	६३३३०
वयस्य १. २. ३.	३३७४३
वयस्या २.	३३३११२
" २.	४४३२५
वयस्स्थ १. २. ३.	५४३३
वयस्स्था २.	७५७८
वर १.	२३३१८
" ३.	३३३५४
" ३.	३३३५४
" १.	३३३१५२
" ३.	३३३१९९
" १.	३३८११०
" ३.	३३८११७
" १.	३३८१२७
" ३.	४४३१११
" १. २. ३.	५४३६४
" १. २. ३.	६५७२
वरक १.	३३८३८
" १.	३३८५४
" १.	४३३१२७
वरट १. २.	८१९२६
वरटा २.	२३३८
" २.	२३३४६
वरण ३.	२३३६३
" १.	३३३४१
" १.	४३३१४
वरण्ड १.	४३३६५
" १.	४४३२५
वरत्रा २.	३३७८४
" २.	३३९४४
वरनिमन्त्रण ३.	३३६५६
वरप्रदा २.	३३६१५३
वरयात्रा २.	३३६५६

## शब्दानुक्रमणिका

वरयित् १.	४४३३७
वररुचि १.	३३६१५८
वरला २.	२३३८
वरवर्णिनी २.	८३३१३
वरवाहन १ द्वि.	१३३५
वरा २.	३३३१०५
" २.	३३३१७९
" २.	३३३२३३
" २.	३३३२३३
वराङ्ग ३.	३३८१०४
" ३.	७३३२९
वराङ्गना २.	३३३२२४
वराङ्गा २.	३३४४५
वराट १.	३३३३०
वराटक १.	४३१५७
" १.	४३३४५
वराणक १.	३३५५०
" १.	३३६१५९
वराधि १.	३३९३९
वरान्तक १.	१३३६
वराभ १.	३३७५६१
वराम्ल १.	३३३३३
वरारोहा २.	३३३१८४
" २.	३३३१९९
" २.	४४३१२
वरार्गल १.	३३३७९
वराल १.	५३३१४
वरालक ३.	३३८१०३
वराला २.	२३३८
वराश्रि १.	५३३२८
वरासि २.	४३३१२६
वराह १.	३३४५
वराहकन्द १.	३३३२१०
वराहकर्णक १.	३३७१६७
वराहद्वीप ३.	३३११४
" ३.	३३११८
वरिचसित १. २. ३.	
	५४३१०५
वरिवस्या २.	३३६३८
वरिष्ठ १.	२३३३५
" ३.	३३३२५

## [ वर्णिनी ]

वरिष्ठ १. २. ३.	७४३२५
वरीयस् १. २. ३.	
	७४३२६
वरुट १.	३३५५५
वरुण १.	१३३४५
वरुणकाष्ठिका २.	
	३३६१०८
वरुणकृच्छुक ३.	३३६१४१
वरुणग्रह १.	४४३३३४
वरुणप्रिया २.	१३३४६
वरुणावास १.	४३३११
वरुथ १.	३३७१३२
वरुथिनी २.	३३७५५
वरेणुक १.	३३८३१
वरेण्य १. २. ३.	५४३६३
वरेन्द्री २.	३३३२१
" २.	३३३३०
वरोत्कट १.	३३४४
वरोत्पल ३.	४३३३५
वर्ग १.	५४३४
" १.	५४३३६
वर्चस् ३.	६३३३१
वर्चस्क १.	४४३१९९
वर्जन ३.	५३३४०
" ३.	७३३२९
वर्ण १. ३.	२३३२१
" १.	३३५२
" १.	४३३१५६
" १. २. ३.	६५७०
वर्णक ३.	३३६५६
" ३.	४३३१४७
वर्णन ३.	५३३३९
वर्णा २.	३३८४९
वर्णि १.	८१११०
वर्णित १. २. ३.	
	५४३१०६
वर्णिन् १.	३३६३७
वर्णिनी २.	३३३२१२

## वर्णिलिङ्गिन् ]

वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	३१६१
वर्ण्य ३.	३१८११६
वर्तक ३.	२३३४०
" ३.	३३३२०१
" १.	७११६४
वर्तन ३.	२४२२२
" ३.	३३७१११
" ३.	३१८११
" ३.	५२२४१
" १. २. ३.	५४४४०
वर्तनी २.	७२२२१
वर्ति २.	४३३१६१
" २.	४३३१६१
वर्तिष्णु १. २. ३.	५४४१०
वर्तुल १. २. ३.	५४४१८२
वर्तुलाक्ष १.	२३३३०
वर्त्म ३.	४४४१५
वर्त्मन् ३.	४४४१५
वर्द्धी २.	३१९४४
( वर्द्धी )	
वर्धकि १.	३१९३४
वर्धकिहस्त १.	३१९१५६
वर्धन ३.	४३३१००
" १. २. ३.	५४४४०
" ३.	७३३२९
वर्धनी २.	४३३५७
वर्धमान १.	४३३५९
" १.	८११४४
वर्धिष्णु १. २. ३.	५४४४०
वर्धी २.	६२३३४
वर्मन् ३.	३३३१५२
वर्मि १.	८१११०
वर्मित १. २. ३.	३३३१४२
वर्ष १. २. ३.	५४४६३
वर्षा २.	४३३७
वर्ष १. ३.	२११९१
" १. ३.	२२२७
" १. ३. २. ३.	६५७९
वर्षकारी २.	३३३५२
वर्षण ३.	२२२७

## वैजयन्तीकोषः

वर्षमुख १.	२११८१
वर्षवर १.	३३७२३
वर्षा २. ३.	२११८९
" २.	३३३११७
वर्षाभी १.	४३३१८
वर्षाभू १. २.	७५७७
वर्षाभूवी २.	३३३१४५
वर्षामद १.	२३३३७
वर्षायस् १. २. ३.	५४४४
वर्षमन् १. ३.	६५७९
वल १.	६५७९
वलक्ष १.	५३३१५
वलक्ष १.	४३३६७
वलज १.	५३३४०
" ३.	७५७७
वलजा २.	३३३६५
" २. ३.	७५७७
वलन ३.	३३३११
" १.	५३३५२
वलना २.	२३३२२
वलभी २.	४३३३१
" २.	४३३३९
वलय १.	१२३५१
" १.	३३३२५
" १.	३३३१९९
" ३.	४३३१४४
वलयित १. २. ३.	
वलरिपु १.	१२३२
वलाङ्ग १.	२११८७
वलाहक १.	२२३१
" १.	३३३३७
" १.	४३३१२
" १.	४३३१७
वलाहका २.	३३३१९८
वलि २.	६२३३३
वलि १. २. ३.	५४४७
वलिभ १. २. ३.	५४४७
वलिर १. २. ३.	५४४१३
वलीक ३.	४३३३७
वलीनक १.	३३३२२३

## [ वशीकार

वलीमुख १.	३३३४०
" ३.	३३३१४१
वलक ३.	३३३१४
वलकल १. ३.	३३३१३
वलगन ३.	३३३१२२
वलगा २.	३३३११४
वल्लिगत १. २. ३.	
" १. २. ३.	३३३११८
वल्लु ३.	४३३१२२
" १. २. ३.	६५७९
वल्लमीक १. ३.	३३३१४८
वल्लकी २.	३३३११६
वल्लभ १. २. ३.	५४४७०
" १. २. ३.	७५७७
वल्लरि २.	३३३२०
वल्लरीका २.	४३३१९९
वल्लव १.	३३३२८
" १. २. ३.	४३३१२
वल्ला २.	३३३४८
वल्लार १.	३३३५२
वल्ली २.	३३३३७
वल्लीपद ३.	४३३१९९
वल्लूर ३.	४३३३
" १. २. ३.	४३३८९
वशा १.	३३३८३
" १.	३३३५९
" १. २. ३.	५४४२८
" १. २. ३.	५४४३२
" १. २. ३.	६५७९
" १. २. ३.	६५७९
वशा २.	३३३८६
" २.	३३३४७
" २.	४३३४
" २.	६५७९
वशाकु १.	२३३३
वशामख १.	३३३२७
वशिक १. २. ३.	५४४८७
वशिन् १.	४३३५४
वशीकार १.	३३३११७

## वरय ]

वरय १. २. ३.	५४३२२
वपट् ४.	८१८३
वसति २.	७२२३
वसन ३.	४३३११६
वसन्त १.	२११८७
वसन्तघोष १.	२३३२७
वसा २.	४४३११४
वसिक १. २. ३.	
" ३३३१३४	
वसित ३.	४३३११६
वसिष्ठ १.	३३३१५५
वसीर १.	३३३१७८
वसु १. २.	३३३१५४
" १.	३३३३६
" ३.	३३३१५
" १.	३३३१९४
" १. २. ३.	३३३११
" १.	३३३३६
" ३.	३३३३७
" १.	६५७७
वसुदेव १.	११३२६
वसुधा २.	३३३१२
वसुन १.	३३३३३
वसुन्धरा २.	३३३१२
वसुभट्ट १.	३३३१९४
वसुमती २.	३३३१२
वसुरेतस् १.	१२३१६
वसुवह्निका २.	३३३१०८
वसुव्रत ३.	३३३१४९
वस्त ३.	४३३१७
( वस्न )	
वस्ति १. २.	४३३१३१
" १. २.	४३३६६
वस्तिशुण्डक ३.	
" ३३३२१७	
वस्य ३.	४३३१७
वस्य ३.	४३३११६
वस्यकोश १.	४३३६३
वस्यग्रन्थ १. ३.	४३३१३०
वस्यचारणी २.	४३३५३

## शब्दानुक्रमणिका

वस्त्रान्त १.	४३३१३१
वस्न १.	३३३१७०
" ३.	३३३१२२
वस्वौकसारा २.	१२३५९
वह १.	१२३४८
" १.	६५७९
वहन ३.	३३३१२४
वहा २.	४३३२३
वहि १.	६५७९
वहिन ३.	३३३१२४
वहिनकर्ण १.	३३३१६
वहिन १.	३३३५२
वहिन १.	१२३१४
वहिन १.	५३३८
वहिनशिख ३.	३३३१९१
वहिनसुत १.	४३३१०४
वा ४.	८१८६
" ४.	८१८५
वाक्पति १.	५४४४५
वाक्य ३.	२३३२१
वाक्पट् ४.	८१८३
वागीश १. २. ३.	५४४४५
वागुर १.	३३३१७
वागुरा २.	३३३३९
वागुरिक १.	३३३३८
वागूजी २.	३३३१०८
वाग्गुद १.	२३३२८
वाग्मिन् १.	२३३२५
" १. २. ३.	५४४४५
वाघत् १.	३३३३७
वाच २.	११११
वाचंयम १.	३३३१५०
वाचस्पति १.	२३३३३
वाचाट १. २. ३.	५४४४६
वाचाल १. २. ३.	५४४४६
वाचाला २.	२३३२०
वाचिक ३.	२३३२५
" ३.	२३३३६
" १. २. ३.	३३३१९९
वाचोयुक्तिपट्ट १. २. ३.	
" ५४४४५	

## [ वातमृग

वाच्य १. २. ३.	८३३१५
वाज १.	२३३४९
" १.	३३३१८५
" १.	४३३३६
वाजिदन्तक १.	३३३१०१
वाजिन् १.	६५७९
वाजिन ३.	३३३१९८
वाजिशाला २.	४३३२१
वाञ्छा २.	३३३१७९
वाञ्छित १. २. ३.	
" ५४४९६	
वाट १.	३३३२१
" १. ३.	४३३१४
" १. २. ३.	८१९३७
वाटक १. ३.	४३३५
वाटधान १.	३३३५३
" १.	३३३१०१
वाटिका २.	३३३२१७
वाटी २.	३३३४
" २.	३३३२३०
" २.	८१९३७
वाटयपुष्पी २.	३३३१२७
वाटयमण्ड १.	४३३३९
वाटया २.	३३३१२७
वाटयाल १.	३३३१२८
" १.	३३३५४
वाडबेय १.	८१९३९
वाण ३.	२३३११
वाणि २.	३३३१८
वाणिज १.	३३३३२
वाणिज्य ३.	३३३३
वाणिनी २.	७२३३३
वाणी २.	१११९
वात १.	१२३४७
वातगामिन् १.	२३३३
वातघ्न १.	३३३३५
वातपात १.	२३३३
वातपोथ १.	३३३३९
वातप्रमी १.	३३३३६
" १.	८१९३८
वातमृग १.	३३३३६

वातल ]

वैजयन्तीकोषः

[ वार्ताहर

वातल १. २. ३. ४४११४५
वातसख १. १२११७
वातसञ्चार १. ४४११२७
वातसारथि १. १२११७
वातसुत १. ३११७०
वातापिसूदन १. ३११५२
वातायन ३. ४३१५४
वातायु १. ३१११६
वाताहार १. २. ३. ३११३१
वाति २. १२१४८
वातिक १. ४११२५
वातिङ्गन १. ३३११०२
वातुल १. ३१८४३
वातूल १. २. ३. ७५१८०
वात्या २. २११५१
" २. ५१११४
वात्सक ३. ५१११०
वात्स्यायन १. ३११५५९
वादन ३. ३११११४
" ३. ३१११२१
" ३. ३१११३१
" ३. ३१११३६
वादर १. २. ३. ४३१११७
वादित्र ३. ३११११४
" ३. ३१११३६
वादित्रलगुड १. ३१११३६
वाद्य ३. ३११११४
वाद्यनिर्घोष १. ३१११३६
वाद्यवादकसामग्री २. ३१११४०
वान १. २. ३. ३३११०
" ३. ३११८
" १. २. ३. ६५१८०
वानक ३. ३१११४
वानदण्डक १. ३११८
वानप्रस्थ १. ३३१४३
" १. ३१११२४
" १. ८११४०

वानर १. ३१४३९
" १. ८१६१७
वानवासिक १. ३१५२०
वानस्पत्य १. ३३३१६
वानरी १. ३३३३१
वान्ताशिनू १. २. ३. ३१६१९
वान्ति २. ४१४१२६
वापिम १. ३१६६४
वापी २. ४२१६
वाप्य ३. ३१८१९
वाम १. १११२९
" १. १२१५५
" १. २. ३. ६१४१६
वामदेव १. १११४२
वामन १. ११११९
" १. १२१८
" १. २. ३. ५४१८१
वामलूर १. ३११४८
वामलोचना २. ४१४५
वामा २. १११४८
" २. ४१४५
वामी ३. ३१७१०७
वायव्य १. २११९१
" १. २. ३. ३११०१
वायस १. २३११६
" १. ८१६६
वायसाली २. ३३३२२६
वायसी २. ३३३११२
" २. ३३३१४९
वायु १. १२१४७
वायुन १. १११२
( वयुन )
वायुवर्मन् ३. २१११
वायुसम्भवा २. ३१४४४
वार २. ३. ४२३
वार १. ५१११
" १. ५२१७
वारक ३. ३१७५०
वारट १. ५११५१

वारण १. १२१७
" १. ३१७६१
" १. ४२११०
वारणावत ३. ४३१९
वारणासी २. ४३३७
वारखुसा २. ३३३१७३
वारमुख्या २. ४४४४२
वारवाण १. ३. ८१५२२
वारवाणि १. ८११४२
वारखी २. ४४४२४
वारराणसी २. ४३३७
वाराह ३. ३१११८
वाराही २. १११६४
" २. ३३३२१०
वारि ३. ४२११
" २. ६५१८२
वारिकूट १. ४३३१५
वारिज ३. ३१८११९
वारिधर १. २२११
वारिपर्णी २. ४२१४६
वारिपिण्ड १. ४११४८
वारु १. ३१७१०
" २. ६२३७
वारुणपाशक १. ४११५२
वारुणी २. १११५९
" २. ३३३१०९
" २. ३११४६
वार्च ३. ३३३१
वार्त ३. ४४१४४२
" १. २. ३. ४४१४४३
वार्ता २. २४३१९
" २. ३१८१
" २. १. ३. ६५२५
वार्ताकशाकट १. २. ३. ३१८२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३. ३१८२१
वार्ताकी २. ३३३१०२
" २. ३३३१०४
वार्ताकु २. ३३३१०२
वार्ताहर १. ३११६

वार्तिक ]

शब्दानुक्रमणिका

[ विकराल

वार्तिक ३. ३१६५६
" १. ३१७२९
वार्द्धक ४. ७३३३०
" ३. ८१९१७
वार्धुष ३. ३१९५
वार्धुषिक १. २. ३. ३१९८
वार्धुषिन् १. २. ३. ३१९८
वार्धुष्य ३. ३१९५
वार्ध्रणिस् १. ३१४८
( वार्धनीणस् )
वार्मण ३. ५१११३
वार्मिक १. ३१५४०
वार्षी २. २११८९
वाल १. ३. ४३३१६०
" १. ४४१९८
" १. ६११५४
वालक ३. ७३३३१
वालकूर्चा १. ४१११००
वालकेशी २. ३३३२३०
वालधि १. ३१४७४
वालनाटक १. ३१८५४
वालपाशक १. ३१७८१
वालपाश्या २. ५३३१३६
वालमृग १. ३१४२९
वालवायज १. ३२१४०
वालवीज्य १. ३१४६३
वालहस्त १. ३१४७४
वालिका २. ४३३१३५
वालिनी २. २११४२
वालुक ३. ३१८१६
" ३. ४११२३
वालुका २ ब. ४२३३३
" २. ७२३२४
वालुकी २. ३३३१६७
वालक १. २. ३. ४३३११७
वालमीक १. ३१६१५३
वालमीकि १. ३१६१५३
वालदूक १. २. ३. ५१४४५
वावाता २. ३१७३२
वाशन ३. २१४४

वाशा २. ३३३१०२
वाशित ३. २१४४
वाशिता २. ७२३२२
वाशी २. २११२०
वास १. ३३३१९१
" १. ३१७१८
वासक १. ३३३१०१
वासतेयी २. २११५७
वासन १. ४३३४५
" ३. ४३३१६७
" ३. ५१४४९
वासना २. ४३३१५८
वासनी २. ३३३१६८
वासनीयक ३. ३१८११६
वासन्त १. ३३३६१
" १. ३१८३७
वासन्ती २. ३३३१८२
" २. ३३३१८७
वासयोग १. ४३३१५७
वासर १. ३. २११५५
" १. ७१७३२
वासव १. १२११
" १. ३३३१०८
वासस् ३. ४३३११६
" १. ८१६१६
वासगार ३. ४३३२०
वासिक ३. ४३३४१
वासिष्ठ ३. ४३३१०६
वासी २. ३१९३६
वासुकि १. ४१३३
वासुदेव १. ११११२
" १. ८१३३९
वासू २. ३१९१०७
वास्तु १. ३. ४३३११०
" १. ३. ६५१८०
वास्तुक १. ३३३१५४
वास्तुकशाकट १. २. ३. ३१८२१
वास्तुकशाकिन १. २. ३. ३१८२१
वास्तुमध्य ३. ४३३१०

वास्तोष्पति १. १२३२
वास्त्र १. २. ३. ३१७१२९
वाह १. ३१४५२
" १. ३१४६५
" १. ५११५६
" १. ५११५८
" १. ५११५८
वाहन ३. ३१७१२३
वाहनी २. ४३३१७
वाहवारण १. ३३३३३
वाहस १. ४३३१९
" १. ७१६५
वाहि १. ८१९१०
वाहिक १. ५११५३
वाहित १. ३१७८७
" ३. ५११६४
वाहित्थ ३. ३१७७३
वाहिनी २. ३१७५५
" २. ३१७५८
" २. ४२३२३
वाहिनीपति १. २. ३. ३१७१४१
वाहीक १ व. ३११२७
वाह्य १. ३१४५२
" ३. ३१७१२३
वि १. ३२३२
" १. ८११६०
" ४. ८१७६
विश १. २. ३. ५११२२
विशति २. ५११२६
विशतितम १. २. ३. ५११२२
विशतिभुज १. १२३४२
विकङ्कत १. ३३३३८
विकच १ व. १२३३७
" १. २. ३. ३३३१९
विकट १. २. ३. ५१४८२
" १. २. ३. ५१४१२६
" १. २. ३. ७१४२६
त्रिकटा २. ३१७४७
विकराल १. ३१४७

विकराल ]

वैजयन्तीकोषः

[ विताली

विकराल १. २. ३. ५४१८२
विकरालिन् १. ५४३९
विकर्णि १. ३१७१८२
विकर्तन १. २११११
विकर्मन् ३. ३१६११७
विकल १. २. ३. ५४१८६
विकला २. ३१६५०
विकलाङ्ग १. २. ३. ५४१११
विकल्पना २. २४४४०
विकसा २. ३३१३५
विकार १. ५२२२२
" १. ७११६६
विकालक १. २११६५
विकिर १. २३३३
" १. ४२१८
" १. ७११७०
विकिष्कु १. ३११५६
विकुण्ठना २. ३१६१७५
विकुर्वाण १. २. ३. ५४३३३
विकृत १. २. ३. ३१९१७८
" ३. ३१९१५५
" १. २. ३. ४४११४४
" १. २. ३. ७४१२५
विक्र १. ३१७६६
विक्रम १. ५२११६
" १. ५२११७
विक्रय १. ३१८६९
विक्रयिक १. २. ३. ३१८६८
विक्रान्त १. २. ३. ३१७१४७
" ३. ३१९४८
विक्रायिक १. २. ३. ३१८६८
विक्रेतृ १. २. ३. ३१८६८
विक्रय १. २. ३. ३१८६९
विकलव १. २. ३. ५४१६७

विद्युभा २. २११२३
विद्योभ १. ३१७७४
विगण्डीर ३. ३३११५१
विगत १. २. ३. ७४१२४
विगतनासिक १. २. ३. ५४११२
विगता २. ३१६४८
विगन्धिका २. ३१२१२
विगन्धिन ३. ४२३३६
विगम १. ५२२२७
विगर्वा २. २४१२८
विगीत १. २. ३. ३१६११
विग्रक १. ३३३८४
विग्र १. २. ३. ५४११२
विग्रह १. ३१७६
" १. ५२३३
" १. ७११६८
विघन १. ३१६१०२
विघस १. ३१६६७
विघसासिन् १. ३१६४१
विघूणिका २. ४४१९१
विघ्न १. ५२३४
विघ्नेश १. १११५३
विचकिल १. ३३३१८३
विचक्षण १. ३१६२३४
विचक्षणा २. ३१८४७
विचयन ३. ५२३४२
विचर्चिका २. ४४११२३
विचारिका २. ३१७३७
विचारोक्ति २. २१८२८
विचिकित्सा २. ३१६१७७
विचुल १. ३३३५०
विचोलक १. १२३४३
विच्छित्ति २. ३१९१३
विच्युत १. २. ३. ५४११०२
विजन १. २. ३. ५४१११९
विजन्मन् १. ३१५१०४
( द्विजन्मन् )
विजय १. ३१७१५९
" १. ३१७२०९

विजयच्छन्द १. ४३११३९
विजविल १. २. ३. ५३३४
विजाता २. ४४११७
विजाति २. ३३४२६
विजिज्ञासा २. ४६११७५
विज्ञ १. २. ३. ५४११९
वित १. २१५७०
" १. ४४३३९
वितका २. ४३३३८
वितकान्ता २. ३३२१२
वितङ्क १. ३३३१७२
" १. ३. ४३३५४
वितप १. ३३३१६
" १. ३१८७३
" १. ३. ७५१६२
वितपिन् १. ३३३४
विटाटिका २. ३३३१४६
" २. ४३३३८
विटाश्रय १. ४३३२७
विट्खदिर १. ३३३६४
विट्चार १. ३३४७१
विट्पति १. १११४
विड १. ३१८१२४
विडङ्ग १. ३. ३१८१७
" १. २. ३. ८१९३८
विडु ३. ४४११०८
वितंस १. ३१९४१
वितत ३. ३१९११५
" ३. ३१९११६
वितथ १. २. ३. २४११७
वितरण ३. ३१६११८
वितर्क १. ३१६१७६
वितर्दिका २. ४३३३६
वितस्ति २. ३११५३
" २. ४४४८०
" १. २. ८१९२७
वितान ३. ३१७१९०
" १. ३. ४३३१२३
" १. २. ३. ७५७६
विताली २. ३१९१२४

वितुन्नक ]

शब्दानुक्रमणिका

[ विप्रव

वितुन्नक ३. ३२३४२
वित्त ३. ३१८७३
" १. २. ३. ६५७४
वित्तेश १. १२३५७
विदग्ध १. ५३३१८
" १. २. ३. ५४१२०
विदण्ड १. ४३३५०
विदर १. ५२३४१
विदल १. २. ३. ३३३१४
विदा २. ३१६१६३
विदारक १. ४२३३१
विदारण ३. ८३३१२
विदारी २. ३३३२३
" २. ३३३१९५
विदित १. २. ३. ५४११०१
" १. २. ३. ७४३२३
विदिश २. २१३३
विदुर १. २. ३. ५४३४३
विदुल १. ३३३३१
( अम्बुप्रिय )
विदूषक १. ३१९६९
विदूषिका २. ३१६५३
विदेह १ व. ३११३०
विद्ध १. २. ३. ५४११७
" १. २. ३. ५४११११
" १. २. ३. ६४११७
विद्धकर्णी २. ३३३३३१
विद्धायुध ३. ३१७१७३
विद्या २. ३१६२७
" २. ३१६३०
विद्याधर १. १३३४
विद्युत् २. २३३३
" २. ३३३१२
विद्रधि १. २. ४४१३३७
विद्रव १. ३१७२११
विद्रुत १. २. ३. ४३३९५
विद्रुम १. ३३३३९
" १. ७११६५
विद्रुमलता २. ३१८१५५
विद्रुस् १. ३१६२३४

विद्वेष १. ३१६१८४
विधवा २. ४४११४
विधा २. ३१६३५
" २. ६२३३४
विधातृ १. १११६
विधान ३. ७३३३३
विधि १. १११९
" १. ३१६३३
" १. ३१६११३
" १. ३१६१८९
" १. ५२३२५
" १. ६११५५
विधु १. २११२४
" १. ६११५५
विधुत १. २. ३. ५४११०१
" १. २. ३. ७४३२३
विधुन्तुद १. २१३३६
विधुर १. १२३४१
" १. २. ३. ७४३२७
विधुवन ३. ५२३४०
विधुवन ३. ५२३४०
विधेय १. २. ३. ५४३२८
" १. २. ३. ५४३३२
विनय १. ७११७०
विनयग्राहिन् १. ३१७६७
विना ४. ८१८४
विनायक १. ११३३२
" १. १११५३
विनिमय १. ३१८७१
विनियोग १. ५२३२५
विनीत १. २. ३. ७५७४४
विनोद १. ३१६१८७
विन्दु १. २. ३. ५४३४३
विन्ध्य १. ३३३३
विन्ध्यकूटक १. ३१६१५१
विन्ध्यवासिन् १. २१६१५८
विन्ध्यवासिनी २. १११६३
विन्न १. २. ३. ५४१९९
" १. २. ३. ६४११७

विपन्नक १. ३१७४२
विपञ्ची २. ३१९११६
" २. ७२३२४
विपण १. ३१८६९
विपणि २. ४३३३५
" २. ७२३२४
विपत्ति २. ३१६१९१
विपथ १. ३११५०
विपद् २. ३१६१९१
" २. ३१७४
विपर्यय १. ५२३
विपर्यास १. ५२३
विपश्चित् १. ३१६२३४
विपाक १. ३१६१८९
" १. ७११६७
विपाकिन् १. २३३१२७
विपादिका १. ४४११२२
( विपाटिका )
विपाश २. ४२३२७
विपाशा २. ४२३२७
विपिन ३. ३३३१
विपुल १. २. ३. ५४३८०
विपुला २. ३१३२
विप्र १. ३१६१
विप्रकार १. ५२३२२
विप्रकण्ड १. ३१६६२
विप्रकृष्ट ३. ५४३४२
विप्रतिसार १. ३१६१८५
विप्रप्रिय ३. ३१८१३९
विप्रयाण ३. ३१७२१०
विप्रयोग १. ५२३१६
विप्रलम्भ १. ५२३२०
विप्रलाप १. २३३२९
" १. ८११४१
विप्रशेषित ३. ३१६६७
विप्रशिक्षा २. ४४३११
विप्रिय ३. ३१७४७
" १. २. ३. ५४३६९
विप्रुष २. २३३८
विप्रुष १. २३३२
विप्रुव १. ३१६१९०

विबुक् ]	वैजयन्तीकोषः
विबुक् १.	३१५२०
विबुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभङ्गन ३.	५२१३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५२१७
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१९१०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८१३२९
विभाषण ३.	२१३२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	११२५
विभु १. २. ३.	६५५८१
विभूति २.	८५३३४
विभूषण ३.	५३१३३३
विभ्रम १.	३१२१६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५१४३४
विमल १.	३१२४१
" १. २. ३.	५१४६६
विमातृज १.	४१४३३
विमान १. ३.	७५५८१
वियत् ३.	२११११
वियद्गङ्गा २.	१३११३
वियम १.	५२१३०
वियात १. २. ३.	५१४१७
वियाम १.	५२१३०
वियुन १.	११२६
वियोग १.	५२१२६
विरजा २.	३१३९२
विरत ३.	३७२०२
विरति २.	५२१३६
विरल १. २. ३.	५११२५
विरह १.	५२१२६
विराग १.	३१३१६७

वैजयन्तीकोषः

[ विशुन्धलवण

विविक्त १. २. ३.	७१४२४
विवृताक्ष १.	२३११३
विवेशिका २.	४३३४
विवेचन ३.	५२१४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८१
" २. ३.	४१४१९९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कट १. २. ३.	५१४८२
विशद १.	५३१०
" १. २. ३.	५१४३३४
" १. २. ३.	७१४२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३३१३३
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशास्त्र १.	१११५७
" १.	७५५८३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८१५५७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८१४१२
विशाल १.	४३१२९
" १. २. ३.	५१४८०
" १. २. ३.	५१४८२
विशालता २.	५२१५
विशालत्वच् १.	३३१४७
विशाला २.	३३११०३
" २.	३३११७२
विशिख १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७५५८१
विशिखा २.	४३१३६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	१२१३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६५१
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

विशेष ]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४३११४८
" १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७७६
विशोक १.	२३२२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५१४१२५
विश्लेष १.	५२१२६
विश्व १. २. ३.	१३१८
" १. २. ३.	५१४८६
" १. २. ३.	६५५७८
विश्वकद्रु १.	३१३३९
विश्वकर्मन् १.	१३३६
" १.	८११४१
विश्वगोप्त १.	८११३९
विश्वभृत् २. ३.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वम्भर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	१२१३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१४१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
( विश्वहर्यत )	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
" १.	७११६७
विश्ववसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३२१३३
" ३.	३११२४
" ३.	४२१२
विषघ्न १.	३३१५५
विषघ्नी २.	३३११००
" २.	३३११२७
" २.	३३११३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३३१५०
विषम १.	३३१२१६

शब्दानुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३३१४७
विषमस्पृहा २.	३३१७९
विषमालुध १.	१११२८
विषमोन्नत १. २. ३.	५१४८३
विषय १.	३१७४८
" १.	५३१२
" १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७५५७५
विषवृत्त १.	८१६१९
विषवैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८९०
विषाण १. २. ३.	७५५८२
विषाणिका २.	४३१२२
विषाणिन् १.	३१४५२
" १. २. ३.	७५५७७
" १.	८१६१४
विषाणी २.	३३१११६
विषाद १.	३३११९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषुचीन १. २. ३.	५१४९१
विष्कम्भ १.	७११६७
विष्किर १.	२३३३८
" १.	७११६६
विष्टप ३.	३३१२०६
विष्टर १.	३३३४
" ३.	४३११६४
" १.	७११६९
विष्टरश्रवस् १.	११११०
विष्टि १.	३१५५५
विष्टा २.	३३११००
" २.	४१४११९
विष्टाख्य ३.	३३१३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
" १.	१११२०
विष्णुक्रान्ता २.	३३१२३३

[ विस्मय

विष्णुक्रान्ता २.	३३१२३४
विष्णुगुप्त १.	३३११५९
विष्णुपद ३.	२१११
विष्णुपदी २.	४३१२४
विष्णुरथ १.	१११३८
विष्णुशक्ति २.	११११६
विष्णार १.	२१४१९
विष्णुलिङ्गिनी २.	१२३३०
विष्य १. २. ३.	५१४७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३३३६६
विष्वच् १. २. ३.	५१४९१
विष्वद्रीचीन १. २. ३.	५१४९३
विष्वद्यच् १. २. ३.	५१४९३
विसंवाद १.	५२१२०
विसर १.	५१११
" १.	५३१२६
विसर्ग १.	१२१८९
" १.	३३३३७
" १.	७११७०
विसर्जन ३.	३३१११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विसृत १. २. ३.	५१४११०
" १. २. ३.	७१४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५२१३
विस्तार १.	३३११६
" १.	५२१३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१४८०
विस्तीर्णजानु २.	३३१४७
विस्तृत १. २. ३.	५१४११०
विस्फोट १.	४१४१२३
विस्मय १.	३३११८१
" १.	३१५७६
" १.	७११६५



वेन ]

वेन १.	३१५१९
वेपथु १.	३१५८५
" १.	३१५८९
वेमन् १.	३१५८
वेल १.	३३२५
वेलज १.	५३३६
वेलव १.	३१५२२
( पेलव )	
वेलार २.	४२१३३
" २.	४२१३३
" २.	६२१३६
वेलान १.	५३३६
वेल्ल ३.	३१५९७
वेल्लन ३.	३१५९९
वेल्लित १. २. ३.	५३३९५
" १. २. ३.	७३३२३
वेश १.	३१५१८
( उग्रवेश )	
" १.	४३३३५
वेशनी २.	४३३२४
वेशन्त १.	४३३६
वेशवार १.	४३३८७
" १.	४३३९०
वेशमन् ३.	४३३१८
वेशमस्थूणा २.	४३३३९
वेश्य ३.	३३३१८४
वेश्या २.	४३३२४
वेश्यागृह ३.	४३३३३
वेश्याचार्य १.	३३३७०
वेश्याजनाश्रय १.	४३३३५
वेश्यापति १.	४३३३९
वेप १.	३३३६८
" १.	४३३३२
वेष्ट १.	३३३९९
" ३.	६३३३२
वेष्टन ३.	३३३१०५
" ३.	४३३९३
" ३.	७३३३४
वेष्टावार ३.	३३३३२३
वेष्टित १. २. ३.	५३३९६
वेसर १.	३३३१०८

वैजयन्तीकोषः

वेहत् २.	३३३४७
वेध.	८३३७
" ४.	८३३११
वेकच्य ३.	४३३१२३
" ३.	४३३१५६
वेकरञ्ज १.	४३३१९
" १.	४३३१०
" १.	४३३१६
" १.	४३३१२
वेकुण्ठ १.	१३३१२
" १.	३३३१२१
" १.	७३३७२
वेकृन्त १.	३३३३५
वेखानस १.	३३३१३४
वेखारक १.	५३३३०
वेघटिक १.	३३३१५
वेचित्य ३.	३३३२००
वेजनन १.	४३३१९
वेजयन्त १.	१३३५५
" १.	१३३२९
" १.	१३३२९
वेजयन्तिक १. २. ३.	३३३१४५
वेजयन्ती २.	३३३९६
" २.	८३३२९
वेज्ञानिक १. २. ३.	५३३१९
वेङ्कर्य ३.	३३३४०
वेणव ३.	३३३२१
" १.	३३३२२
" १.	३३३३८
वेणविक १.	३३३७१
वेणिक १.	३३३७०
" १.	५३३५७
वेतंसिक १.	३३३४०
वेतनिक १. २. ३.	३३३१५
वेतालिक १.	३३३५८१
" १.	३३३३०
वेदिक १.	३३३६८
वेदेह १.	३३३८७
" १.	३३३११६
वेदेहक १.	३३३१६

[ वैश्वदेवाम्नि ]

वेदेहक १.	३३३७८
" १.	३३३७२
वेदेही २.	३३३७७
वेद्य १. २. ३.	४३३१४३
वेद्यमातृ २.	३३३१०२
वेद्यशास्त्र ३.	३३३२९
वेद्युत ३.	३३३१९
वेद्युत्वत १.	३३३१२
वेद्योत १. २. ३.	३३३१९
वेधव्यलक्षणेपिता २.	३३३५३
वेधान्न १.	१३३७
वेधेय १. २. ३.	५३३२१
वेनतेय १.	१३३३७
वेनयिक १. २. ३.	३३३१३०
वेनीतक १. ३.	३३३१३७
वेपरीत्य ३.	५३३५
वेमात्रेय १.	४३३३३
वेमेय १.	३३३७१
वेयथित १.	३३३१०७
वेयाघ्न १. २. ३.	३३३१२८
वेर ३.	३३३१८४
वेरङ्गिक १. २. ३.	५३३५४
वेरशुद्धि २.	३३३२०९
वेराग्य ३.	१३३४७
" १.	३३३१६७
वेरिन् १.	३३३४१
वेवधिक १.	३३३१६
वेवस्वत १.	१३३३४
वेवशास्त्र १.	२३३८३
" १. ३.	३३३१८६
" १.	३३३१३१
वेवशास्त्रिन् १.	३३३७६
वेवशास्त्री २.	२३३७५
वेवशिख ३.	३३३७५
वेवश्य १.	३३३११
वेवश्यकुण्ठ १.	३३३१६३
वेवश्रवण १.	१३३५७
वेवश्रवण १.	१३३२७

वेरवानर ]

वेरवानर १.	१३३१४
" ३.	२३३४९
वेरवानरी २.	२३३४८
वेरपयिकी २.	३३३३५
वेरणव १.	३३३१०८
वेरणवी २.	१३३१६
" २.	१३३१६५
वेरणुत ३.	३३३१५
वेसारिण १.	४३३४१
वेहायस ३.	३३३१८८
वेहासिक २.	३३३१७
वेहखान १.	३३३१०२
वेघाट ४.	८३३३
वेघट्ट ४.	८३३३
वेघट्ट ४.	८३३३
वेयंसक १. २. ३.	५३३२४
वेयक्त १.	५३३८
" १. २. ३.	६३३७२
वेयङ्गा २.	३३३१५०
वेयजन ३.	४३३१५९
वेयञ्जक १.	३३३१९८
वेयञ्जन १.	३३३२२३
" १. ३.	३३३३६
" १. २. ३.	३३३१९३
" ३.	४३३८५
" ३.	७३३३०
वेयतिकर १.	८३३११
वेयतिहार १.	५३३३६
वेयत्यय १.	५३३१५
वेयत्यास १.	५३३३६
वेयथा २.	३३३१८७
वेयधव १.	३३३१५०
वेयन्तर १.	४३३१९
वेय्य १.	३३३४४
वेयर्थ १. २. ३.	५३३१२९
वेयलीक ३.	५३३३५
" १. २. ३.	७३३७९
वेयवच्छेद १.	३३३१९२
वेयवधि १.	१३३३३
वेयवहार १.	३३३१५

शब्दानुक्रमणिका

व्यवहार १.	८३३४३
व्यवहित ३.	५३३१४२
व्यवाय १.	७३३६५
व्यष्ट ३.	३३३२४
व्यसन ३.	७३३३२
व्यसनार्त १. २. ३.	५३३६८
व्याकरण ३.	३३३२८
" ३.	८३३११
व्याकुल १. २. ३.	५३३६८
व्याकृति २.	५३३३४
व्याकोच १. २. ३.	३३३३९
व्याघात १.	३३३४८
व्याघ्र १.	३३३३३
व्याघ्रक १. ३.	४३३४३
व्याघ्रनख ३.	३३३९९
व्याघ्रपाद् १.	३३३३८
व्याघ्रपुच्छक १.	३३३३५
व्याघ्राट १.	३३३१९
व्याज १.	३३३१९५
" १.	६३३५४
व्यादीर्णस्य १.	३३३११
व्याध १.	३३३३८
व्याधाम १.	१३३३३
व्याधि १.	४३३१३८
" १.	८३३६८
व्याधित १. २. ३.	४३३१४४
व्यापन १.	५३३४१
व्यापलण्डिका २.	४३३८४
व्यापादन ३.	३३३२१५
व्याप्य १.	४३३१३८
व्यप्व १.	२३३२७
व्याम १.	४३३८२
व्यायत १. २. ३.	७३३२४
व्यायाम १.	४३३८२
" १.	७३३६८
व्यायोग १.	३३३१०१
व्याल १.	३३३७३
" १.	४३३१४
" १. २. ३.	६३३७४
व्यालग्राहिन् १.	४३३१२५

[ मत ]

व्यालायुध ३.	३३३९९
व्यालि १.	३३३१५८
व्यावहारी २.	८३३४४
व्यास १.	१३३३०
" १.	१३३३१
" ३.	३३३१७६
" १.	५३३३३
व्युत्क्रम १.	५३३१६
व्युत्थान ३.	५३३२०
" ३.	७३३३१
व्युत्पन्न १. २. ३.	५३३४२
व्युप १. २. ३.	३३३१३२
व्युष्ट ३.	२३३६८
व्युष्टि १. २. ३.	३३३१२६
" १. २. ३.	६३३३५
व्यूढ १. २. ३.	५३३८०
" १. २. ३.	५३३८३
व्यूति २.	३३३१२
व्यूह १.	५३३१२
" १.	६३३५६
व्योकार १.	३३३१६
व्योमकेन्द्र १.	१३३४१
व्योमगुण १.	१३३११
व्योमधारण १.	३३३३५
व्योमन् ३.	२३३११
" ३.	५३३३१
व्योमसम्भवा २.	३३३४४
व्योमाख्य ३.	३३३१५
" ३.	३३३१६१
व्योष ३.	३३३८०
व्यज १.	३३३३१
" १.	६३३५४
व्यज १. ३.	३३३२१७
व्यजनी २.	३३३१५७
व्यजबन्ध १.	४३३१४०
व्यत ३.	३३३१३३
" १ ब.	३३३३२
" १. ३.	३३३१४
" १. ३.	३३३१३६
" १.	६३३३१

व्रतति ]

व्रतति २.	३३३७
व्रतती ३.	३३३७
व्रतसङ्ग्रह १.	३३६०७
व्रतिन् १.	३३६०
" १.	३३७९०
व्रश्चन १.	३३९३५
व्राजिक ३.	३३९१४८
व्रात १.	३३९११
" १.	३३९५९
" १.	५१११
व्रात्य १.	३३९५९
" १.	३३९१०२
" १.	३३९११९
व्रीड १. २.	८१९२७
व्रीला १.	३३९१९४
व्रीहि १ व.	३३३२३
" १.	३३८३१
" १.	३३८३२
" १.	३३८६३
" १.	८१९५७
व्रीहिकङ्क १.	३३८४०
व्रीहिन् १. २. ३.	५१४११९
व्रीहिमत् १. २. ३.	५१४११९
व्रीहेय १. २. ३.	३३८१९
श	
शंसा २.	२१४३५
" २.	६२१४१
शंस्य १.	१२२२४
शक १.	३३४७४
" १.	३३५७४
" १.	६५९१
शकट १.	३३३२०९
" १. ३.	३३७१२५
शकटाविल १.	२३३१२
शकल १. ३.	४१४५६
" ३.	७३३३४
शकलज्योतिस् १.	४१११८
शकुटा २.	३३७७९
शकुन १.	२३३३

वैजयन्तीकोषः

शकुन ३.	८३३१६
शकुनि १.	२३३३
शकुन्त १.	२३३३
" १.	२३३३२
" १.	७१७७४
शकुन्ति १.	२३३३
शकुलाक्ष १.	३३३२००
शकुलादनी २.	३३३१९७
" २.	३३८८६
शकुलार्भक १.	४११४५
शकुलिन् १.	४११४१
शकुत् ३.	४११११८
शक्ति २.	१११३६
" २.	३३३१६१
" २.	३३७५
" २.	६२३३८
शक्तिपाणि १.	१११५५
शक्र १.	६११५७
शक्रवृत् १.	८६११८
शक्राख्य १.	३३३७३
शकल १. २. ३.	५१४४४
शकरी २.	२११२१
" २.	७२२२५
शङ्कर १.	१११३९
शङ्का २.	६२३३८
शङ्किल १.	३३७८७
शङ्कु १.	१२२४१
" १.	२३३६
" १.	३३७८५
" १.	३३७१६७
" १.	४१४६१
" १.	५१३३१
" १.	६११५९
" १. ३.	८१९३०
शङ्कुकर्ण १.	८११४४
शङ्कुमूली २.	२११७३
शङ्कुला २.	३३३१७०
शङ्ख १.	१२३६०
" १.	३३२४१
" १.	३३८१०१
" १. ३.	४११५५

[ शतभिषज् ]

शङ्ख ३.	५११२८
" १. ३.	६१५८३
" १.	८६११४
शङ्खक १.	४१४९६
शङ्खकार १.	३३५६३
शङ्खद्वीप ३.	३३११४
शङ्खनख १.	४११५६
शङ्खपात्र ३.	३३६६२
शङ्खपाल १.	४१११२
शङ्खमुख १.	४११५३
शङ्खिनी २.	३३३११६
शची २.	१२३११
शचीपति १.	१२३३
शचीवल १.	३३१६६
शठ ३.	३३३३२
" १.	३३३३३
" १.	३३३३७
" १.	३३३७६
" १.	३३८४१
" १. २. ३.	५१४२२
शण्डपिपिका २.	३३३९८
शण्ड १.	३३३३३९
शण्डिली २.	१११५९
शत ३.	५११२८
" ३.	५१३३१
शतकोटि १.	१२३१३
शतघ्नी २.	३३७१६९
शततम १. २. ३.	५१३३३
शतद्रु २.	४२२२७
शतधारक ३.	१२३१३
शतघृति १.	१११८
शतपत्र ९.	२३३३३
" ३.	४२३३८
शतपर्दी २.	४१३३३
शतपर्व ३.	३३८९२
शतपर्वन् २.	३३३१४९
" १.	३३८५४
" ३.	४२३३३
" १. २. ३.	८१५२३
शतप्रास १.	३३३१९२
शतभिषज् १.	२११४३

शतभीरु ]

शतभीरु १.	३३३१८३
( शीतभीरु )	
शतमन्यु १.	१२३५
शतमान ३.	५११४५
" ३.	५११५०
शतमुखी २.	१११६०
शतमूर्धन् १.	३३१४८
शतमूली २.	३३३१४२
शतवीर्या ३.	३३३२३३
शतवेधिन १.	३३८१३३
शतहृदा २.	२२३४
शताङ्ग १.	३३७१२४
शतानन्द १.	१११८
" १.	११११४
" १.	३३३१५६
शतावरी २.	३३३१४२
शतावर्त १.	११११४
शतावर्ता २.	२२३४
शत्रु १.	३३७३९
" १.	३३७४०
" १. २.	८१९४७
शत्रुघ्न ३.	३३७१५७
शानक १.	३३५३०
शानकैः(-स्) ४.	८८११६
शानि १.	२११३६
शानैः (-स्) ४.	८८११६
शानेश्वर १.	२११३५
शपथ १.	७११७३
शफ १.	३३३९९
शफरी २.	३३३९४
" १. २.	४११४४
शबर १ व.	३३३३३
" १.	३३५२३
शबल १.	५३३२३
शबली २.	३३४४४
शब्द १.	२३३१
" १.	५३३१७
" १.	६११५९
शब्दकार १. २. ३.	५१४४८
शब्दग्रह १.	४१४९२

शब्दानुक्रमणिका

शब्दन १. २. ३.	५१४४८
शम् ४.	८८११७
शम १.	३३१७६
" १.	५२२२७
शमथ १.	५२२२७
शमन १.	१२३५
" ३.	३३६९४
" १.	७१५८७
शमल ३.	४१४११८
" ३.	७३३३४
शमित १. २. ३.	५१४११४
शमिता २.	४३३६८
शमी २.	३३३८९
" २.	३३८६५
शमीधान्य ३.	३३८६२
शमीफला २.	३३३१४८
शम्फली २.	४१४२५
शम्ब १.	६११५८
शम्बर १.	३३४३३
" १.	४१४४२
" १. ३.	७१५८४
शम्बरारि १.	१११२८
शम्बरी २.	३३३११३
शम्बल १. ३.	३३९१७
शम्बाकृत १. २. ३.	३३८२३
शम्बूक १.	४११५७
" १.	४३३६७
" १.	४३३६७
शम्बूकावर्त १.	४१४३३०
शम्भर १.	३३३१८८
शम्भल १.	३३७९६
शम्भु १.	६११५७
" १.	८६११
शम्या २.	३३८२८
शम्याक १.	३३३४८
शय १.	४११२८
" १.	४३३१२८
" १.	४१४१२३
शयणढक १.	४११२६

[ शरि ]

शयथ १.	७१५८५
शयन ३.	४३३१६५
" ३.	४३३१६७
" १. ३.	७१५८५
शयनीय ३.	४३३१६५
शयान १.	४११२८
शयालु १.	३३४३८
" १. २. ३.	५१४३९
शयित १. २. ३.	५१४३९
शयीचि १.	१२३६
शयु १.	४३३१९
शय्य ३.	४३३१८
शय्या २.	४३३१६५
" २.	६२३४१
शर १.	१२३५४
" १.	३३३२२८
" १.	३३७१८०
" १.	३३८१४७
" १.	६११५८
" १.	८६११६
शरज १.	१११५४
शरजालक	३३७१८३
शरण ३.	८३३१७
शरद् २.	२११८९
" २.	२११९१
" २.	६२३३८
शरदण्ड १ व.	३३३३९
शरभ १.	३३४३२
शरभा १.	३३६५१
" २.	३३७५२
शरण्य १. २. ३.	३३७१९४
" १. २. ३.	८१९३२
शराटिका २.	२३३११
शरादान ३.	३३७१८९
शरायुध ३.	३३७१७३
शरारु १. २. ३.	५१४४२
शराव १.	४३३५९
शरावती २.	४२३३०
शरासन ३.	३३७१७५
शरि १.	३३४७३



[ शरि ]

वैजयन्तीकोषः

[ शान्तिगृह ]

[ शित्चन्दन ]

शरि १.	३१४७४	शशादन १.	२३३३०	शाक्य १.	१११३४	शान्तियात्रा २.	३१६५६	शालाजिर १.	५३१५९	शिखर ३.	३३२८
( चरि )		शशिन १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४	शाप १.	२१४३२	शालि १.	३८३३२	" ३.	३३१५५
शरीर ३.	४१४५२	शशिभूषण १.	१११३९	शकर १.	३१४५३	शापटिक १.	२३३३७	शालिजात १.	३१४३५	शिखरिणी ३.	४३१९८
शरु १.	२३३२०	शशिशेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७	शाव ३.	५११६	शालियष्टिक १.	३८३३४	शिखरिन् १.	२३३५
शर्करा २.	३८१३३४	शशोर्ण ३.	३८११९८	शाखा २.	३३३१५	" १. २. ३.	५३१२	शालिहोत्रिन् १.	३१७९०	" १.	८११५८
" २.	७३२२६	" ३.	८१२२२	" २.	६३३२९	शाम्बरी २.	३१७१२	शालीन १.	३३३१५६	शिखरी २.	३३३१५५
शर्करिल १. २. ३.		शशवत् ४.	८१७२८	शाखापुरी २.	४३३१	शार १.	३१६१	" १.	३३३१५६	शिखा २.	१३२२९
	३११४४	" ४.	८८६	शाखामृगा १.	३३३२९	" १.	५३३१९	" १. २. ३.	५३११७	" २.	३३३१५
शर्मन् ३.	३६१८९	" ४.	८८१११	शाखारण्ड १. २. ३.		" १.	५३३२५	शालु १.	४११४७	" २.	४३६८
शर्व १.	१११४०	" ४.	८८११२	शाखास्थि ३.	४३११६	" १. २. ३.	६५९१	शालुक ३.	४३३४४	" २.	४३१०४
शर्वर १. २.	७५८४	शकुली २.	४३३७५	शाखि १ ब.	३११२७	शारद १.	३३३३७	" ३.	७३३३४	" २.	६३३४०
शर्वरी २.	२११५७	" २.	७३२२६	शाखिन् १.	३३३१५	" १.	३८३३६	शालूर १.	४११४७	" २.	८३३१५
" २.	८६५५	शष्प ३.	३३३२३५	शाखोट १.	३३३३७	" १. २. ३.	५३३८९	शाल्य १. २. ३.	३८११९	शिखावत् १. २. ३.	
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५३३१०६	शाङ्क १.	३३३३७	" १.	७५८६	शारवत १. २. ३.	५३३८८	शिखावल १.	३३३३६
शल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३३३१११	शाट १.	४३३२७	शारदी २.	३३३१९७	शाङ्कुलिक ३.	५३१११	शिखिग्रीव १.	३३३३२
" ३.	३३३३७	" ३.	३३३१५७	शाटिका २.	४३३१२७	शारि २.	२३३२०	शासन ३.	३३३३७	शिखिन् १ ब.	२३३३७
" १.	३३३६६	" ३.	३३३१९६	" १. २.	८३३२६	" १.	३३३६०	" ३.	७३३३५	" १.	२३३३३
शलक १.	२३३३४	" ३.	३३३२२६	शाटी २.	८३३२६	" १. २.	६५८८८	शासि १.	८३३१२	" १.	२३३३७
शलभ १.	२३३३३	" ३.	६३३३३	शाटी २.	८३३२६	शास्त्रिका २.	३३३१३६	शास्ति १.	८३३१२	" १.	२३३३७
शलल ३.	३३३३७	शास्त्रक १.	३३३३३१	शाडव १.	५३३२८	शास्त्रिवा २.	३३३१३९	शास्त् १.	१३३३२	" १.	६३३६०
" २. ३.	३३३३७	शास्त्रचार १.	३३३३३१	शाडविक १.	५३३४०	शास्त्रिवा २.	३३३१३९	" १.	३३३३५९	शिखिवाहन १.	१३३५५
शलकाका २.	३३३३९९	शास्त्रमार्ज १.	३३३३३५	शाण १.	३३३३९	शास्त्रिवा २.	३३३१३९	शास्त्र ३.	६३३३३	शिखीन्द्र १.	३३३३४
" २.	३३३३३१	शास्त्रमुख ३.	३३३३३६	" १.	५३३३७	शास्त्रिवा २.	३३३१३९	शास्त्रचिद् १. २. ३.		शिमु १.	३३३३६
शलट १.	५३३३३१	शास्त्राख्य ३.	३३३३३३	" १.	५३३३३	शास्त्रिवा २.	३३३१३९	" १.	४३३३४	" १.	४३३३०
शलट्ट १. २. ३.	३३३३१०	शाखिका २.	३३३३३३	शाणी २.	४३३३३०	" ३.	६३३३३	" १. २. ३.	५३३३३	शिमुज ३.	३३३३०
शलक ३.	६३३३२	शाक १.	३३३३७६	शात ३.	३३३३८९	शाङ्गवत ३.	३३३३९	शिक्षापा २.	३३३३१	शिङ्गिन् ३.	४३३३०३
शलमलि १. २.	३३३३९०	" १.	३३३३६२	शातकुम्भ ३.	३३३३२०	शाङ्गिष्ठा २.	३३३३११	शिङ्गुमार १.	४३३३४	शिङ्गाण १.	४३३३२
शल्य १.	३३३३७	" १. ३.	४३३३९०	शातर १.	२३३३८२	" २.	३३३३४४	शिक्य ३.	३३३३७	" ३.	४३३३०३
" १. ३.	३३३३६७	शाकट १. २. ३.	३३३३५८	शात्रव १.	३३३३४१	" २.	३३३३७९	शिकियत १. २. ३.		शिङ्गाणिन् १. २. ३.	
" १. ३.	३३३३४१	" १.	५३३३३१	शाद १.	३३३३३५	शाङ्गिन् १.	१३३३१	शिचा २.	३३३३८	शिङ्गित ३.	२३३३९
शल्यक १.	३३३३३३	" ३.	५३३३३१	" १.	३३३३३६	शाङ्गिन् १.	३३३३१	शिक्षित १. २. ३.	३३३३८	शिङ्गिनी २.	४३३३४५
शल्लक १. २.	८३३३२६	शाकटीन १.	५३३३३१	" १.	६३३३७	शाङ्गिन् १.	३३३३३	" १. २. ३.	५३३३९	" २.	७३३३६
शलव १. ३.	३३३३१६	शाकफला २.	३३३३३७०	शाङ्गल १. २. ३.	३३३३३३	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्ड १.	२३३३९	शिण्ढाकी २.	४३३३४
शलवयान ३.	३३३३१६	शाकशाकट १. २. ३.		शानक १.	२३३३८२	शाङ्गिन् १.	३३३३३	" १. २. ३.	५३३३९	शित १. २. ३.	६३३३३
शलवर १.	३३३३५२	शाकशाकिन १. २. ३.	३३३३२०	शान्त १.	३३३३४९	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्ड १.	२३३३९	शितशिव ३.	३३३३६
शलवशीर्षक १.	३३३३०७			" १.	३३३३७५	शाङ्गिन् १.	३३३३३	" १.	४३३३०२	" ३.	३३३३२०
शलवा १.	३३३३५५	शाकुनिक १.	३३३३३०	" १. २. ३.	५३३३३४	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्डक १.	४३३३०२	शितशूक १.	३३३३५१
" १.	३३३३३१	शाकोल १.	३३३३३२	शान्ति २.	५३३३२७	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्डक १.	२३३३३	शिति १. २. ३.	६३३३७
शलशमृत् १.	२३३३३४	शाक्तीक १. २. ३.	३३३३३४	" २.	६३३३९	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्डक १.	२३३३३	शितिकुम्भ १.	३३३३५५
शलशलोमन् ३.	३३३३३८			शान्तिक ३.	३३३३२०	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्डक १.	८३३३९	शितिचन्दन ३.	३३३३६
शलशाङ्ग १.	२३३३३७			शान्तिगृह ३.	४३३३२०	शाङ्गिन् १.	३३३३३	शिखण्डक १.	४३३३०२		

## [ शतिसारक ]

शतिसारक १.	३३१५१
शतस्पुट १.	२३३४३
शधिल १. २. ३.	३४११६
शधिली २.	४१३२८
शधिविष्ट १. २. ३.	४४११४७
" १. २. ३.	५४११५
" १. २. ३.	८५१४८
शिफा २.	३३३१२
" २.	४२११०
" २.	३८१६५
शिबिका २.	३४१३३६
शिविर ३.	४३३१०
शिव्वा २.	३८१६५
( विम्बा )	
शिविक १.	३८१३७
शिर १.	३८१७८
" १.	३८१९१
शिरःपीठ १.	४४१८४
शिरस् ३.	३३३१५
" ३.	४४१८५
" ३.	८६१११
शिरसिज १.	४४१९७
शिरसिसिच् २.	४३३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३८११७
( शिरस्थ )	
शिरस्य ३.	४४११०१
शिरीष १.	३३३७२
शिरोगेह ३.	४३३३४
शिरोधरा २.	४४१८४
शिरोधि २.	४४१८४
शिरोरत्न ३.	४३३१३६
शिरोरुह २.	४४१९८
शिरोरुहा २.	३३३११२
शिरोवर्तिन् १. २. ३.	३८११०
शिरोऽस्थि ३.	४४१११५
शिल ३.	३८१९२
शिला २.	३३३१८
" २.	३३३१२

## वैजयन्तीकोषः

शिला २.	४३३४०
" २.	४३३४५
" २.	४३३१६३
शिलाजतु ३.	३३३१६
शिलाह्वय ३.	३८१९६
शिली २.	४११५९
" २.	४३३४०
शिलीमुख १.	३३३१८१
" १.	८११४४
शिलोच्चय १.	३३३११७
शिलोद्भव ३.	३३३१८
शिल्प ३.	३३३१८
शिल्पा २.	४३३२५
शिल्पिन् १.	३३३१७
" १.	८११४७
शिल्पशाला २.	४३३२२
शिव १.	१११११
" १.	३३३१४९
" ३.	३३३१५५
" १.	३३३१६
" ३.	३८१९६
" १.	३३३१४७
" ३.	५४११४३
" १. २. ३.	६५१८४
शिवङ्कर १.	३३३१५८
" १. २. ३.	५४१५५
शिवताति १. २. ३.	५४१५५
शिवपार्श्वग १.	१३३२
शिवपुरी २.	४३३७
शिवप्रिय १.	३३३१९३
शिवमल्लिका २.	३३३१९३
शिवमतिन् १. २. ३.	३३३१३०
शिवा २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३३११९
" २.	३३३१७७
" २.	३८१६०
" २.	६५१८४

## [ शीरा ]

शिवेष्ट १.	३३३१८३
शिशिर १.	२११८७
" १.	५३३७
शिशु १. २. ३.	५४१२
शिशुक १.	७११७३
शिशुकृच्छ्र ३.	३३३१३७
शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्र ३.	३३३१३८
शिशुत्व ३.	४४१५४
शिशुप्रिय ३.	४२३३५
शिशुवर्जिता २.	४४१२०
शिश्र ३.	४४१६१
शिश्वदान १. २. ३.	३३३१२
शिश्रि २.	३३३७८
शिश्य १.	३३३२५
" १. २. ३.	८११४४
शीकर १. ३.	२३३७
" १.	५३३६
शीघ्र १.	१३३५०
" १. २. ३.	५४१२५
शीघ्रगमन ३.	५२३११
शीत १.	३३३३१
" १.	५३३६
" १. २. ३.	६५१९३
शीतक १. २. ३.	५४१५५
शीतकङ्कुर २.	३८१५६
शीतकृच्छ्रक ३.	३३३१४०
शीतपङ्क १.	३३३१४७
शीतपञ्चव १.	३३३१३३
शीतल १.	१३३४५
" १.	३३३८२
" ३.	४२३४
" १.	५३३६
शीतला २.	३३३१३४
" २.	३४३४४
शीथु ३.	३३३१४५
" १.	३३३१४७
शीन १. २. ३.	४३३१५५
शीरा २.	३३३१९९

## [ शीरी ]

शीरी २.	३३३२२८
शीर्णक १. २. ३.	३३३१२९
शीर्णपर्णाशिन १. २. ३.	३३३१२९
शीर्णवृन्त १.	३३३१७१
शीर्ष ३.	३८११०७
" ३.	४४१८५
शीर्षक ३.	३३३१५६
शीर्षण्य ३.	३३३१५६
" ३.	४४११०१
शीर्षत्राण ३.	३३३१५६
शील ३.	६३३३३
शीवाल ३.	४२३४९
शुक १.	२३३२
" १.	२३३२५
" ३.	३८१९२
शुककूट १.	३३३१५८
शुकनास १.	३३३१५७
शुकनासक १.	१३३६८
शुकपोत्र १.	४३३१७
शुक्त ३.	४३३८२
" ३.	४३३८५
" १.	५३३२६
" १.	५३३२९
" १. २. ३.	६४३१८
शुक्तित्तकषायक १.	५३३३५
शुक्ति २.	३३३८१
" २.	३८११०१
" २.	३८११३२
" २.	४११५६
" २.	४११५८
" २.	५११५०
" २.	६२३३७
शुक १.	१३३२३
" १.	२१३३४
" १.	२१३८४
" १.	३३३१९
" १. २. ३.	६५१८६
शुकशिष्य १.	१३३१०

## शब्दानुक्रमणिका

शुकसृष्टा २.	३३३१७८
शुक्रा २ ब.	२१३२१
शुक्ल १.	२१३७९
" ३.	४४११११
" १.	५३३१०
शुक्लकार ३.	४२३४७
शुक्लधातु १.	३३३१३
शुक्लपुष्प १.	३३३६१
" १.	३३३१९१
शुक्लहरित १.	५३३२४
शुक्लापाङ्ग १.	२३३३६
शुक्ल १. २. ३.	३३३१७
शुक्ला २. १. ३.	८११३७
शुच् २.	३३३१८३
शुचि १.	२१३८४
" १.	२१३८८
" १.	४४१३५
" १.	५३३१०
" १. २. ३.	५४३६५
" १. २. ३.	६५१८५
शुचिकर्णिक ३.	४२३४०
शुण्ठ १.	४३३८९
शुण्ठि २.	३८१७५
शुण्ढा २.	३३३४५
" २.	६२३४०
शुण्ढापान ३.	३३३१५३
शुण्ढाल १.	३३३६२
शुतुद्री २.	४२३२७
शुद्ध ३.	४३३८५
" १. २. ३.	५४३६५
" १. २. ३.	६५१९१
" ३.	८३३१८
शुद्धजड १.	३३३१७२
( शुद्ध, जड )	
शुद्धान्त १.	४३३३६
" १.	७१३७४
शुद्धि २.	३३३८९
शुन १.	३३३६९
शुनक १.	३३३६८
शुनासीर १.	१३३११
शुनि १.	३३३६९

शुनी २.	३३३७१
शुभ १.	५४३१४३
" १. २. ३.	६४३१७
" १.	८६३१६
शुभंयु १. २. ३.	५४३२९
शुभक १.	३८३४१
शुभदती २.	२१३१९
शुभा २.	३३३४१
शुभान्वित १. २. ३.	
शुभ्र ३.	५४३२९
" १.	३३३२४
" १. २. ३.	६४३१८
शुभ्रि १.	६५१९२
शुभ्रक १. ३.	६५१८९
शुभ्रव ३.	३३३३४
" ३.	३३३३४
शुभ्रवा २. ३.	३३३३०
( शुभ्रपा )	
शुभ्रपूषा २.	३३३३८
शुभ्रषित १. २. ३.	
शुष १.	५४३१०५
शुषिका २.	३३३१८१
शुषिल १.	१३३४७
शुष्कगोमय १.	३३३६०
शुष्कमांस ३.	४३३८९
शुष्मन् १.	१३३१५
" ३.	३३३२१०
शुष्मि १.	१३३१५०
शूक १.	६१३५८
" १.	३८१६५
शूककीट १.	४३३३३
शूकधान्य ३.	३८१६२
शूकशिषि २.	३३३१२९
शूद्र १.	३३३१७
" १.	३३३११
" १.	३३३११
शूद्रकुण्ड १.	३३३६३
शूद्रा २.	४४३२३
शूद्री २.	४४३२९

शून्य ]

शून्य १. २. ३.	२५१२०
" १. २. ३.	३११४५
" १. २. ३.	५४४८७
शूर १. २. ३.	३७२८
" १. २. ३.	३७१४७
" १.	३८३३
" १. २. ३.	६५१२
शूरसेन १ व.	३११२४
शूरसेनि १ व.	३११२४
शूर्प १. ३.	४३६५
" १. ३.	५१५६
शूर्पकर्ण १.	३७६१
शूर्पकारि १.	१११२८
शूर्पावर ३.	५१५५
शूल १.	४४१३७
" १. ३.	६५१२
शूलनाशक ३.	३८१२५
शूलाकृत १. २. ३.	
	४३१९४
शूलिक १.	३४३१
" १.	३५५
" १.	३५१२
" १.	३५६९
" १.	३५७३
शूलिका २.	३८१२३
शूलिन् १.	१११४१
शून्य १. २. ३.	४३१९४
शृङ्खल १. २. ३.	३७८३
" १. २. ३.	४३१४६
शृङ्खलक १.	३४६८
शृङ्ग ३.	३२१८
" १. ३.	६५१८७
शृङ्गवर्जित १.	३४७३
शृङ्गवाद्य ३.	३९१२५
शृङ्गाट १.	३११५१
" १.	३७१५१
शृङ्गाटक १.	४२४७
शृङ्गार १.	३७८६
" १.	३९७५
" १.	४३१६९
शृङ्गारगर्व १.	३६१६९

वैजयन्तीकोषः

शृङ्गिण १.	३४६४
शृङ्गिणी २.	३४४१
शृङ्गिन् १.	३४१९
" १.	३४५२
" १.	३७९६
" १.	४१४४
" १.	८११६०
शृङ्गिवेर ३.	३३२१४
" ३.	३८१७६
शृङ्गी २.	३८१९०
" २.	४१४४४
शृङ्गीकनक ३.	३२२२
शृन्त १. २. ३.	४३१९५
शेखर १.	४३१५३
शेफ १.	४४६१
शेफल् ३.	४४६१
शेफालिका २.	३३१८६
शेमुषी २.	३६१६३
शेवधि १. ३.	१२१६०
शेवाल ३.	४२४९
शेष १.	११३०
" १.	४१३
" १. २. ३.	६५१८७
शैच १.	३६२४
शैख १.	१२१८७
" १.	३५५३
" १.	३५१००
शैखरिक १.	३३११५
शैखालीक १.	३६१०७
शैग्रव ३.	३६२२
शैनि १.	११२६
शैन्या २.	४२२७
शैल १.	२११८६
" १.	३२११
" १.	८१४४
" १.	८९१११
शैलमूल ३.	३३२०३
शैलालिन् १.	३९६२
शैलूष १.	३९६२
शालेय ३.	३२४१
" ३.	३८१६

[ शौण्ड ]

शैवल १.	४२४९
शैवलिनी २.	४२२३
शैवाल ३.	४२४९
शैशव ३.	४४५४
शोक १.	३६१८३
" १.	३९७६
शोचिकेश १.	१२१५
शोचिस् ३.	६३३४
शोण १.	३३६८
" १.	३७१००
" १.	५३१७
" १.	५३५१
शोणरत्न ३.	३२३९
शोणिक १.	५३३१
शोणित ३.	४४१०६
" ३.	५३११
" ३.	८६८
शोथ १.	४४१२२
शोथशत्रु १.	३३२०९
शोधन १.	३३४१
शोधनी २.	४३५२
शोधित १. २. ३.	
	५४६६
शोध्य ३.	४४१०५
शोफ १. ३.	४४१२२
शोफणी २.	३३१४५
शोभ १.	३६२३९
शोभन ३.	३२३२
" १. २. ३.	
	५४१३५
शोभा २.	४३१४९
शोभाजन १.	३३५६
शोष १.	४४१२४
शोषु १.	३६१८१
शौक ३.	५१६
शौकिकेय ३.	४१५७
शौकिलकेय १.	४१२४
शौच ३.	३६२०९
शौटीर्य ३.	३६१६९
शौण्ड १.	२३१४
" १. २. ३.	५४३७

शौण्ड ]

शौण्ड १. २. ३.	६५१९०
शौण्डिक १.	३५४४
" १.	३९४४
शौण्डि २.	३८१६
" २.	६५१९०
शौद्धोदनि १.	११३३
शौभिक १.	३६१०३
शौरि १.	११२६
शौर्य ३.	५१५६
शौर्य ३.	३७२१०
शौर्यकरण ३.	५२१६
शौक्तिक १. २. ३.	
	५४५०
शौक्ति १.	३९१५
श्च्योति २.	५२३४
श्मशान ३.	३१४८
श्मश्रु ३.	४४१०३
श्मश्रुल १. २. ३.	५४९
श्याम १.	३३४५
" ३.	३८७९
" १.	५३११
" १.	५३१४
श्यामकङ्कु २.	३८१६
श्यामल १.	५३११
श्यामलक १.	३३२६
श्यामवल्ली २.	३८८०
श्यामा २.	२३१९
" २.	३३१३८
" २.	३८७७
" २.	४४८
" २.	६२३९
श्यामाक १.	३८१६
श्यामाङ्ग १.	२१३२
श्यामाङ्गी २.	४२२६
श्यामिका २.	३४१९
श्याव १.	५३१८
" १.	५३३१
श्येत १.	५३१०
श्येन १.	२३१९
" १.	२३३०
श्येना २.	२३२०

शब्दानुक्रमिका

श्रद्धा २.	३६१८०
" २.	६२३८
श्रद्धालु १. २. ३.	५४३७
श्रन्थन ३.	५२३९
श्रपणी २.	३६१००
( श्रयणी )	
श्रपाय्य १.	७१७४
श्रमण १. २. ३.	५४१५
श्रमणी २.	३३१२५
" २.	३४१०
श्रमस्थान ३.	३७१९४
श्रयण ३.	४२३३
श्रवण ३.	२१४०
" ३.	४४९३
श्रवस् ३.	४४९२
श्रविष्ठा २ व.	२१४०
श्राणा २.	४३८०
श्राद्ध ३.	३६६४
" १. २. ३.	५४३७
श्राद्धदेव १.	१२३४
श्रान्त १. २. ३.	५४३६
श्रामणी २.	३३१२५
श्राय १.	५२३३
श्रावक १.	३९१११
श्रावण १.	२१८५
श्रावणिक १.	२१८४
श्रावणी २.	२१७६
" २.	३८९३
श्री २.	३६१९१
" २.	८२१९
" २.	८९१२
श्रीकण्ठ १.	११३८
श्रीकर्णायक १.	२३४०
श्रीकृच्छ्र ३.	३६१४०
श्रीखण्ड १.	३८११३
श्रीगर्भ १.	३७१५९
श्रीघन १.	११३२
" १.	३८१३९
श्रीधर १.	१११२
श्रीपति १.	११११
श्रीपथ १.	४३१६

[ श्रेष्ठिन् ]

श्रीपर्णी २.	३३१५८
" २.	३३१५८
" २.	७५८६
श्रीपुष्प ३.	४२४१
श्रीफल १.	३३३०
श्रीफली २.	३३११०
श्रीवेर ३.	३३२०२
श्रीमकुट ३.	३२१९
श्रीमत् १ व.	२१३७
" १.	२३२५
" १.	३३५३
" १.	३३६०
" १.	३३६९
" १.	३४५३
श्रील १. २. ३.	५४५६
श्रीवत्स १.	११११
" १.	१११७
श्रीवत्सपिण्याक १.	
	३८१०९
श्रीवत्साङ्ग १.	११११
" १.	८१४५
श्रीवास १.	३८१०९
श्रीवृक्ष १.	३३२७
" १.	८६१९
श्रीवृक्षकिन् १.	३७९२
श्रीवेष १.	३८१०९
श्रीसंज्ञ ३.	३८१०३
श्रुत १. २. ३.	६५८९
श्रुतकर्मन् १.	२१३६
श्रुति २.	३६२७
" २.	४४९३
" २.	६२४०
श्रूषा २.	३३१५४
श्रेणि २.	६५९०
श्रेयस् १. २. ३.	५४१४३
" १. २. ३.	८५३२
श्रेयसी २.	३३१३१
" २.	८५३३
श्रेष्ठ ३.	३२२५
" १. २. ३.	५४६३
श्रेष्ठिन् १.	३५७१

श्रोग १. २. ३.	५४११४	श्वपाक १.	३१५५१
श्रोगा २.	२११४०	श्वपामन १.	३३११०७
श्रोगि २.	४४४६४	श्वभीरु १.	३१४३७
श्रोत्र ३.	४४१९३	श्वभ्र १. ३.	४११२
श्रोत्रकान्ता २.	३१८९३	श्वयथु १.	४४११२२
श्रोत्रिय १.	३१६८१	श्ववृत्ति २.	३१८१७
" १.	८११४५	श्वशुर १.	४४१३०
श्रौष्ट ४.	८१८३	" १ द्वि.	४४१४८
श्रौषि २.	३१६१६६	श्वशूर्य १.	७११७४
श्रधाख्य ३.	३१८१०९	श्वश्रू २.	४४१३०
श्रधूष १.	५३१२८	श्वश्रूश्वशुर १ द्वि.	४४१४८
श्रृचण १.	५३१४	श्वश्रेयस १. २. ३.	५४११४३
" १. २. ३.	५४११३६	श्वसन १.	११२४७
श्रृचणपत्रक १.	३१४१९४	श्वसित ३.	३१६२०४
श्रृचणवाच् १. २. ३.	५३१४४	श्वस्तन १. २. ३.	५४१८९
श्रृषा २.	२४३३५	श्वापद १.	३१४७३
श्रृकु २. ३.	३१६१९१	श्वाली १.	३१४७१
श्रृपद १.	४४११३३	श्वविध् १.	३१४३७
श्रृष्मन् १.	४४११२१	श्वास १.	३१६२०४
श्रृष्मफल १.	३३१५५	श्वासहेति २.	३३१२००
श्रृष्मल १.	३१८५३	श्वासा २.	३३११३८
" १. २. ३.	४४११४६	श्वित्र ३.	४४११२५
श्रृष्मसू १. २. ३.	४४११४६	" १. २. ३.	५४११४४
श्रृष्मातक १. २.	३३१५५	श्वेत ३.	३१८१३९
श्रृष्मिन् १.	३३१५३	" १.	५३११०
श्रृोक १.	६११६०	" १. २. ३.	६१५९२
श्रः (-स्) ४.	८१८१९	श्वेतकन्द १.	३३३२०५
श्रकण्टक १.	३१५५८	श्वेतकाक १.	२३३१८
" १.	३१५१०६	श्वेतक्षार १.	३१८११२७
श्रचण्डाल १.	३१५८	श्वेतच्छाण ३.	३१८१४९
श्रदंष्ट्रा २.	३३३१४२	श्वेततण्डुल १.	३१८३२
" २.	३१७५१	श्वेतपिङ्गल १.	३१४११
श्रदयित ३.	४४११०९	श्वेतबिन्दुका २.	५३३१५
श्रन् १.	३१४८६	श्वेतमध्य १.	३३३२००
" १.	८१६५	श्वेतमरिच ३.	३१८१९०
श्रनिश ३. २.	३१५३४	श्वेतरक्त १.	५३३१७
श्रपच १.	३१५३९	श्वेतशाल १.	३१८३३
" १.	३१५४७	श्वेतशिम्विका २.	३१८४६
श्रपाक १.	३१५३८	श्वेतसुरसा २.	३३३११९
		" २.	३३३१८७

श्वेता २.	३१९५०
श्वेत ३.	३११९
श्वोचवीयस ३.	५४११४२
ष	
षट्क ३.	३१७१०
षट्कर्मन् ३.	३१६६३
षट्पद १.	२३३४३
षट्सस १. २. ३.	५११२६
षडभिज्ञ १.	१११३२
षडभ्रा २.	३३३१११
" २.	३३३१७७
षडानन १.	१११५६
षड्वषण ३.	३१८८१
षडगुण १.	३१७६
षडग्रन्थ १. २.	७१५८७
षडग्रन्था २.	३३३१९८
षड्ज १.	३१९१३२
षड्द १. २. ३.	३१४५७
षड्स १.	५३३४५
षडसासव १.	४४११०४
( षडसावस )	
षण्ड १.	३१४५३
" १.	३३३१२२
" १.	३१७३३
" १.	४४३३
" १. ३.	५११५
" १.	६११६०
षण्डतायोग्य १.	३३४५५
षण्माससङ्ग्रहिन् १.	३३३१२५
षष्टि २.	५११२७
षष्टिक १.	३१८३४
षष्टिक्य १. २. ३.	३१८१९
षष्टितम १. २. ३.	५११२२
षष्टिहायन १.	३१७६४
षष्ट १. २. ३.	५११२१
षष्टकालिन् १. २. ३.	
षष्टी २.	३३३१२७
षण्ड १.	१११५९
षण्मातुर १.	१११४६

षण्मासी २.	३३६६६
षाष्टिक ३.	३३३१४६
षिद्ध १.	३१९७०
" १.	४४३३९
षोडत् १. २. ३.	३३४५७
षोडशक १. २. ३.	८१५२४
षोडशाङ्घ्रि १.	४११४७
षोडशावर्त १.	४११५६
षोडशाह १.	३३३१४४
ष्यम १.	६११६१
स	
संयत् २.	३१८२०६
संयत् १. २. ३.	५४१६७
संयता २.	३१८१६८
संयम १.	३३३२३३
" १.	५३३३०
संयज्य १.	३३३११२
संयाम १.	५३३३०
संयाव १.	४३३७३
संयुग १.	३१८२०४
संयोग १.	५३३२६
संरम्भ १.	३३३१८९
संराव १.	२३३४
संरोध १.	७११७६
संवत् ४.	८१८१०
संवत्सर १.	११२९०
संवत्सरतम १. २. ३.	
संवदन ३.	५१११९
संवदन ३.	३३३११७
संवर १.	४३३१०
" १.	४३३१२
संवर्त १.	३३३१७७
" १.	३१८४३
" १.	३१९७६
संवर्तक ३.	१११२४
" १.	११२२१
संवर्तिका २.	४३३४५
संवसथ १.	४३३२
संवादन ३.	२३३२५
संवाप १.	४३३१६७

संवाल १.	२३३२८	संस्तव १.	५३३३१
" १.	३३३७८०	संस्ताव १.	३३३११०
संवास १.	४३३४	संस्त्याय १.	७३३७८
" १.	४३३३५	संस्था २.	३३३८७
" १.	४३३१६७	" २.	३३३१५
" १.	४३३२३	" २.	६३३४३
संवासन ३.	४३३२३	संस्थाचर १.	३३३२७
संवाहक १.	३३३१५	संस्थान ३.	५३३२१
संवाहन ३.	५३३३०	" ३.	७३३३७
संवित्ति २.	३३३१६४	संस्थित १. २. ३.	
" २.	७३३२९		३३३२२०
संविद् २.	५३३३७	संस्पृष्टमैथुना २.	३३३४८
" २.	६३३४१	संस्फोट १.	३३३२०४
संवीक्षण ३.	५३३४२	संहतजानु १. २. ३.	
संवीत १. २. ३.	५३३९६		५३३१०
संवृत १.	२३३४५	संहतल १.	४३३७८
संवृतता २.	३३३३५	संहनन ३.	४३३५२
संवेश १.	४३३१६८	संहार १.	२३३९५
( सवोस )		संहारी २.	४३३३८
संव्यान ३.	४३३१२२	संहिता २.	७३३३८
संसप्तक १.	३३३१५२	संहृति २.	२३३३१
संशय १.	३३३१७७	सकल १. २. ३.	५३३८५
" १.	३३३१९७	सकाश १. २. ३.	
( संश्रय )			५३३३३
संशयालु १. २. ३.		सकृत् ४.	८३३२९
	५३३३८	" ४.	८३३६
संशित १. २. ३.	५३३९४	सकृत्प्रज १.	२३३१७
संश्रव १.	५३३३७	" १.	८३३४५
संश्लेष १.	५३३२६	सकृप १. २. ३.	३३३७९
संसद् २.	३३३१३	सक्तु १.	४३३७०
संसरण ३.	४३३१६	" १. ३.	८३३३१
" ३.	८३३१२	सक्तुफला २.	३३३८९
संसिद्धि २.	७३३२९	सक्थि ३.	३३३७९
संसृष्ट १. २. ३.	७३३२८	" ३.	४३३५९
संसृष्टिन् १.	५३३५	सखि १. २. ३.	३३३७३
संस्कार १.	३३३१२	" १. २. ३.	६३३५८
संस्कृत १. २. ३.	७३३२८	सखी २.	४३३२५
संस्कृतस्तम्भ १.		सख्य ३.	३३३१८७
	३३३१०३	सगर ३. २.	८३३३३
संस्कृति १. २.	७३३८८	सगर्भ १.	४३३३४
संस्तर १.	४३३१६५	सगोत्र १.	४३३५०
" १.	७३३७६		



सप्तसप्तिसि ]

वैजयन्तीकोषः

[ समुद्रनवनीतक

सप्तसप्तिसि १.	२११११	समन्तात् ४.	८१८३	समाहार १.	५२११८
सप्तार्चिसू १.	१२११६	समन्तिक १. २. ३.		" १.	८११४७
सप्तिसि १.	३१७९०			समाहित १. २. ३.	
सप्तह्यचारिन् १.	३१६२४	समपद ३.	३१७१८७	" १. २. ३.	२१४१३
सभा २.	३१८१३	समम् ४.	८१११७	" १. २. ३.	२१४१४
" २.	५११५	समय १.	७११८२	समाह्वय १.	८११४७
" २.	६२१४२	समया ४.	८१७३३	समिक ३.	३१७२०३
सभाजन ३.	३१६१८६	" ४.	८१११५	" १.	७११७७
सभासद् १.	३१८१३	समर १. ३.	३१७२०६	प्रमिति २.	७२१२७
सभास्तार १.	३१८१३	" १. ३.	८१६१७	समिदाधान ३.	३१६११
सभिक १.	३१९१५९	" १. ३.	८१६१८	समिध् २.	३१६१६
सभ्य १.	१२१२५	समर्थ १. २. ३.	७१४३०	" २.	३१७२०६
" १.	३१८१३	समर्थन ३.	३१८११५	समीक १.	५३१६
" १. २. ३.	६१४१८	समर्थाद् १. २. ३.		" १.	७११७५
सम् ४.	८१७८			समीकरण ३.	३१८३०
सम १.	३११५२	समलेपनी २.	३१९१४	समीचीन ३.	५३३३
" ३.	५११६१	समवकारक १.	३१९१००	समीप १. २. ३.	५१४१४०
" ३.	५११६२	समवर्तिन् १.	१२३३४	समीर १.	१२३४९
" १. २. ३.	५१४८६	समवाय १.	५१११	समीरण १.	१२३४७
" १. २. ३.	५१४१२१	समशन १.	५३३५४	" १.	३३३१२०
" १. २. ३.	६१५९५	समष्टि २.	५३३४८	समुच्चय १.	५२११८
समक ३.	५११६२	समसुप्ति २.	२११९४	समुच्छ्रय १.	८१६४६
समकम् ४.	८१८१७	समस्त १. २. ३.	५१४८५	समुच्छिन्न १. २. ३.	
समक्ष १. २. ३.	५१४१३३	समस्थान ३.	३१६२२४		५१४१०१
समग्र १. २. ३.	५१४८५	समस्या २.	२१४४०	समुत्थान ३.	५२१२५
समङ्ग १.	३१९६०	समा २ ब.	२११९१	समुत्पिञ्ज १. २. ३.	
समङ्गा २.	३३३१३५	" २.	६१५९५		५१४१४
समज १.	५११५	समांसमीना २.	३१४४८	समुद् १. २. ३.	५१४३३
समज्ञा २.	२१४३६	समाघात १.	३१७२०४	समुद्य १.	३१७२०५
समज्या २.	३१८१४	समाज १.	५११५	" १.	५११२
समक्षस ३.	३१७४८	समादान ३.	३१६१०४	समुदस्त १. २. ३.	
समतट १ ब.	३११३१	समाधि १.	३१६२३२		५१४११२
समाधिक १. २. ३.		" १.	३१९६०	समुदाय १.	३१७२०५
	५१४१३७	" १.	७११८१	" १.	५११२
समनीपद् १.	१२३४४	समान १. २. ३.	५१४१२१	समुद्र १.	४३३६४
समन्त १. २. ३.	५१४१३३	" १. २. ३.	७१४८८	समुद्धत १. २. ३.	
समन्ततः (-स्) ४.	८१८३	समानोदर्य १.	४१४३४		५१४३१
		समापन ३.	८३३१३	समुद्र ४.	४२१११
समन्तदुग्धा २.	३३३१७	समालम्भन ३.	४३३१४७	" १. २. ३.	५११२९
समन्तभद्र १.	११३३३	समास १.	२१४४०	समुद्रनवनीतक ३.	२११२७
समन्तभुज् १.	१२३४४	" १.	५२११८		

समुद्रान्ता ]

शब्दानुक्रमणिका

[ सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८२११०	सम्भोग १.	३१७७०	सरस्वती २.	१११९
समुन्दन ३.	५२१२९	" १.	७११८०	" २.	४२२८
समुन्नति २.	३३३१६	सम्भ्रम १.	३१९८९	" २.	८१५३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१४१२	" १.	७११७९	सरि २.	२११२
समूह १.	३१४२०	सम्मति २.	७२१२९	सरित् २.	४२२२
समूह १.	५११२	सम्मद १.	३१६१८८	सरिताम्पति १.	४२१११
समूहन ३.	३१७१८९	सम्मर्द १.	३१७२०५	सरिस्पति १.	४२११२
समृद्ध १. २. ३.	५१४५७	सम्मार्जनी २.	४३३५२	सरी २.	३१७९८
समृद्धि २.	३१८९३	सम्मासा २.	३३३१२७	सरीस्प १.	४११४
समोलक १.	५३३४५	( समांसा )		" १.	४११४०
समोलुक ३.	३२३३०	सम्मुख १. २. ३.	५१४४७	सरजू २.	३१६५०
सम्पत्ति २.	३३३१९१	सम्मूर्च्छन ३.	५२१४१	सरुहाह १.	३१७१०६
" २.	३१७४	सम्भ्यच् ३.	५३३३	सरोज २.	४२३७
सम्पद् २.	३३३१९१	सम्भ्राज् १.	६१६१	सरोरुह ३.	४२३६
" २.	८१९५	सर १.	१२३४८	सर्ग १.	३३३३२
सम्पात १.	५२१२६	" १.	३३३४२	" १.	५२११
सम्पातपाटव ३.	५२१९	" ३.	३३३४५	" १.	६१६२
सम्पुट १.	४३३६४	" १.	५३३२६	सर्ज १.	३३३३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५१४८७	सरक ३.	३१९५३	सर्जक १.	३३३३०
सम्पृक्त १. २. ३.	५१४७८	" ३.	७३३३८	सर्जन १.	३३३१११
सम्प्रति ४.	८१८५	सरघा २.	२३३४५	सर्प १.	४११४
सम्प्रधारण ३.	३१८१५	सरट् १.	६१६४	" १.	८१६१५
सम्प्रयोग १.	५२१२६	सरट् १.	४११२८	सर्पजाति २.	४११११
" १.	८११४५	सरटी २.	३३३२७	सर्पदंष्ट्री २.	३३३२०
सम्प्रश्न १.	३३३१५	सरणी २.	४२२१	सर्पभुज् १.	४१११६
सम्प्रहार १.	३१७२०४	सरण्यु १.	७१७६	" १.	८१६२१
सम्प्रेष १.	५२१२५	सरमा २.	३३३७१	सर्पभृता २.	३१११
सम्प्रेषणी २.	३३३६५	सरल १.	३३३७४	सर्पराज १.	४१३
सम्फाल १.	३३३६४	" १. २. ३.	५१४२०	" १.	४१११५
सम्फुल्ल १. २. ३.	३३३९	सरलद्रव १.	३३३१०९	" १.	४१११६
सम्बन्ध १.	५२१३३	सरलशौणिक १.	५३३५१	सर्पशफरी २.	४११४४
सम्बाध १. २. ३.		सरलिक १.	५३३५२	सर्पाञ्चर १.	४१२१
		सरस् ३.	४२३६	सर्पारि १.	८१६२१
		" ३.	६३३३४	सर्पिस् ३.	३३३३८
		" ३.	४२३७	" ३.	६३३३५
सम्भरी २.	३३३१२१	सरसी २.	४२३६	सर्व १.	५१३३१
सम्भव १.	७११७९	सरसीज ३.	४२३७	" १.	५१४८५
सम्भाल १ ब.	३३३२४	सरसीरुह ३.	४२३७	सर्वसहा २.	३१३
सम्भावना २.	३३३१७६	सरस्वत् १.	४२२९	सर्वगन्ध ३.	४३३५१
सम्भाषण ३.	२१४२३	" १.	८१५३३	सर्वजनप्रिया २.	३३३१३
सम्भेद १.	४२३३१	" १.	८१५३४	सर्वज्ञ १.	११३३
" १.	५२१२६				

सर्वज्ञ ]

वैजयन्तीकोषः

[ साज्य

सर्वज्ञ १.	१११४४
सर्वतः(-सु) ४.	८१८३
सर्वतोभद्र १.	४३३३०
सर्वतोमुख १.	१११८
" ३.	८३११८
सर्वदा ४.	८३१५
सर्वधुरीण १. २. ३.	३१४५८
सर्वभक्त १. २. ३.	५१४५०
सर्वभक्ता २.	३१४६२
सर्वमङ्गला २.	१११५८
सर्वला २.	३१७१६६
सर्वलोचना २.	३१८१८
सर्वविद् २.	३१६३३
सर्वविद्या २.	३१६३१
सर्ववेदस् १.	३१६३७
सर्ववेशिन् १.	३१६३३
(सर्वकेशिन्)	
सर्वसन्नहन ३.	३१७१५७
सर्वसस्यभू २.	३१८१७
सर्वसह १.	३३१५३
सर्वज्ञान १. २. ३.	५१४५०
सर्वाभिसार १.	३१७१५७
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४
सर्वौघ १.	३१७१५७
" ३.	३१८१३६
सर्षप १.	३१८४१
सर्षपी २.	३३३६७
सलज्ज १.	३३३१२२
सलवण ३.	३३३३२
सलिल ३.	४३२१
सल्लकी २.	३३३९६
सल्लाप १.	२१४२९
सव ३.	३३६८२
सवन १.	३३६६९
सवर्ण १.	३३५३
" १.	३३५७०
" १. २. ३.	५१४१२१
सविक्रम १.	३१७११

सवितृ १.	२१११०
" १.	७११७८
सविध १. २. ३.	५१४१२१
" १. २. ३.	५१४१४१
सविस्मय १. २. ३.	४१४२९
सवेध १. २. ३.	५१४१४१
सवेश १. २. ३.	५१४१४१
सव्य १.	११२२८
" १. २. ३.	६१४१८
सव्येष्ट १.	३१७१३८
सस्य ३.	३३३२०
" ३.	३१८३१
सस्यसंवर १.	३३३३८
सह ४.	८१८१७
सहकारक १.	३३३२५
सहचर १. २. ३.	३३३१९१
सहचरी २.	४१४३४
सहज १.	४१४३१
" ३.	५३२१
सहधर्मिणी २.	४१४३४
सहन १. २. ३.	५१४३३
सहपानक ३.	३१९५३
सहभोजन ३.	४३३१०३
सहरक्षस् १.	१११२१
" १.	१११२२
सहस् १.	२११८१
" ३.	३१७२१०
सहसा ४.	८१७३४
सहसानु १.	३३६८३
" १.	७१५४५
सहस्य १.	२११८२
सहस्र ३.	५११२८
सहस्रतम १. २. ३.	५११२३
सहस्रदंष्ट्र २.	४११४२
सहस्रपत्र ३.	४३३३८
सहस्रवीर्या २.	३३३२३३
सहस्रवेधिन् ३.	३१८१३१

( १५८ )

सहस्रवेधिन् १.	३१८१३३
सहस्रांशु १.	२१११५
सहस्रात् १.	१३२१
सहस्रिन् १. २. ३.	३१७१४१
सहा २.	३३३१०६
" २.	३३३१२८
" २.	३३३१८८
" २.	३३३१९०
" २.	३३३१९१
सहाध्यायिन् १.	३३३२४
सहाय १.	३१७१६
" १. २. ३.	३१७४३
सहायता २.	५११९
सहित ३.	३१७१७६
सहितोद्गर ३.	३१७१७७
सहिष्णु १. २. ३.	५१४३३
सहुरि १.	१३२१८
" १.	७११७५
सांयात्रिक ३.	१३२६८
" ३.	३१७१२३
" १.	४३२१८
सांयुगीन १. २. ३.	३१७१४९
सांराविण ३.	८१९१७
सांवात्सर १.	१३२१८०
" १.	३१७२५
" १.	३१८३३
आंवात्सरी २.	३३६६६
साकम् ४.	८१८१७
साकेत ३.	४३३५
साक्षात् ४.	८१७३०
साक्षिन् १. २. ३.	३१८१९
सागर १.	४३३१०
साङ्कारिका २.	३३६५२
साङ्ग्रामिकगुण १.	३१७४
" १.	३१७५
साचि १.	१३२१८
" ४.	८१८१९
साज्य ३.	३३६५

साति ]

साति २.	६३२४४
सातिसार १. २. ३.	४१४१४६
सात्त्वत १.	१११२३
" १. २. ३.	३१५५७
" १. २. ३.	३१५१०५
सात्त्वती २.	३१९१०१
सात्त्विक ३.	३३३१९९
" १. २. ३.	३१९१९९
सात्त्विकी २.	२११६०
साद् १.	३३३१९१
सादिन् १.	६११६५
साद्यस्क १. २. ३.	५१४८९
साधन ३.	७३३३६
साधारण १. २. ३.	५१४१२९
साधिका २.	३३३१७८
साधीयस् १. २. ३.	७१४२९
साधु १. २. ३.	५१४१३५
" १. २. ३.	६१५९६
साधुवाद १.	२१४३६
साध्य १ ब.	१३३८
साध्वस ३.	३३६१८५
साध्वी २.	४१४७
सानु १. ३.	३३२७
" १.	३३६८३
सानुनासिक १. २. ३.	२१४१६
सानुमत् १.	३३२१
सान्व १. २. ३.	२१४१६
" ३.	३१७१३
" ३.	६३३३५
सान्वन ३.	३१७१३
" ३.	५३३३८
सान्वष्टिक ३.	३३३३६
सान्वैशिक १.	३१७२९
सान्द्र १. २. ३.	५१४१२६
सान्द्रसिन्ध १. २. ३.	५१४३३

शब्दानुक्रमणिका

सान्ध्य १.	२१११६
सान्नाय्य ३.	३३६१९
सासपदीन ३.	३३६१८७
सामज १.	३१७६१
सामन् ३.	२१४२३
" ३.	३३६२६
" ३.	३३६१११
" ३.	३१७१३
सामन्त १.	३१७१८
सामर्थ्य ३.	७३३३८
सामाजिक १.	३१८१३
सामान्य १. २. ३.	५१४१२९
सामि ४.	८१७२९
सामिक ३.	३३६१३
सामुद्र १.	३३५४२
" ३.	४१४५४
सामूना ३.	३३४२०
साम्पराय १.	८११४८
साम्परायिक १.	३१७१२६
" १.	३१७२०३
साम्प्रतम् ४.	८१७३४
" ३.	८१८५
साम्बाधिक १.	२११६६
सायक १.	७११७७
सायन्तूर्य ३.	३१९१३७
सायम् ४.	८१८१०
सायाह्न १.	२११६५
सायुज्य ३.	३३३२३७
सार १.	३३३१४
" १.	४१४१०९
" १. २. ३.	६१५९७
सारङ्ग १. २. ३.	७१५८९
सारण १.	१३२५४
" १. २. ३.	३११४६
" १. २. ३.	३३६६
" ३.	३१८१४९
" ३.	५३३११
सारणी २.	२१४४२
सारथि १.	३१७१३८

( १५९ )

[ सिंह

सारपर्णी २.	३३३१००
सारमेय १.	३३३६८
सारस १.	२३३३३
" ३.	४३३३७
" १.	७११८३
सारसन ३.	३१७१५६
" ३.	४३३१४६
सारसप्रिया २.	२३३३३
सारस्वत १.	३३६१९
सारिका २.	३१९१२८
सारी २.	३१९११
सार्थ १.	५११४
सार्थवाह १.	३१८७२
सार्द्र १. २. ३.	५१४१०७
सार्धम्	८१८१७
सार्पिष्क १. २. ३.	४३३१५
सार्धभौम १.	२११८
" १.	३१७२
सार्ष्टि २.	३३३३३७
साल १.	३३३३८
" २.	४३३१४
" २.	६११६५
सालभञ्जिका २.	३१९१४
सालातुरीयक १.	
	३३३१५४
सालावृक १.	८११४६
साल्व १ ब.	३३३३२
" १ ब.	३३३३८
सावन १.	२११८१
सावित्र १.	३३३४१
सावित्री २.	४१४७४
सावित्रेय २.	१३३३४
साष्टी २.	३३३१७५
सास्ना २.	३३३६०
साहस १. ३.	३१७४६
साहस्र १. २. ३.	
	३१७१४१
" ३.	५३३१३
साहायक १. २.	८१९३५
सिंह १.	३३३१५
" १.	३३३११

[ सिंह ]

सिंह १.	८६११४
सिंहकर्णी २.	३१७१९३
सिंहकेसर १.	३३३२६
सिंहपुच्छी २.	३३११३७
" १.	८२१५५
सिंहमल ३.	३३२२८
सिंहल ३.	३१११९९
" ३.	३३२३१
" ३.	३३८७५
सिंहवाहना २.	१११६२
सिंहसंहनन १. २. ३.	५४४६
सिंहाण ३.	३३३३६
सिंहासन ३.	३३७१५
सिंहास्य ३.	३३३१०१
सिंहिका २.	३३६४७
सिंही २.	३३३१०२
" २.	३३३१०६
सिकता २ ब.	४३३३३
सिकताप्राय ३.	४३३३३
सिकतावत् १. २. ३.	३११४४
सिकतिल १. २. ३.	३११४४
सिक्थ १.	६११६६
सिच् २.	४३३११६
सिचय १.	४३३११६
सित १.	५१११०
" १. २. ३.	५४१९७
सितकाच १.	५३३१३
सितकाचर १.	५३३१३
" १.	५३३२४
सितकुञ्जर १.	१३३४
सितकृष्ण १.	५३३२४
सितच्छद्द १.	३३३५
सितपिङ्गाण १.	५३३१४
सितपीतहरिबीज १.	५३३१५
सितलोहित १.	५३३२५
सितश्याम १.	५३३१२
" १.	५३३१५

वैजयन्तीकोषः

सिता २.	३३८१३४
सिताङ्ग १.	३३८१०५
सितायुध १.	४११४४
सितासित १.	१११२४
सितोदर १.	१३३५८
सिद्गुण्ड १.	३३३९८
" १.	३३५९
सिद्ध १.	१३३२
" १. २. ३.	४३३९३
" १. २. ३.	५३३१११
सिद्धसेन १.	१११५५
सिद्धान्त १.	३३३२५
सिद्धार्थ १.	३३८४१
सिद्धि २.	३३८९३
सिद्धम ३.	४३३१२६
सिद्धमन् १.	५३३१४४
सिद्धमल १. २. ३.	४३३१४६
सिध्य १.	२१३३९
सिन ३.	४३३५२
सिनीवाली २.	२१३७१
" २.	८२११०
सिन्दुक १.	३३३११८
सिन्दुवार १.	३३३११८
सिन्दूर ३.	३३८११८
सिन्धि ३.	३३८१२१
सिन्धु १ ब.	३३१२७
" १.	३३३९८
" २.	४३३२३
" १.	६५१९७
सिन्धुर १.	३३३६१
सिन्धुसर्ज १.	३३३३९
सिन्धुसर्ज ३.	३३८१२१
सिरा २.	४३३११६
सिराल १. २. ३.	५३३८
सिल ३.	३३८२
सिलिन्ध्र १.	३३३१५३
सिह १.	३३८११०
सीता २.	३३८३०
" २.	६३३४५
सीत्य १. २. ३.	३३८२२

[ सुगन्धि ]

सीम १.	५३३७
सीमन् २.	४३३११
" २.	६३३४४
सीमन्त १.	४३३१००
सीमन्तिनी २.	४३३४
सीमन्तोन्नयन ३.	३३३३
सीमा २.	४३३११
" २.	६३३४४
सीर ३.	३३८२७
सीवन ३.	३३९१२
सीवनी २.	३३९११
" २.	४३३६२
सीस १. ३.	३३३२९
सु ४.	८३८
" ४.	८३८
" ४.	८३८१३
सुकर १. २. ३.	३३७१०७
सुकुमार १.	५३३५
सुकृत ३.	३३३१६८
" ३.	७३३९४
सुकृतिन् १. २. ३.	५३३५६
सुख ३.	३३३१८९
" ३.	५३३१४४
" ३.	६३३३५
सुखकर १.	१३३२१
सुखङ्घुण १.	१३३५०
सुखदोह्या १.	३३३४९
सुखवर्चक १.	३३३१२९
सुखवास १.	३३३१७१
सुखसुप्तिका २.	३३३२००
सुखा २.	१३३४९
सुखोदय १.	३३९३८
सुगत १.	१३३३३
सुगन्ध १.	३३३६९
" १.	३३३२००
" १.	४३३१५३
सुगन्धक १.	३३३१६४
सुगन्धा २.	३३३१८६
" २.	३३८९७
सुगन्धि २.	३३३११९

[ सुगन्धि ]

सुगन्धि १.	३३४२
" १.	३३१८४
सुगन्धिक १.	३३८३२
सुगन्धिका २.	३३३१३९
सुगन्धिन् ३.	३३८९५
सुगन्धी २.	३३३१७५
सुग्रीव १.	४३३५५
सुचरित्रा २.	३३८५०
सुत १.	१३३३
" १.	४३३४०
" १.	६३३६६
सुतङ्ग १.	३३३२२०
सुतश्रेणी २.	३३३११३
सुतापुत्र १ द्वि.	४३३४८
सुताह्व २.	३३३१४४
सुतेजित १. २. ३.	५३३९४
सुत्रामन् १.	१३३४
सुवन् १.	३३३७५
सुदर्शन ३.	१३३१७
" ३.	१३३१०
" १.	२३३३०
सुदर्शना २.	३३३१४३
सुदारु १.	३३३४
सुदिनाह ३.	८३३२२
सुदुष्प्रभ १.	४३३२९
सुधन्व १.	३३३१०७
( युन्थान )	
सुधन्वन् १.	३३५५६
सुधन्वाचार्य १.	३३५५७
" १.	३३५१०४
सुधर्मन् २.	१३३११
सुधा २.	४३३१०५
" २.	६३३४५
सुधी १.	३३३२३४
सुनन्दा २.	१३३६०
" २.	३३३४३
सुनाल ३.	४३३४२
सुनासीर १.	१३३५
सुनिषण्णक १.	३३३१५०
सुन्दर १. २. ३.	५३३१३४

शब्दानुक्रमणिका

सुन्दरी २.	४३३६
सुपथिन् १.	३३३४९
सुपर्ण १.	१३३३८
" १.	३३३४९
सुपर्णक १.	२३३१९
सुपर्णाण्ड १.	३३५२५
सुपर्णातिनय १.	१३३३७
सुपर्वन् १.	१३३४
सुपार्श्व १.	३३३५९
सुप्त १.	२३३२४
" ३.	३३३१९७
" १.	४३३३४
सुप्रतीक १.	२३३३
सुफल १.	३३३३३
" १.	३३३९३
सुब्रह्मण्य १.	१३३५७
सुभग १. २. ३.	५३३७०
सुभङ्गन १.	३३३५६
सुभद्रा २.	३३३१७०
सुभिन्ना २.	३३३९७
सुभीरुक ३.	३३३२४
सुम ३.	३३३१८
सुमदा २.	१३३१
सुमन १.	३३८५३
सुमनसू २ ब.	३३३१८
" १. २.	७३३९०
सुमना २.	३३३४४
सुमानस १. २. ३.	५३३५७
सुमुखी २.	३३३१२३
सुमेरु १.	१३३१२
सुयमा २.	३३३६७
सुर १.	१३३२
सुरगायन १.	१३३२
सुरज्येष्ठ १.	१३३७
सुरदीर्घिका २.	१३३१३
सुरपर्णिका २.	३३३७०
सुरभि १.	१३३२६
" १.	२३३८७
" २.	३३३९६
" १.	३३३२२

[ सुवृत्त ]

सुरभि २.	३३३४३
" १.	५३३४७
" १.	५३३४९
" १. २. ३.	७३३९३
सुरभिच्छद्द १.	३३३९३
सुख १.	५३३५४
सुरवर्मन् ३.	२३३११
सुरवल्गु १.	३३३७०
सुरश्वेता २.	४३३३१
सुरसा २.	३३३९३
" २.	३३३९७
सुरा २.	३३३४५
सुराचार्य १.	२३३३३
सुराजन् १. २. ३.	३३३४६
सुराजिका २.	४३३३१
सुराधिप १.	१३३२
सुरामण्ड १.	३३३५२
सुरालय १.	१३३१२
सुरावास १.	१३३११
सुराष्ट्र १.	३३३३७
सुराष्ट्रजा २.	३३३१७
सुराह्वय ३.	३३३७१
सुरूपा २.	३३३१८४
सुरूहक १.	३३३१०२
सुरोत्तम १.	१३३१४
सुलभ १.	१३३२७
सुललिक १.	३३३२७
सुलवणा २.	३३३६०
सुलोह ३.	३३३३४
सुलोहक ३.	३३३२५
सुवर्चला २.	२३३२३
" २.	३३३४५
सुवर्चिका २.	३३३२९
सुवर्ण १.	३३३१९
" १. ३.	५३३४१
" १.	५३३४९
सुवहा २.	३३३९८
सुवासक १.	३३३१७१
सुवासिनी २.	४३३४८
सुवृत्त १. २. ३.	५३३८९



## [ सुवेल ]

सुवेल १.	३२२२
सुव्रता २.	३१४४९
सुषम १. २. ३.	५४१३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३३६
सुषिम १.	५३३६
सुषिर १.	३३३२२८
" ३.	३१११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१९०
सुषिरच्छेद १.	३१११२७
सुषिरा २.	३१८१००
सुषुप्ति २.	३३६२००
सुषुम्ना २. १.	८११२५
सुषेण १.	३३३८४
सुषेणी २.	३३३१३८
सुषु ४.	८८१४
" ४.	८८१३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३१९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३३१०४
सुहस्त १. २. ३.	३७१४८
सुहित १. २. ३.	४३३१०५
" १. २. ३.	५३३१९९
सुहृद् १.	३७३
" १. २. ३.	३७३३
" २.	४४२५
" १. २. ३.	६४२०
सुहृदय १. २. ३.	५४१३६
सुहृ १ ब.	३११५
सुकर १.	३४५
" १.	३८३३
सुकर्री २.	४३३३१
सुकम ३.	४३३२२
" ३.	४४११०
" १. २. ३.	५४१३६

## वैजयन्तीकोषः

सुकम १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सुकमदर्शिन १. २. ३.	
सुकमा २.	११११६
सुकक १.	३३३३८
" १.	३५३४०
" १.	३५३६८
" १. २. ३.	५४३२५
सुकना २.	८२११४
सुका २.	३५१११
" २.	८२११४
सुकि १.	३५३२९
" १.	३५३९१
" २.	३५३९१
" २.	४३३४८
सुचिसूत्र ३.	३५३१२
सुची २.	४३३४८
सुचीमुख ३.	३६३१४
सूत १.	३२३४४
" १.	३५३१२
" १.	३५३७७
" १.	३५३७७
" १.	३७३३८
सूता २.	३३३७३
सूति १.	२३३६
सूतिकागृह ३.	४३३२०
सूतिकामास १.	४४३१९
सूत्थान १. २. ३.	५४३५४
सूत्र ३.	३३३२०
" ३.	३५३११
" ३.	३५३१४२
" ३.	६३३३६
सूत्रक ३.	३७३५३
सूत्रधार १.	३५३६८
सूत्रवेष्टन १.	५३१९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३७३१७
सूद १.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९२
सून ३.	३३३१८
" ३.	६५३९९

## [ सुप्र ]

सून २.	३७३८४
" २.	४४३९०
सूनतति २.	३५३३७
सूनु १. २.	४४३३९
सूनुत ३.	५४३४३
" १. २. ३.	७४३२९
सूप १. ३.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९३
सूपकार १. २. ३.	४३३९२
सूर १.	२१११०
सूरण १.	३३३२०८
सूरि १.	३६३२३४
सूर्मि १. २.	३५३२२
" १. २.	८१३२५
सूर्य १.	२१११०
सूर्यकान्त १.	३२३३७
सूर्यभ्रातृ १.	१२३१२
सूर्या २.	३३३१३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	२१३२९
सूर्यारक १ ब.	३३३३५
सूर्यावर्त १.	३३३१२४
सूर्योढ १.	३६३६८
सुक्था २.	४१३५८
सुकन् ३.	४४३८८
सुग १.	३७३६६
सुगाल १.	३३३३७
" १.	८५३७
सुगालकोलि २.	३३३८९
सुगालवास्तुक १.	
सुजया २.	३३३१५४
" २.	४३३१०
" २.	४३३१०
सुणि १. २.	३७३८४
सुणिका २.	४४३१२०
सुति २.	३३३४९
सुदाकु १.	१२३१९
" १.	७३३७७
सुपाट १. २.	८१३२५
सुपाटिका २.	२३३५७
सुप्र १.	२१३२७

## [ सुमर ]

सुमर १.	३३३२९
सुष्टा २.	३१८९४
" २.	३५३१२९
सुष्टि २.	८५३३५
से १. २. ३.	८५३४०
सेकपात्र ३.	४३३११८
सेकमिश्रान्न ३.	४३३१०६
सेकमि ३.	३२३१५५
सेवतृ १.	४३३३७
सेचन ३.	४३३१८
सेतु १.	३३३४१
" १.	४३३१०
सेतुज १ ब.	३१३३४
सेना २.	३७३५५
सेनानी १.	११३५५
" १. २. ३.	३७३४१
सेनामुख ३.	३७३५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३७३४०
सेनास्थ १. २. ३.	३७३४०
सेभ्य १.	५३३७
सेराल ३.	५३३२०
सेराह १.	३७३१०४
सेहराह १.	३७३१०६
सेलिस १.	३४३२४
सेलु १.	३३३५५
सेवक १.	३७३१७
" १. २. ३.	७५३३
सेवन ३.	३६३३८
" ३.	३५३१२
" ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३३१८४
सेवा २.	३६३३८
" २.	३८३७
सेव्य १.	२३३१८
" ३.	३३३२३१
" ३.	३८३१५
" ३.	३८३२०
" ३.	३८३१४२
" १.	३५३४९

## शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३३१८
सेव्या २.	३३३८५
" २.	३३३१७७
" २.	३८३५८
सेहिका २.	५३३५४
सेहिकेय १.	२३३३६
सेकत १. २. ३.	३३३४४
" ३.	४३३३३
सेतवाहिनी २.	४३३२६
सेता २.	४३३२६
सेध १.	२३३८२
सैनिक १. २. ३.	
" १. २. ३.	३७३४०
" १. २. ३.	३७३४०
सैन्धव ३.	३८३२०
" ३.	३५३७२
" १.	७५३९१
सैन्य ३.	३७३५५
" १. २. ३.	३७३४०
सैर १ ब.	३३३४०
सैरन्धी २.	४४३२५
सैराभ १.	५३३१५
सैरिक १. २. ३.	३३३५८
सैरिन्ध्र १.	३६३११२
" १.	३६३११५
सैरिन्ध्रजाति २.	३६३१३
सैरिभ १.	४३३८
सैरेयक १.	३३३१९०
सोढ १. २. ३.	
" ३.	५४३१५५
सोढ १. २. ३.	५४३३३
सोत्पात ३.	४३३११२
सोख १.	३६३७६
सोदर १.	४४३३४
सोदर्य १.	४४३३४
सोन्माद १. २. ३.	
" ३.	५४३४१
सोपाक १.	३५३४५
" १.	३५३१०६
सोपान ३.	४३३५१

## [ सौमिक ]

सोम १.	३३३१६९
" १.	३३३८४
" १.	६३३६६
सोमप १.	३३३७५
सोमपान ३.	३३३९२
( सोममान )	
सोमपीथिन् १.	३३३७५
सोमभवा २.	४३३२६
सोमयोनि १.	८३३४९
सोमरसोद्धव ३.	३८३४५
सोमराजि २.	३३३९८
सोमल १.	५३३८
सोमवल्लरी २.	३३३१४४
सोमवल्ली २.	३३३१०८
" २.	३३३३२
सोमाल १.	५३३४
सोमिन् २.	३३३८३
सोर १.	५३३१२
सोरण १.	५३३३८
सोरावास १.	४३३८८
सोल १.	५३३६
" १.	५३३३५
सोलिक १.	५३३६
सोवाल १.	५३३१३
सौख्य ३.	३६३१८९
सौगन्धिक १.	३३३१४
" ३.	३३३२३४
" ३.	४३३३५
सौचिक १.	३५३११
सौदामनी २.	२३३५
सौध ३.	३३३३४
" १. ३.	४३३२९
सौधात १.	३५३७
सौनन्द ३.	११३२५
सौसिक १.	३७३२०३
सौभागिनेय १.	४३३४३
सौमनस १.	५३३४९
सौमिक ३.	३३३१०१
( सोमक )	
" १. २. ३.	३३३१२७

सौमिकी ]

सौमिकी २.	३१६१७
सौमेरव ३.	३११७
सौम्य १.	२११३२
” ३.	२११९१
” १.	३१६१८४
” १.	३१६१०८
” ३.	३१६१४५
” १. २. ३.	६१५९८
सौम्यकृच्छ्र ३.	३१६१३२
सौम्या २.	८२११५
सौरत १.	१२२५१
सौरभेय १.	३१४५३
सौरभेयी २.	३१४४१
सौरसा २.	३३१८८
सौराष्ट्र ३.	३२२२९
सौराष्ट्रिक १.	४११२४
( सारोष्ट्रिक )	
सौराष्ट्री २.	३२२१६
” २.	३१८४८
सौरि १.	२११३५
सौरिक १.	१११११
सौर्य १.	२११९१
सौवर्चल ३.	३१८१२५
” ३.	३१८१२६
सौवस्तिक १.	३१७२४
सौवास १.	३३११२०
सौविद १.	३१७२२
सौविद्वह १.	३१७२२
सौविष्ट ३.	३१६११२
सौवीर १ ब.	३११२८
” ३.	३२२४२
” ३.	४३१८१
” १. ३.	७१५९१
सौशमिकन्ध ३.	८१९१९
सौष्टव ३.	३१७२०८
सौहार्द ३.	३१६१८६
सौहित्य ३.	४३११०५
सौहृद ३.	३१६१८६
स्कन्द १.	१११५४
” १.	६१९६५
स्कन्दोल १.	५३१६

वैजयन्तीकोषः

स्कन्ध १.	३३१५५
” १.	४३१७१
” १.	५११११
” १.	५११५५
स्कन्धवह १.	३१४५२
स्कन्धवाहक १. २. ३.	३१४५६
स्कन्धशाखा २.	३३१५५
स्कन्धशृङ्ग १.	३१४१०
स्कन्धाग्नि १.	१२२२०
स्कन्धावार १.	४३१४
स्कन्धिक १. २. ३.	३१४५६
स्कन्न १. २. ३.	५४१०२
स्खलित ३.	३१७२०७
स्नन १.	३१४५१
” १.	४४१६८
स्तनन्धय १. २. ३.	५४१२
स्तनप १. २. ३.	५४१२
स्तनयित्नु १.	८११४६
स्तनाग्र ३.	४४१६८
स्तनित ३.	२२२५
स्तन्य ३.	३१८१४५
स्तबक १.	३३३२०
स्तब्ध १. २. ३.	५४१२०
स्तब्धरोमन् १.	३१४५
स्तब्धलोचन १. २. ३.	५४१९
स्तभ १.	३१४६२
स्तभि २.	८१९१०
स्तम्ब १.	३३१७
” १.	३३११६
” १.	३१८६३
स्तम्बकरि १.	३१८३२
स्तम्बज ३.	३३३२३२
स्तम्बेरम १.	३१७६०
स्तम्भ १.	३११६४
स्तम्भि १.	४२११२
स्तम्भिन् १.	४२११२
स्तरण ३.	३१६९१

[ स्थल ]

स्तव १.	२१४३५
स्तितमित १. २. ३.	४१७३०
स्तुत १. २. ३.	५४११०६
स्तुति २.	२१४३५
” २.	३१६१११
स्तुतिपाठक १.	३१७३०
स्तूप १.	६११६७
स्तूपपृष्ठ १.	४११५०
स्तेन १.	३१९५६
स्तेम १.	५२२२९
स्तेय ३.	३१९५८
स्तैन्य ३.	३१९५८
स्तोक १.	२२२८
” १. २. ३.	५४१३६
स्तोकक १.	२३३३२
स्तोकपाण्डु १.	५३११४
स्तोत्र ३.	२१४३५
” ३.	३३६१११
स्तोम १.	३११६१
” १.	३१४८२
” १.	५१११
स्त्यान १. २. ३.	४३१९५
स्त्री २.	४१४४
” २.	८२११६
” २.	८६१५
स्त्रीधर्मिणी २.	४४११५
स्त्रीपुंसलक्षणा २.	४४१३
स्त्रीप्रिय १.	३३३४०
स्त्रीभूषण १.	३३३२३३
स्त्रीवास १.	३११४८
स्त्रीव्यञ्जनाकृता २.	४४१८
स्त्रेण १. २. ३.	५४१११८
स्त्याख्या १.	३३३६७
स्थगणा २.	३१११
स्थण्डिलश १. २. ३.	३३३३२
स्थपति १.	३१५८६
” १.	७११८०
” १.	८१९४५
स्थपुट १. २. ३.	५४१८३
स्थल ३.	३११४२

स्थल ]

स्थल १. २.	८१९३२
स्थलशृङ्गाट १.	३३११४१
स्थली २.	३११४२
” २.	८१९३२
स्थविर १. २. ३.	५४३३
स्थाणु १.	१११४३
” १. ३.	३३३१३
स्थान ३.	३१७१८६
” ३.	३१९१११
” ३.	६३३३६
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९
स्थानीय ३.	४३३१
” ३.	४३३२
स्थाने ४.	८१८१४
स्थापत्य १.	३१७२३
” १.	८१९४५
स्थापनी २.	३३३३३०
स्थाप्य १.	३१८१२
स्थामन् ३.	३१७२१०
स्थाधिन् १.	३१९८१
” १. २. ३.	५४४४२
स्थाधिभाव १.	३१९७६
स्थायुक १.	३१७२१
” १. २. ३.	५४४४२
स्थाल १.	१११४५
” ३.	४३३६१
स्थाला २.	३१८२७
स्थालिक १.	५३३५७
स्थाली २.	४३३५५
स्थावर १. २. ३.	५४३६२
स्थाविर ३.	४४५५४
स्थासक १.	३१७८७
” १.	४२११३
” १.	४३३१४८
स्थाःस्तु १. २. ३.	५४४४२
” १. २. ३.	५४४७९
स्थित १. २. ३.	६३४२०
स्थितासन ३.	३३३२२६
स्थिति २.	३१८१५
” २.	५२२

शब्दानुक्रमणिका

स्थिति २.	५२११४
” २.	६२१४४
स्थिर १.	२११३६
स्थिरगति १.	२११३५
स्थिरजिह्व १.	४११४२
स्थिरप्रेमन् १. २. ३.	५४२६
स्थिरा २.	३११२
” १.	३३३१००
स्थूल ३.	४३३१२५
स्थूणा २.	३१२२२
” २.	६२१४६
स्थूणाशीर्ष ३.	४३३४०
स्थूरिन् १. २. ३.	३१४५६
स्थूल ३.	३१८१३९
” १. २. ३.	५४१८४
” १. २. ३.	६४११९
स्थूलकाष्ठामि १.	१२२२०
स्थूलनास १.	३३३६
स्थूलपुष्पिका २.	३३३१३५
स्थूललक्ष १. २. ३.	५४५८
स्थूलशाटिका २.	४३३१२६
स्थूलहस्त १.	३१७७१
स्थूलोच्चय १.	८११४८
स्थेय १.	३१८१३
स्थेयस १. २. ३.	५४४७९
स्थेष्ट १. ३.	५४४७९
स्थौण्य ३.	३१८९२
स्थीर १ ब.	३११३६
स्नपित १. २. ३.	५४१०७
स्नव १.	५२३३२
स्नसा २.	४४११७
स्नातक १.	३३३४०
स्नान ३.	४३३१३
” ३.	६३३३६
स्नायु २. ३.	३३३१७
स्नाव १.	३३३१४
” १.	३१९३३

[ स्फिच् ]

स्नाव १.	४४११७
स्निग्ध १.	३३३५३
” १. २. ३.	३१७४३
” १. २. ३.	५३३१८
स्तु १.	३२२७
स्तुमिका २.	३१८१२९
स्तुत १. २. ३.	५४१०९
स्तुपा २.	४४३३६
स्तुह् २.	३३३९७
स्तुही २.	३३३९७
स्नेह १. ३.	३३३१८६
” १. ३.	३१८१३७
” १.	५३३१
” १. ३.	६१५९९
” ३.	८३३१८
स्नेहपात्र ३.	४३३६०
स्नेहपूर १.	३३३४५
स्नेहचर ३.	४४११०८
स्नेहु ३.	४४११३
स्पन्द १.	२११२६
स्पन्दित ३.	३१९९१
स्पर्ध १. २. ३.	५४३६४
स्पर्श १.	१२१४९
” १.	३३३३६
” १.	५३३२
” १. २. ३.	६१५९६
स्पर्शन ३.	३३३११८
” १. ३.	७५८९
स्पर्शानन्दा २.	१३३१
स्पश १.	३१७२०५
” १.	६१३६४
स्पशा २.	३३३८९
स्पष्ट १. २. ३.	५४१३४
स्पृक्का २.	३३३११७
स्पृष्टता २.	३३३३५
स्पृष्टा २.	३३३१७९
स्फटा २.	४११२१
स्फटिक १.	३३३३७
स्फाति २.	५३३३३
स्फार १. २. ३.	५४१८०
स्फिच् २.	४४३६५

स्फीत ]	वैजयन्तीकोषः	[ स्वर्नदी
स्फीत १.	५३१७	स्वधिति १.
स्फुट १. २. ३.	३३१९	स्वन १.
" १. २. ३.	५४१३३	" १. २. ३.
" १. २. ३.	६४१९९	स्वम १.
स्फुटन ३.	५२१४१	" १.
स्फुटवल्ली २.	३३११४०	स्वमज्ज १. २. ३.
स्फुटित १. २. ३.	३३१४६	स्वप्रतिष्ठ १.
स्फुरण ३.	५२१३३	स्वभाव १.
स्फुरित ३.	३१९१९	स्वभू १.
स्फुलन ३.	५२१३३	स्वमनीषिका २.
स्फुलिङ्ग १. २. ३.	१२१३१	स्वयंवरा २.
स्फूर्जक १.	३३१५१	स्वयम् ४.
स्फूर्जथु १.	२२१६	स्वयम्भू १.
स्फोटक १.	४४१२३	स्वर १.
स्फ्य १.	३३१०२	" १.
स्म ४.	८७७	" १.
" ४.	८७७१	स्वरकम्प १.
स्मय १.	३३१६९	स्वरभेद १.
स्मयाक १.	३३१५८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.
स्मर १.	११२२७	स्वरिङ्गण १.
स्मराङ्कुश १.	४४१७६	स्वरित १. २. ३.
स्मित १. २. ३.	३३१९	स्वरु १.
" ३.	३१९८३	स्वरुमोचन १.
" ३.	८१९१६	स्वरूप ३.
स्मृति २.	३३१२९	स्वरेणु २.
स्यद १.	१२१५५	स्वर्ग १.
स्यन्द १.	२११२६	स्वर्जि २.
स्यन्दन १.	३३७१२४	स्वर्जिका २.
स्यन्दनध्वनि १.	२४१९	स्वर्ण ३.
स्यन्दिनी २.	४४१२०	" १.
स्यञ्ज १. २. ३.	५४१०९	स्वर्णकार १.
स्यमीक १.	७११७५	स्वर्णचूड १.
स्याल १.	४४१३२	स्वर्णद्वीप ३.
स्यालिका २.	४४१२८	स्वर्णराज ३.
स्यूत १.	४३१६४	(स्वर्णराग)
" १. २. ३.	५४११२	स्वर्णरीति २.
स्यूति २.	३३११२	स्वर्णशुक्तिका २.
स्यूना २.	६२१४५	स्वर्णाद्रि १.
स्यूम १.	६११६१	स्वर्नदी २.
स्योनाक १	३३१६८	(स्वर्णदी)

स्वर्भानु ]	शब्दानुक्रमणिका	[ हरिकेलीय
स्वर्भानु १.	२११३६	हठ १.
स्वर्वापी २.	४२२२४	हड्डिक १.
स्वर्वेश्या १.	१३११	हड्डक १. ३.
स्वल्पदेहा २.	३३१५१	हण्डा २.
स्वल्पफला २.	३३१६०	हतक १. २. ३.
स्वप्न १.	४४३३१	" १. २. ३.
स्वप्न २.	३११४	हना २.
स्वप्न ३.	४४२२६	हनन ३.
स्वस्कन्द १.	३१९४	हनु १.
(स्वस्कन्ध)		" २.
स्वस्तर १.	३८१६६	" १. २.
स्वति ४.	८७२९	हन्त ४.
स्वस्तिक १.	२३२८	" ४.
" १.	३३१४९	हन्तकार १.
" १.	३३२२४	हज्ज १. २. ३.
" १.	४३३०	हय १.
" १.	४३१३६	हयन ३.
स्वस्थयन ३.	३३१५८	हयपुच्छी २.
स्वस्त्रीय १.	४४४४१	हयशिरस् १.
स्वाती २.	२११४०	हर १.
स्वादु १.	५३२२५	हरक १.
" १. २. ३.	६४१९९	हरण १.
" ३.	८३११८	" ३.
स्वादुकण्टक १.	८११५५	" ३.
स्वादुगन्धा २.	३३१५७	" १.
स्वादुतिक्तकषाय १.	५३३३३	" १.
स्वादुमुस्ता २.	४२१४८	हंसक १.
स्वादुरसा ३.	८२१९	हंसकान्ता २.
स्वाद्य १.	५३३३०	हंसकालीसुत १.
स्वाद्मलतिक्तनुवर १.	५३३३९	हंसच्छत्र ३.
स्वाद्मी २.	३३१७८	हंसपद ३.
स्वाध्याय १.	७११८३	हंसपाद ३.
स्वान १.	१३१११	हंसवाहन १.
" १.	२४११	हंससाधि १.
स्वान्त ३.	३३१७३	हकार १.
स्वाप १.	३३१९७	हजा २.
" १.	४३१६७	हट्ट १.
स्वापतेय ३.	३८१७३	हट्टविलासिनी २.
स्वामिन् १.	१११५६	हट्टवेरमाली २.
		हठ १.
		" १.

## हरिचन्दन ]

हरिचन्दन १. ३.	११३१४
" ३.	३१०१३
" १. ३.	८५२७
हरिण १.	३४१२
" १.	५३१२
हरिणी २.	३१२२
" २.	७२३०
हरित् २.	२१२
" १.	५३२२
" २.	६५१०१
हरित १.	३४२
" १.	३१०३६
" १.	४३१९०
" १.	५३२२१
" १.	५३२२२
हरिताल ३.	३२१३
हरितालिका २.	३३२२३
हरिदश्व १.	२११११
हरिद्रा २.	३३२२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	५४२६
हरिद्विष् १.	१३१०
हरिन्मणि १. २.	३२२३८
हरिपर्ण १.	३३१५५
हरिप्रिया २.	८२१०
हरिमन् २.	७१८४
हरिमन्थ १.	३१३७
हरिमन्थज १.	३१३७
हरिया १.	३१०४
हरिरोमन् १.	८१४९
हरिलोचन १.	२३२२
हरिचत् १.	१२३
हरिवर्ण ३.	३१३
हरिवालुक ३.	३१०५
हरिवाहन १.	१२४
हरिहय १.	१२३
हरीतक १. २. ३.	८१३८
हरीतकी २.	३३२१
" २.	३३१७८
" २.	८१३८

## वैजयन्तीकोषः

हरेणु २.	३१०५
" १. २.	८१२६
हरेणुक १.	३१४४
हर्तु १.	६१६७
हर्ष्य ३.	४३१९
हर्ष्य १.	७१८४
हर्ष १.	३३१८७
हर्षज ३.	४४१११
हर्षमाण १. २. ३.	५४३३
हर्षवेणुक १.	३१६१
हर्षुल १.	२१३२
" १. २. ३.	७५९४
हर्षुला २.	३१५०
हल ३.	६१२७
हलभूति १.	३१५४
हला २.	३१०८
हलाम १.	३१०२
हलायुध १.	११२२
हलाहल १.	२१२४
हलिन १.	११२३
हलीचण १.	३४२
हलीम १.	३३२२३
हलीमक १.	३३६०
" १.	३३७६
हलुराह १.	३१०५
हल्य १. २. ३.	३१२३
हल्या २.	५११४
हव १.	१२१८
" १.	२४३०
" १.	६१६७
हवन १.	१२१८
" ३.	३१६९
हवनी २.	३१००
" २.	३१०९
हवित्री २.	३१०९
हविर्मन्थ १.	३३८६
हविर्यज्ञ १.	२१६३
हविशाला २.	४३२२
हविस् ३.	३१३८
" ३.	६३३७

( १६८ )

## [ हस्तिमल्ल ]

हव्ययोनि १.	१११४
हव्यवाहन १.	१२१७
" १.	१२२२
" १.	१२२४
हस १.	३१५९४
हसन ३.	३१५९४
हसनी २.	४३५५
हसन्ती २.	४३५५
हसित ३.	३१०३
हस्त १.	१२४३
" १.	३१५४
" १.	४३७३
हस्तकोहलि २.	३१५९
हस्तज्ञ १.	३१०५५
हस्तत्रय ३.	३१५७
हस्तद्वय ३.	३१५७
हस्तपर्ण १.	३३६४
हस्तविम्ब १.	४२१४८
हस्तलेपन ३.	३१६०
हस्तवारण ३.	४३१०५
हस्तसूत्र ३.	३१५९
हस्तावाप १.	३१०९
हस्तिकर्कोटक ३.	३३१६५
हस्तिकर्ण १.	३१०९८
" १.	४३१२९
हस्तिकर्णद्वल १.	३३२९
हस्तिकोलि २.	३३८८
हस्तिकोष १.	३३१६२
हस्तिकार १.	३१०७०
हस्तित् १.	३१६०
" १.	८१५
हस्तित्नापुर ३.	४३१८
हस्तित्नी २.	४३१८
हस्तित्पक १.	३१०८
हस्तित्पर्णिनी २.	३३१७१
हस्तित्पादिका २.	३१०९३
हस्तित्पिप्पली २.	३१०८
हस्तित्पूरणी २.	३३१४७
हस्तित्प्रिया २.	३३१९६
हस्तित्मकर १.	४१५२
हस्तित्मल्ल १.	८१४९

## हस्तमुख ]

हस्तमुख १.	४३१५
हस्तिराज १.	११५३
हस्तिवातिङ्गन १.	३३१०३
हस्त्य १. २. ३.	५४११७
हस्त्यगना २.	३३१९६
हस्त्यारोह १.	३१०८
हहाल १ व.	३१३६
हा ४.	८१०८
हाटक १. ३.	३२२०
" १.	३१०६५
हाकृत ३.	२४८
हान ३.	५२४०
हायन १.	३१३४
" १.	७१८४
हार १.	४२१३८
" १.	४२१३९
हारफल ३.	४२१४०
हारभूरा २.	३३१८१
हारित १.	१२५२
हारिता २.	३१४९
हारिद्र १.	४४१३६
" ३.	५३११
हारित् १. २. ३.	५४१३५
हारी २.	३१४८
हारीत १.	२३४०
हार्द ३.	३११८६
हार्या २.	३१११४
हालक १.	३१०३
हाला. २.	३१४५
हालाहल १.	४१२९
हालिक १. २. ३.	३१५५८
हाली २.	४४२८
हाव १.	३१९२
" १.	३१९७
हास १.	३११९४
" १.	३१७६
" १.	३१८३
हासनिक १.	३१०१७
हासिका २.	३११९३
हास्तिक ३.	५३१०

## शब्दानुक्रमणिका

हास्तिनपुर ३.	४३१८
हास्य ३.	३११९४
" १.	३११७५
" १.	३११७७
हि ४.	८१०९
" ४.	८१११
हिंसन ३.	३१७४१
हिंसा २.	३१७२५
" २.	६२४६
हिंसाकर्मन् ३.	३१११२
हिंसारु १.	३४३
हिंस्र १.	३४७३
" १. २. ३.	५४४२
हिंस्रा २.	३३८९
हिंका २.	२३२१
" २.	४४१२७
हिक्किका २.	४४१३१
हिङ्गु ३.	३११३१
हिङ्गुदी २.	३३१०४
हिङ्गुनिर्यास १.	८१५६
हिङ्गुल १.	३२४४
" ३.	३२४५
हिङ्गुल २.	३३१०२
हिङ्गीर १.	३१०५
हिण्डीकान्त १.	१११४४
( चण्डीकान्त )	
हित १. २. ३.	३१७४३
" १. २. ३.	५४१०४
हिन्ताल १.	३३२२०
हिम् ४.	८१०९
हिम ३.	२२१९
" १.	५३१७
हिमजा २.	३३२०३
हिमघृति १.	२१२४
हिमवत् १.	३२४
हिमवालुका २.	३११०५
हिमसंहति २.	२२१९
हिमा २.	१११५९
हिमाचल १.	३२४
हिमानिल १.	१२१५४
हिमानी २.	२२१९

( १६९ )

## [ हम् ]

हिमारि १.	७११८३
हिरण्य ३.	३११९
हिरण्य ३.	३११७४
" ३.	७३३९
हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	११११८
हिरण्यगर्भ १.	१११७
हिरण्यनाभ १.	३२४
हिरण्यबाहु १.	१३१६
हिरण्यरेतस् १.	१२१६
हिरण्यवर्णा २.	४२२२
हिरुक ४.	८१३०
" ४.	८१४
" ४.	८११५
ही ४.	८११६
हीन १.	३३१८२
" १. २. ३.	५४२२
" १. २. ३.	५४१०१
" १. २. ३.	६४२०
हीनवर्ण १.	३५३
हीर १.	६४६९
हीरक १.	३२३९
हुङ्कु १.	३११३४
हुङ्कुहिक्का २.	२४११
हुण १.	१११११
हुण्ड १.	३४३
हुताशन १.	१२१६
हुति २.	३१६९
" २.	३१६९०
हुम् ४.	८१०९
हुमि १.	३१५४४
हुम्डक १.	३१०५
हुम्कर १ व.	३१२४
हुल ३.	३११६८
हुलमात्रिका २.	३११६४
हुलिङ्ग १ व.	३१३९
हुलिङ्गुली २.	३१५५७
हुलु १.	३१५५४
हुलुदुत् १.	३१११९
हुति २.	२१३०
हुम् ४.	८१०९

हृच्छय ]

हृच्छय १.	१११२९
" १.	११२११
हृणिया २.	३१६१९३
( मृणिया )	
हृणीया २.	३१६१९३
हृद् ३.	३१६१७३
" ३.	४१४६८
" ३.	४१४११४
हृदय ३.	४१४६८
" ३.	४१४११४
" ३.	७३३३८
हृदयालु १. २. ३.	५१४१६
हृष १.	३३३३२
" ३.	३१८१३९
" ३.	३१९१४८
" १. २. ३.	५१४१६
" १. २. ३.	५१४१३५
" १. २. ३.	६१५१००
हृद्यगन्ध १.	३१८८४
हृद्या २.	३१२११
" २.	३१४६३
" २.	३१८१४४
हृद्यांशु १.	२११२६
हृदलेख १.	३१६१७९
हृषित १. २. ३.	८१४१३
हृषीक ३.	३१६१२३
हृषीकेश १.	१११११
हृष्ट १. २. ३.	५१४१९
" १. २. ३.	८१४१३
हृष्टि २.	३१६१८८
हृष्ट ४.	८१८१२
हृक्का २.	४१४१२७
हृति १. २.	३१७१५७

वैजयन्तीकोषः

हेति २.	६१२४६
हेतु १.	५३३३७
" १.	६११६९
हेमकरक १.	४३१५८
हेमकुश ३.	३१११९
हेमम ३.	३२३३०
हेमम्री २.	३३३२११
हेमज ३.	३२३३२
हेमदुग्धक १.	३३३२८
हेमधारण ३.	५११५९
हेमन् ३.	३२३२०
" ३.	६३३३७
हेमन्त १.	३११८७
हेमपुष्प १.	३३३४१
" १.	३३३८१
हेमपुष्पिका २.	३३३१८२
हेमप्रतिमा २.	३१९२२
हेममाष १.	५११५
हेमा २.	३११३
हेरम्ब १.	३१४९
" १.	७११८४
हेरुक १.	३१६२३९
हेलक ३.	५११६२
हेला २.	६१२४६
हेलि २.	३१६१७७
" १.	६११६९
हेषा २.	२१४६
हेष्ट ४.	८१८१२
हेमकूट ३.	३११६
हेमवत ३.	३११३
हेमवती २.	८१२११
हेयङ्गवीन ३.	३१८१३८
हीड ३.	५११६२

[ ह्यादीनि

होत्र १.	३१६१७९
होत्र १.	३१६१६९
होत्रवन् १.	३१६१७६
होम १.	३१६१६९
होमकाष्ठी २.	६१६१५
होमधूम १.	३१६१५
होमधेनु २.	३१६१५
होमभस्मन् ३.	३१६१५
होमयूप १.	३१६१०३
होमन्धन ३.	३१६१६
होरा २.	२११५१
होल १ ब.	३११२६
हयः ( -स ) ४.	८१८१९
हयस्तन १. २. ३.	५१४८९
हृद् १.	३१४६४
" १.	४११५
हृस्व १. २. ३.	५१४८१
" १. २. ३.	६१५१०१
हृस्वगवेषुका २.	३१८६१
हृस्वनिर्वशक १.	३१७१५९
हाद १.	२१४१२
हादिनी २.	४१२१३
" २.	७१२१९
हादुनि २.	२१२१५
ही २.	३१६१९४
हीक १. २. ३.	६१५१०१
हीण १. २. ३.	५१४५१
हीत १. २. ३.	५१४५१
हेषा २.	२१४६
ह्लाद १.	३१६१८८
ह्लादिनी २ ब.	२१११९

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी।** सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. **वैजयन्तीकोषः** (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. **नाटकलक्षणरत्नकोशः** (कोश)। सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. **राजतरङ्गिणी जोनराजकृत।** हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. **कालिकापुराणम्** (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**  
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya). An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri  
**Part I** Principle, Technique and History of Literary Criticism.  
**Part II** The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. **भास्करोदया।** तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनूपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी- नृसिंशर्मकृता। म. म.ज्ञोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. **तिलकमञ्जरी।** श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. **काव्यमाला।** सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. **सेतुबन्धम्** महाकवि प्रवरसेन विरचित। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

Mahākavi Pravarsena's

सेतुबन्धम्

## Setubandham

*Text with Hindi & English Translation*

Dr. Asha Kumar

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmasetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthets be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behind presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.

## जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृता हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

**New Light on the Sun Temple of Konarka.** Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

**Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-नीलकण्ठभट्टसूनूपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंहशर्मकृता। म. म. झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

**चौखम्भा बुक्स**

**Chaukhambha Books**

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)  
Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)